जीवन के अध्याय
(Chapters of Life)

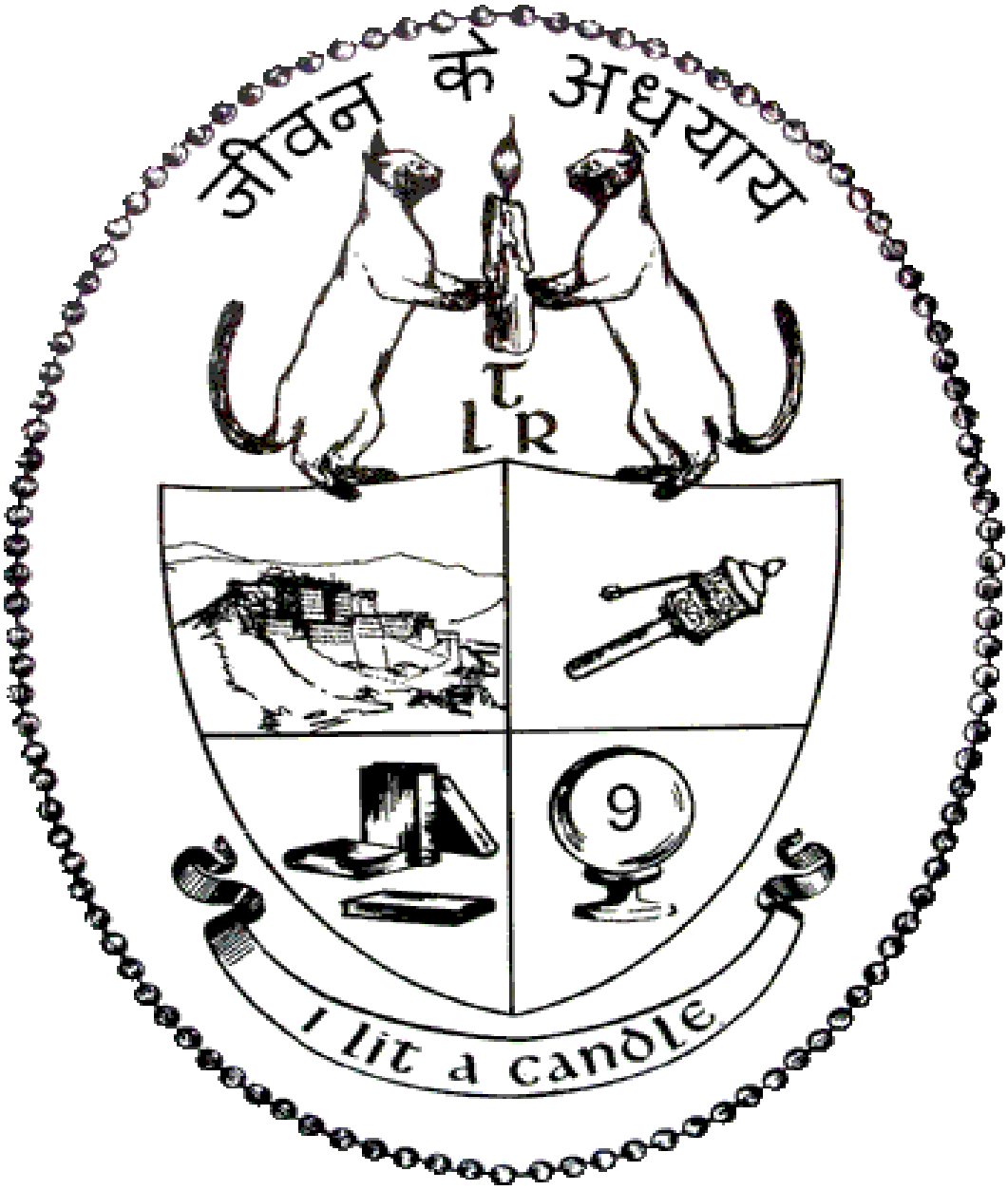

(I Lit a candle)
मैंने दीप जलाया

जीवन के अध्याय
(Chapers of Life)

मूल लेखक
टी. लोबसांग रम्पा

हिन्दी रूपान्तरण कर्ता
डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

शोधकार्यों के हितार्थ

निःशुल्क वितरण के लिये

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्ति स्थल : www.lobsangrampa.org
email : tuesday@lobsangrampa.org
drguptavp@gmail.com

टी लोबसांग रम्पा

जीवन के अध्याय

(पूर्ण संस्करण, 29/08/2013)

जीवन के अध्याय – (मूलतः 1967 में प्रकाशित) लोबसांग, पाठक को एक गहरी समझ उपलब्ध कराते हुए, विमाओं, समानान्तर विश्वों और भविष्यकथनों पर चर्चा करते हैं। लोबसांग धर्म और ईसाइयत के बारे में प्रश्नों के उत्तर भी देते हैं। धर्म एक उद्देश्य की पूर्ति करता है, जिसे अनेक लोगों ने नकार दिया है, जैसा कि हम समाज और समुदायों में स्पष्टरूप से चूर चूर होते हुए देखते हैं।

विषय सूची

धन्यवाद i

अनुवादक का निवेदन : ii

अध्याय एक : आगामी विश्वनायक 1

अध्याय दो : अनेक प्रासाद 14

अध्याय तीन : और अनेक प्रासाद 27

अध्याय चार : अनेक आयाम भी! 42

दार्शनिक प्लेटो के संवाद

अध्याय पॉच : शब्दों का चित्रण 56

मैं नहीं डरता

सन्तोषी बनें

मेरा प्रेम

अधिस्वयं से स्वीकारोक्ति

संकल्प

मैं अपने अधिस्वयं से प्रार्थना करता हूॅ

एक प्रार्थना

अध्याय छै : एक विश्व, जिसकी हम सबको यात्रा करनी चाहिये 71

अध्याय सातः एक अध्याय का अंत 86

अध्याय आठ : ध्यान 105

अध्याय नौ : क्या सूक्ष्मलोक की यात्रा आपके लिये है? 120

अध्याय दस : मनुष्य के कार्य 134

अध्याय ग्यारह : आप इसे लिख लें! 147

अध्याय बारह : धर्म और विज्ञान 161

''प्रकाशकों की दयालुता'' विभाग 167

धन्यवाद

श्रीमती वलेरिया सोरोक (Mrs. Valeria Sorock) (भाषा शुद्धवादी!) को, टूटी फूटी अंग्रेजी और भव्यतारहित व्याकरण को बिना बदले हुए, और साहसपूर्वक अनदेखा करते हुए, इस हस्तलिपि की अतिरिक्त प्रतियॉ टायप में, अपने भद्र कार्य को करने के लिये।

ब्राइटन, ससेक्स इंग्लैंड की विक्टोरिया हार्वे (Victoria Harvey of Brighton, Sassex, England) को, उनके द्वारा इन चित्रों में इतनी पर्याप्त रूप से प्रदर्शित कोमल भावना और समझदारी के लिये।

''मां'' को, मेरे पहले विचारों को पढ़ने और (हमेशा कृपापूर्ण) आलोचना करने के लिये, और ''बटरकप (Buttercup)" को, मेरी इमला से टाइप करने में इतने कठोर परिश्रम के लिये।

लेडी कुई (Lady Ku'ei) और श्रीमती फीफीग्रेविसकर (Fifi Greywhiskers) के इस पृथ्वी पर प्रतिनिधि, कुमारी टाडालिंका (Misses Tadalinka) और कुमारी क्लियोपेट्रा (Cleopatra), जिन्होंने केवल छः महीने की आयु के होने के बावजूद, मेरा भलीभांति मनोरंजन किया और कई बार पेजों को, उनको पूरा होने से पहले ही फाड़ दिया।

भली–भव्य महिलाऐं ! ये सभी महिलायें हैं!

– आपको धन्यवाद!

टी लोबसांग रम्पा

मेरीशेन (Mariechen) के लिये
जर्मनी की एक महिला
अंधकार में एक प्रकाश,
वर्षों तक आद्योपांत एक मित्र।

अनुवादक का निवेदन

लोबसांग रम्पा की 1967 में मूलतः प्रकाशित, नौवीं पुस्तक "Chapters of Life," का ''जीवन के अध्याय'' के रूप में, हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए, मैं आदरणीय रम्पा के अनुयायियों और सुविज्ञ पाठकों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, जिनकी प्रेरणा और उत्साहबर्द्धन के बिना ये प्रस्तुति सम्भव नहीं हो सकती थी। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने ईसाई धर्म की मान्यता के अनुसार ईश्वर के द्वितीय आगमन, पूर्व की मान्यता के अनुसार, कलियुग में कल्कि अवतार, मृतात्माओं के आवाहन की बैठकों, आयामों, समानान्तर विश्वों, तथाकथित जादूगरनियों के ऊपर पादरियों और पंडितों के अत्याचार, ध्यान, ज्योतिषीय भविष्यवाणियों आदि के सम्बंध में विस्तार से चर्चा की है। पुस्तक में, पाठकों से प्राप्त पत्रों के उत्तर भी दिये गये हैं। माननीय रम्पा द्वारा, इससे पहले भी कई पुस्तकों में पाठकों से प्राप्त प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं। "You for Ever" जिसका हिन्दी अनुवाद, ''तुम सदा के लिये'' पहले ही आ चुका है, पहली पुस्तक थी, जिसमें पाठकों के प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया गया था।

लोबसांग रम्पा की इस पुस्तक के हिन्दी रूपांतरण में, मुझे अपने गुरु, अब ब्रह्मलीन, श्री बी. एन. गच्छ, जिन्होंने मेरी अधिकांश पुस्तकें पढ़ीं थीं, का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। इस पुस्तक के हिन्दी रूपांतरण के लिये मुझे श्री मनुभाई पटेल, उपाध्यक्ष जयगुरुदेव संस्थान ने प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया। वे इसके मूल संस्करण को काफी पहले पढ़ चुके थे, और इससे अत्यधिक प्रभावित थे। इसके लिये मैं उन्हें विशेष धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। साथ ही मैं अपने मित्रगणों विशेषकर, श्री राम प्रकाश गुप्ता, श्री देवेन्द्र भार्गव, श्री दिग्वीर सिंह चौहान, के. पी. शर्मा आदि जिनका भावपूर्ण प्रोत्साहन एवं सहयोग निरन्तर प्राप्त होता रहा है, इसके लिए मैं उनका आभारी हूँ। विशेषरूप से, श्री प्रगल्भ शर्मा, श्रीमती प्रीति गोयल, जिनके सहयोग के बिना, इस पुस्तक का प्रस्तुतिकरण संभव नहीं था, का मैं आभारी हूँ। मैं पुनः उन सभी का आभार मानता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्षरूप से, इस पुनीत कार्य में सहयोग किया।

पुस्तक में रह गई भूलों और त्रुटियों के लिये, मैं सुधी पाठकों से क्षमा याचना करता हूँ तथा अपेक्षा करता हूँ कि विद्वत् पाठकगण उन्हें मेरे संज्ञान में लाने का कष्ट अवश्य करेंगे ताकि उन्हें यथाशीघ्र सुधारा जा सके।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., (भारत)
फोन 0751–2433425
मोबाइल : 9893167361 email : drguptavp@gmail.com

अधिक ज्येष्ठ कृष्णा 11,

श्री विरोधकृत संवत्सर, 2075 विक्रमी

तद्नुसार,

रविवार, 10 जून 2018 ई0

टी लोबसांग रम्पा
जीवन के अध्याय

(पूर्ण संस्करण, 29 08 2013)

जीवन के अध्याय– (मूलतः 1967 में प्रकाशित) में लोबसांग रम्पा आयामों, समानान्तर विश्वों की चर्चा करते हैं, और समझ की अधिक गहराई के साथ, पाठक को सिद्ध करते हुए भविष्यकथन करते हैं। लोबसांग धर्म और ईसाइयत से सम्बधित प्रश्नों के उत्तर भी देते हैं। धर्म एक उद्देश्य पूर्ण करता है, जिसे अनेक लोग सम्मान नहीं देते, जैसा कि हम स्पष्टरूप से देखते हैं, कि समाज और समुदाय खण्ड खण्ड हो रहा है।

अध्याय एक
विश्व का आने वाला नेता

अस्तव्यस्त रिक्त भूखण्ड के किनारे पर लंबी, पंक्तिबद्ध खरपतवार, थोड़ी सी हिली। गोदी के कटेफटे, पुराने पौधे की चौड़ी पत्तियॉ, बगल से हिलीं और दो अपलक हरे नेत्रों ने, घूरते हुए, बाहर की ओर अंधेरी गली की धुंध में देखा। ऊबड़–खाबड़ फुटपाथ पर, धीमे से, और समुचित सावधानी के साथ, एक मरियल सा पीला बिल्ला उभरा। सावधानीपूर्वक, वह शत्रुओं की पहचान के लिये, रात की हवा को सूंघने के लिये रुका। उसके मित्र–कोई नहीं थे, क्योंकि, हर आदमी का हाथ उनके विरुद्ध होते हुए, इस गली में बिल्लियॉ, लगभग जंगल जैसे अस्तित्व में रहती थीं।

अंततः संतुष्ट होकर कि सब कुछ ठीक था, उसने मटरगस्ती करते हुए, सड़क को मध्य की ओर पार किया और उसने अत्यधिक सावधानीपूर्वक वहॉ बैठते हुए, (शौच एवं) प्रसाधन करना प्रारंभ किया। (उसने) पहले कान, तब गर्दन के पीछे के भाग की, नम पंजे से अच्छी तरह सफाई की। अंत में, अपनी बायीं टॉग को आकाश की तरफ उठाते हुए, उसने तैयारी (grooming) को सावधानीपूर्वक जारी रखा। सांस लेने के लिये, क्षण भर के लिये रुकते हुए, उसने अपने आसपास देखा, सुनसान गली को देखा।

दूसरे युग के, ईंटों वाले गंदे घर। कालोंच से धुंधलाई हुई (soot-smeared) खिड़कियों के पेंट उखड़ते हुए सड़ेसड़ाये फ्रेमों पर, खिड़कियों के फटेफटाये परदे। वहॉ कभी कभार, किसी बेसुरे रेडियो की जोरदार गूंज, शीघ्र ही समाप्त हो जाने के लिये आई, जिसने, किसी दूसरे कब्जेधारी की नापसंदगी को एक अभिशप्त चीख के रूप में प्रमाणित किया।

गली के ऐसे लेंपों से, जो स्थानीय बच्चों के द्वारा तोड़े जाने से बचे रह गये थे, प्रकाश की पीली आभाऐं आईं। काली छाया के बड़े धब्बे, टूटे हुए लेंपों के आरपार के क्षेत्र में पसर गये। फुटपाथों पर इकठ्ठे कूड़े करकट के द्वारा गतिवाधित पीला बिल्ला, फिर से अपने मलत्याग के लिये मुड़ा। काफी दूर से, कुछ अच्छे क्षेत्र से, यातायात की मूक दहाड़ आई, और आकाश से परावर्तित होती हुई, अनेक नियॉन चिन्हों (neon signs) की चमक आई। परंतु यहॉ, इस गली में, निराशों की एक गली में, सब कुछ सूनासूना था।

सहसा ही पीला बिल्ला पूरी तरह सावधान हुआ, खड़े हुए कान, धुंध में ताकती हुई ऑखें, तात्कालिक पलायन के लिये तैयार मांसपेशियॉ। उसकी सजगता के ऊपर कुछ चीज आ पड़ी थी। दो घरों के बीच धुंध में समाने से पहले, अपने पैरों पर उछलते हुए, उसने चेतावनी भरी सीत्कार (hiss) की एक आवाज की। एक क्षण के लिये गली में सबकुछ सामान्य था, एक बीमार बच्चे का दर्द भरा विलाप, शरीर–रचना सम्बंधी भड़कीले अन्तर्निहित स्वरों (lurid anatomical overtones) के साथ झगड़ते हुए एक आदमी और औरत, और बगल की गली में, दूरी पर, सहसा ही लगाये गये ब्रेकों की चीख की आवाज।

अंत में, वहॉ असामान्य ध्वनियों की सबसे धीमी आवाज आई, मंद, घसीटकर चलते हुए कदम– शराबी के नहीं, जो यहॉ सामान्य था! –परंतु बूढ़े, थमते हुए कदम, किसी ऐसे के कदम, जो जीवन से थक चुका था, जो दैन्यता तथा अनिश्चित अस्तित्व में मात्र धागे से लटका हुआ था। चप्पल पहने हुए पैरों के नीचे बालू के रगड़ने जैसी धीमे सी आवाज की भांति, घसीटने की आवाज अधिक समीप आई। अंधेरी गली के गहरे परंतु गली के लैंपों से, खराब तरीके से यदाकदा शिथिल किये गये गड्ढों ने देखना मुश्किल बना दिया था। एक निरर्थक छाया, धीमे से एक प्रकाशित टुकड़े के आरपार चली और फिर से अंधेरे के द्वारा निगल ली गई।

जैसे ही नकाब में लिपटी वह आकृति समीप आई, कष्ट से घरघराती हुई सांस की आवाज, दमा

की सांसों ने कानों पर कठोर प्रहार किया। सहसा ही कदम रुक गये और वहॉ बलगम भरी खांसी की एक कर्कश आवाज आई और उसके बाद सांस के अंदर लिये जाने की एक कष्टमय सीत्कार जैसी आवाज आई। एक भारी कराह और डगमगाते हुए कदमों ने अपने खराब उतार–चढ़ाव को फिर से शुरू कर दिया।

गली के अर्द्ध अंधियारे में से, एक मंद सी सफेद छाया बनी और गली के एक मंद से टिमटिमाते हुए लैंप के नीचे आकर थम गई। गंदी सफेद पोशाकों में लिपटे हुए और टूटी हुई चप्पलों के साथ वाले एक बूढ़े आदमी ने, समीप दृष्टि से, अपने सामने की जमीन पर, अपने पैरों को ताका। उम्र के कारण झुके हुए, उसने गटर में पड़े हुए एक फेंके हुए सिगरेट के ठूंठ को उठा लिया। जैसे ही वह झुका, बोझ, जिसे वह लिये हुए था, ने प्रकाश को परावर्तित किया; एक खंबे के ऊपर छोटा सा बोर्ड, खराब तरीके से छपे हुए शब्द : ''तोबा करें, तोबा करें, क्योंकि भगवान का दूसरा आगमन तैयार है। तोबा करें।'' खुद को सीधा करते हुए, वह कुछ कदम आगे चला, और तब अपार्टमेंट के तलघर के नीचे की ओर, पत्थर की कुछ सीढ़ियों पर दुखपूर्वक चढ़ा।

(तौबा करो क्योंकि ईश्वर का दूसरा आगमन होने ही वाला है)

''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम ऐसा क्यों करते हो,'' बर्ट (Bert), ये एक तथ्य है, मैं नहीं करता। तुम पर, हमेशा बच्चों के द्वारा हॅसा जाता है। इसे तुम छोड़ दो, क्या तुम छोड़ोगे?''

''आह, मोडी (Maudie), हम सभी को अपना काम करने को मिल गया है। अनुमान करो, मैं कहीं विचार का एक बीज बो सकता हूँ, तुम जानते हो। मैं उसको थोड़ा बाद में रखूंगा।''

थोड़ी देर, यह वह सबकुछ है, जो होगा, बर्ट, अब तुम इक्यासी वर्ष के हो, इससे पहले कि तुम सड़क पर मरे हुए गिरो, मैं कहता हूँ, इसे छोड़ देने का समय है।''

* * * * * * *

शाम की कमजोर धूप के अंतर्गत पुराना लाशघर चमक के साथ दीप्तिमान हो रहा था। ताजी की गई वार्निश ने युगों पुरानी लकड़ी में नया जीवन ला दिया था। रास्ते के साथ साथ, काफी दूरी तक और आगे, सेंट मैरी (St. Mary) का भूरे पत्थर का पुराना चर्च सुहावना और हितैषी दिखाई दिया। सायंकालीन सभा में भक्तों की प्रतीक्षा करते हुए, लोहा जड़े हुए बड़े दरवाजे, अब खुले हुए थे। काफी ऊपर की घंटियों ने, अपना शाश्वत संदेश दिया, ''अब जल्दी करो, अब जल्दी करो या तुम विलंबित हो जाओगे।'' चर्च के पुराने आंगन में, अपनी मेहराबदार वर्तनी के साथ, एक हजार सालों का इतिहास, गुजरे दिनों की, चौड़े फैले पंखों वाले पत्थर के बड़े देवदूतों वाली पत्थर की बड़ी कब्रों में, बंद किया गया था। यत्र–तत्र संगमरमर के ''टूटे हुए'' स्तंभ, अपने जीवन के उत्कर्ष में, उसके महत्व को प्रदर्शित करते थे।

सहसा गुजरे हुए बादलों से, अप्रत्याशित रूप से फूटती हुई प्रकाश की एक आवारा किरण, तेजी से, पुराने चर्च में होती हुई आई, और उसने कॉच की धब्बेदार खिड़कियों को, उन लोगों की, जो काफी लंबे समय पहले दफनाये गये थे, कब्रों के आरपार, दांतेदार मीनार की छाया डालते हुए, सजीव जीवन में झोंक दिया।

अब, अपनी रविवासरीय सर्वोत्तम पोशाक में, सभी दिशाओं से आते हुए, सजीवता से बातें करते हुए लोग, चर्च पर इकठ्ठे हो रहे थे। अपनी सजधज के लिये स्वयं सजग, और ताजे रगड़े हुए चेहरों से भौंचक्के हुए छोटे बच्चे, अपने मातापिता के पीछे बंधे हुए थे। आह, पादरी के आगे डंडा ले कर चलने वाला एक बूढ़ा व्यक्ति (Verger), हल्के से दिखाई दिया और उसने चिंतित होते हुए, चर्च की मंद ठंडक में आराम पाने से पहले, नीचे जाने वाले रास्ते को घूरा।

पत्थर की दीवार के ऊपर से हॅसी का एक विस्फोट आया और उसके बाद एक रेक्टर और एक लिपिक दोस्त आया। समाधि के पुराने पत्थरों के किनारे किनारे चलते हुए, उन्होंने पूजा सामिग्री कक्ष (Vestry) की तरफ जाने वाले एक निजी पथ का अनुगमन किया। शीघ्र ही, मुख्य प्रवेशद्वार की ओर से अपना रास्ता बनाते हुए, रेक्टर की पत्नी और बच्चे प्रकट हुए, ताकि वे आने वाली भीड़ में मिल सकें।

ऊपर, घंटी की मीनार में, आलसी चर्चविहीन लोगों को धिक्कारते हुए, उन पर जोर डालते हुए, टुन, टुन, टुन जारी रही। भीड़–रिसाव पतला हो गया, और जैसे ही पादरी के आगे डंडा ले कर चलने वाले व्यक्ति ने, एक बार फिर, बाहर की ओर झांका, भीड़ थमने को आ गई, और, किसी को न देखते हुए, उसने मुख्यद्वार को बंद दिया।

वहॉ अंदर, किसी भी मत के पुराने चर्चों के लिये काफी सामान्य, खोखला वातावरण था। पत्थर की महान दीवारें, भारी शहतीरों को रास्ता देती हुई, अंत में ऊपर की ओर चढ़ीं। कॉच की धब्बेदार खिड़कियों में से होकर, भीड़ के मुरझाये चेहरों पर, बदलते हुए नमूनों को फेंकती हुई धूप चमकी। आर्गन की दुछत्ती (organ loaft) से किसी स्तोत्र (hymn), जिसका इतिहास प्राचीनता के कुहरों में गुम हो चुका था, के सन्नाटेदार तनाव आये। घंटियों की एक अंतिम झनझनाहट, और चूंकि उनकी गूंजें अभी भी समाप्त होती जा रहीं थीं, एक दरवाजा हल्के से चटका और घंटी बजाने वाले, अपने बैठने का स्थान पाने के लिये, पीछे, गिरजे के नीचे के भाग (nave) में आये।

सहसा ही, ऑर्गन (organ) ने अपना संगीत बदल दिया। लोग, आशा की हवा के साथ तन

गये और चर्च में पीछे की ओर, कदमों के चलने की दबी हुई पदचाप हुई। अनेक कदमों के चलने की आवाज, परिधानों की सरसराहट और शीघ्र ही, पहली गायक मंडली के लड़के (choirboys), गिरजाघर के पूर्वी भाग (choir) के स्टाल में, अपना स्थान पाने के लिये, गलियारे में पंक्ति बनाकर खड़े हो रहे थे। भीड़ में, जैसे ही प्रार्थनासभा प्रारंभ होने के लिये तैयार हुई, ऐसे अवसरों पर इतनी सामान्य, चुलबुलाहट और फुसफुसाहट हुई।

पाठक (reader), जैसा कि उसने भूतकाल में वर्षों तक किया था, पाठों को, बिना किसी विचार के–स्वतः पढ़ते हुए, पढ़ता चलता चला गया। उसके पीछे, रबरबैंड और कागजों के कुछ पुलन्दों के साथ, एक परेशान गायक लड़का, आनंद पाने के लिये आगे बढ़ा। ''उफ्फ!'' पहले पीड़ित ने अनिच्छापूर्वक कहा। धीमे से, आर्गन–बादक मंडल का मास्टर, आर्गन बजाने वाले स्टूल की ओर मुड़ा और उसने ऐसी क्रोध भरी कठोर निगाह से दोषी को ठिकाने लगाया, कि उसने रबर के छल्ले को नीचे गिरा दिया और वह बैचेनी के साथ हिला डुला।

धर्मोपदेश देने के लिये तैयार अतिथि पादरी, धीमे धीमे धर्मोपदेश के आसन की सीढ़ियों पर चढ़ा। शिखर पर, वह लकड़ी की टांड़ (ledge) पर झुका, और उसने बाहर की ओर, भीड़ पर, संतोष के साथ घूर कर देखा। वह लंबा, घुंघराले भूरे बालों और नीले रंग की उस धाप (shade) की ऑखों वाला था, जो प्रौढ़ा अविवाहितों (spinsters) को काफी प्रभावित करती थीं। पहले कुछ आसनों के बीच बैठी हुई रेक्टर की पत्नी ने टकटकी लगाई और स्वयं को, अपने पति का, जो ऐसे प्रदर्शन को पा सकता था, अभिवादन करने के लिये आज्ञा दी। धीमे से, अपना समय लेते हुए, उपदेशक ने **भगवान के द्वितीय आगमन** को अपने पाठ के रूप में दिया।

वह आगे, और आगे, मंडराता रहा। काफी पीछे के कुछ आसनों में से एक पर बैठे हुए बूढ़े सेवानिवृत किसान को अपने लिये बहुत कुछ मिल गया। धीमे धीमे वह नींद में जा गिरा। शीघ्र ही, पूरे चर्च में खर्राटों की आवाज सुनाई दी। बगल वाला एक आदमी, जल्दी से उसकी ओर चला और बाहर की ओर भेजने से पहले, उसने उसे झकझोर कर जगा दिया। अंत में, आगंतुक पादरी ने अपना भाषण समाप्त किया। आर्शीवाद देने के बाद, वह मुड़ा और उसने धर्मोपदेश के आसन की सीढ़ियों से नीचे की ओर अपना रास्ता बनाया।

जैसे ही आर्गन बजाने वाले ने समाप्ति स्तोत्र को बजाना शुरू किया, वहॉ पैरों को घसीटकर चलने की आवाज और पैरों की हरकत हुई। बगल वाले लोग, चढ़ावे वाली प्लेटों से गुजरते हुए और उन की, जिन्होंने पर्याप्त (चढ़ावा) नहीं दिया, निन्दा में सिर हिलाते हुए, गलियारे के साथ साथ चले। शीघ्र ही, उन्होंने चार का एक समूह बना लिया और वे प्लेटों को प्रतीक्षारत रेक्टर को देने के लिये केन्द्र के भाषण मंच की ओर चले। बाद में, पूजासामिग्री कक्ष में, रेक्टर अपने अतिथियों की ओर मुड़ा और उसने कहा : 'आय, उन्नीस पोंड, तीन शिलिंग और ग्यारह पेंस और आधी पेनी, एक चीनी ताइल (tael), एक फ्रांसीसी फ्रांक और पेंट के दो बटन। अब, मैं उस बेचारे आदमी के लिये बहुत चिंतित हूँ, जिसके दो बटन गुम हो गये थे, हमको आशा करनी चाहिए कि वह किसी अवांछित घटना के बिना घर पहुँच जाये।'

छायाओं के लंबाई में बढ़ते चलते, और पूर्व की ओर संकेत करते हुए, रेक्टर और अतिथियों ने, साथसाथ, युगों पुरानी कब्र के पत्थरों के बीच से छोटे पथ में होकर अपने रास्ते लिये। शांतिपूर्वक उन्होंने, चर्च के आंगन और रेक्टर के आंगनों के बीच दीवार में लगी हुई छोटी पैढ़ी (stile) को पार किया। रेक्टर ने चुप्पी तोड़ी : ''क्या मैंने आपको गहरे नीले रंग की संध्या मालती (petunia) की अपनी क्यारियॉ दिखाईं?'' उसने पूछा। ''वे ठीक चल रहीं हैं– मैंने उन्हें खुद लगाया था। हमें संस्था की बातें नहीं करनी चाहिए, परंतु निस्संदेह, मैंने आपके उपदेश को पसंद किया।

''भगवान के मरे होने के सम्बंध में, यह पूरी बात मुझे उचित दिखाई दी'' अतिथि ने उत्तर

दिया।

''हम बाड़ी में देखें'', रेक्टर ने टिप्पणी की, ''मुझे सेब के कुछ पेड़ छंटवा देने चाहिए। क्या आप अपने उपदेश उसी एजेंसी से प्राप्त करते हैं, जिससे कि मैं ? मैंने उनके साथ अभी–अभी शुरू किया है– काफी परेशानी बच जाती है।''

''निश्चय ही, यहॉ आपके पास जमीन का काफी क्षेत्रफल है, अतिथि ने प्रतिसाद (response) दिया। नहीं, मैं अब उस एजेंसी के साथ व्यवहार नहीं करता–उन्होंने मुझे दो बार नीचा दिखाया और मैं तीसरी बार जोखिम नहीं लेने वाला हूॅ। क्या तुम अपने बगीचे को खुद ही खोदते हो?''

''ओह!'' जब वे रात्रि भोज के पहले, हल्की शैरी (sherry) पी रहे थे, रेक्टर की पत्नी ने कहा। 'क्या आप द्वितीय आगमन पर, **वास्तव में** विश्वास करते हैं, जैसा कि आपने अपने उपदेश में कहा था?'

''अब! अब! मार्गरेट (Margaret)!'' रेक्टर ने बीच में टोका। ''ये बड़े सवालों में से एक है। तुम भी वैसे ही जानती हो, जैसे कि मैं जानता हूॅ कि हम उपदेश नहीं दे सकते हैं और न ही वह सबकुछ कह सकते हैं, जिस पर हम विश्वास करते हैं– या अविश्वास करते हैं। हमने लेखों (Articles) के लिये अंशदान किया है और हमें, चर्च के नियमों, और सी (See) के विशप के आदेशों के अनुसार उपदेश देना चाहिए।''

रेक्टर की पत्नी ने आह भरी, और कहा, ''यदि **केवल** हम सत्य को जानते, यदि हमारे पास **कोई** होता, जो हमें बता पाता कि क्या अपेक्षा की जानी चाहिए, किस पर विश्वास करना चाहिए, किस के लिये आशा की जानी चाहिए।''

''मुझे बतायें,'' अतिथि ने रेक्टर की ओर मुड़ते हुए कहा, ''क्या आप अपनी स्ट्राबेरी (strawberry) की क्यारियों में प्राकृतिक खाद का उपयोग करते हैं, या रासायनिक खाद का?

भूरी, चिमचिमाती हुई ऑखों वाला बूढ़ा आदमी, चापलूसी के ढंग से, असुखदरूप से, पार्क की एक सुधारी हुई बेंच के ऊपर बैठे हुए, एक पतले चेहरे वाले आदमी की ओर, दुबकता हुआ चला। वे ''किस'' समय पर संदेहों को निकासी देते हैं, साथी'' उसने एक मोटी आवाज में, उत्सुकता के साथ प्रश्न पूछा। ''मुझे शीघ्र ही अपने पेट में खाना डालना है, या देखो मैं टूट जाऊॅगा।

पतले चेहरे वाला आदमी मुड़ा और जैसे ही उसने दूसरे को सिर से पैर तक देखा, उसने लंबी जम्हाई ली। अपने नाखूनों को, दांत कुरेदने की एक टूटी हुई लकड़ी के साथ, सावधानीपूर्वक संवारते हुए, उसने उत्साहहीन तरीके के साथ जबाव दिया। ''आक्सफोर्ड का मजेदार, पुराना लहजा, तुम्हारे पास है, बूढ़े लड़के। मैं पुराने फेल्थम हाउस (Feltham House) बालसुधारगृह वाला (Borstalian) हूॅ। अच्छा तुम **खाना** चाहते हो, एह? मैं भी– मैं भी। अक्सर! परंतु ये **उतना** आसान नहीं है; तुम जानते हो, छोकरे (Johnnies) इसके लिये हमसे काम करा लेते हैं। स्तोत्र, प्रार्थनायें, और तब पुराने सुन्दर पत्थरों का ढ़ेर (लगाने) या लकड़ी काटने या फाड़ने का।''

जैसे ही वे छोटे पार्क के पार चले, शाम की छायायें, नौजवान जोड़ों का, जो पेड़ों के बीच छिपकर उत्साहपूर्वक चहलकदमी करते थे, निजता की ओर ले जाने वाला स्वागत करते हुए लंबी हो गईं। मिनटों पहले, दुकानें रात भर के लिये बंद हो चुकीं थीं, और अब क्योंकि आकृतियॉ हमेशा के लिये अचलता में जम जाती हैं, कुरूप (grotesque) और विचित्र नर और मादा पुतले (manikins), अपने कपड़े दिखाने के लिये छोड़ दिये गये थे। सड़क के ठीक नीचे, मुक्तिसेना (Salvation Army) के मुख्यालयों पर रोशनियॉ जल रहीं थीं। कहीं दूर से, एक भारी नगाड़े को, कुशलता की तुलना में अधिक ताकत के साथ पीटे जाने की, बम्म बम्म बम्म हुई। शीघ्र ही, वहॉ तेज चलते (marching) पैरों की आवाज आई और नगाड़े का पीटा जाना तेज से, और तेज होता चला गया।

सभी गहरी नीली सर्ज को पहिने हुए आदमियों और औरतों का एक समूह, कोने के आसपास आया। आदमी, चोटीदार टोपियों (peaked caps) के साथ, और औरतें, पुराने फैशन के ठोड़ी के नीचे

फीते से बांधे जाने वाले टोपों (poke bonnets) के साथ। अब मुख्य सड़क पर, बैंड, जिसके परावर्तन सड़क के लैपों के अंतर्गत, पहले चटकदार रहे थे, सक्रिय हुआ। बिगुल वाले ने अपनी अदनी सी छाती को फुलाया और अपनी तुरही (cornet) में होकर सांस का एक जोरदार धमाका किया। नगाड़े बजाने वाले ने, प्रयास के साथ, पास के बड़े नगाड़े को बजाया, जबकि मुक्ति कन्याओं में से एक ने, बहतर होने के लिये नहीं, अपने मजीरों को टकराया, मानो कि यहॉ के बाद, उसका स्थान इस पर ही निर्भर करता था।

वे पार्क के गेट के ठीक सामने रुके और ध्वजवाहक ने, एक प्रसन्न आह के साथ, लाठी का निचला सिरा जमीन पर रखा। पुराने अकोर्डियन (accordion) वाली महिला, जैसे ही उसने स्तोत्र की प्रथम कड़ियों (मुखड़े) को खोला, अपनी फलांग (आलाप) (stride) में गई। ''ला–डे–डा–डा, ला–डे–डा–डा, ब्रुम ब्रुम ब्रुम,'' कुटिल ऑखों वाला स्लेटी बूढ़ा आदमी थरथराया। मुक्तिसेना के आदमियों और औरतों के छोटे बैंड ने एक वृत बनाया, और उनके कैप्टन ने अपने चश्मे को समायोजित किया और आशापूर्वक, भीड़ के इकठ्ठे करने की प्रतीक्षा की। पैदल पथ के किनारे के साथसाथ, स्वयंसेवी कार्यकर्त्ताओं ने *वार क्राई (War Cry)* की प्रतियॉ प्रसारित कीं, जबकि मुक्तिसेना की दूसरी लड़कियॉ, अपनी गुल्लकों को ऊर्जा के साथ हिलाते हुए, एक सार्वजनिक घर में घुसीं। पार्क की बेंच के ऊपर, दो आदमियों–अब तीसरा आकर उसमें शामिल हुआ, ने कार्यवाहियों को, रुचि के साथ ध्यान से देखा।

''आप अपने पापों को स्वीकार करना चाहते हैं, यदि आप दोहरी मदद चाहते हैं'', नवआगंतुक ने कहा।

''पाप? मेरे पास एक भी नहीं है!'' कुटिल ऑखों वाले आदमी ने कहा।

''भेंगा (Aincha) ?'' पहले ने कहा। ''तो अच्छा हो, आप जल्दी ही कुछ खोज लें। परिष्कृत पियक्कड़ ठीक से आगे बढ़ जाता है। आप उसे नहीं पा सकते– वह मेरा है। मैं तुम्हें बताऊॅ, तुम अच्छी पत्नी पीटने वाले बनो।

''मेरी कोई पत्नी नहीं है, **उस** ट्रक के साथ मुझे कुछ नहीं करना है! कुटिल ऑखों वाले आदमी ने कहा।

''ईश्वर तुम्हें आशीष दे, जनाब,'' दूसरे ने बेरुखी में खर्राटे लिये, आप एक पत्नी को खोज सकते हो, क्या तुम नहीं कर सकते? बताओ कि वह कैसे भाग गई, क्योंकि आपने धमकी दी। फिर भी, आप को जोर से कहना है!''

''क्या आप लोग भगवान में विश्वास करते हो?'' पुराने बालसुधार गृह वाले ने, जैसे ही उसने अपनी आलस भरी नजर मुक्तिसेना के समूह की ओर घुमाई, कहा।

'ईश्वर?' कुटिल ऑखों वाले आदमी ने पूछा। ''नहीं ईश्वर! न ही औरतों और न हीं भगवानों के लिये कभी समय नहीं मिला!'' वह मुड़ा और उसने सीट के पीछे की ओर तिरिस्कारपूर्वक थूका।

''आप ईश्वर में रुचि कैसे लेने लगे? पुराने बालसुधार गृह के नवागंतुक ने पूछा। ''मैं जानता था, आप पुराने हैं, शीघ्र ही मैंने आपको देखा।

''किसी को, अपना विश्वास, **किसी चीज** में रखना पड़ता है'' पुराने बालसुधार गृह वाले ने धीमे से जबाव दिया, ''किसी की समझ को ठीक बनाये रखने के लिये–जैसा कि ये है। आजकल तमाम लोग कहते हैं कि ईश्वर मर गया है। मैं नहीं जानता कि किस पर विश्वास किया जाये।'

संगीत के अचानक विस्फोट ने उन्हें पार्क के गेट की ओर देखने को बाध्य किया। स्तोत्र अभी खत्म ही हुआ था, और अब, कैप्टन का ध्यानाकर्षण करने के लिए, बैण्ड अधिक तेजी से बज रहा था। अपने आसपास देखते हुए, दूसरों से अलग कुछ कदम चलते हुए, उसने जोर से कहा, ''भगवान मरा नहीं है, हम भगवान के दूसरे आगमन के लिए तैयार हों, हम स्वर्णयुग के लिए तैयार हो जायें, जो

हमारे इतना करीब है परंतु वह कड़ी मेहनत और पीड़ा से जानने में आयेगा। हमें **सत्य** जानने दें।''

''उसके लिए एकदम ठीक है,'' कुटिल ऑखों वाले आदमी ने निश्चितता के स्वरों में कहा। वे भूख के विषय में नहीं जानते, तुम कभी दरवाजों के आगे और बैंचों के नीचे नहीं सोए हो और किसी सिपाही को आते हुए और ये कहते हुए नहीं पाया है, ''हटो, वहॉ से हटो, हटो।''

''तुम लोग मुझे डर दिखाते हो'' पुराने वालसुधार गृह वाले ने कहा, ''ध्यान रखो कि हम कुत्तों का अभिनय कर रहे हैं – इससे पहले कि हम अपना खाना पायें, हमको कुछ चालें चलनी चाहिए।''

अपने कंधों को हिलाते हुए और दूसरे दो आदमियों की ओर हॉ में सिर हिलाते हुए, पुराने बालसुधार गृह का स्नातक, लचककर चलते हुए, पार्क के दरवाजों की ओर आगे बढ़ा। शीघ्र ही, वह लापरवाह विश्व के लिए, जोर से अपने पापों को स्वीकार करते हुए, मुक्ति समूह के बीच में था।

केयरटेकर के अपार्टमेन्ट की खिड़की से कार्यवाही को देखती हुई, एक मोटी बूढ़ी औरत ने संदेहपूर्वक अपने सिर को हिलाया। ''मैं नहीं जानती, मैं बिलकुल नहीं जानती,'' उसने अपनी भूरी बिल्ली के प्रति बड़बड़ाया। ''वे उत्तर जैसे नहीं लगते; मैं कामना करती हूॅ कि कोई हमें इस सबका **सत्य** बतायेगा।''

* * * * * * *

टीन की छत वाले मिशन की छोटी झोपड़ियों में खुले में की गई प्रार्थनासभा के समूहों में, और बड़े कैथेड्रलों में ''कपडे'' के आदमी, भगवान के दूसरे आगमन का उपदेश दे रहे थे। उनमें से अनेक को तनिक भी यह विचार नहीं था कि ये दूसरा आगमन नहीं, परंतु अनेक में से केवल एक था।

दूर के स्थान में, एक भयानक और नीरस रेगिस्तान में, उजलती हुई रेत के परे, जहॉ पश्चिम अभी भी पूर्व नहीं था, परंतु पूर्व ने पश्चिम के बंधनों को पूरी तरह छोड़ा नहीं था, एक नर शिशु, अपना अंगूठा गुड़गुड़ाते और चूसते हुए, अपनी पीठ पर आराम कर रहा था। एक शिशु, जो आदमियों के शीघ्र ही होने वाले नेता का शिष्य होने वाला था। फिर भी, दूसरे शहर में, जहॉ पूर्व, पश्चिम से मिलता है, और उसके कारण दोनों बरबाद हो जाते हैं, एक दो वर्षीय नर शिशु ने एक पुरानी पुस्तक के पीले पन्नों में दृढ़तापूर्वक अपनी उंगलियॉ चलाईं। अजीब लेखन पर, गोल ऑखों से घूरते हुए, शायद तब भी, वह अवचेतन में जानता था कि वह भी नए शिष्यों में से एक बनने वाला था।

पूर्व में, काफी दूर–पुराने तीन विद्वानों जैसे–बूढ़े ज्योतिषियों के एक छोटे समूह ने, नक्षत्रों के ऊपर विचार किया और जो उन्होंने देखा, उस पर आश्चर्य किया। ''यहॉ'' सबसे अधिक बूढ़े ने, एक गांठदार उंगली से एक चार्ट की ओर इशारा करते हुए कहा, ''सूर्य, चन्द्र, और गुरू, पुष्य नक्षत्र के अंतर्गत, जो तब कर्क की राशि होगी, एक ही राशि में होंगे। ये शायद पूर्णिमा के बाद द्वितीया या तृतीया तिथि होगी।'' गंभीरतापूर्वक, उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा, और अपने आंकड़ों को दुबारा और फिर दुबारा जॉच करने के लिए मुड़े। पुष्टि के लिए, अपेक्षित को प्राप्त करते हुए, उन्होंने जिम्मेदार व्यक्तियों को, संदेशवाहकों को अंदर बुलाया–

पूरे इतिहास में, द्वितीय आगमन की सूचनायें रही हैं। वास्तव में, आने वाला कोई, अस्तित्व के इस चक्र में, दसवां आने वाला होगा!

इस विश्व के विस्तृत देशों में, हमेशा अपने पड़ौसी से एक ऊपर होने के लिये, झगड़ते हुए, कहासुनी करते हुए, छलते हुए, लोग लापरवाही से अपने लौकिक व्यवसायों के लिए गए–इस बात से एकदम वेखबर कि बहुत दूर नहीं, शीघ्र ही पैदा होने वाले भाग्य के नेता के पहले और दूसरे सहायक, दो बच्चों ने, अपने पालनों में किलकारी भरी है और वे गुनगुनाए हैं।

पूर्व के विद्वान लोगों ने, अपरिपक्व पश्चिम को भलीभांति जानते हुए, अपने फरमान दिए कि पश्चिमी लोगों को, इन घटनाओं के दिनाकों और स्थानों को नहीं बताया जाए। क्योंकि यदि सूचना फैल

गई होती, समाचार जगत के धर्मांध लोगों के पागल समूह, उपहास करने, मना करने और गलत सूचनायें देने के लिये, जेट के द्वारा धकेले जाने वाले पंखों के ऊपर विश्व भर में धावा बोल देते। विलाप करते हुए नाट्य लेखक और अनुशासनहीन टेलीविजन के बेड़ों ने, जहॉ कहीं भी वे कदम रखते, हताशा और हानि लाते हुए, पवित्र स्थानों पर अतिक्रमण कर दिया होता। परंतु केवल विशेष जानकारी वाले, वे जानते हैं कि ये पवित्र स्थान कहॉ हैं। अच्छे समय में, कुछ वर्षों में, इन चीजों के सम्बंध में, विश्व कुछ और अधिक सुनेगा और तबतक ये जवान पर्याप्त रूप से संरक्षित किए जायेंगे। ये जवान, विनाश के युग, कलि के इस चक्र के अंत में, अच्छे समयों में, एक प्रखर नेता के अंतर्गत, स्वर्ण युग में मार्ग प्रदर्शित करेंगे।

* * * * * * *

अनेक लोग एकदम गलत विचार रखते हैं कि ये विश्व अभी हाल ही में आबाद हुआ था और इतिहास पूरा है। ये सही होने से काफी दूर है।

यहॉ पृथ्वी पर लाखों वर्षों से अनेक सभ्यतायें रहीं हैं। यह पृथ्वी एक स्कूल भवन की भांति है, जिसमें विभिन्न कक्षायें आती हैं। कक्षाओं के मामले की भांति, कोई अपवादरूप से अच्छा हो सकता है, दूसरा अपवादरूप से बुरा।

शायद यही चीज शराबों के बारे में घटित होती है, जहॉ अंगूरों की कुछ शराबें विशेषरूप से पुरुस्कृत होती हैं। पृथ्वी की फसल, जो वास्तव में, मानव हैं, के मामले में, भले से व्यवस्थित चक्र हैं। उदाहरण के लिए : हिन्दू विश्वास करते हैं कि विश्व का प्रत्येक काल चार वर्गों या चरणों में, या चक्रों में विभाजित है, जिनमें से प्रत्येक आठ लाख चौसठ हजार वर्षों का है। 8,64,000 वर्षों का पहला चक्र बहुत अच्छा है, लोग प्रयत्न करते हैं, लोगों का एक दूसरे में और मानव जाति के आवश्यक भलेपन में विश्वास होता है। वे मदद करने का प्रयास करते हैं और कोई युद्ध नहीं होते, युद्ध के सम्बंध में कोई अफवाहें भी नहीं होतीं। परंतु खरा वरदान, कोई अच्छी चीज नहीं होती क्योंकि, लोग ''जमते जाते हैं।'' इसका एक उदाहरण भारत, चीन और मिस्र की महान सभ्यताओं में पाया जा सकता है; वास्तव में, ये महान सभ्यतायें थीं, परंतु अत्यधिक शक्ति, उपयुक्त विरोध पक्ष और प्रतियोगिता में पिछड़ने के माध्यम से सभ्यतायें अपभ्रष्ट (degenerate) हो गईं। कोई, रोम के अनेक वर्षों पहले के इतिहास में भी यही चीज देख सकता है।

दूसरा चक्र वह है, जिसमें लोग, या विश्व के राजा, महसूस करते हैं, कि उन्हें 'ईडन' में एक 'सांप' प्रविष्ट कराना है, और इसीलिए दूसरे चक्र में कुछ कठिनाइयॉ और विवाद होते हैं, ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि लोग, अपने लिये कितना सोच सकते हैं और विरोध को काबू में कर सकते हैं।

संभवतः दूसरे चक्र की समाप्ति पर, ''स्कूल, उनकी सूचना देता है,'' जिन्होंने उस विशेष कक्षा में भाग लिया था, और उनकी स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं मानी जाती है और इसलिए, तीसरी कक्षा या 8,64,000 वर्ष का समय, जो तब प्रारंभ हो रहा होता है, कुछ थोड़ा अधिक गंभीर होता है। लोगों में युद्ध होते हैं, वे दूसरों को फतह करने के लिए बाहर निकलते हैं, परंतु फिर भी, उनके, जो इस चक्र में उपस्थित हों, विशेष युद्ध, दुखःमय और बर्बर मामले नहीं होते। तीसरे चक्र में लोग धोखेबाज नहीं थे, निश्चितरूप से उन्होंने युद्ध लड़े, परंतु ये एक खेल की तरह अधिक था, वैसे ही जैसे कि दो छोटे बच्चे अपने मुक्कों के साथ व्यस्त हो जाते हैं और हरेक दूसरे के नाकनक्श को बिगाड़ने का प्रयत्न करता है, परंतु ऐसा कहने का अर्थ यह नहीं है कि उनमें से एक, दूसरे को मारने का प्रयास करेगा– वह केवल थोड़े से रचनात्मक परिवर्तन करेगा! तथापि, युद्ध संक्रामक होते हैं और ये पाया गया कि पीठ पर थोड़े से न्यायिक घातों के लागू करने, और मिलीजुली धोखेबाजी के द्वारा, वास्तव में, कोई प्रारंभ होने से

पहले ही युद्ध जीत सकता है।

तीसरे चक्र में चीजें, बद से एकदम बदतर हो जाती हैं और हाथों से एकदम बाहर निकल जाती हैं। ये उस जंगली आग की भांति है, जो समय रहते नहीं रोकी गई। यदि कोई मूर्ख, जलती हुई सिगरेट के ठूंठों को डालता है, और उपज को आग लगा देता है, तो एक सावधान व्यक्ति, इस आग को शीघ्र ही बुझा सकता है। परंतु यदि आग पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया, तो इससे पहले कि आग पर काबू पाया जा सके, ये वास्तव में, अपनी पकड़ बना लेगी, और हाथ से बाहर निकल जाएगी, और तब अनेक जीवन नष्ट हो जायेंगे, काफी संपत्ति नष्ट हो जायेगी। जीवन वैसा ही है; यदि बुराई को बढ़ने और निर्बाधरूप से फलने फूलने दिया जाए, तो ये बड़ी, और बड़ी, होती जायेगी, और प्रबल से प्रबलतर होती जाएगी, और जंगली खरपतबारों की तरह से, एक सुंदर बढते हुए फूल के जीवन को रोकती हुई, बुराई उस मंद अंतःप्रेरणा, जो भले आदमी के पास मूलतः थी, को कुचल देगी।

तीसरे चक्र के अंत में, परिस्थितियॉ हाथ से एकदम बाहर थीं। कोई कह सकता है कि कक्षा में गुंडा तत्व, जो पृथ्वी के देश थे, शिक्षकों के विरुद्ध खड़े हो गए, और उन्हें गालियां दीं और उनके आदेशों को नहीं माना। ऐसे चौथा चक्र अस्तित्व में आया, चौथा चक्र, जो (हिन्दुओं में) कलियुग के रूप में ज्ञात है।

कलि का युग वह है, जिसमें लोग पीड़ा झेलते हैं। यदि आप चाहें, आप इसको, ऐसे युग के रूप में सोच सकते हैं, जब आदमी और औरतें युद्ध की लपटों में प्रताड़ित किये जाते हैं, ताकि उनको शुद्ध किया जा सके, और ताकि अगले और अच्छे चक्र के लिए तैयार करने के लिए तलछट को जलाया जा सके, चूंकि जीवन चलता जाता है, और चलता जाता है, लोग उन्नयन के स्वाभाविक पथ पर भलीभांति आगे बढ़ते हैं, वे अधिक अनुभव पाते हैं, और यदि वे उन्नयन के एक चरण में, अपने जीवन को सफल नहीं बनाते तो वे स्कूल के उस बच्चे की तरह से, जो सत्रान्त की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो सकता, अक्सर उसे अगली कक्षा में उन्नत होने की बजाए, उसी कक्षा में, या उसी श्रेणी में वापस जाना होता है, उसी चरण में वापस आते हैं।

''तुम–सदा के लिए (You-for ever)!''में, जो निश्चितरूप से थोड़ी आसपास गई है, मैंने उस पुस्तक के पेज नं.109 पर यहूदियों (Jews) का हवाला दिया था। मैंने कहा था, ''यहूदी लोग, एक ऐसी प्रजाति हैं, जो पिछले अस्तित्व में, बिलकुल भी उन्नति नहीं कर सकी थी।'' इसने विश्वभर में, यहूदी पाठकों के साथ, कुछ अत्यंत मित्रतापूर्ण व्यवहार पैदा किया है और निश्चितरूप से तेल अवीव (Tel Aviv) की कुछ विशेष विदुषी महिलाओं ने मुझे यहूदियों के सम्बंध में अधिक विस्तार से बताने को कहा है। इस निवेदन को, अर्जेन्टीना, मैक्सिको, आस्ट्रेलिया और जर्मनी के लोगों द्वारा समर्थन किया गया है। इसलिए, हम अधिक गहराई के साथ ''यहूदी प्रश्न के ऊपर'' चलें। इस स्थिति में, क्या मैं कह सकता हूॅ कि मेरे काफी बड़ी संख्या में मित्र हैं, जो यहूदी हैं और मैं उनकी गंभीरता के साथ प्रशंसा करता हूॅ, क्योंकि वे पुरानी, पुरानी प्रजाति हैं, जिसके पास ज्ञान है, जो कि उन कम उपहार प्राप्त लोगों की ईर्ष्या है।

सबसे पहले हम पूछ सकते हैं, ''यहूदी क्या हैं?'' सामान्य विचार, एक पूर्णतः गलत अवधारणा है, क्योंकि अपने वर्तमान स्वरूप में, ''यहूदी'' एक अनुपयुक्त नाम (misnomer) है। वास्तव में, ''यहूदी'' शब्द, बहुत लंबे समय तक उपयोग में नहीं रहा है।

यदि आप किसी औसत व्यक्ति से पूछें कि यहूदियों का पिता कौन था, आपको निस्संदेह रूप से बताया जाएगा, ''क्यों, वास्तव में, अब्राहिम (Abraham)!'' परंतु चूंकि इतिहास निष्कर्षात्मक रूप से (conclusively) सिद्ध करता है कि ये ठीक वैसा नहीं है, क्योंकि, शब्दों के वास्तविक अर्थ में, अब्राहिम यहूदी (Jew) नहीं था!

यदि आप अपने पुरातन इतिहास को, या तो किसी सार्वजनिक पुस्तकालय में जाकर, या, अधिक

सुभीते से, आकाशिक अभिलेख को पाते हुए, पढ़ें तो आपको पता चलेगा कि अब्राहिम, वास्तव में, उस स्थान का मूल निवासी था, जिसे चाल्डीस का उर (Ur of the Chaldees) कहा जाता है। आजकल अनेक स्थान, दो नामों वाले होते हैं, इसलिए यदि यह आपको मदद करेगा, उर को भी, उर कास्दिम (Ur Kasdim) नाम से जाना जाता था, जो बेबीलोनिया (Babylonia) में था। ये हमको इस दिलचस्प बिन्दु की ओर लाता है कि अब्राहिम, एक यहूदी होने के एकदम परे, बेबीलोनिया का निवासी था, और हिब्रू (Hebrew) भाषा में, उसके असली नाम का कोई संगत नाम (correspoding name) या उसका कोई प्रतिरूप (counterpart) नहीं था। अब्राहिम का मूलनाम अबराम (Abram) था।

अब्राहिम, ईसा (Christ) के जन्म से 2300 वर्ष पहले, उस समय जबकि ''यहूदी (Jew)'' शब्द को सोचा तक भी नहीं गया था, जीवित था, परंतु अब्राहिम के लगभग 1800 वर्ष बाद, जब अब्राहिम अपने ''उचित पुरुस्कार (just reward) '' के लिए गया था, ''यहूदी'' शब्द उन लोगों को, जो जूडा के साम्राज्य में रहते थे, और जो फिलिस्तीन के दक्षिण में था, संदर्भित करने के लिए था।

आप में से वे, जो पर्याप्तरूप से दिलचस्पी रखते हैं, अपनी बाइबिल में, किंग्स द्वितीय.16.6 (Kings II.16.6) को देख सकते हैं। यहॉ आप क्राइस्ट के छै सौ वर्ष पूर्व लिखे गए शब्द पायेंगे, और यहूदी (Jew) के लिये उन दिनों में जहूदी (Jahudi) शब्द था।

बापस अपनी बाइबल की ओर, इस बार एस्टर II.5. (Ester II.5.) की ओर आयें। यहॉ आप पायेंगे कि पहली बार यहूदी (Jew) उल्लेखित किया गया है, और यह भी याद रखें कि, ईस्टर की पुस्तक, अब्राहिम की मृत्यु के बाद तक, अर्थात्, ईसा की प्रथम शताब्दी में, कुछ 2400 वर्षों तक, नहीं लिखी गई थी। इसलिए–हम पाते हैं कि यहूदी वह है, जिसे हम आजकल ''ज्यू (Jew)'' कहते हैं।

प्रत्येक चक्र में बारह ''मुक्तिदाता (Saviours)'' या ''मसीहा (Messiahs)'' या ''विश्वनायक (World Leaders)'' होते रहे हैं। इसलिए जब हम ''द्वितीय आगमन (Second Coming)" को संदर्भित करते हैं, हम, निश्चय ही, समयों से पीछे हैं; हम अब्राहिम (Abraham), मौसिस (Moses), बुद्ध (Buddha), ईसा (Christ) और अनेक दूसरों को संदर्भित कर सकते हैं, परंतु मुख्य बिन्दु यह है कि विश्व–अस्तित्व के प्रत्येक चक्र में, भिन्न राशिचिन्ह का विश्वनेता होना ही है। राशिचक्र में बारह राशियॉ हैं, और पहले एक राशि में एक नेता आता है, तब दूसरी में, तब और दूसरी में, जबतक कि कुल मिलाकर बारह नेता न हो जायें। कलि के इस विशेष चक्र में, अब हम ग्यारहवें की ओर पहुॅच रहे हैं, और बाद में–इस वास्तविक युग के समाप्त होने के ठीक पहले एक और होगा और हम वास्तव में, स्वर्णयुग में होंगे।

स्वाभाविक रूप से, प्रत्येक विश्वनायक के साथ, कुछ ऐसे लोग होने ही हैं, जो उसका समर्थन कर सकें–शिष्य, यदि आप कहना चाहें, या सहायक, या मंत्री, आप उन्हें जो चाहें कहें। परंतु ऐसे आदमियों को पैदा होना ही है, जो विशेषरूप से, विश्व की सेवाओं के लिए समर्पित हो सकें।

1941 में पहला शिष्य पैदा हुआ था, और तब से अनेक दूसरे पैदा हो चुके हैं। वास्तविक ''उद्धारक'' 1985 के प्रारंभ में पैदा होगा और मध्यावधि में शिष्य लोग मार्ग प्रशस्त कर रहे होंगे।

''उद्धारक (Saviour)'' या ''विश्वनायक (World Leader)''–जिसे भी आप वरीयता दें–की शिक्षा और प्रशिक्षण विशेष प्रकार का होगा, और 2005 के वर्ष में, जब वह बीस साल की आयु का होगा, वह अनीश्वरवादी लोगों, जो भगवान, उद्धारकों, आदि, आदि में विश्वास नहीं रखते, के विनाश के लिए बहुत कुछ करेगा।

फिर, परकाया प्रवेश का एक प्रकरण होगा। यदि आप में से वे, जो बाइबिल को जानते हैं, इसे अच्छी तरह से, खुले दिमाग से पढ़ेंगे, तब आप पायेंगे कि जीसस का शरीर, ''ईश्वर की आत्मा– ईसा'' के द्वारा ले लिया गया था। बहुत कुछ उसी तरीके से, नये विश्वनायक का शरीर, वास्तव में, एक अत्यंत उच्च व्यक्तित्व के द्वारा धारण किया जाएगा और उसके बाद, कुछ वर्षों की अवधि में, उल्लेखनीय

घटनायें होंगी, और विश्व को उन आवश्यक कदमों के साथ–साथ दिशा मिलेगी, जो उसे नए चक्र के प्रारंभ के लिए तैयार करेंगे।

विश्व, कुछ दो हजार वर्षों के लिए, नवीन नायक के द्वारा स्थापित किए गए धर्म के विचारों का पालन करते हुए प्रगति करेगा, परंतु उन दो हजार वर्षों के अंत में, राशिचक्र के चक्रमण के भार को पूरा करता हुआ, एक और दूसरा नायक–चक्र का बारहवॉ, उभरेगा। हालात सुधरेंगे, और इसप्रकार धीमे–धीमे, उचित समय में लोगों का, एक नए युग की ओर, जहॉ उनमें, जो वर्तमान में हैं, उनसे अलग, भिन्न क्षमतायें होंगी, नेतृत्व किया जायेगा। उनमें, जैसी कि तथाकथित गलत पुकारे जाने वाले, बाबेल की मीनार (Tower of Babel), जिसमें विशिष्ट शक्तियों के दुरुपयोग के माध्यम से मानवजाति ने दूरानुभूति की उन क्षमताओं को, कुछ समय के लिए, खो दिया था, के पहले थी, अपरोक्ष ज्ञान (clairvoyance), और दूरानुभूति (telepathy) होंगी। पूरी कहानी बाइबिल में दी गई है, परंतु ये एक कहानी के रूप में है। वास्तव में, मनुष्य अपने साथी मनुष्यों और पशुओं के साथ भी, संप्रेषण के लिए सक्षम था, परंतु पशुओं के साथ धोखाधड़ी के कारण, विश्व की मानवजाति को दूरानुभूति के संप्रेषणों से वंचित कर दिया गया और इसलिए बातचीत करने का प्रयास करते हुए, जिसमें स्थानीय बोलियां थीं, और जो समय के अंतराल में विश्व की भाषायें बन गईं, लोगों में एक भरीपूरी द्विविधा थी।

इस विश्व को अब एक ट्रेन के रूप में समझा जा सकता है। ट्रेन, दृश्यों के विभिन्न चरणों में होकर चलती रही है, यह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित देशों में, जो चरण–1 के संगत हो सकते हैं, देश, जिनमें सुन्दर परिदृश्य और सुशील सहयात्री थे, सुखदरूप से चलती रही है। परंतु तब हम चरण–2 में आते हैं, जब पूरे यात्री बदल जाते हैं, और ये नया आने वाला समूह, उतना अधिक मित्रवत् नहीं था, और न ही यात्रा उतनी सुखद थी, क्योंकि रेलपथ भी विषम (uneven) और अनेक आवाजें करते हुए खटकों (clattering switchpoints) के साथ, और निराश करने वाले उदास क्षेत्र में होकर था, जहॉ वातावरण में, रसायनों के साथ, विभिन्न कारखानों का धुंआ उगला जा रहा था, यात्रा जारी रही। यहॉ यात्री आपस में झगड़ा कर रहे थे और लगभग घूंसेबाजी पर आते जा रहे थे, परंतु सबसे खराब अभी आना था। तीसरे चरण में यात्री फिर बदले, और गुण्डों बदमाशों का एक समूह ट्रेन पर चढ़ा, बदमाश, जिन्होंने दूसरे यात्रियों को लूटने का प्रयास किया, वहॉ काफी कुछ घायल हुए, काफी दुखदायी प्रतिक्रियाऐं हुई। ट्रेन भी पहाड़ों की तंग घाटी में होकर, जहॉ भूस्खलन ने यात्रा को कष्टदायक बना दिया था, जा रही थी। वहॉ पूरे समय प्रतिकूल शोर और दुखी यात्रियों के लगातार झगड़े थे।

फिर से ट्रेन रुकी और नये यात्री आए। इसबार परिस्थितियॉ और भी अधिक खराब थीं, नए यात्री, फिटिंग्स को खराब करते हुए, प्रताड़ित करते हुए लूटते हुए, और उन सभी गतिविधियों, जिन्हें शालीन व्यक्ति घटिया समझते हैं, में शामिल होते हुए, अपनी ट्रेन को लगभग बरबाद कर रहे थे।

लगातार बढ़ती हुई कठिनाइयों के क्षेत्र में होकर, खराब बिछाई गई पटरियों और अनेक घुमावदार रुकावटों में से होती हुई, ट्रेन और आगे गई। अंत में एक उदास और लंबी सुरंग आई; ट्रेन उसमें प्रविष्ट हुई और वहॉ ट्रेन में, कहीं भी, कोई प्रकाश नहीं दिखाई दिया। यात्री, नेतृत्वहीन विश्व के लोगों की भॉति, अधेंरे में थे। जबतक कि ट्रेन हिचकोले नहीं खाती रही और एकदम अंधकार में, ऐसे अंधकार के साथ, जो कि किसी पहाड़ के केन्द्र में होने पर रास्ते में आता है, उछलती नहीं रही, उदासी, और अधिक उदास और वातावरण और अधिक निराशाजनक होता गया। परंतु अब हमारी ट्रेन, अपने सबसे अंधेरे चरण में है, ये और अधिक काला नहीं हो सकता, इसलिए इसे हल्का होना चाहिए।

चूॅकि ट्रेन बहुत तीव्र गति से जाती है, इसके साथ उजियारा और अधिक उजियारा होता गया, और अंततः, जैसे ही नया युग आने को होता है, ट्रेन पर्वत के बगल से फूट पड़ेगी, निकल पड़ेगी और यात्री नीचे एक सुन्दर और उछलते हुए पानी और शांतिपूर्वक चरते हुए पशुओं के झुण्डों के साथ, सुखद विश्व को देखेंगे। सूर्य चमक रहा होगा, और चूॅकि ट्रेन, हमेशा बदलते हुए यात्रियों के साथ, आगे

और आगे, चलती जाती है, वे पायेंगे कि हालात सुधरते हैं, और अधिक सुधरते जाते हैं, जहॉ आदमी दूसरे के अधिकारों का सम्मान करता है, जहॉ आतंकवाद (terrorism), परपीड़न–रति (sadism) और प्रताड़ना (torture), अब और अधिक नहीं है। परंतु वर्तमान काल में, अभी काफी कुछ किया जाना है, क्योंकि स्वर्णयुग आने से पहले, वहॉ इस विश्व में, अत्यधिक कठिनाइयॉ और पीड़ायें होंगी। भविष्यवाणी की चर्चा, इस पुस्तक के किसी दूसरे अध्याय में की गई है, परंतु यहॉ कुछ कहना, संभवतः अनुचित नहीं होगा।

ज्योतिष की युगों पुरानी कला के अनुसार, इस पृथ्वी पर अनेक दुखमयी घटनायें होने वाली हैं। 1981 के आसपास, वर्षा में कमी के साथसाथ, पृथ्वी की ऊष्मा में भारी मात्रा में, और अनपेक्षित वृद्धि होगी, और इकट्ठा किया जा सकने के पहले ही, फसलें सूखकर तथा फल तथा दूसरे पौधे कुम्हलाकर नष्ट हो जायेंगे। ऊष्मा की ये महान तरंग, चीनियों के द्वारा एक परमाणु बम के गिराए जाने से आसानी से परिणामित हो सकेगी; चीनी लोग, एक सर्वोत्तम बम के विकास करने की जल्दी कर रहे हैं, और वर्तमान में, चीनी लोग, शेष विश्व के लिए बिना विचार वाले पागल कुत्ते हैं, क्योंकि शेष विश्व, उन्हें आभासी एकांतवास में रखता है और वे नहीं जानते कि दूसरी जगह क्या हो रहा है, और ये एक दुखपूर्ण तथ्य है कि, कोई हमेशा उस व्यक्ति से डरता है, जिसे वह नहीं जानता। इसप्रकार चीनी अपने मन की अज्ञात जनभीत (xenophobic) अवस्था में, उस पर कोड़े मारने के लिए तैयार हैं, जिसे वे नहीं समझते।

किसी को यह भी विचार में रखना पड़ सकता है कि ये काफी बुरा था, जब केवल संयुक्त राज्य (अमेरिका) के पास परमाणु बम था, परंतु अब रूसी, फ्रांसीसी, चीनी, और शायद दूसरों के पास भी यह युक्ति है। परिस्थितियॉ, एक खतरनाक दर्रे तक पहुॅच चुकी हैं।

नए नायक के प्रकट होने से पहले, काफी प्रारंभिक कार्य किया जाना है। कुछ लोगों को संकेत दिये जाने हैं कि कब, और कैसे क्या होने जा रहा है। परंतु कुछ दूसरे निश्चित लोगों को, अधिक ज्ञान प्राप्त करने से बहिष्कृत रखा जाना है।

शिष्यों, जो अब पैदा हो चुके हैं और अभी भी हैं परंतु बच्चे हैं, के अतिरिक्त, वहॉ विशेष ज्ञान के साथ, अधिक आयु वाले वे लोग हैं, जिन्हें ऐसी चीजों के सम्बंध में लिखना है, ताकि ज्ञान को विस्तारित किया जायेगा, और जो इस प्रकार से ''पथ बनायेंगे।'' वास्तव में, ये बृद्ध लोग, नवीन आगमन के समय पृथ्वी पर नहीं होंगे, परंतु उन लोगों की तरह, जो बाद में आने वाले हैं, ये अग्रदूत, घृणा और संदेहों को, जो प्रवर्तकों पर हमेशा आते हैं, स्वयं के ऊपर लेते हुए, अपना कार्य पूरा कर चुके होंगे।

लोग उससे डरते हैं, जिसे वे नहीं समझते, और इसलिए यदि ऐसा कहा जाता है कि किसी व्यक्ति ने, अपने शरीरों को किसी दूसरे के साथ बदला है, तब वह व्यक्ति, स्वतः ही अधिक निगरानी का विषय बन जाता है। परंतु यह आवश्यक है कि सार्वजनिक चेतना में लाने के लिए, शरीरों को बदलने की घटनायें हों, ताकि जब नया विश्वनेता आयेगा तो लोग, आत्माओं के परकाया प्रवेश और शरीरों के परिवर्तन के सत्य को स्वीकार करने के लिए सक्षम होंगे। इसप्रकार, वे, जो वर्तमान में, तिरस्कार और उपहास और गलत जानकारी रखने वाले प्रेस की सक्रिय प्रताड़ना से होकर गुजर रहे हैं, समय परिपक्व होने पर पूर्णतः जान जायेंगे कि उनकी पीड़ा और दीनता, तर्कसंगत थी।

अक्सर लोग कहेंगे, ''ओह, परन्तु यदि इन लोगों के पास ऐसी महान शक्तियॉ हैं, तो वे गरीबी में क्यों रहते हैं ? यदि वे वास्तव में, जो वह कहते थे, वही हैं, तो उनके पास, जितना वे चाहते थे, उतना पूरा धन होगा।'' ये पूरी तरह से हास्यास्पद है, क्योंकि एक व्यक्ति, जो भिन्न अवस्थाओं में इस पृथ्वी पर आता है, विश्व के शरीर में, कुछकुछ एक फांस के समान है, और यदि आप के अंदर, आपके अंगूठे में एक फांस लगी हो तो आप दुखी होते हैं और कुलबुलाते हैं और आप इस सम्बंध में तबतक, जबतक कि वह फांस, अंतिम रूप से निकाल नहीं दी जाती, और जबतक कि आप अंतिम रूप से नहीं

पाते कि फांस हटा दी गई है और आप उस फांस के सम्बंध में कोई पसंद भी नहीं रखते, हंगामा करते हैं! उसी तरीके से, लोग जो इस विश्व में आते हैं, और शरीरों को बदलते हैं, और किसी दूसरे के लिए रास्ता तैयार करने का प्रयास करते हैं, वे भी एक प्रकार से फांस के समान हैं, विश्व उन्हें अजीब पाता है, लोग ऐसे किसी अस्तित्व की उपस्थिति में कष्ट में हो सकते हैं। विकास के अपने खुद के पिछड़ेपन को दोषी ठहराने के बजाय, वे हमेशा दोष को दूसरे व्यक्ति के ऊपर डालने का प्रयास करते हैं–'ओह वह नकली है, जैसे ही उसने मुझे छुआ, उसने मुझे एक ऐसी विचित्र सी भावना अनुभव करा दी।

इसलिए, पुराना विश्व, दुखों से भरा हुआ लुढ़कता जाता है, परंतु भोर से पहले, सबसे अधिक काला समय होता है, और जब चीजें अपने सबसे ज्यादा कालेपन में होती हैं, वहॉ एक सुखद विचार होता है, कि भले के लिए कोई भी परिवर्तन हो सकता है। और ये विश्व, तथा इस विश्व के लोग, अपने सबसे अधिक काले समय के बाद, प्रकाश में चलते चले जायेंगे, जब मानवजाति, मानवजाति के प्रति सहनशील होगी, और जब पशु–जगत के छोटे लोग, गलत, डरे हुए और उत्पीड़ित समझे जाने के बजाए, जैसे कि वे वर्तमान में हैं, समझे जायेंगे। इसलिए दो हजार के वर्ष के प्रारंभ के साथ, विश्व में आनंद होंगे और स्वर्ण युग का प्रभात आएगा।

अध्याय दो
अनेक प्रासाद

अकेला था वह, पुराने घुमावदार घर में, दलदल के दिल में अकेला। लंबे सुसज्जित बाग के दूर अंत में, एक शोरयुक्त झरना, पथरीले विस्तार के आरपार चट्टानों के ऊपर से कलैयां मारता हुआ और सीत्कार की आवाज करता हुआ आ रहा था। वह एक गर्म दिन में, भरभराते हुए नाले या बड़ी चट्टानों में से एक के ऊपर टिककर लटकते हुए उग्र झरने के पास चुपचाप खड़े रहने का अभ्यस्त था। इसके साथ–साथ, काफी दूरी पर, हिलती हुई रेलिंगों वाला, लकड़ी का एक छोटा पुल था, जिसके द्वारा उसने अपनी डाक और खरीददारी के लिए, एक छोटी सी बस्ती की ओर अपना रास्ता पार किया।

वह और उसकी पत्नी, ये यहॉ सुखद रहा था। जब उसने मान्यता पाने के लिए चित्रकारी की, और प्रतीक्षा की, उन्होंने साथ–साथ, एक घर बनाने का प्रयास किया था, ''शरीर और आत्मा को एक साथ'' रखने का प्रयास किया था। परंतु, जैसा सामान्य है, उसकी कला को, न तो प्रेस ने समझा–और न समझने का प्रयास किया–और इसलिए, आलोचकों ने, मंदी सी प्रशंसा के साथ उसके कार्य की निंदा की; हमेशा की तरह पहचान उतनी ही दूरी पर थी। और अब, वह इस पुराने, पुराने घर में, उसका मन और मनःस्थिति, बाहर के तूफान के द्वारा मेल खाने वाली खलबली में, अकेला था ।

फूलों की झाड़ी वाली दलदली भूमि के पार, पीली कांटेदार झाड़ी पर कोड़ा मारते हुए, तूफान, उसे शक्तिशाली हवाओं के सामने झुकाते हुए, निरंकुश गुस्से में चीखा। दूरी पर स्थित समुद्र, शक्तिशाली तरंगों के साथ, महान ग्रेनाइट के समुद्रतटों को गड़गड़ाहट से तोड़ते हुए, नसों को झंकारने वाली, एक कलहयुक्त चीख के साथ, पत्थरों को पीछे खींचते हुए, सफेद झागों की मात्रा को उबाल रहा था। एक अकेला मूर्ख मनुष्य, तूफान की पकड़ में शक्तिहीन, असहाय भूमि को धकियाते हुए, पीछे की तरफ उछलकर सिर के बल गिरा।

पुराना घर हिला और घटकों के अनवरत प्रहार के साथ कांपा। बादलों के धब्बे, प्रवेश चाहने वाली प्रेतात्माओं की भॉति, खिड़कियों के द्वारा कोड़े से मारे जाकर, नीचे चलाये गए। सहसा एक ध्वनि की चटचटाहट और टकराने की आवाज, और नालीदार चद्दर का एक शीट, पुल से टकराने के लिये, घूमता हुआ और पुरानी लकड़ी को फाड़ता हुआ, बाग के पार चला गया। कुछ समय के लिए, टूटे हुए सिरे, एक अत्यधिक जोर लगाई हुई सितार की डोरी की भांति कांपते रहे, तब, एक के बाद एक, वे कांपे और औंधे होकर नाले में गिर गए।

घर के अंदर, खलबली से अनजान आदमी ने, उस क्षण को, जब वह बस्ती से लौटा था और अपनी पत्नी को लापता पाया था, बार–बार देखते हुए, आगे–पीछे, आगे–पीछे चहलकदमी की। कटु टिप्पिणी, जिसमें उसने बताया था कि वह एक असफल व्यक्ति था, और वह उसे छोड़कर कहीं दूसरी जगह जा रही थी, को दुबारा पढ़ते हुए, कठोरता से–उसमें सहसा एक विचार आया–वह धीमे से सुधारी हुई, पुरानी मेज की ओर चला और झटके से बीच की दराज को खोला। पीछे कुरेदते हुए, उसने सिगार के डिब्बे को, जिसमें उसने किराया और रहने का खर्च रखा था, बाहर निकाला। अपने द्वारा इसे खोलने से पहले ही वह जानता था कि यह खाली था, धन, उसका **एकमात्र** धन, चला गया था। एक कुर्सी की ओर अपने रास्ते को टटोलते हुए, वह नीचे बैठ गया और अपना सिर अपने हाथों के बीच दबा लिया।

'पहले!' वह फुसफुसाया। ''पहले, ये मेरे साथ पहले भी हो चुका है!'' अपने सिर को उठाते हुए, उसने, एक खिड़की में होकर, जिस के विरुद्ध, बरसात की झड़ी, अपने रास्ते पर जोर देते हुए और गलीचे के ऊपर, एक विस्तारित तालाब में इकट्ठा करते हुए, एक ढीली सी फिट की हुई खिड़की में होकर, एक असुखद जलधारा को पीट रही थी, अनदेखे टकटकी लगाई (stared unseeingly)।'' मैं पहले, यहॉ इस सब के बीच रहा हूँ!'' वह फुसफुसाया। ''क्या मैं **पागल** हो गया हूँ ?'' इस सब के

सम्बंध में, मुझे कैसे मालूम है?'' छज्जों के काफी ऊपर, हवा उपहास में चीखी और पुराने घर को एक अतिरिक्त झटका और डगमगाहट दी।

छोटे दलदली खच्चरों ने, भयानक दीनता में, छोटे से भी शरणस्थल को पाने का प्रयास करते हुए, चुभती ऑखों के बचाव के लिए, अपने सिरों को, पुरातन पत्थर की प्राचीर के विरुद्ध, हवा के प्रति सिमटाकर गठरी बना लिया। हॉल में, काफी दूर, उसे अपने आलस्य से झकझोरता हुआ, टेलीफोन बजा और बजता रहा। उसने, धीमे से, ठनठनाते उपकरण की ओर अपना रास्ता लिया, जिसने, जैसे ही उसने उसे उठाने के लिए अपनी बाहें फैलाईं, अपनी घण्टी का बजना बन्द कर दिया। ''वही, वही,'' वह बेपरवाह दीवारों के बीच फुसफुसाया। **''ये सब पहले भी हो चुका है!''**

* * * * * * *

कठिनता के साथ पॉव घसीटता हुआ, बूढ़ा प्रोफेसर, वर्गाकार आंगन के पार, व्याख्यान हॉल की तरफ, अपने रास्ते पर चला। बर्ष, वास्तव में, कठोर रहे थे। अति विनम्र परिस्थितियों में पैदा हुआ वह, एक 'प्रखर बालक' रहा था, जिसने परिश्रम किया था और इतना कमाया था कि वह स्वयं को कॉलेज में डाल सके। वह लगभग जीवनभर, उन लोगों के विरोध के विरुद्ध, जो उसके नम्रमूल पर नाराज थे, हाथ–पैर मारते हुए, अपने रास्ते पर ऊपर चढ़ता रहा था। अब अपने जीवन की संध्या में, समय का भार, उसके सफेद बालों, धारीदार चेहरे और मंद कदमों में, प्रदर्शित हो रहा था। जैसे ही वह स्नातकों की शुभकामनाओं से अंजान रहते हुए, घसीटता हुआ धीमे–धीमे चला, उसने तमाम अज्ञात पहलुओं पर, विशेषरूप से अपनी विशेषज्ञता, प्राचीन इतिहास पर चिन्तन किया।

पूरी तरह से खोये–खोये प्राध्यापक का आदर्श, वह पहले से ही खुले हुए दरवाजे की मूठ (knob) को टटोलने लगा, और उसे न पाते हुए, फुसफुसाते हुए दूसरी ओर मुड़ गया, ''प्रिय, प्रिय!, अत्यंत अनजान, सर्वाधिक अजीब–यहॉ एक दरवाजा हुआ करता था। मुझे एक गलत इमारत में होना चाहिए।'' एक समझदार विद्यार्थी, एक वह, जो उस बूढ़े व्यक्ति के प्रखर व्याखानों के द्वारा लाभान्वित हुआ था, ने उसकी बांह पकड़ी और धीमे से उसे घुमा दिया। ''यहॉ, श्रीमान्,'' उसने कहा। ''मैंने आपके लिए दरवाजा खोल दिया है। अंदर आयें, यहॉ।'' प्राध्यापक, आभारपूर्वक घूमा और (उसने) अपने धन्यवादों को फुसफुसाया। व्याख्यान कक्ष में प्रवेश करते हुए, वह एक बदला हुआ आदमी बन गया। **यहॉ** उसका जीवन था, यहॉ उसने प्राचीन इतिहास के ऊपर व्याख्यान दिया।

एक नवीन जोश भरे आदमी की भांति चलते हुए, उसने व्याख्यान मंच को पार किया और एकत्रित स्नातकों पर शुभेच्छा के साथ मुस्कराया। वे उस पर आदरसहित मुस्कराये, क्योंकि यद्यपि उन्होंने कई बार उसके भुलक्कड़पन का मजाक बनाया था, परंतु फिर भी, वे उस व्याख्याता, जो उन्हें अपनी शक्तियों भर, भरपूर मदद करने का इतना इच्छुक था, के लिए असली पसन्द रखते थे। अपने खुद के संघर्षों को याद करते हुए, उसे अनुतीर्ण करते हुए की बजाए, जैसा कि दूसरे प्राध्यापकों के साथ अक्सर होता था, उसने कठिनाइयों को दूर करने में, छात्र की **मदद करने में** आनंद लिया।

अपने आसपास यह देखने के लिये कि उसकी कक्षा पूरी थी और सभी तैयार थे, उसने कहा, ''हम इतिहास के महान रहस्यों में से एक, सुमेरियन सभ्यता के बारे में अपनी चर्चा को जारी रखने जा रहे हैं। एक शक्तिशाली सभ्यता थी, जो एक अत्यधिक रहस्यात्मक ढंग से प्रकट होती दिखाई देती है और उसी तरह से रहस्यमय ढंग से गायब हो गई। हमारे पास लुभावने खण्ड हैं, परंतु कोई स्पष्ट चित्र नहीं। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि ईसा से तीन हजार पॉच सौ वर्ष पहले सुमेरियन लोग सुन्दर रूप से लिखी गईं हस्तलिपियों को तैयार कर रहे थे। हमारे पास उनके विच्छिन्न खण्ड हैं। हमेशा विच्छिन्न खण्ड (fragments), और इससे अधिक कुछ नहीं। हम ये भी जानते हैं कि सुमेरियन लोगों के पास संगीत की एक प्रणाली थी, जो पुराने या नये विश्वों के, संगीत के संकेतों की किसी भी दूसरी प्रणाली से अलग थी। मिट्टी का पट्टा खोजा जा चुका है, जो वैज्ञानिक तरीकों से, कुछ तीन हजार वर्ष

पहले के काल को इंगित करता है। पट्टे के ऊपर, संगीत के संकेत खुदे हैं, जो ये मानने के लिए हमारा नेतृत्व करते हैं कि ये एक स्तोत्र था, परंतु इसने संगीतमय अनुवाद को चिनौती दी है।''

बूढ़ा आदमी रुका, उसकी ऑखें चौड़ी खुलीं, मानो कि वह व्यक्ति की सामान्य दृष्टि के परे कुछ देख रहा हो। वह एक मिनिट के लिए, अनंत में घूरता हुआ, इसी प्रकार खड़ा रहा, तब, एक दबी हुई आह के साथ, वह फर्श पर गिर पड़ा। भौंचक्के आश्चर्य ने, एक क्षण के लिए, कक्षा को गतिहीन बना दिया तब दो विद्यार्थी, दौड़ते हुए उसकी बगल से आए, जबकि दूसरे एक ने, चिकित्सीय सहायता खोजने की जल्दी की।

जैसे ही दो शिविका–वाहकों (stretcher-bearers) ने उस अचेत आदमी को सावधानीपूर्वक उठाया, खुले हुए स्ट्रेचर पर उस आदमी को रखा, और उसे प्रतीक्षारत रोगीवाहिका (ambulance) की ओर ले गए, पार्श्व से, एक निःशब्द सभा, सम्मानपूर्वक खड़ी हुई। विभागाध्यक्ष, जिसे बुला लिया गया था, हड़बड़ी में दिखाई दिया और उसने शाम की कक्षा को बर्खास्त कर दिया।

दूर, अस्पताल के ठंडे कमरे में, बूढ़े प्रोफेसर ने अब पुनः चेतना प्राप्त की, अपने डॉक्टर से फुसफुसाकर कहा, ''अजीब! अजीब! मुझे एक विशिष्ट छाप (impression) मिली कि मैं इससे पहले इस घटना को जी चुका था, कि मैं सुमेरियनों के मूल को जानता था। मैं अत्यधिक कठिन श्रमपूर्वक काम करता रहा होऊँगा। परंतु मुझे उत्तर का पता था, और अब वह धुंधला पड़ चुका था। अजीब, अजीब!''

* * * * * * *

मध्य आयु का आदमी, लकड़ी की कठोर बैंच के ऊपर, पहले एक टांग दूसरी पर क्रास रखते हुए, तब दूसरी (टांग पहली पर क्रास रखते हुए), बैचेनी के साथ छटपटाया। समय समय पर, अपने आसपास देखने के लिये, उसने अधडरी (half-frightened) ऑखों को उठाया। कमरे के अंत से, नर्स की अपने नीरस आदेशों का चूरा करती हुई, कठोर, औपचारिक आवाज आईः ''गारलैंड (Garland), तुमको डॉक्टर नोर्थी (Northey) से मिलना है। तुम्हारे कार्ड ये हैं। इन्हें **उस** दरवाजे पर ले जाओ और प्रतीक्षा करो जबतक कि डॉक्टर तुम से बात न करें। रोजर्स (Rogers) तुम निदान (Therapy) के लिये जाओ, वे कुछ जॉच करना चाहते हैं। तुम्हारे कार्ड ये हैं। गलियारे में नीचे **वहॉ** जाओ।'' मोटे शेयरों के भावों की घोषणा करते हुए एक परेशान उद्घोषक की भांति, स्वर जारी रहा।

मध्य आयु के आदमी ने पंक्तिओं पर, और अपने सामने लोगों की पंक्तियों पर कंधे उचकाये। सहायकविहीन रोगी, अपने रिश्तेदारों के साथ नये रोगी, और कुछ, समीप ही प्रतीक्षारत हृष्टपुष्ट सहायकों के साथ। घंटे खिंचते गये। यहॉ–वहॉ, किसी मानसिक कल्पना की पकड़ में, एक आदमी या एक औरत चिल्लाई। समीप ही, एक आदमी चीखा, ''मुझे चाहिए, और जब तुम्हें चाहिए, तुम्हें चाहिए।'' ऊपर उछलते हुए, वह एक खुली खिड़की में होकर सिर के बल नीचे कूदने से पहले, लोगों को दायें–बायें छितराते हुए, पकड़ने बाले सहायकों को बगल से धक्का मारते हुए, एक लिपिक को गिराते हुए, कमरे के आरपार दौड़ा। आगामी पूरी हलचल के दौरान, नर्स की आवाज अविचलित रूप से गूंजती रही।

बाहर की ओर, धुंधली लाल–ईंटों की इमारतें, बढ़ती हुई गर्मी में चमकीं। अनेक खिड़कियों के कांचों ने सूर्य के परावर्तन को पीछे फेंका, और खिड़कियों के आरपार हजारों दंड (bars) दिखाये। जैसे ही उन्होंने खरपतवारों की तलाश में, रास्तों की बजरी को खंगाला, खाली ऑखों वाले बीसियों आदमी सिर झुकाकर खड़े हुए और हिले–डुले। सेवक, क्योंकि वे परिश्रम करते हुए आदमियों का निरीक्षण कर रहे थे, किसी भी उपलब्ध छाया में, सजगतापूर्वक धीमे धीमे चल पड़े। थोड़ा आगे, बगल में, जहॉ घास के ढलान, मुख्य सड़क से मिलते थे, इससे पहले कि घास काटने वाली मशीनें अपना काम कर सकें,

गंदी औरतों की पंक्तियॉ, घास में से कूड़ा और पत्थर उठाने के अपने काम पर झुकीं। एक मरियल औरत, जैसे ही उसने उपेक्षापूर्वक, दो सजग महिला सेवकों, जो व्यग्र प्रत्याशाओं में संतुलित थीं, का निरीक्षण किया, जो फैलते हुए एक पेड़ के नीचे, एकदम शाही अंदाज में खड़ी थीं।

मुख्य द्वारों पर, दो सेवकों ने घुसती हुई कारों को रोका, ताकि उनके मालिकों को दिशा–निर्देश दिये जा सकें। आकस्मिक दिखते हुए एक निवासी ने, एक नौकर की पीठ के पीछे बाहर निकलने का प्रयास किया, परंतु शीघ्र ही रुक गया। ''अब, आल्फ (Alf)!'' सहायक ने नम्रता से चेताया। ''तुम पीछे जाओ–तुम्हारी कोई चालाकी नहीं, मैं व्यस्त हूँ।'' पैदल यात्री, पत्थर की ऊँची दीवारों, और भारी अवरोधित दरवाजों के परे, दीवारों के अंदर के जीवन पर, एक वर्जित ताकझांक का रोमांच पाते हुए, उत्सुकता से झांक रहे थे।

अंततः जैसे ही उसका नाम पुकारा गया, मध्य आयु का आदमी, प्रवेश की आज्ञा में, अनिश्चितरूप से खड़ा हुआ। अपने पैरों पर खड़े होते हुए, वह मेज पर (बैठी) नर्स की ओर चला और उसने कहा, ''कुलमिलाकर गलत ये है, कि मैं–''

''हॉ, हॉ, मैं जानती हूँ, तुम उतने ही बुद्धिमान हो, जितने कि हो सकते हो।'' नर्स ने टोका। ''वे सभी यही कहते हैं।'' आह भरते हुए, उसने एक कार्ड और कुछ कागजों को उठाया और प्रतीक्षा करते हुए सेवक को संकेत दिया। ''अच्छा हो, तुम इसको डॉक्टर हॉलिस (Hollis) के पास ले जाओ,'' जब सेवक उपस्थित हुआ, उसने कहा। ''वह कहता है कि ये सब गलत हैं और वह समझदार है। ध्यान रखना वह भाग न जाय।''

आओ, दोस्त,'' सेवक ने, मध्य आयु के आदमी को बांहों से पकड़ते हुए, और उसे एक छोटे दरवाजे की ओर ले जाते हुए कहा। वे पंक्तिबद्ध दरवाजों के एक गलियारे में होकर साथसाथ पैदल चले। पीछे से कुछ आहें, दूसरों से कुछ चीखें आईं, और फिर भी एक दूसरी ओर से तेज बुलबुलेदार आवाज आई, जिसने सेवक को खतरे के प्रति उछाल दिया और उसने ऊर्जा के साथ दूसरे सहायक को किसी के लिये, जिसका जीवन, कटे हुए गले से होकर, बुलबुले के साथ बाहर जा रहा था, बुलाया। मध्य आयु का व्यक्ति कांपा और सिकुड़ता हुआ दिखाई दिया। ''बच गया, एह?'' सेवक ने पूछा। ''तुमने अभी तक कुछ नहीं देखा। **तुम देखोगे**!''

अंत में वे एक दरवाजे के सामने रुके, सहायक ने थपकी दी और एक दूर की आवाज ने बुलाया, ''अंदर आ जाओ।'' वह, मध्य–आयु के आदमी को अपने सामने धकियाता हुआ, प्रविष्ट हुआ और उसने कार्ड और कागजातों को मेज पर रखा। ''आपके लिये एक और, डॉक्टर,'' सेवक ने, जैसे ही वह मुड़ा और वापस हुआ, कहा। डॉक्टर, धीमे से, एक निस्तेज हाथ तक पहुँचा और उसने कागजातों को लिया और उनका कार्ड के साथ मिलान किया। तब, मध्य आयु के आदमी पर बिना थोड़ा सा भी ध्यान देते हुए, वह फिर से अपनी घूमने वाली कुर्सी पर वापस व्यवस्थित हो गया और उसने पढ़ना प्रारम्भ किया। उसने तबतक ऊपर नहीं देखा, जबतक कि उसने हर शब्द को नहीं पढ़ा और नोट्स नहीं बनाये, और एक संक्षिप्त पद कहा, ''बैठो!''

जैसे ही उसका मरीज उसके सामने कांपता हुआ बैठा, ''अब!'' डॉक्टर ने कहा। ''ये सब कैसे हुआ? तुम कैसे सोचते हो कि तुम अचानक ही दो स्थानों पर हो सकते हो? इसके बारे में मुझे पूरा बताओ।'' वैराग्य की अवसादग्रस्त हवा के साथ, वह वहॉ पीछे बैठा और उसने एक सिगरेट सुलगाई।

''ठीक है, डॉक्टर,'' मध्य–आयु के आदमी ने कहा, ''कुछ समय के लिये मुझे ये अजीब सी भावना प्राप्त हुई कि मेरा एक भाग, विश्व में कहीं दूसरे स्थान में रह रहा है। मैं अनुभव करता हूँ, मानो कि मैं कई बार लगभग पूरी तरह से समन्वय में, किन्हीं समान जुड़वांओं में से एक हूँ।

डॉक्टर ने असंतोष प्रकट किया और अपनी सिगरेट से राख को झड़ाया। ''कोई भाई या बहन?'' उसने पूछा। ''रिपोर्ट बताती है कि कोई नहीं, परंतु ये गलत हो सकती है।''

''नहीं, डॉक्टर, कोई भाई नहीं, कोई बहन नहीं, कोई और भी नहीं, जिसके साथ मैं इस भावना को बताने के लिये, पर्याप्त रूप से मित्रवत् होऊॅ। ये ठीक वैसा ही है, मानो कि मैं कई बार दूसरे ''मैं के साथ संपर्क में आ जाता हूॅ, कहीं दूसरी जगह, कोई जो भी इस भावना के प्रति सजग है।''

डॉक्टर ने सिगरेट बुझा दी और कहा, ''तुमको ये उल्लेखनीय घटनायें कितनी जल्दी जल्दी प्राप्त होती हैं? क्या तुम उनके प्रारम्भ को पहले से जान जाते हो?''

''नहीं, श्रीमान्,'' मध्य–आयु के आदमी ने उत्तर दिया, ''मैं पूरी तरह से साधारण कुछ चीज कर रहा होऊॅगा, तभी मैं अपनी नाभि में खुजली अनुभव करूॅगा, और उसके बाद महसूस करूॅगा मानो कि मैं टेलीफोन की दो लाइनें होऊॅ, जो दोनों पक्षों से जुड़ी हुई हों, और अपनी खुद की टेलीफोन वार्ता के साथसाथ, दूसरे की भी वार्ता को प्राप्त कर रही हों!''

डॉक्टर ने चिंतन किया। क्या ये तुमको किसी तरह से असुविधा पैदा करता है?''

हॉ, डॉक्टर, ये करता है,'' मध्य–आयु के आदमी ने जबाव दिया। ''कई बार मैं जोर से बोलता हूॅ और सबसे गंभीर चीजों को बोलता हूॅ!''

डॉक्टर ने, जैसे ही उसने टिप्पणी की, आह भरी, ''अच्छा, मैं इस रिपोर्ट से देखता हूॅ। ठीक है, जबतक हम मामले को सुलझा नहीं लेते, हमें तुम्हें निरीक्षण वार्ड में रखना होगा। तुम एक ही समय में, दो संसारों में रहते हुए दिखाई देते हो।''

डॉक्टर के संकेत पर सेवक कमरे में प्रविष्ट हुआ, ''कृपया इन्हें निरीक्षण के B3 में ले जाओ। मैं इन्हें बाद में, दिन में, देखूंगा।''

सेवक ने मध्य–आयु के व्यक्ति को इशारा किया, और वे दोनों साथसाथ मुड़े और वे डॉक्टर के कार्यालय से बाहर निकले। एक क्षण के लिये, डॉक्टर अचल बैठा रहा, और तब अपने चश्मे को अपने माथे पर खिसकाया और ऊर्जा के साथ अपनी गरदन के पीछे खरोंचा। एक ताजा सिगरेट सुलगाते हुए, वह अपनी घूमने वाली कुर्सी पर पीछे झुका और उसने अपने पैर मेज पर रखे।

''ऐसा लगता है, आजकल हमारे पास इस तरह के काफी लोग हैं,'' उसने अपने आप से कहा। ''जो विश्वास करते हैं कि वे जुड़वॉ अस्तित्वों में रह रहे है। आगे मैं मानता हूॅ कि हमें ये कहते हुए लोग मिलेंगे, कि वे समांतर विश्वों (parallel worlds) में या वैसे ही कुछ में रह रहे हैं।'' उसके टेलीफोन की बर्र (burr), बर्र (burr) ने उसको पीछे की ओर, वर्तमान में, झटका दिया, और अपने पैरों को मेज से फिसलाते हुए, वह फोन उठाने के लिये बाहर पहुॅचा और अगले मरीज के लिये तैयार हुआ।

* * * * * * *

समांतर विश्वों जैसी कुछ चीजें हैं, क्योंकि, हर चीज का, ठीक वैसे ही जैसे कि आपको कोई ऐसी बैटरी नहीं मिल सकती, जो केवल धनात्मक या केवल ऋणात्मक हो, विपरीत अवस्था में एक प्रतिरूप होना चाहिए; धनात्मक या ऋणात्मक होने ही चाहिये। परंतु ये मामला, हमारे अगले अध्याय में चर्चा किये जाने के लिये है, अभी हमारे पास समानांतर विश्व हैं।

दुर्भाग्यवश, ''वैज्ञानिकों'' ने, जो अपनी नाक कटने (losing face), या वैसे ही कुछ, या अपनी गहराई से परे मामलों में डूबने, से डरे हुए रहे हैं, मुद्दे को भ्रमित कर दिया है, क्योंकि, वे असली शोधकार्य करने के विचार के प्रति सामना करने के लिये अपना मन नहीं बनायेंगे। फिर भी, भारत में, गुजरे वर्षों के अनुशीलित व्यक्तियों ने अपने ''लिंग शरीर'' को संदर्भित किया है, जिसका तात्पर्य शरीर के एक भाग से है, जो– इस विश्व के तीन आयामों के परे– एक भिन्न आयाम में है, और इसलिये इसे, सामान्यतः, तीन विमा वाले विश्व में अस्तित्व में रहने वाले, किसी व्यक्ति के द्वारा नहीं समझा जा सकता। हमें याद रखना है कि चूंकि ये पूरी तरह से त्रिविमीय विश्व है, इस विश्व में, हम तीन आयामों तक सीमित हैं और एक औसत व्यक्ति के लिये, जिसने पराभौतिकी के बारे में कोई अध्ययन नहीं किया है, चौथा आयाम, कोई हंसने वाली या कुछ उल्लेखनीय गल्पों में पढ़ी जाने वाली चीज है।

न केवल चौथा आयाम होता है, परंतु चौथे आयाम के विश्व के परे, पॉचवे, छठवें, सातवें, आठवें, नौवें आयाम भी होते है। उदाहरण के लिये, कोई आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है, और चीजों की प्रकृति को समझने में सक्षम होता है, कोई जीवन के मूल को, आत्मा के मूल को, चीजें कैसे प्रारंभ हुईं और मानवजाति, ब्रह्मांड के विकास में किस प्रकार की भूमिका अदा करती है, समझने में सक्षम होता है। नौवें आयाम में भी, आदमी–अभी भी अधिस्वयं की कठपुतली–अपने अधिस्वयं के साथ, अधिस्वयं से आमने सामने बातचीत करने में सक्षम होता है।

सबसे बड़ी कठिनाइयों में से एक, दुर्भाग्यशाली तथ्य ये है कि, ''वैज्ञानिकों ने सभी प्रकार के असाधारण और स्वछंद नियम बना लिये हैं, और यदि कोई किसी चीज का, जिसे ये 'वैज्ञानिक' कहते हैं, विरोध करने का दुस्साहस करता है, तब वह वास्तविक रूप से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इसका एक उदाहरण, उस तरीके में पाया जा सकता है, जिसमें अरिस्टोटल (Aristotle) के कार्यों के कारण, चिकित्सा व्यवसाय को सैकड़ों सालों के लिये पूरी तरह अपंग बना दिया गया था, मानव शरीर में किसी प्रकार की जॉच करना, तब एक गंभीर अपराध समझा गया था, क्योंकि, अरिस्टोटल, वह सबकुछ, जो कभी जानने के लिये था, सिखा चुका था। इसलिये, जबतक कि चिकित्सा का व्यवसाय अरिस्टोटल के मुर्दा हाथ से बाहर नहीं निकला, वे कोई चीरफाड़ और मृत्यु के बाद शव–परीक्षण (post-martem), और वे कोई शोधकार्य नहीं कर सकते थे।

कुछ खगोलशास्त्रियों को भी इसी प्रकार की परेशानी हुई थी, जब उन्होंने पढ़ाया कि पृथ्वी सृष्टि का केन्द्र नहीं थी, क्योंकि किसी प्रारंभिक आश्चर्यजनक मनुष्य ने पढ़ाया था कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता था और कि हर चीज मानवजाति की सुख–सुविधा के लिये अस्तित्व में थी!

परंतु अब हमें खुद के आयामों के साथ निभाना है। यहॉ, इस पृथ्वी पर, हम उसके साथ व्यवहार करते हैं, जो सामान्यतः तीन आयाम कहलाते हैं। हम कोई चीज देखते हैं, हम किसी चीज को अनुभव करते हैं और ये हमको ठोस और वास्तविक दिखाई देती है। परंतु मान लो, यदि हमें एक अतिरिक्त आयाम से व्यवहार करना होता तो पहली चीज होती–ठीक है, ये अतिरिक्त आयाम क्या है? संभवतः हम इसे पूरी तरह न समझ पाते। चौथा आयाम क्या हो सकता था? सबसे खराब, पॉचवां क्या होता? और तब नौवें तक, या नौवें के भी परे चलते चले जायें।

सबसे अच्छी चीज है, पहले एक सामान्य टैप रिकार्डर पर विचार करना, क्योंकि, टेपरिकार्डर अधिकांश लोगों की पहुॅच में है, या उसको (लोगों ने) देखा भी है। हमारे पास अत्यंत मंद, मंद गति, एक सेकंड में एक इंच से भी कम पर चलता हुआ, एक टेपरिकार्डर है। ऐसी धीमी गति पर, किसी को टेप का संदेश, एक घंटे में समाप्त होता दिखाई देगा, परंतु ये मानते हुए कि हम उस टेप को, उदाहरण के लिये, एक फुट प्रति सेंकड पर चला सकते हैं; तब वह भाषण, हमारे लिये, पूरी तरह से, न समझ पाने योग्य होगा, टेप के ऊपर का संकेत, किसी भी तरीके से बदला हुआ नहीं होगा, शब्द वहीं होंगे, परंतु वास्तव में, हम अपने भाषण को, एक दूसरे आयाम में हटा चुके होंगे और इस प्रकार हम भाषण को नहीं समझ सकेंगे। इससे पहले कि हम समझ सकें कि वह क्या था, जो टेप पर था, हमें टेप को उसी समान चाल पर चलाना पड़ेगा, जो रिकार्डिंग के समय काम में लाई गयी थी।

घटनावश, समुद्री जीव विज्ञानियों ने टेपरिकार्डिंग का उपयोग किया है और उन्होंने खोजा है कि सभी प्रकार की मछलियॉ बात करती हैं। वहॉ, वास्तव में, समुद्र की आवाजों को निकालता हुआ एक विशिष्ट फोनोग्राफ रिकार्ड होता है, जिसमें आपस में बात करने वाली मछलियों, और झींगा मछलियों की, और बातचीत करते हुए केंकड़ों की भी आवाजें हैं। यदि आप इस पर विश्वास करना मुश्किल पायें, ध्यान रखें कि डॉल्फिनें (Dolphins), वास्तव में, अपनी बोली को टेप पर रिकार्ड करा लेती हैं; डॉल्फिनें मनुष्यों की तुलना में, कई कई गुना तीव्र गति से बोलती हैं। इस प्रकार, बोली टेप पर अभिलेखित की गई थी और मानवों के लिये काफी न समझने योग्य थी, परंतु टेप को, मनुष्यों के कानों को

स्वीकार्य, एक आयाम नीचे किया गया। अब वैज्ञानिक उन टेपों का अर्थ निकालने का प्रयास कर रहे हैं, और इसको लिखे जाने के समय तक, ये कहा गया है कि ये वैज्ञानिक एक शब्द–संग्रह (vocabulary) बनाने में सक्षम हुए हैं, ताकि अंततः वे डॉल्फिनों के साथ विस्तारित रूप से (*in extenso*) संप्रेषण करने में सफल हो सकें।

परंतु–अपने समांतर विश्वों की ओर वापस। अनेक, अनेक वर्षों पहले, जब मैं रूसियों से बचकर भाग चुका था और मैं यूरोप के आरपार, अपना धीमा और कष्टदायक मार्ग तय कर रहा था, तो मैं अंततः एक स्वतंत्र देश में पहुॅचा था, मुझे तब दुष्ट रूसियों द्वारा अपवित्र किये जाते हुए, युद्ध से बरबाद बर्लिन में रुकने का मौका मिला। मैं आश्चर्य करते हुए, आसपास टहल रहा था कि आगे क्या किया जाये, जबतक कि रात्रि न घिरे, समय कैसे गुजारा जाये, जब मुझे फ्रांसीसी सीमाओं की ओर अपने रास्ते पर, लिफ्ट (lift) पाने की आशा करनी चाहिये।

मैं, अभी भी धधकते हुए खंडहरों को देखते हुए, जहॉ मित्र राष्ट्रों की बमबारी ने अधिकांश बर्लिन को घटा कर, फटे टूटे अनगढ़ पत्थरों की भांति कम कर दिया था, की ओर चला। जंग के कारण लाल परिवर्तित होते हुए, ऐंठे हुए स्टील के गर्डरों के नीचे, एक छोटे से साफ स्थान में, मैंने उस बमबारी से टूटे हुए भवनों से घिरी हुई, एक जर्जर मंच की जमावट (set up) देखी। वहॉ मंच पर, एक प्रकार का परिदृश्य, टूटीफूटी सामिग्री के छोटे छोटे टुकड़ों से बना हुआ परिदृश्य, था। उनके पास कुछ खंबे थे, और उन खंबों से, उन दर्शकों, जिन्होंने प्रवेश के लिये पैसा नहीं दिया, से बचाने के लिये, मंच के परिदृश्य को, जितना संभव हो, ढकने के लिये, टाट के कुछ टुकड़े बॉधकर फैलाये गये थे।

मैं दिलचस्पी रखता था, और आगे देखते हुए मैंने देखा कि वहॉ दो बूढ़े आदमी खड़े थे, एक, पैसा वसूलता हुआ, परदे के सामने खड़ा हुआ था। वह जीर्णशीर्ण और बिखरे बालों वाला गंदा सा था, परंतु वहॉ, मेरा ख्याल है, उसके सम्बंध में–किसी चीज की–एक निश्चित शाही हवा थी। मैं अब भूल गया हूॅ कि मैंने प्रवेश के लिये कितना पैसा दिया, अधिक नहीं, क्योंकि युद्ध से ध्वस्त हुए बर्लिन में, हममें से किसी के पास भी अधिक पैसा नहीं था, परंतु जैसे ही मैंने उसे पैसा दिया, उसने वह पैसा अपनी जेब में डाल लिया, और सौहार्द्रतापूर्वक मुझे फटे और मैले–कुचैले परदे में होकर जाने का संकेत किया।

जैसे ही मैं परदे के परे गया, मैंने मलबे के ऊपर पुल बनाते हुए कुछ लठ्ठों (plancks) को देखा, और लोग उन लठ्ठों के ऊपर बैठे थे। मैंने भी अपना स्थान लिया, तब परदे में से एक हाथ निकला और हिला। एक पतला, बूढ़ा, वर्षों के भार से झुका हुआ बूढ़ा आदमी, मंच के केन्द्र में आया और हम क्या देखने वाले थे, उसे बताते हुए, जर्मन भाषा में छोटा सा भाषण दिया, तब मुड़ते हुए, वह यवनिका के पीछे गया। एक क्षण के लिये, हमने उसे अपने हाथ में दो छड़ियों के साथ देखा और उन दो छड़ियों से काफी संख्या में कठपुतलियॉ लटकी थीं। चित्रित लक्षणों के साथ मानवीय आकृति को दिखाते हुए, भड़कीले चिथड़े पहनायी हुईं, और उनके सिर पर बालों के गुच्छे चिपकाये हुए, मोटे तौर से गढ़े गये, लकड़ी के अजीब लोथड़े। वे भद्दे (crude) थे, वे वास्तव में भद्दे थे, और मैंने सोचा कि मैंने धन, जिसको मैं मुश्किल से ही बर्दाश्त सकता था, बरबाद कर दिया परंतु–मैं चलने के कारण, केवल आसपास रूसी लोगों, और जर्मन पुलिस की गश्त से बचने का प्रयास करते हुए चलने से, थका हुआ था, इसलिये मैं अपनी कठोर सीट पर जमा बैठा रहा और सोचा कि जैसे मैंने पैसा बरबाद किया था, वैसे ही मुझे समय भी बरबाद करना पड़ेगा।

बूढ़ा आदमी, अपने छोटे जर्जर मंच के पीछे, दृष्टि के बाहर हो गया! कैसे भी, उसने किसी प्रकार के प्रकाश की तैयारी की, उन्हें अब मंदा कर दिया गया, और इस अत्यंत जुगाडू (makeshift) मंच पर आकृतियॉ प्रकट हुईं। मैंने टकटकी लगाई। मैंने घोर टकटकी लगाई और अपनी ऑख को रगड़ा, क्योंकि पुरानी लकड़ी की क्रूरता में पूरी तरह से समाप्त होती हुई और बमबारी में नष्ट चीजों से

कपड़े लपेटी हुईं, ये कठपुतलियॉ नहीं, जीवित प्राणी थे। यहॉ जीवित लोग थे, लोग, हरेक अपने खुद के विचार के साथ, लोग अपने सामने के काम से मतलब रखते थे, लोग जो अपनी इच्छा से वहॉ गये थे।

वास्तव में, कोई संगीत नहीं था, और कोई ध्वनि नहीं, अर्थात्, कष्ट से सांस लेने वाले दमा के मरीज, बूढ़े आदमी, अब पीछे छिपे हुए बूढ़े आदमी के सिवाय कोई ध्वनि नहीं। परंतु ध्वनि आवश्यक नहीं थी, किसी भी प्रकार की ध्वनि अनावश्यक होती। कठपुतलियॉ जीवन थीं, हर गतिविधि, हर भावभंगिमा, अभिव्यंजनायुक्त थी, वार्ता अनावश्यक थी क्योंकि, ये गतिविधियॉ चित्र की वैश्विक भाषा, मूक अभिनय (pantomime) में थीं।

इन कठपुतलियों के आसपास, एक प्रभामंडल दिखाई दिया, ये कठपुतलियॉ, जो अब मनुष्य हो चुकीं थीं, वे अपनी पहचान और स्वयं का व्यक्तित्व, जिसे वे उस क्षण प्रदर्शित कर रहीं थीं, ग्रहण करती हुई दिखीं। कोई बात नहीं, कितना भी मैंने झांका, मैं सिरों से गुजरने वाली डोरियों को नहीं देख सका, ये वास्तव में, पृष्ठभूमि के विरुद्ध कलात्मक तरीके से छिपाई गई थीं। मेरे सामने, मानव के प्रतिरूपों के लिये, पूरी ईमानदारी के साथ, जीवन के दृश्य अभिनीत किये जा रहे थे। मैंने स्वयं को क्रियाओं और उनके उद्देश्यों को समझने में खो दिया, हमने मानवीय नाटक को देखा और सहानुभूति में हमारी नब्ज शोषितों के साथ दौड़ रही थी। ये उत्तेजना थी, ये वास्तविक था, परंतु अंत में प्रदर्शन समाप्ति की ओर बढ़ा और मैंने स्वयं को, मानो कि गहरी तंद्रा से जगाया। मैं जानता था कि इन कठपुतलियों को एक वास्तविक प्रखर व्यक्ति, दक्षों में दक्ष, नियंत्रित कर रहा था। और तब मंच के पीछे से बूढ़ा आदमी बाहर आया और उसने नमन किया। वह थकान से कॉप रहा था, तनाव के कारण, उसका चेहरा सफेद पड़ गया था और आने वाले पसीने की एक पतली झलक से ढका हुआ था। वह वास्तव में एक कलाकार था, वह वास्तव में दक्ष था, और हमने उस पुराने, टूटे फूटे, सुधारे गये बूढ़े आदमी को चिथड़ों में लपेटे हुए नहीं, परंतु जिसने उन कठपुतलियों को चलाया और उनमें सजीवता लाई, उस प्रबुद्ध व्यक्ति के रूप में देखा।

जैसे ही मैं मुड़ा, मैंने उन चीजों पर, जो मैंने तिब्बत में सीखी थीं, सोचा। मैंने अपने प्रिय शिक्षक लामा मिग्यांर डोन्डुप के सम्बंध में सोचा और उसने मुझे दिखा दिया कि आदमी अपने अधिस्वयं के लिये एक कठपुतली मात्र है। मैंने ये भी सोचा कि कठपुतली का ये प्रदर्शन, समानांतर विश्वों पर, मेरे लिये किस प्रकार एक आश्चर्यजनक पाठ रहा है ।

मनुष्य 9/10 अवचेतन है और 1/10 चेतन। आपने शायद, इस सम्बंध में काफी कुछ पढ़ा हो क्योंकि, मनोविज्ञान का पूरा विज्ञान, इसके विभिन्न पहलुओं और मनुष्यों के अवचेतन के विशिष्ट स्वभाव को समर्पित है। ये याद रखते हुए कि आदमी इतना कम 'सचेत' है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि सभी प्रकार की क्षमताओं और प्रतिभाओं से उपहारित, अधिक उर्जावान विश्व की अधिक शक्ति के साथ धड़कता हुआ, और जीवन के एक भिन्न तरीके वाला शक्तिशाली, शक्तिशाली अधिस्वयं, जो कष्टों और अवरोधों से लदा हुआ, इस विश्व में, अपनी योग्यताओं के अधिकतम 1/10 पर काम करने के लिये आता है, के लिये, ये कितने खौफनाक तरीके से समय का नष्ट करना है? कल्पना करते हुए कि आपके पास एक मोटरकार थी, ओह, हम कहें आठ सिलेंडर वाली कार, क्योंकि और अधिक सही उल्लेख करने के लिये–दस सिलेंडर वाली कोई कारें दिखाई नहीं देतीं, तब इस संकेत को समझाने के उद्देश्य मात्र से, हम कहें कि हमारे पास एक आठ सिलेंडर वाली कार है।

हमारे पास ये आठ सिलेंडर वाली कार है, परंतु हम पाते है कि ये केवल एक सिलेंडर पर काम कर रही है। सात सिलेंडर, कार के चालन में किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं कर रहे हैं, वे वास्तव में, और अधिक जड़त्व के कारण, उसे वापस खींच रहे हैं। कार्य निष्पादन खेदजनक है। परंतु इस पर मानव अस्तित्व के पदों में सोचें; मानवजाति, एक दस सिलेंडर वाली कार, जिसका केवल एक सिलेंडर

कार्य करता है, के समान है, दूसरे नौ ''अचेत'' हैं। व्यर्थ, क्या ऐसा नहीं है?

एक मानव का–या किसी दूसरे प्राणी का अधिस्वयं भी, उस मामले में–ऊर्जा बेकार नहीं करता; किसी मानव के अधिस्वयं के पास काफी कार्य हैं, जिन्हें पूरा किया जाना चाहिए। ये मानते हुए कि हमारे पास एक उन्नत अधिस्वयं, एक वह जो ऊपर जाने को, और अधिक ऊपर जाने को, और अस्तित्व के दूसरे तलों में प्रगति करने के लिये, ऊपर जाने को उत्सुक है। उस मामले में, पृथ्वी के साथ व्यवहार करने में, अधिस्वयं अपनी क्षमता का 1/10 भाग समर्पित कर सकता है, और उसकी क्षमताओं का शेष भाग, दूसरे ग्रहों पर शरीरों के साथ, या अस्तित्व के दूसरे तलों पर व्यवहार करने के लिये जा सकता है। या बदले में, अस्तित्व के दूसरे तलों पर ये कठपुतली शरीरों के बिना भी हो सकता है और उनमें, जिनको कोई शुद्ध आत्मा कह सकता है, गतिशील हो सकता है। परंतु यदि अधिस्वयं उतना अधिक उन्नत नहीं है, या उसके पास संचालनों की भिन्न योजना है, वह चीजों को किसी भिन्न तरीके से कर सकता है।

मानते हुए कि हमारा अधिस्वयं, कमोवेश एक प्रारंभकर्ता का है, तब आप कह सकते हैं कि ये वैसा ही है, जैसा कि किसी सेंकेडरी स्कूल का एक विद्यार्थी। विद्यार्थी को, केवल एक विषय को सीखने के बजाय, अनेक कक्षाओं में उपस्थित होना पड़ता है। अक्सर इसका अर्थ ये है कि विद्यार्थी को भिन्न भिन्न कक्षाओं या भिन्न केन्द्रों में जाना पड़ता है। और वास्तव में, इसमें काफी समय और ऊर्जा का अपव्यय होता है।

अधिस्वयं, अधिक संतोषजनक स्थिति में हैं। यह कठपुतलियों का नचाने वाला है। इस विश्व में, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं, एक पुतली, जो पृथ्वी का शरीर है, है और जो अधिस्वयं के 1/10 भाग के साथ कार्य करता है। अधिस्वयं, किसी समांतर विश्व में, किसी दूसरे आयाम में, दूसरी कठपुतली या शायद, दो या तीन, या अधिक कठपुतलियॉ रख सकता है, और तब ये विभिन्न कामों के बीच अपना काम निकालने में सक्षम होगा। अपने विद्यार्थी की ओर वापस जाते हुए, कोई कह सकता कि ये एक ऐसे विद्यार्थी के समान है, जो अपने निजी कमरे में अलग रह सकता है, और अपने उपसहयोगियों (deputies) को भिन्न भिन्न कक्षाओं में भेज सकता है, ताकि, वह इन भिन्न स्रोतों के माध्यम से, सभी अनुभवों को पा सके और बाद में, उन्हें 'परस्पर सम्बंधित' कर सके।

हम कल्पना करें कि उन्नयन के चक्र में, किसी तरीके से चीजों को पकड़ने के लिये, अधिस्वयं को दौड़ना पड़ता है। यह मानते हुए कि अधिस्वयं थोड़ा सा सुस्त या थोड़ा सा आलसी है, और अनेक सदमे झेल चुका है, और दूसरे लोगों के पास हो जाने के बाद, ये अधिस्वयं, उसी कक्षा या अवस्था में नहीं बना रहना चाहता, इसलिये उसे प्रभावीरूप से, वैसे ही, जैसे कि कोई बच्चा या पुरानाा विद्यार्थी अतिरिक्त पाठ लेता है ताकि, वह दूसरों के साथ, जो अधिक आगे बढ़े हुए हैं, आ सके और इसप्रकार उनके समीप संपर्क में रह सके, रटने वाला एक कदम, एक रास्ता लेना पड़ता है।

अधिस्वयं के पास, ऑस्ट्रेलिया में जीवन जीने वाला एक व्यक्ति हो सकता है, और तभी अफ्रीका में कोई दूसरी चीज करता हुआ, दूसरा आदमी भी हो सकता है। शायद वहॉ एक और, दक्षिणी अमेरिका, कनाडा या इंग्लैंड में हो सकता है; तीन से अधिक भी हो सकते हैं, पॉच या छः या सात भी हो सकते हैं। ये लोग पृथ्वी पर कभी नहीं मिले हो सकते हैं, और फिर भी, वे उनके पास, बिना किसी भी प्रकार की आपसी समझदारी के, कि क्यों, एक दूसरे के साथ काफी कुछ आकर्षण में हो सकते हैं, उनमें दुरानूभूति सम्पर्क (telepatic rapport) हो सकता है, किन्तु तब, वे सूक्ष्मलोक में, जैसे कि विक्रय प्रबंधक के कार्यालय में विक्रय प्रतिनिधि मिलते हैं, कभीकभार मिलेंगे।

सात या आठ या नौ पुतलियों वाले बेचारे दीन–हीन अधिस्वयं को, वास्तव में, अचानक ही उनमें एक साथ हरकत या हेरफेर (manipulate) करने और 'डोरियों को आपस में उलझने से बचाने के लिये', एक चाल प्राप्त करनी पड़ेगी। ये कुछ उत्सुक सपनों एक स्पष्टीकरण है, क्योंकि, जब दो

अनुशीलनयोग्य (compatible) कठपुतलियां, जल्दी जल्दी, नींद में सोती हैं, उनके रजत तंतु (silver cords) छू सकते हैं, और परस्पर मिली हुई टेलीफोन लाईनों के समान, ऐसा प्रभाव पैदा कर सकते हैं, जिसमें आप दुख के साथ, और किसी के अत्यधिक खेद के साथ, दूसरे की बातचीत के अंश सुन लेते हैं, हम सभी सर्वाधिक दिलचस्प अंशों को चूक जाते हैं।''

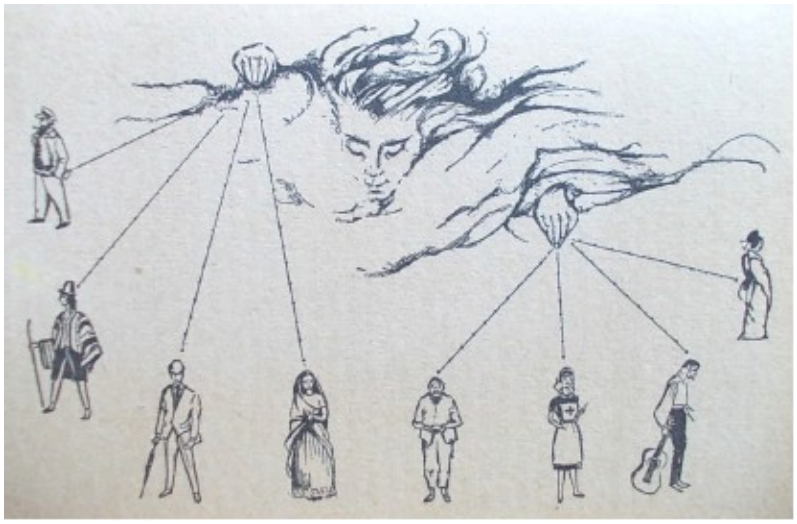

परंतु आप पूछ सकते हैं, इस सब का उद्देश्य क्या है। ठीक है, इसका उत्तर देना आसान है : अधिक संख्या में पुतलियों को रखने के द्वारा, अधिस्वयं अधिक विस्तृत अनुभव पा सकता है, और एक ही जीवनकाल में दस जीवन जी सकता है। अधिस्वयं, समृद्धि और गरीबी को एक ही समय में अनुभव कर सकता है, और इस प्रकार उन्हें अनुभवों की तुला पर तौल सकता है। एक देश में, अत्यंत दीनतापूर्वक जीवन जीते हुए, वास्तव में, परेशानी के साथ बने रहते हुए, एक पुतली भिखारी हो सकती है, जबकि किसी दूसरे देश में, अगली पुतली, ये अनुभव करते हुए कि लोगों से कैसे निपटा जाये और राष्ट्र की नीति को कैसे बनाया जाये, एक राजकुमार हो सकती है। भिखारी, दीनता और पीड़ा का अनुभव प्राप्त कर रहा होगा ताकि, जब जीवन के अनुभव, उस राजकुमार पुतली के साथ मिलाये जायें तो अधिस्वयं जीवन के घिनौने पक्षों को जान जायेगा, और ये जान जायेगा कि प्रत्येक प्रश्न के कम से कम दो पहलू होते हैं।

घटनाओं के सामान्य क्रम में, लोग शायद, एक राजकुमार के रूप में आयेंगे और तब दूसरे जीवन में एक भिखारी के रूप, या इस सम्बंध में दूसरे तरीके से प्रतीक्षा करेंगे परंतु जब वे समय की दौड़ में होते हैं, जब उन्नयन का कोई निश्चित चक्र, अपनी समाप्ति के समीप आ रहा होता है, जैसा कि वर्तमान मामले में है, तब नाटकीय तरीके अपनाने पड़ते हैं ताकि, जो धीमे हैं, वे शेष लोगों के साथ चल सकें।

हम अब कुंभ राशि के युग (aquarian age), एक युग, जिसमें आदमी के साथ बहुत कुछ होगा और आदमी की आध्यात्मिकता बढ़ेगी–में प्रवेश कर रहे हैं, संयोगवश, ये करीबी समय है, जो इसने किया। आदमी की मानसिक क्षमतायें भी बढ़ेंगीं। अभी पृथ्वी पर रहने वाले अनेक लोग, पृथ्वी पर पुनर्जन्म नहीं लेंगे, परंतु उन्नयन के भिन्न चरणों में जायेंगे। उनमें से अनेक, जिन्होंने इस जीवन में, या अस्तित्व के इस चक्र में, नहीं सीखा है, शरारती स्कूली बच्चों की तरह से, फिर से अगले चक्र में प्रारंभ करने के लिये, वापस भेज दिये जायेंगे।

स्कूल में, यदि एक बच्चा अपनी कक्षा में पीछे रह जाता है, वह अक्सर असंतुष्ट और चिड़चिड़ा रहता है कि वह पीछे छूट गया है, और वह उस कक्षा में नये आने वालों के लिये मुश्किल बनता जाता है, वह अपनी भूमिका को बढ़–चढ़ कर दिखाने का और ये दिखाने का, कि वह अधिक जानता है, उनसे अधिक अच्छा है, उनसे बड़ा है, और इसी प्रकार की सभी चीजें करने का प्रयास करता है, और कक्षा में नये आने वाले, अधिकांशतः, हमेशा उस बच्चे को, जो पिछली कक्षा का छूटा हुआ है, नापसंद करते हैं। जीवन की कक्षा में भी ऐसा ही है, एक व्यक्ति, जो आगे चलते रहने के लिये पर्याप्तरूप से उन्नयन न होने के कारण निकाल दिया गया है, उसे, अस्तित्व के अगले चरण में जाने के लिये, वापस आना होता है और उस चक्र को फिर से पूरा करना होता है। उसके अवचेतन के नौ बटा दस (9/10) भाग में भरी हुई अवचेतन स्मृति, इसका बुरा मानती है और वह किसी खास तरीके से आगे जाने का प्रयास करता है।

इस पृथ्वी को छोड़ देने के बाद, अनेक लोग अस्तित्व के भिन्न रूप, सदैव उच्चतर ही, में जायेंगे, क्योंकि मनुष्य को हमेशा ऊपर, और भी ऊपर, चढ़ना चाहिए, जैसा वास्तव में दूसरे जीवों को भी (करना चाहिये), और स्वाभाविक रूप से, समूह में रहने वाली होने के कारण, मनुष्य की आत्मा, प्रिय लोगों के साथ, उनके संग आने पर प्रसन्न होती है। इस प्रकार ऐसा है कि कोई अधिस्वयं वास्तविक सुनिश्चित प्रयास करेगा और अनेक पुतलियों का उपयोग करेगा, ताकि, वह दूसरे साथियों के साथ समन्वय बना सके।

हम स्वीकार करें कि तब समांतर विश्व, एक भिन्न आयाम में वह विश्व है, विश्व, जो बहुत कुछ पृथ्वी के समान, परंतु फिर भी भिन्न आयाम में है। यदि आप इसे समझना मुश्किल पाते हैं, मानते हुए कि आप दूसरे विश्व में तत्काल ही, पलक झपकने भर में, जा सकते थे। अब स्वयं ही निर्णय करें– क्या आप भूतकाल में रह रहे हैं? अर्थात् क्या आप गुजरे हुए कल में वापस गये हैं, या क्या आपने भविष्य काल में यात्रा की है? आपके कैलेण्डर के अनुसार, आप पायेंगे कि जब आप विभिन्न तरीखों की पंक्तियों को पार कर जाते हैं, तब आप या तो पीछे की तरफ, या तो आगे की तरफ, ठीक एक दिन की यात्रा करते हैं। इसलिये अपने आधारभूत समय के अनुसार, भविष्य के एक दिन में चलना या एक दिन भूतकाल में चलना, सैद्धान्तिक रूप संभव है। ये सहमत होते हुए कि यह वैसा ही है, आप सहमत होने में सक्षम होंगे कि अनेक आयाम हैं, जिनको सरलता से समझाया नहीं जा सकता, इतने पर भी, वे वैसे ही अस्तित्व में होते हैं, जैसे कि समांतर विश्व अस्तित्व में होते हैं।

ये सदैव ही आश्चर्यजनक होता है कि लोग सरलता से विश्वास करें कि हृदय एक घंटे में दस टन खून को पंप कर सकता है, या कि शरीर में साठ हजार मील लम्बाई की केशिका नलियां होती हैं, और फिर भी, समांतर विश्वों जैसी सरल चीज, अविश्वास में, उनको अपनी पलकें उठाने के लिये बाध्य करती है और तद्नुसार (thereby), आश्चर्यजनक संख्या में, मांसपेशियों को काम पर लगा देती है।

सामान्यरूप से, अपने अवचेतन तक हमारी पहुॅच अत्यंत कठिन है, थाह लेने के लिये कठिन। यदि हम सरलता से अपने अवचेतन तक पहुॅच पाते, हम सभी समयों में पता लगा सकते थे कि हमारी दूसरी कठपुतलियां, दूसरे विश्वों में, या इस संसार के दूसरे भागों में, क्या कर रहीं थीं, और वह हमको विचारणीय भ्रम, खतरे और निराशा की ओर ले जाता। उदाहरण के लिये, सोचें–आज आपने कुछ निश्चित चीजें की हैं, परंतु यदि आप अपने अवचेतन में जा सकते होते और अपनी दूसरी कठपुतली, जिसने पिछले हफ्ते वही काम किया था या वह इसे अगले हफ्ते करना चाहती है, के जीवन के रहने का स्वयं पता लगा सकते होते, तो ये आपको काफी अद्भुत भ्रम की ओर ले जाता। ये अनेक कारणों में से एक है कि, अवचेतन में से कुछ भी निकालना, हमारे लिये इतना अधिक कठिन क्यों है।

कई बार, चीजें होती हैं, जिनके द्वारा चेतन और अवचेतन के बीच, एक अनैच्छिक खुलाव (involuntary breakthrough) होता है। ये वास्तव में, एक गंभीर मामला है, इतना गंभीर कि

सामान्यतः इसके साथ किसी मानसिक चिकित्सालय में व्यवहार किया जाता है। ये सभी प्रकार के मानसिक हालातों की ओर ले जाता है, क्योंकि बेचारा दीन, पीड़ित, ये तय करने में अक्षम होता है कि वह कौन सा शरीर है, जिसमें उससे रहने की अपेक्षा की जाती है।

क्या आपने, *ईव के तीन चेहरे (The Three Faces of Eve)* पुस्तक के बारे में सुना है? एक औरत पर, तीन भिन्न भिन्न अस्तित्वों का अधिकार था। इसके बारे में पूरी बात, बड़ी संख्या में सम्माननीय डॉक्टरों और विशेषज्ञों के द्वारा लिखी जा चुकी है, जो संभवतः जानते थे कि वे किस सम्बंध में लिख रहे हैं।

क्या आपने बर्डी मर्फी (Bridie Murphy) की कहानी सुनी है? वह समान मामला है। फिर से, एक व्यक्ति को दूसरे अस्तित्व के द्वारा अधिकार में ले लिया गया था, या दूसरे शब्दों में, अवचेतन में, एक पुतली से दूसरी की तरफ, एक खुलाव था।

तब हमारे पास जोन ऑफ आर्क (Joan of Arc) का एक मामला है; जोन का विश्वास था कि वह एक महान नेता थी, कि उसे उच्चतर स्रोतों से संदेश मिले थे। जोन ऑफ आर्क, एक योद्धा, और योद्धाओं के नेता के रूप में बदली हुई, एक अत्यंत सरल, अशिक्षित, देशी लड़की थी, क्योंकि दो कठपुतलियों के बीच की रजत तंतुऐं उलझ गईं थीं और जोन को वे आवेग, जो एक भिन्न शरीर में, एक आदमी के लिये बनाये गये थे, प्राप्त हुए। कुछ समय के लिये उसने उस आदमी जैसा, आदमियों के उस नेता जैसा, उस महान योद्धा जैसा व्यवहार किया, और तब, जब लाइनें सुलझ गईं, उसकी शक्तियॉ असफल हो गई और वह एक बार फिर, साधारण देशी लड़की बन गई, जिसे अस्थाई और गलत प्रसिद्धि के लिये, दण्ड भुगतना पड़ा; उसे जलाकर मार दिया गया।

ईव के तीन चेहरे के पीड़ित के मामले में, अनेक खुलाव (breakthroughs) या टूटन (breakdowns) घटित हुईं, और बेचारी औरत को, उसी अधिस्वयं के द्वारा नियंत्रित की गई दूसरी पुतलियों के साथ, एक अनैच्छिक संपर्क में रख दिया गया। ये दूसरी पुतलियां समान अवस्था में थीं, उन्हें भी इसप्रकार का खुलाव झेलना पड़ा और परिणामस्वरूप यहॉ पूरी तरह से गड़बड़ हो गई। ये वैसा ही है, जब तुम्हारे पास दो या तीन पुतलियां होती हैं और तुम लापरवाह या अनुभवहीन हो अथवा अपने ध्यान को आवारा घूमने देते हो, और तंतु उलझ जाते हैं, तुम एक तंतु को खींचते हो, जो कठपुतली **अ** को नियंत्रित करती है, परंतु उलझाव के कारण, तुम कठपुतली **स** का सिर हिलाने के लिये, कठपुतली **ब** को धक्का दे सकते हो। उसी तरह से, जब तुम चेतन और अवचेतन के बीच एक खुलाव, एक अनियंत्रित खुलाव, पाते हो अर्थात्, तब तुम्हें किसी से, और किन्ही दूसरों के साथ हस्तक्षेप प्राप्त होता है, जो उसी अधिस्वयं के द्वारा नियंत्रित किये जा रहे हैं।

बर्डी मर्फी? हॉ, वह भी सत्य है, कि वह अवचेतन में एक खुलाव और फिर से तंतुओं के उलझ जाना और प्रभावों का स्थानान्तरण (transference of impressions) था।

जोन ऑफ आर्क, जैसा हम देख चुके हैं, सभी प्रकार से अशिक्षित, एक सरल देहाती लड़की थी। उसने अकेले में चिंतन में लंबा समय गुजारा और ऐसे ही एक समय में, उसने एकदम दुर्घटनावश, अवचेतन में खुलाव पा लिया। शायद उसने, बिना उसे जाने हुए, श्वसन की एक विशेष प्रकार की प्रक्रिया की थी परंतु ये सब जानबूझकर और पूरे नियंत्रण को रखते हुए भी किया जा सकता है। कैसे भी, उसने अवचेतन के लिये खुलाव पाया, दूसरी पुतली के साथ तंतुओं को लड़ा दिया, और वास्तव में, एक घपले में पड़ गई। उसे योद्धा के सभी प्रकार के आवेग मिले और वह एक योद्धा बन गई, उसने कवच धारण किया और एक घोड़े पर सवार हुई। परंतु उस गरीब के साथ क्या हुआ, जिसका एक नेता बनने का इरादा था, क्या उसमें औरत जैसे लक्षण (traits) प्रकट हुए? ठीक है, यदि हम उस पर अनुमान लगायें जिस पर हम अपने आपको, सभी प्रकार के दुर्भाग्यशाली निष्कर्षों तक ले जा सकते हैं। परंतु– जोन ऑफ आर्क, आदमियों की नेता, आसमान से आवाजों को सुनने वाला एक योद्धा बन गई।

वास्तव में उसने ऐसा किया! वह रजत तंतु से, जो कुल मिलाकर, केवल हमारी पुतली की डोरी है, प्रभावों को प्राप्त कर रही थी। इस पर, अपनी पुतली की डोरी पर, विचार करें। हमारे पास एक रजत तंतु है, जिसका बाइबिल में भी उल्लेख है, जहॉ जैसा कि आप याद कर सकते हैं, पादरी (Ecclesiastes) के बारहवें अध्याय में ऐसा कहा गया है, 'अथवा सदैव ही रजत तंतु ढीली की जायेगी या स्वर्णिम कटोरा टूटेगा या फुब्बारे पर घड़ा टूट जायेगा या टंकी का पहिया (wheel of the cistern) टूट जायेगा।'

लोग समय और सापेक्षता, समांतर विश्वों, और सभी कुछ के सम्बंध में लिखते हैं, वे ऐसे बड़े शब्दों का उपयोग करते हैं, जिन्हें वे स्वयं भी नहीं समझते कि उनका आशय क्या है। परंतु संभवतः इस अध्याय में, आपको सामान्य विचार मिल गया होगा। ध्यान रखें, ये सब सत्य है, ये सब परम तथ्य है और एक दिन, बहुत दूर भविष्य में नहीं, विज्ञान के कुछ अवरोध और कुछ पूर्वाग्रह टूट जायेंगे, और कुछ लोग, समांतर विश्वों के सत्य को महसूस करेंगे।

अध्याय तीन :
और अधिक अनेक प्रासाद

''तुमने मेरे रेडियो को बरबाद कर दिया!'' तंग नुकीली चेहरे वाली (hatchet-faced) औरत ने, जैसे ही वह तेजी से दौड़ती हुई छोटी सी दुकान में घुसी, शोर मचाया। ''तुमने मुझे वे बैटरियॉं बेचीं, जिन्होंने **हर चीज बरबाद कर दी**!'' जैसे ही वह काउंटर की ओर दौड़ी, वह लगातार चीखती रही और उसने एक छोटे ट्रांजिस्टर रेडियो को, एक भौचक्के हुए नौजवान आदमी, जो दूसरी तरफ से, भयपूर्वक घूर रहा था, के हाथों में फेंक दिया। ग्राहक, जिसका स्थान लड़ाकू औरत के द्वारा इतना जल्दी हड़प लिया गया था, सावधानीपूर्वक दुबकता हुआ, और बिना किसी नुकसान के, दरवाजे तक पहुॅंचता हुआ, तेजी से गली में दौड़ गया।

अपने हाथों को अदृश्य साबुन और पानी के साथ धोता हुआ, अवसादग्रस्त प्रबंधक, पिछले कमरे में से प्रकट हुआ। ''श्रीमती जी, क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूॅं'' खतरे पर, समग्ररूप से नजर टिकाते हुए, उसने तमतमाई, लाल चेहरे वाली औरत से पूछा।

''**मेरी मदद करो**?'' वह चीखी। ''तुमने मेरे रेडियो को, अपनी खराब बैटरियों के साथ, बरबाद कर दिया, **ये काम नहीं करता**। मुझे नया रेडियो चाहिए,'' जैसे ही उसने अपनी सभी परेशानियों को सोचा, अपनी गुस्से से चिंघाड़ती हुई कर्कश आवाज में उत्तर दिया। नौजवान सहायक, ये जानने के लिये कि क्या किया जाये, काउंटर के पीछे से, सेट को धीमे धीमे टटोलने लगा। अंत में, उसने अपनी जेब में से एक सिक्का निकाला और रेडियो के पीछे वाले दोनों पेंचों का आधा चक्कर घुमाया। बैटरी के डिब्बे का ढक्कन हटाते हुए, उसने धीमे से चारों बैटरियों को निकाल लिया।

''मैं उनकी जॉंच करूॅंगा,'' जैसे ही वह काउंटर के अंत की ओर चला, उसने कहा और दो तारों (leads) की ओर पहुॅंचा। ''वहॉं!'' जैसे ही हर सेल ने डेढ़ वोल्ट दिखाया, वह प्रसन्नतापूर्वक चीखा। ये **ठीक** हैं! उन्हें इकठ्ठा करते हुए, उसने सावधानीपूर्वक वापस रेडियो में लगा दिया, पेंचों को उल्टी दिशा में घुमाया और तब सेट को चालू किया। अपने अंगूठे के हल्के से प्रहार से उसने बटन को घुमाया– और उसमें से नवीनतम बीटल संगीत गूंज उठा।

तंग नुकीले चेहरे वाली औरत, सहायक की ओर घूर कर देखने लगी, उसका मुंह आश्चर्य के साथ खुला रह गया। ''ठीक है! इसने **मेरे** लिये काम नहीं किया'' उसने जोर दिया। ''तुमने बैटरियां बदल दी होंगी'', उसने उग्रतापूर्वक आगे कहा।

प्रबंधक और सहायक ने, एकदूसरे की ओर देखा और उत्तेजना में अपने कंधे उचकाये। श्रीमती जी! पहले ने नम्रता से कहा। ''क्या आप सुनिश्चित हैं कि आपने बैटरियों को ठीक ढंग से अन्दर लगाया था?''

''ठीक से? **ठीक से?** तुम्हारा मतलब क्या है?'' उसका चेहरा गुस्से से जामुनी होते हुए, औरत ने पूछा। ''**कोई भी**, रेडियो में बैटरी डाल सकता है। **वास्तव में**, मैंने उन्हें ठीक ही डाला था।''

प्रबंधक मुस्कराया और उसने कहा, ''एक तरीका सही है, और एक तरीका गलत है। यदि आप उन्हें उनकी ध्रुवता उल्टी करके डालेंगीं, तो वह काम नहीं करेंगे।''

''बकवास!'' औरत ने दंभपूर्वक कहा। ''उन्हें किसी भी स्थिति में–कुल मिलाकर किसी भी स्थिति में, काम करना चाहिए। मैं अपनी टीवी (TV) का प्लग लगा देती हूॅं, और मुझे सोचना नहीं पड़ता कि प्लग किस तरह लगाया जाना चाहिए। जैसे कि तुम सभी लोग करते हो, तुम बहाने बना रहे हो!'' उसने जोर से सूंघा और रेडियो, जो अभी भी कर्कश धुन बजा रहा था, को उठाने के लिये मुड़ी।

''केवल एक पल, श्रीमती जी!'' प्रबंधक चीखता हुआ बोला। ''मैं **आपको** दिखाऊॅंगा, या हम को वही परेशानी दोबारा होगी।'' उससे आगे गुजरते हुए, उसने रेडियो को लिया और तेजी से बैटरी–

बॉक्स का ढक्कन हटाया। बैटरियों को बाहर खींचते हुए, उसने फिर से उनको गलत ढंग से, दोबारा लगाया और सेट को चालू किया, कोई आवाज नहीं, बिल्कुल कोई फुसफुसाहट नहीं। एक बार फिर से, बैटरियों को घुमाते हुए, उसने अब चलते हुए सेट को औरत को दे दिया। ''खुद करके देखें,'' उसने मुस्कराहट के साथ कहा।

''ठीक है, मैंने कभी नहीं, ठीक है, मैंने कभी नहीं किया!'' औरत ने दबी हुई जुबान से कहा। तब– सहायक की ओर विजयी भाव से इशारा करते हुए। ''ठीक है, **उसे** मुझे बता देना चाहिये था। मैं कैसे जानती?''

प्रबंधक सेल्फ पर से एक बैटरी लेने के लिये पहुॅचा। ''देखिये, मैडम,'' उसने कहा। सभी बैटरियों में ध्रुवता होती है, एक सिरा धनात्मक है और दूसरा सिरा ऋणात्मक। कुल मिलाकर, बैटरी को सेट में काम करने के लिये, इसे सही ध्रुवता के साथ घुसाना चाहिए। आपका टीवी अलग है, यह प्रत्यावर्ती धारा लेता है, जो टीवी के अंदर स्वयं ही बदल दी जाती है। बैटरियों और चुम्बकों में, **हर चीज,** तथा दूसरी अनेक चीजों में, ध्रुवता होती है। आदमी और औरतें भी भिन्न ध्रुवता के होते हैं।

''हॉ!'' औरत तिरछी नजर के साथ, खी–खी करके हॅसी। हम सभी जानते हैं, क्या होता है, जब **वे** एक साथ आते हैं!''

* * * * * * *

टेलीफोन आग्रहपूर्वक घऱघराया; बर्र, बर्र, बर्र, चलती गई। गैराज के दूसरे सिरे पर, भूरे रंग के ओवरकोट वाला आदमी झुंझलाहट में कराहा। जैसे ही उसने अभी भी बर्राते हुए टेलीफोन के लिये जल्दी की, खराब रुई का एक टुकड़ा नौचते हुए, उसने अपने तैलीय हाथों को रगड़ा।

जैसे ही उसने उपकरण को क्रेडिल पर से उठाया, उसने घोषणा की, ''स्टेव का गैराज, बिक्री और सेवा, (Steve's Garage, Sales and Service).''

'ओह!' दूसरी ओर, एक जनानी आवाज ने विस्मय किया। ''मैंने सोचा था कि आप कभी उत्तर नहीं देंगे।''

''सॉरी मैडम,'' गैराज के आदमी ने कहा, ''मैं दूसरे ग्राहक के साथ व्यस्त था,''

''ठीक है,'' औरत ने जवाब दिया। मैं फैर्न्स (Ferns) की श्रीमती एलिस (Mrs. Ellis) हूॅ। मेरी कार चालू नहीं हो रही और मुझे एकदम आवश्यकरूप से शहर जाना है।''

गैराज के आदमी ने एक नई आह भरी, अपनी कारों को चालू करने में औरतों को हमेशा परेशानी होती है, फिर भी, उसने सोचा, ये वह था, जो किराये की रकम में ले लिया गया था। ''क्या आपने स्टार्टर (starter) का प्रयास किया है?'' उसने पूछा।

''वास्तव में मैंने किया है,'', औरत ने रोषपूर्वक कहा। ''मैंने दबाया, और दबाया, और कुछ भी नहीं हुआ, वह चीज किसी भी तरह से नहीं घूमी। क्या आप मिलने आयेंगे? उसने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

गैराज के आदमी ने एक क्षण के लिये सोचा, औरत का पति एक अच्छा ग्राहक था और–हॉ– उसे जाना पड़ेगा। ''हॉ, श्रीमती एलिस,'' उसने कहा। ''मैं तीस मिनट में पहुॅच जाऊॅगा।

ठीक उसी क्षण, उसका सहायक मिस्त्री कार चलाकर, शहर से आया जहॉ वह कुछ पुर्जे लेने गया था। स्टीव ने ट्रक पर जाने की जल्दी की। ''अतिरिक्त बैटरी और जम्पर केबलों (jumper cables) को रखो। क्या तुम रखोगे जिम?'' उसने जल्दी से कहा, ''मुझे एलिस की कार को देखने जाना है और पहले मुझे थोड़ा साफ हो लेना चाहिए। जल्दी से वह प्रसाधनकक्ष (washroom) में गया और धूल और ग्रीस को हटाया, और अपने मटमैले लबादों को उतारा। वापस अपने बालों को कंघी करते हुए, वह पिक–अप ट्रक की ओर तेजी से बढ़ा। 'तुमको यहॉ प्रभार में छोड़ते हुए, जिम,' जैसे ही उसने उपनगरों की ओर सड़क पर कार चलाई, उसने अपने सहायक से कहा।

एलिस के घर की ओर, दस मिनट कार चलाना, उसे एक नवीन विकसित जिले में ले गया, और उसने, व्यापार की संभावना जो वहॉ थी, पर विचार करते हुए, सभी नये घरों को उत्कंठापूर्वक देखा। परंतु लोग केवल अपनी बड़ी नई कारों में बैठे और अपनी रकम को खर्च करने के लिये शहर की ओर दौड़ गये थे। पुरानी कारों वाले, या जिनकी कारें चालू नहीं हो सकीं थीं, केवल उन्होंने स्थानीय खरीदारी की होगी, उसने सोचा। अन्यथा सभी जन–साधारण, क्रोमियम खिड़कियों की चमक और फड़फड़ाते हुए झंडों से से चौंधियाते हुए, फ्लेश पेटे (Flash Pete) (बैंच तक्नीशियन) या ईमानदार व्यापारी, जो (Joe) के यहॉ गये।

जैसे ही वह एलिस की सड़क तक चला, उसने दुबली–पतली श्रीमती एलिस को अपनी अधीरता में, पैर से पैर पर (नाचते) उछलते हुए देखा। पिक–अप ट्रक को देखकर, उसने (श्रीमती एलिस ने) ढलानवाली सड़क पर जल्दी की। 'ओह!' वह विस्मय में चीखी। ''मैंने सोचा था, तुम **कभी नहीं** आने वाले हो।''

''मुझे केवल बीस मिनट हुए हैं, मैडम'' स्टेव ने नरमी से प्रतिसाद किया। ''अब, तकलीफ क्या है?''

''ये तुम्हें पता लगाना है!'' मिसेज एलिस ने तीखेपन से कहा, जैसे ही वह मुड़ी और (उसने) अपने दो कारों वाले गैराज की ओर रास्ता दिखाया।

स्टेव ने, दीवार पर टंगे फालतू टायरों, और पैटेंट नली के साथ तेल का पॉच गैलन वाला ड्रम, तथा अभी भी अपने सॉकेट में लगा हुआ नया चमकता हुआ बैटरी चार्जर, और अभी भी उसकी चेतावनी वाली जलती हुई बत्ती को सावधानीपूर्वक हुए देखते हुए, आसपास नजर मारी। 'हम्म्!' उसने सोचा। 'इससे बैटरी की किसी तकलीफ की संभावना समाप्त हो जानी चाहिए।'

लगभग नई कार की ओर कदम बढ़ाते हुए, उसने दरवाजा खोला और फिसलकर ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। अपने आसपास देखते हुए, क्लच (clutch) की जॉच करते हुए, और ये सुनिश्चित करते हुए कि कार गीयर (gear) में नहीं थी, उसने चालू करने वाले (starter) बटन को दबा दिया। कुछ नहीं, जीवन का कोई चिन्ह नहीं। ये प्रदर्शित करने के लिये कि इगनीशन चालू भी था, कोई लाल बत्ती नहीं। बाहर निकलते हुए और बोनट (bonnet) को उठाते हुए, उसने देखा कि सभी नये इगनीशन तारों के साथ, इंजन साफ था। बैटरी के कनेक्शनों की जॉच करते हुए, उसने उन्हें कसा हुआ और साफ पाया। एक क्षण के लिये वह उलझन और अनिश्चिय में खड़ा हुआ। ''ओह! करो, जल्दी करो, मैं पहले से ही विलम्ब से हूँ, मुझे जोर देना चाहिए कि तुम **कुछ करो**, या मुझे इसे चालू करने के लिये किसी दूसरे को बुलाना पड़ेगा।'' श्रीमती एलिस, वास्तव में, बौखलाई हुई थी। ''ये इतना मूर्ख है,'' उसने कहा। ''मेरे पति ने कल ही एक बैटरी चार्जर खरीदा था, ताकि सबसे ठंडे मौसम में भी, हमारी कारें आसानी से चालू हो जायें, और अब मेरी बिल्कुल चालू नहीं होती!''

स्टेव जल्दी से अपने पिक–अप ट्रक तक गया और औजारों तथा बैटरी टैस्टर (battery tester) के साथ लौटा। तारों को, बैटरी के सिरों पर रखते हुए उसने पाया कि बैटरी पूरी तरह से **मृत (dead)** थी।

''ओह, बकवास!'' श्रीमती एलिस चीखीं, जैसे ही उसने ध्यान दिलाया। ''बैटरी पूरी रात भर चार्ज पर लगी रही थी, मैंने इसे खुद लगाया था।''

बैटरी चार्जर की ओर जाते हुए, स्टेव ने उसे देखा और अपने आश्चर्य के लिये पाया कि उसके तारों पर चिन्ह नहीं लगे थे, न तो **धनात्मक (positive)** न हीं **ऋणात्मक (negative)** लिखा था। ''आप कैसे जानती हैं कि कौन सा क्या है।'' उसने पूछा।

श्रीमती एलिस खाली दिखाई दी, ''क्या इससे फर्क पड़ता है?'' उसने पूछा।

स्टेव ने आह भरी, और समझाया। ''सभी बैटरियों में एक धनात्मक पक्ष और एक ऋणात्मक पक्ष

होता है। और यदि आप किसी चार्जर को गलत तरीके से जोड़ेंगी, आप अपनी बैटरी को चार्ज करने के बजाय, उसे डिस्चार्ज कर रही होंगी। इसलिये आपकी बैटरी निर्जीव हो गई है। और आप (कार को) चालू नहीं कर सकतीं।

श्रीमती एलिस ने खिजलाहट भरी चीख निकाली, मैंने अपने पति से उन लेबलों को न हटाने के लिये **कहा था**,'' वह दुख से बोली। ''अब मैं क्या करूं?''

स्टेव सिरों और बैटरी क्लेंपों (clamps) को हटा रहा था, तभी वह बोला, ''दस मिनट, और आप जाने को तैयार हो जायेंगी। ''इस बीच कि मैं आपकी को ठीक से चार्ज कर सकूं, मैं आपको उधार देने के लिये एक फालतू बैटरी लाया था।

श्रीमती एलिस, अब पूरी तरह मुस्कराई, पूछा, '' वहॉ एक धनात्मक चीज, और एक ऋणात्मक चीज भी, क्यों होनी होती है?''

''ऊर्जा के प्रभाव को ठीक बनाये रखने के लिये, उसे व्यवस्थित होना होता है, स्टेव ने उत्तर दिया। ''**कहीं न कहीं**, **हर चीज** का अपना विपरीत प्रतिपक्ष (counterpart) होना होता है। अपने विपरीत के रूप में, आदमियों की प्रतिपक्ष औरतें होती हैं, वास्तव में, प्रकाश का प्रतिपक्ष अंधकार होता है। उसने हॅसी के साथ कहना जारी रखा, ''मेरा ख्याल है कि **कहीं न कहीं,** इस पृथ्वी के सापेक्ष विपरीत ध्रुवता वाला एक विश्व है!'' फिर से कार में अंदर घुसते हुए, उसने स्टार्टर को दबाया और इंजन जीवित होकर दहाड़ उठा।

''मुझे जल्दी करनी चाहिए,'' श्रीमती एलिस चीखी, ''यदि अपरान्ह भोजन के लिये उनसे मिलते हुए, मैं विलंब से होऊॅ, तो मेरा विपरीत ध्रुव'' नाराज हो जायेगा।'' स्टेव को मृत बैटरी अपने पिक–अप ट्रक पर रखता हुआ छोड़कर, ब्रेक को ढीला छोड़ते हुए, वह तेजी से दूर चलीं।

निवृति की भावना में अपने सिर को हिलाते हुए, वह बड़बड़ाया। ''**औरतें**.....! परंतु मैं आश्चर्य करता हूॅ कि क्या वास्तव में प्रतिपदार्थ का कोई दूसरा विश्व है, ये एक विचित्र कहानी थी जो मैंने किसी रात को, रोज और ड्रेगन (Rose and Dragon) पर सुनी। मुझे आश्चर्य है.....!''

* * * * * * *

फोर्ट एरी (Fort Erie) में, पीस ब्रिज (Peace Bridge) के आसपास, नदी, पत्थर के घाटों के चारों ओर चक्कर खाते हुए और गड़गड़ाते हुए, मोड़ के आसपास झूलते हुए और नियाग्रा पार्क (Niagara Park) की सड़क के किनारों को धोने के लिये, बहती गई। उसने उछलती–कूदती तरंगों वाली, अपनी आनंद की नावों को, ऊपर–नीचे होते हुए अपने अनदेखे ठिकानों पर बांधा। जैसे ही इसने ग्रांड आइसलैंड (Grand Island) में रेतीले समुद्रतट पर, लुढ़कते छोटे पत्थरों को निश्तेज भव्यता के साथ, एक मुस्कराती हुई हिस की आवाज के साथ समेटा। यह, हर छोटी नदी, धारा और झरने की भॉति, चिप्पावा (Chippawa) नदी का स्वागत करके, उसे अपनी छाती से लगाते हुए, उसे अपने आकार में जोड़ते हुए, बढ़ी हुई ताकत के साथ उछलते हुए, बहती रही।

और आगे, नियाग्रा झरने (Niagara Fall) की फुहारें, क्षण भर के लिये ठहराव में लटकने, और तब प्रवाह में जुड़ने के लिये वापस गिरते हुए, हवा में सैकड़ों फीट दूर तक उछलीं। सदैव बदलते हुए प्रादर्शों में उछलती हुई प्रकाश की रंगीन किरणों ने, उछलते हुए जलों के ऊपर क्रीड़ा की और फुहारों में ऊपर बहुरंगी इंद्रधनुष बनाया। झरनों के ऊपर वाले जल नियंत्रण स्टेशन (water-control station) पर, आदमी के हाथ की सनक पर, पर्यटकों के आनन्द के लिये गिरने के लिये, असंख्य गैलन पानी झरने के ऊपर जाते हुए, विभाजित हो गया, और तेजी से घूमते हुए हजारों गैलन, मनुष्य निर्मित बड़ी सुरंग में प्रवेश करने और सदैव बढ़ते हुए बल के साथ, पॉच मील नीचे, सर एडम बैक उत्पादन केन्द्र (Sir Adam Beck Generating Station) की ओर, कलकल की ध्वनि (swoosh) करने के लिये

छोड़ दिये गये।

उपयोग में लाये गए पानियों की प्रबल शक्ति कम हुई और अविश्वसनीय गति के साथ उन्हें घुमाते हुए, और युग्मित उत्पादकों (coupled generators) को घुमाते हुए टरबाइन के पंखों (blades) के विरुद्ध, अप्रतिरोध्य बल (irrestible force) के साथ समेट ली गई, जिससे विद्युत की अति विशाल मात्रा पैदा हुई।

जैसे ही सभ्यता की आवश्यकताओं को पूरा करने लिये, धारा प्रवाहित हुई, आंन्टेरियो पावर लाइन्स (Ontario power-lines) के आरपार भिनभिनाहट (hum) हुई। कनाडा की विद्युत को, अमेरिकी घरों और उद्योगों तक लाते हुए, तारों की महान ग्रिडें, कनाडा से न्यूयार्क शहर तक, पूरे संयुक्त राज्य में फैलीं थीं। अरबों बत्तियों ने अपना सुख और आश्वासन बिखेरा। व्यस्त होटलों में, अतिथियों को उनके कमरों में ले जाते हुए, स्वचालित सीढ़ियॉ (elevators) एक विशिष्ट आवाज के साथ (whooshed) चलीं। कनाडा में उत्पादित विद्युत के द्वारा दोनों देशों के अस्पतालों में डॉक्टरों और शल्य चिकित्सकों ने अपने कार्य पूरे किये। रेडियो गूंजे, और लपलपाती और अपने कॉच के परदे के पीछे की ओर कूदती हुई छायाओं ने टेलीविजन को प्रभावित किया।

बसे हुए संपूर्ण ग्लोब (globe) से, हवाई जहाज, अच्छी तरह प्रकाशित भूमि के आरपार चलते हुए आये। वे इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिणी अमेरिका और यात्रा ऐजेंसी के विज्ञापनों के सभी मोहक नामों (वाले स्थानों) से, व्यवस्थित परतों में अभिसारित होते हुए (converging), न्यूयार्क राज्य के महान हवाई अड्डे पर आये। असंख्य मीनारों में, नियंत्रकों ने, निर्देशन, मार्गदर्शन देते हुए उड़ाकाओं (airmen) के साथ बातें कीं। हवाईपट्टी की बत्तियों ने दृश्य को दिन की भॉति प्रकाशित बना दिया था। आकाश दीपों (beacons) ने, उन लोगों के द्वारा, जो अभी भी, देश की निगाह के परे, अंधकार का परदा पड़े समुद्र के काफी ऊपर थे, अनेक अनेक मीलों दूर से देखे जाने के लिये, प्रकाश की महान किरणें, आकाश में फेंकीं।

बिजली की रेलों ने दहाड़ मारी और नीचे की जमीन को झिंझोर दिया, और पुलों (viaducts) और सतही पुलों (bridges) के आरपार, शोर के साथ धात्विक आवाजें कीं। गोदियों में, जैसे ही चींटियों के समान मनुष्यों के झुण्ड, भार उतारने और नया (भार) लादने की उन्मुक्त सक्रियता में संलग्न हुए, सम्पूर्ण विश्व के बड़े–बड़े व्यापारिक जलयान अपने लंगरों पर चढ़े। तेज रोशनियों ने घंटों को उलट दिया और रात के अंधकार को दिन के उजाले में बदल दिया।

दूर उत्पादन केन्द्र पर, जल असीम रूप से मुड़ते हुए, मुड़ते हुए, आसपास दौड़े, ताकि विद्युत, ''धनात्मक,'' 'ऋणात्मक'' को पैदा करते हुए, दोनों देशों के बीच प्रवाहित हो सके, जिससे एक का दूसरे तक जाने के लिये अंतहीन संघर्ष, ऊर्जा के बहने के लिये, किये जाने वाले कार्य के लिये, और मनुष्य को आश्वासित सुख का कारण होगा। परंतु कहीं–एक छोटा दोष उत्पन्न हुआ। किसी स्थान पर लघुपथन (short circuit) हुआ और लघुपथन क्या होता है, केवल एक धनात्मक और ऋणात्मक का अचानक एक साथ आ जाना? वे पहले छोटे पैमाने पर साथ आये, तब फुटबाल की उमड़ती हुई भीड़ की तरह से अधिक, और अधिक, धनात्मक इलेक्ट्रॉन, एक उछाल के लिये अधिक और अधिक ऋणात्मक इलेक्ट्रॉनों की ओर आरपार दौड़े।

रिले (relays) गर्म हो गये। ऊष्मा बढ़ी और गर्मी के द्वारा बिन्दु आपस में बेल्ड (weld) हो गये। इन्सुलेटेड तार (insulated wires) गर्म हो गये, लाल तप्त गर्म हुए, और उन्होने जलती हुई रबर के धुए के गुबार बाहर फेंके। मोटरें गरजीं और अधिक शक्ति की पीड़ा से हिनहिनाईं, तब घरघराना खामोशी में समाप्त हुआ। पूरे दो देशों की बिजली चली गई। यात्रियों को खड़े रखते हुए और उनमें परेशानियॉ और भय उत्पन्न करते हुए, बिजली चालित सीढ़ियों ने चलना बंद कर दिया। जैसे ही प्रवाह रुका, जमीन के नीचे रेलें, एक चीख के साथ स्थिर खड़ीं हो कर जोर से हिलीं। आनंदों का भी

आनंद–चीखते हुए रेडियो और लपलपाते हुए टेलीविजन सेट खामोश हो गये और बुझ गये। फटे हुए कागज और कोसते हुए आदमियों की गुत्थी में उलझीं प्रेसें, विराम में आ गईं।

और ये सब, क्योंकि 'धनात्मक' विद्युत, 'ऋणात्मक' विद्युत से हिंसक तरीके से, बिना वश में आये हुए और पहले के द्वारा, काम करने के लिये नियंत्रित, अचानक मिलना चाहती थी। क्योंकि, जब अनियंत्रित विरोधी मिलते हैं, **कुछ भी** हो सकता है.....और होता है!

* * * * * * *

पिछली शताब्दियों से दूर, सुदूर पूर्व (far east) के विशेषज्ञ जानते थे कि इस (विश्व) का एक विपरीत विश्व है, विश्व जो दूर है, जो सुदूरपूर्व में 'काले जुड़वॉ (black twin) ' के रूप में संदर्भित किया जाता है। वर्षों से पश्चिमी वैज्ञानिकों ने, अपनी अज्ञानता में विश्वास करते हुए कि केवल पश्चिमी वैज्ञानिकों के द्वारा खोजी गईं चीजें ही अस्तित्व में हो सकती थीं, ऐसी चीजों का उपहास किया है, परंतु अब, एकदम फिलहाल के समय में, प्रतिपदार्थ (antimatter) जगत के साथ सम्बंधित तमाम चीजों को खोजने के लिए, एक व्यक्ति को नोबल पुरुस्कार दिया गया है।

1927 में ब्रिटेन के एक भौतिक विज्ञानी ने खोज की कि प्रतिपदार्थ के विश्व जैसी कोई एक चीज थी, परंतु प्रकटरूप से अपनी खुद की योग्यता में पर्याप्त विश्वास न होने के कारण, उसे अपने खुद के कार्य पर संदेह था। परंतु तभी कार्ल एंडरसन (Carl Anderson) नामक एक अमेरिकी भौतिक शास्त्री ने, एक विशिष्ट प्रकोष्ठ से गुजरती हुई अंतरिक्ष किरणों (cosmic rays) का फोटोग्राफ लिया। उसे दूसरे इलेक्ट्रॉनों से अलग, एक इलेक्ट्रॉन के अनुरेख (traces) मिले, वास्तव में, उसने पाया कि प्रति इलेक्ट्रॉन (पोजीट्रॉन) होते हैं, और उसके आविष्कार के लिये, जिसकी ब्रिटिशों को 1927 में आशा थी, एंडरसन को नोबल पुरुस्कार प्राप्त हुआ। यदि शायद, ब्रिटेन के भौतिक शास्त्री ने अपने काम में पर्याप्त आत्मविश्वास रखा होता, तो बदले में उसे यह पुरुस्कार मिलता।

अब ये वैज्ञानिकों को भी स्पष्ट है–ये पूर्व के लोगों को शताब्दियों पहले ही स्पष्ट हो चुका है– कि एक हाइड्रोजन परमाणु और उसका प्रतिपदार्थ प्रतिपक्षी, विस्फोट कर सकता है, जो तुलना के द्वारा, एक उतना अप्रभावी जितना कि एक गीला पटाका, मानक परमाणु बम बनायेगा। परंतु हम इस मामले में थोड़ा सा अधिक देखें।

सभी जीवन, सभी अस्तित्व, गति, प्रवाह, चढ़ना और गिरना, बढ़ना और घटना हैं। दृष्टि भी गति से बनती है, क्योंकि ऑख के रॉड (rods) और कोन (cones), केवल उस चीज से, जो हमें देखनी है, कंपनों (गति) को प्रतिसाद (respond) करते हैं, इसलिये ऐसा कुछ भी नहीं है जो स्थिर हो। एक पर्वत को लें–ये ठोस संरचना दिखाई देती है, परंतु भिन्न दृष्टि के द्वारा, पर्वत, केवल ऊपर–नीचे नाचते हुए, जैसे कि गर्मी की रात में मच्छर मंडराते हैं, एक दूसरे के आसपास घूमते हुए अणुओं का एक समूह है। एक बड़े पैमाने पर हम इसकी तुलना अंतरिक्ष से कर सकते हैं, क्योंकि अंतरिक्ष में सभी ग्रह, विश्व, उल्कायें गति में लगातार आसपास घूमती हुए, हैं, कुछ भी शांत नहीं है, मृत्यु में भी शांत नहीं होगा!

उसी तरीके से कि बैटरी में, इससे पहले कि ऊर्जा प्रवाहित हो सके, एक ऋणात्मक ध्रुव और एक धनात्मक ध्रुव होना चाहिए। मानव भी ऐसा ही करते हैं– और दूसरी कोई भी चीज, जो अस्तित्व में है, के धनात्मक और ऋणात्मक घटक होते हैं। कोई भी चीज, जिसमें सभी धनात्मक या सभी ऋणात्मक हो, कभी अस्तित्व में नहीं थी, क्योंकि, जबतक अंतर नहीं है, तबतक एक से दूसरे की ओर ऊर्जा का प्रवाह नहीं होगा और इसप्रकार जीवन और अस्तित्व असंभव ही होगा।

अधिकांश लोग, प्रतिपदार्थ के विश्व से, ठीक वैसे ही अपरिचित हैं, जैसे कि बैटरी के धनात्मक और ऋणात्मक ध्रुव, आपस में दूसरे ध्रुवों के अस्तित्व से परिचित नहीं होते। बैटरी का धनात्मक सिरा, ऋणात्मक की ओर या क्रम विपर्यय में (vice versa), एक प्रत्यक्ष खिंचाव रखता है, परंतु ये अत्यधिक

असंभाव्य है कि कोई भी ध्रुव, दूसरे के अस्तित्व के बारे में चर्चा कर सके।

पदार्थ का विश्व है, परंतु समान और विपरीत प्रतिपदार्थ का विश्व भी है, वैसे ही जैसे कि भगवान है और प्रति–भगवान (God and anti-God) है। जबतक कि हमारे पास प्रति–भगवान न हो, भगवान की अच्छाई की तुलना करने का कोई तरीका नहीं है और जबतक हमारे पास एक भगवान नहीं होता, तब तक प्रति–भगवान की बुराइयों की तुलना करने का कोई मतलब नहीं है। हम वर्तमान में, इस पर, जो वास्तव में ऋणात्मक विश्व या ध्रुव है, हम ''बुराई की शक्ति को'' प्रति भगवान, दैत्य, या शैतान, कुछ भी नाम दें, जीते हैं। परंतु शीघ्र ही, अस्तित्व का चक्र बदलेगा और ठीक वैसे ही, जैसे कि हमारा प्रतिपक्षी ऋणात्मक से धनात्मक की ओर, और धनात्मक से ऋणात्मक की ओर बदलता है, हम भगवान के द्वारा, उसके लाभकारी प्रभावों के अंतर्गत अधिक नियंत्रित होंगे।

पूरा जीवन प्रवाह है, गतिशीलता, कंपन, दोलन, परिवर्तन। पूरा अस्तित्व प्रवाह और परिवर्तन है। यदि हम प्रत्यावर्ती धारा (alternating current) प्रणाली की परीक्षा करें, तो हम देख सकते हैं कि प्रत्येक अर्द्ध तरंग, ऋणात्मक चक्र को आधा धनात्मक होते हुए बनती है, और एक आधा चक्र धनात्मक, तथा आधा ऋणात्मक हो जाता है, परंतु तब वे चलते जाते हैं, और आधा ऋणात्मक होने की बजाय पहला पूरा तरह ऋणात्मक हो जाता है और दूसरा पूरी तरह धनात्मक। हमारी सामान्य घरेलू धारा में, उदाहरण के लिये इंग्लैंड में, धारा, अपनी ध्रुवता, एक सेकंड में पचास बार, धनात्मक से ऋणात्मक और ऋणात्मक से धनात्मक, बदलती है। विश्व के दूसरे भागों, कनाडा और संयुक्त राज्य में, परिवर्तन की आवृति एक सेकंड में साठ बार है। अस्तित्व की इस आकृति में, हम विश्व, सौर–तंत्र और ब्रह्मांड, के रूप में जाने जाने वाली, अपनी खुद की, एक चक्र प्रणाली (cycle system) रखते हैं। यहॉ हम, समय की धारा के साथ, ठीक वैसे ही, यात्रा करते हैं, जैसे कि इलेक्ट्रॉन विद्युत धारा के साथ यात्रा करते हैं। जबतक कि हम–या हमारा अधिस्वयं–किसी अधिक ऊंचे अस्तित्व में नहीं पहुॅचता, हम अपने समय के विचार के साथ–साथ यात्रा करते हैं। यदि आप मेरे द्वारा लिखी गई, ''पुरातनों की बुद्धिमत्ता (wisedom of the Ancients)" का संदर्भ देखें तो आप पायेंगे कि बहात्तर हजार वर्षों का एक अलग समय चक्र है (मानवीय अस्तित्व की बहात्तर हजार वर्षों की अवधि के चक्र का संदर्भ है, परंतु पुरातनों की बुद्धिमत्ता में नहीं, बल्कि ''तुम सदा के लिये (You for Ever),'' पाठ 19 में– संपादक)।

परंतु इस पृथ्वी पर, कोई भी, और कुछ भी, किसी दूसरे विश्व में, दूसरी निहारिका (galaxy) में, और समय के दूसरे तंत्र में, पूर्णतः विपरीत ध्रुवता का अपना एक प्रतिपक्षी रखता है। स्पष्टतः, वह तंत्र हमारे समीप नहीं हो सकता अन्यथा इतना भयानक विस्फोट होगा कि संपूर्ण पृथ्वी, और साथ–साथ दूसरे अनेक विश्व भी नष्ट हो जायेंगे।

अब ये सोचा जाता है कि, दुनियॉ को हिला देने वाला बड़ा विस्फोट, जो 30 जून 1908 को साईबेरिया के व्यर्थ स्थानों (wastes) में घटित हुआ था, प्रतिपदार्थ के एक छोटे से टुकड़े, फुटबाल से काफी छोटे टुकड़े के कारण, जो कैसे भी हमारे वातावरण में आ गया था, हुआ था। इसने, वास्तव में, अत्यधिक गति के साथ यात्रा की, और जैसे ही, प्रतिपदार्थ का फुटबाल से काफी छोटा ये कण, पृथ्वी से टकराया एक शोर के साथ फट गया, जिसे पॉच सौ मील से भी अधिक दूरी तक सुना गया था। चालीस मील दूर तक के लोग, इस धमाके और झटके के साथ अपने पैरों पर उछाल दिये गये थे। इसलिये यदि प्रतिपदार्थ का कोई बड़ा टुकड़ा आया, तो पृथ्वी पर कुछ नहीं बचेगा; वैसे ही, जैसे कि चिनगारियॉ संपर्कों को आपस में वैल्ड (weld) कर सकती हैं और इसप्रकार विद्युत प्रणाली की एक छोटी और पूरी सफलता पैदा करती हैं, इसलिये प्रतिपदार्थ के अपेक्षाकृत बड़े टुकड़े ने, हमारे लिये पूरी तरह से असफलता पैदा कर दी होती।

तब, हम, अपने वर्तमान चक्र में, और अपने वर्तमान विश्व में, ऋणात्मक चक्र में हैं। इसप्रकार हमारे अंदर अवसाद, कटुता है, जहॉ वर्चस्ववान बल, बुराई है। इस तथ्य से प्रोत्साहित हों कि ये विशेष

चक्र समाप्ति पर आ रहा है, और आने वाले वर्षों में, एक नया चक्र प्रारंभ होगा, जिसमें परिस्थितियॉ अधिक और अधिक धनात्मक होंगीं, जहॉ हम प्रतिभगवान के, और अधिक, वर्चस्व के अंतर्गत नहीं होंगे, जहॉ और अधिक, युद्ध नहीं होंगे, परंतु जहॉ सब कुछ अच्छा होगा; क्योंकि अभी तो हमारे पास एक दूसरे के विरुद्ध, युद्ध हैं, आने वाले चक्र में, युद्ध केवल गरीबी, और बीमारी, और स्वयं बुराई के विरुद्ध होंगे और हम पायेंगे कि हमारे पास वह है, जिसे शब्दों में ''पृथ्वी पर स्वर्ग (heaven on earth)'' कहा जाता हैं, और अधिस्वयं अपनी पुतलियों को हर उस जगह, जहॉ उस समय धनात्मक विश्व होगा, के साथ–साथ, ऋणात्मक विश्व को भी, भेज रहे होंगे।

मान लीजिये आप *एलिस इन वंडरलैंड (Alice in wonderland*) पर विचार करते हैंः दर्पण में होकर, एक विश्व, जहॉ हर चीज उल्टी थी, में जाती हुई, एलिस पर विचार करें। मानते हुए कि आप ऋणात्मक और धनात्मक को अलग करते हुए परदे में होकर, सहसा गुजर सकते थे, मानते हुए कि यहॉ, इस विश्व में, आप आश्चर्य कर रहे थे कि आप अपने बिलों का भुगतान कैसे कर सकते थे, आश्चर्य करते हुए कि आप चलते रहने को कैसे झेल सकते थे, और आश्चर्य करते हुए कि आपका पड़ौसी आपको इतना अधिक नापसंद क्यों करता था। तब, अप्रत्याशितरूप से आपको परदे में होकर धकेला गया था। आपको पता लगेगा कि आपके पास कोई बिल नहीं थे, लोग दयालु थे, आपके पास पूरे समय अपने खुद के सम्बंध में सोचने के बजाय दूसरे लोगों को मदद करने के लिये समय था। यह अपरिहार्य रूप से आने वाला है, ये हमेशा आता है, और हर बार चक्र का उत्क्रमण होता है, कि हम थोड़ा अधिक सीखते हैं।

ये एक दिलचस्प विचार है कि यदि हम प्रतिपदार्थ का, लगभग मटर के आकार का, एक डेला उठा सकें और हम उसे किसी भी प्रकार से, पृथ्वी के प्रभाव से बचा सकें, तो हम किसी बड़े अंतरिक्ष यान में, इसका उपयोग कर सकते हैं और तब, इसमें से केवल थोड़े से को, मटर के दाने से अधिक नहीं, पृथ्वी के प्रभाव में अनावरित किया जाता हुआ वह कण, अंतरिक्षयान को ऊपर की ओर इस विश्व से परे, और गहराई में काफी बाहर, गहरे अंतरिक्ष में धकेल देगा। तब रॉकेटों या धकेलने वाली किसी दूसरी आकृति की कोई आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि प्रतिपदार्थ का वह छोटा टुकड़ा, उचित नियंत्रण के अंतर्गत, पूरी तरह से, पदार्थ को प्रतिगुरुत्व (anti-gravity) प्रदान करेगा।

फिर, बिना बुराई के, भलाई भी नहीं हो सकती, क्योंकि, कोई भी बल अस्तित्व में नहीं होगा। आपके पास ऐसा कोई चुम्बक नहीं हो सकता, जिसमें सब धनात्मक या सब ऋणात्मक हो, क्योंकि कोई बल अस्तित्व में नहीं होगा। चुंबक भी अस्तित्व में नहीं होगा! हम कल्पना करें कि विश्व, चुम्बकीय क्षेत्रों, जो आर्कटिक (arctic) और अनार्कटिक (anarctic) से विकीर्णित होते हैं, के साथ, मात्र एक चुंबकीय आकृति का है परंतु किसी सेतु के द्वारा, जिसे हम देख नहीं सकते, हमसे जुड़ा हुआ, विपरीत ध्रुवता का दूसरा विश्व भी है। तब हमारे पास, उसके, उदाहरण के लिये, घोड़े की नाल के आकार के एक चुंबक के दो ध्रुव होंगे। अनेक वैज्ञानिक आश्चर्य कर रहे हैं कि क्या प्रतिपदार्थ का अर्थ है कि इस दूसरे विश्व में, हर एकल वस्तु की प्रतिलिपि बनाई जाती है। उदाहरण के लिये, वे आश्चर्य करते हैं, क्या वहॉ प्रति–मनुष्य (anti-men), प्रति–बिल्लियॉ (anti-cats), और प्रति–श्वान (anti-dogs) होंगे। वैज्ञानिक नहीं जानते कि ये लोग कैसे दिखते होंगे क्योंकि वैज्ञानिक, लगभग नहीं, या कम कल्पनाशील लोग होते हैं, उन्हें किसी चीज को अपने हाथ में रखना पड़ता है, ताकि वे उसकी चीरफाड़ कर सकें या तौल सकें। इस विषय विशेष पर, जानकारी देने के लिये, कोई गूढ़विज्ञानी (occultist) ही चाहिये, क्योंकि, कुशल गूढ़विज्ञानी, शरीर को छोड़ सकता है और शरीर के बाहर, और वैसे ही पृथ्वी के भी बाहर आ सकता है और यदि एकबार ये पृथ्वी के बाहर हुआ, तो वह देख सकता है कि दूसरा विश्व कैसा है– जैसा कि मैं बहुत, बहुत, बार कर चुका हूॅ।

प्रति–मनुष्य, मात्र वे लोग हैं, जिनकी इथरी दिशा, इस पृथ्वी के विश्व के लोगों से भिन्न होती

है। शुद्ध रूप से एक उदाहरण के द्वारा, वे, प्रभामंडल के, यहॉ जैसे नीले और पीले खोल के बजाय, एक पीले–से और नीले खोल लिये हुए हो सकते हैं। यदि आप प्रतिपदार्थ के इस विश्व को देखना मुश्किल पायें, तो इसे फोटोग्राफी के द्वारा देखें– हमारे पास एक निगेटिव है और एक पॉजीटिव है, और यदि हम निगेटिव में होकर, संवेदनशील बनाये गये कागज (sensitised paper) के अंतर्गत प्रकाश डालें और चीज को विभिन्न रसायनों में डुबा दें, तो जहॉ निगेटिव में प्रकाश का धब्बा था, वहॉ हमें एक काला धब्बा मिलता है, और निगेटिव में जहॉ काला धब्बा था, वहॉ प्रकाश का धब्बा मिलता है।

उड़ने वाली कुछ निश्चित चीजें, अज्ञात हैं– हम उन्हें उड़नतश्तरियॉ कहें, जो इस पृथ्वी पर वास्तव में, प्रतिपदार्थ के विश्वों से आती हैं। वे अत्यधिक समीप नहीं आ सकतीं अन्यथा वे फट जायेंगी, परंतु वे ठीक वैसे ही खोज रहीं हैं, जैसे कि हम, चंद्रमा पर या मंगल या शुक्र पर एक राकेट भेजते हैं।

लोग शिकायत करते हैं कि यदि इस उड़नतश्तरी के क्रियाकलाप में कोई चीज होती, तो उस पर सवार लोग उतरते या पृथ्वी के लोगों के साथ संपर्क बनाते। मामले का पूरा सत्य ये है कि वे ऐसा कर नहीं सकते, क्योंकि यदि वे यहॉ स्पर्श करेंगे, तो एक विस्फोट होगा और उड़नतश्तरी नहीं बचेगी। यदि आप विभिन्न रिर्पोताज पर विचार करेंगे, तो आप याद करेंगे कि ऐसी घटनायें हुई हैं, जब कुछ अज्ञात उड़नतश्तरियॉ, जो बहुत ही स्पष्टरूप से राडार पर देखीं गई थीं, जैसे ही वे इस विश्व की सतह से एक हजार फुट या वैसे ही, घेरे के अंदर आईं, वैसे ही, अचानक अत्यधिक हिंसक तरीके से विस्फोटित हो गईं, इतने हिंसक तरीके से विस्फोटित हुई कि इनका अतापता नहीं मिल सका। यदि हम राकेट को, प्रति–पदार्थ के विश्व को भेज सकते, तो वैसी ही बात हो सकती थी। हम शायद एक शहर को धमाके से उड़ाते हुए, शायद, उनको नक्शे पर से पूरी तरह विलोपित करते हुए, निवासियों को विचारणीयरूप से नाराज कर रहे होते!

प्रति–पदार्थ के इस विश्व के दूसरे पहलू हैं, जो उन लोगों के लिये, जिन्होंने पदार्थ को पूरी तरह पढ़ा है, अत्यधिक दिलचस्प हैं। उदाहरण के लिये, कुछ निश्चित स्थान (locations)–सौभाग्यवश केवल थोड़े से ही–हैं, जहॉ से हमारे इस विश्व के लोग, दूसरे आयाम या प्रति–पदार्थ के विश्व में 'खिसक सकते हैं।' लोग ऐसे स्थान पर जाते हैं, जो थोड़ा सा दोलन करता है और यदि वे दुर्भाग्यशाली हुए तो वे हमारी पृथ्वी से पूरी तरह से स्थानांतरित कर दिये जाते हैं। ये कल्पना नहीं है, परंतु एक मामला है, जो बार–बार सिद्ध हो चुका है।

शैटलैंड (Shetland) द्वीपों के काफी परे, एक अत्यंत ठंडे समुद्र में, अल्टिमा थुले (Ultima Thule) नामक एक रहस्यमय द्वीप है, जिसे अंतिम भूमि (The Last Land) कहा जाता है। उस द्वीप के आसपड़ौस में, और वास्तव में, उस पर, सर्वाधिक रहस्यमय घटनायें घट चुकी हैं। उदाहरण के लिये, वर्षों पहले की, ब्रिटिश नौसेना के विभाग की एक सूचना (Admirality report) वहॉ है, जिसमें कहा गया था कि ब्रिटेन के नौ–सैनिकों का एक दल अल्टिमा थुले पर उतरा, और वहॉ उनके साथ, अत्यधिक विशिष्ट बातें हुईं, और लोग, वे लोग जो ब्रिटेन के नाविकों से काफी भिन्न थे, प्रकट हुए। अंततः दहला देने वाले अपने अनुभवों के साथ, विचारणीयरूप से हिले हुए, ब्रिटेन के नाविक अपने जहाज, संयोग से एक ब्रिटिश युद्धपोत, पर लौटे। अल्टिमा थुले पर, फिर से नहीं दिखाई देने के लिये, पूरा जहाजी–बेड़ा गायब हो चुका था।

अमेरिकी तट से दूर एक स्थान है, जिसे मृत्यु के त्रिकोण (Triangle of Death) के नाम से जाना जाता है। अटलांटिक महासागर में, ये एक क्षेत्र है, जहॉ जलयान, और तेज उड़ते हुए हवाई जहाज भी गायब हो चुके हैं। क्या आप इसमें से कुछ को जॉचना चाहेंगे?

यहॉ प्रारंभ है : 2 फरवरी 1963 को, *मरीन सल्फर क्वीन (Marine Sulpher Queen)* नामक एक तेलवाहक पोत ने, टैक्सास राज्य के ब्यूमोन्ट (Beaumont) से चला। ये जलयान वर्जीनिया के नॉरफोक (Norkfolk) को जाने वाला था।

जहाज 2 फरवरी को चला और रोजमर्रा के रेडियो संप्रेषण में, 4 फरवरी तक, जबतक कि उसका मैक्सिको की खाड़ी के किसी देश में होना बताया गया, देश के रेडियो स्टेशनों के साथ सम्पर्क में था। तब उस जलयान के बारे और कुछ भी नहीं सुना गया।

6 फरवरी को, जहाज को गुमा हुआ मान लिया गया। हवाई जहाज उस क्षेत्र के गश्त के लिये उड़े, तटीयरक्षकों ने, धाराओं में टेढ़े–मेढ़े जाते हुए नमूने बनाये और उस क्षेत्र के सभी जहाजों से जहाज टूटने की किसी भी प्रकार की असामान्य घटना की सूचना देने के लिये कहा गया था। इसलिये तेलवाही जहाज की तलाश, बिना किसी सुराग के, 14 फरवरी तक जारी रही।

केवल जलयान ही गायब नहीं हुए; अगस्त 1963 में, बड़े चार इंजन वाले दो तेलवाही हवाई जहाजों ने, मियामी के दक्षिण में किसी वायुसेना स्टेशन से उड़ान भरी। जहाज पर सवार ग्यारह व्यक्ति, तेल भरने के सामान्य कार्य–मात्र तेल भरने के प्रशिक्षण का एक सामान्य मामले में लगाये गये थे।

उड़ान के दौरान जहाजों ने अपनी स्थिति, मियामी के आठ सौ मील उत्तर और बरमूडा के तीन सौ मील पश्चिम में होने का रेडियो संदेश भेजा, परंतु ये उनसे सुना गया अंतिम संदेश था, उन्होंने अपनी स्थिति को सूचित किया और अब और नहीं दिखने के लिए गायब हो गये।

उच्च प्रशिक्षित बेड़े के साथ, ये नये हवाईजहाज थे। हवाईजहाजों में बिल्कुल भी कोई दोष नहीं था। उन्होंने अभीअभी रेडियो पर अपनी स्थिति बताई थी, और तब वे गायब हो गये।

तलाश की कल्पना करें, जो बाद में हुई; हवाई जहाज उड़े और उनमें से कुछ ने ऊँचाई पर उड़ते हुए, शब्दशः पूरे क्षेत्र को छान मारा, ताकि वे समुद्र के सर्वाधिक संभव विस्तारित क्षेत्र को देख सकें, दूसरे इन दोनों जहाजों से कुछ पा जाने की आशा में नीचे उड़े। जहाज काफी दूर तक आरपार चले और उन्होंने खोज की, परंतु किसी भी प्रकार का, कुछ भी नहीं पाया गया, कोई जहाज नहीं, कोई मलबा नहीं, कोई लाशें नहीं–कुछ नहीं।

बरसों तक, जलयानों के रहस्यमय ढंग से गायब होने की ये रिपोर्टें आती रहीं–जलयान बिना कोई चिन्ह छोड़े हुए गायब हुए, ये दिखाने के लिए कि वे कभी अस्तित्व में थे, मलबे में माचिस की एक तीली तक छोड़े बिना गायब हुए। परंतु वहॉ वर्तमान की भॉति, तेजी से तलाश की, तेज राडार उपकरणों से सुसज्जित हवाईजहाजों की, सुविधायें कभी नहीं रहीं, और कोई बात नहीं, कोई कैसे ढूंढ़ता है, कोई बात नहीं, कोई कौन से साधन अपनाता है, अभी भी, वहॉ जो हुआ था, उसका कोई सुराग नहीं है।

एटलांटिक में, बरमूडा/फ्लोरिडा समुद्रतट पर एक क्षेत्र है, जहॉ अनेक जलयान गायब हो चुके हैं, और अनेक हवाईजहाज भी गायब हो चुके हैं। ये एकांत क्षेत्र नहीं है, क्योंकि पूरी तटीय रेखा, तट रक्षकों नौसेना, और वायुसेना के द्वारा गश्त की जाती है। गायब होने की सूची, लिखित इतिहास के प्रथम भाग तक पीछे जाती है।

अनेक बरसों पहले, मैं प्रशांत महासागर में, जापान के दक्षिण में, एक अत्यंत रहस्यमय क्षेत्र से परिचित हुआ। यहॉ ''शैतान का समुद्र (Devil's Sea)" के नाम से जाना जाने वाला एक क्षेत्र था, जहॉ एक जलपोत, सामान्यतः टूटाफूटा, अपने शांत तरीके से चलता रहता है, और इससे पहले कि पड़ौस के दूसरे टूटेफूटे जहाजों में से, दूसरे लोगों की भौचक्की ऑखें, उसे देखें, पूरी तरह से गायब हो जाता है। एक अवसर पर, मछलीमार नौकाओं की एक पंक्ति, शैतान के समुद्र में होकर गुजर रही थी, अगुवाई करने वाला टूटाफूटा जहाज, शायद अगली से एक मील दूर था। वह चलता गया और अचानक ही, हल्का सा भी कोई सुराग छोड़े बिना, गायब हो गया। दूसरे टूटेफूटे जहाज का कर्णधार, डर के कारण, इस तरह से लकवा खा गया कि उसे रास्ता बदलने का समय या विचार नहीं मिला और ये टूटा हुआ जहाज भी, दूसरों की तरह से, उसी रास्ते पर चला गया और इसको कुछ नहीं हुआ। बाद में, जहाज के पूरे बेड़े ने, अपने ऊपर की हवा में, एक उत्सुक टिमटिमाहट और एक सनसनी, जिसके लिये उन्होंने

कहा कि वह, उसकी भांति, जो अक्सर बड़े प्रबल झंझावात के पहले होती है, अति कठोर और भारी थी, की सूचना दी।

यहॉ कुछ चीज है, जिसे कि आपके बीच शंकालु व्यक्ति जॉच कर सकते हैं; 05 दिसम्बर 1945 को, फ्लोरिडा राज्य में, नौसेना के स्टेशन, फोर्ट लाउडरडेल (Fort Louderdale) से तारपीडो बम गराने वाले पॉच विमानों ने उड़ान भरी। यह बिना बादलों का, एक शांत, धूप भरा दिन था, पानी शांत था, कोई तूफान नहीं थे, कुल मिलाकर, यह विचार करने के लिए कि एक महान रहस्यमयी घटना घटने वाली है, कुछ नहीं था।

ये पॉच बमवर्षक, अपनी पूरी तरह से रोजमर्रा की उड़ान पर जा रहे थे, जिसके मध्य उनको अमरीकी तट रेखा या कैरेबियन द्वीपों (Caribbean Islands) में से कुछ की दृश्य सीमा में होना चाहिए था। न कुछ समय में, उस ऊॅचाई पर विचार करते हुए जिस पर वे उड़ रहे थे, वे देश की दृष्टि के बाहर हो गए। हर बमवर्षक को सावधानीपूर्वक जांचा गया था और ईंधन का हर टैंक पूरी तरह भरा हुआ था। जैसा कि पायलटों, जिन्हें उड़ान करने से पहले, जॉच प्रपत्रों पर हस्ताक्षर करने थे, ने प्रमाणित किया था, हर इंजन अपनी सर्वोत्तम दशा में था। और अधिक, हर जहाज में, स्वयं हवा भरने वाली एक जीवन–रक्षक राफ्ट (self-inflating life-raft) थी, और हर आदमी अपनी जीवन–रक्षक जैकिट पहने हुए था, जीवन रक्षक जैकिट, जो किसी आदमी को दिनों तक तैरता रखती है। बेड़े के चौदह लोगों और हर आदमी को एक से अधिक वर्ष का उड़ान का अनुभव था।

सम्भवतः उन सभी ने सोचा था कि वे ऊपर नीले आकाश में, द्वीपों, जो कैरेबियन द्वीप थे, के नगीनों और फ्लोरिडा की लंबी, लंबी समुद्री रेखा को देखते हुए, एक साधारण आनंदमयी उड़ान के लिए जा रहे थे। शायद, उनमें से कुछ ने एवरग्रेड (evergrades) में, दुबारा नीचे की झलकी पाने की भी आशा की थी। परंतु उन्होंने रोजमर्रा की अपनी साधारण गश्त पर जाते हुए उड़ान भरी, वे पूर्व की ओर एक सौ साठ मील और उत्तर की ओर चालीस मील उड़ने वाले थे, जिसके बाद, उन्हें अपने हवाई अड्डे पर, जिस पर वे उड़ान के दो घण्टे बाद पहुंचते, वापस लौटना था।

उड़ान के कुछ समय–लगभग डेढ़ घण्टा–बाद, फोर्ट लाउडरडेल स्टेशन पर एक संदेश प्राप्त हुआ, और वास्तव में, ये एक अजीब संदेश था, ये किसी आपातस्थिति (emergency) का संदेश था। उड़ान का नेता, बौखलाया हुआ था, और डरा हुआ भी; उसने बताया कि वे सभी रास्ते से भटक गए लगते हैं, और उसने ये भी कहा कि वे जमीन को नहीं देख सकते हैं। ये ऐसी अजीब घटना थी कि

उसने इसे दोहराना आवश्यक समझा। ''दोहराया, हम जमीन को नहीं देख सकते।''

जैसा कि ऐसे किसी मामले में सामान्य है, हवाई अड्डे पर, कर्तव्य पर उपस्थित रेडियो ऑपरेटर ने, हवाईजहाजों की उड़ान को पूछते हुए कि उनकी स्थिति क्या थी, एक संदेश भेजा। जवाब ने, हवाई अड्डे के नियंत्रण टॉवर के लोगों की शांति को पूरी तरह से झकझोर दिया। उत्तर, ''हम अपनी स्थिति के लिये सुनिश्चित नहीं हैं, हम नहीं जानते कि हम कहॉ हैं,'' फिर भी वे आदर्श अवस्थाओं में उड़ रहे थे, हर आदमी पूरी तरह से अनुभवी था और उनके हवाईजहाज उत्कृष्ट (excellent) थे। परंतु तभी अगला संदेश प्राप्त हुआ, उच्च खतरे में होने वाले एक स्वर ने स्पीकरों के माध्यम से कहा, ''हम नहीं जानते पश्चिम किस तरफ है,'' स्वर ने कहा। ''हर चीज गलत है, हर चीज अजीब है, हम किसी भी दिशा के लिये सुनिश्चित नहीं हो सकते, समुद्र तक भी वैसा नहीं दिखाई देता, जैसा होना चाहिए था।''

क्या आप अनुमान कर सकते हैं कि तेरह दूसरे आदमियों के साथ, एक अनुभवी आदमी, यह कहने के लिए समर्थ था कि कम्पास ठीक तरह से (दिशा) निर्देशित नहीं कर रही है, वे नहीं जानते थे कि वे कहॉ थे, वे जमीन को नहीं देख सकते थे और समुद्र भी अलग दिखता था? और फिर भी, सूर्य जो अभी भी, बादल रहित आकाश में, हवाई अड्डे पर चमक रहा था, उड़ते हुए उन चौदह आदमियों के लिये अदृश्य रहा, वे सूर्य को नहीं देख सके और समुद्र उन्हें अलग तरह का दिखाई दिया।

उसी दिन शाम को लगभग 04.30 बजे उड़ान के किसी दूसरे नेता ने रेडियो पर कहा, और बताया कि वह नहीं जानता कि वे कहॉ थे। वह कहता गया, ''ऐसा लगता है, मानो कि हम .....हैं'' और तभी संदेश समाप्त हो गया, अगला सम्पर्क कभी भी नहीं हो पाया, इन चौदह आदमियों का कोई भी सुराग कभी भी नहीं पाया गया, और न ही हवाई जहाजों का, जिसमें वे उड़े थे, कोई टूटाफूटा ढांचा नहीं, कुछ नहीं पाया गया।

मिनटों के अंदर, अमरीकी नौ सेना की उड़ने वाली नावों में से सबसे बड़ी एक ने, तेरह आदमियों के बेड़े को साथ ले जाते हुए, जीवनरक्षा और बचाव के पूरे उपकरणों के साथ, पानी पर दहाड़ मारी। लगभग अस्सी फुट लंबी और एक सौ पच्चीस फुट पंखों के परास वाली, उड़ने वाली नाव, समुद्र पर सबसे खराब उतारों (roughest landings) का सामना करने के लिए, बनाई गई थी। उड़ने वाली ऐसी किसी नाव को, किसी ने अजेय (invincible) और अभेद्य (invulnerable) कहा होता।

तारपीडो बमवर्षकों की कल्पित स्थिति की ओर, उड़ने वाली नावों की यात्रा के दौरान, उसने सामान्य सूचनायें (routine reports) भेजीं, परंतु बीस मिनिट बाद, सभी रेडियो सम्पर्क समाप्त हो गए और तारपीडो बमवर्षकों, और उस बहुत बड़ी, विशेषरूप से सुसज्जित, विशेष आदमियों से युक्त (specially manned), उड़ने वाली नाव के सम्बंध में, जो उनके बचाव के लिये गई थी, कुछ भी, कभी भी, दुबारा नहीं सुना गया।

तटीय–रक्षक, नौसेना, वायुसेना–प्रत्येक आदमी–जल्दी से, टूटे–फूटे जहाज के मलबे, तथा अपनी जीवन–रक्षक जैकिटों में या खुद फूलनेवाली जीवनरक्षक नावों में तैरते हुए आदमियों की खोज के लिये गया, परंतु कभी भी, कुछ भी नहीं मिला।

हवाईजहाज ढोने वाला एक जहाज, क्षेत्र में गया और पहली ही रोशनी पर, तीस हवाईजहाज पूरे क्षेत्र को खोजने के लिए उड़े। आर. ए. एफ. (Royal Air Force, RAF), जो पड़ौस में ही थी, ने अपने उपलब्ध जहाजों को, ढूढ़ने के लिए, हवा में भेजा। परंतु फिर, जहाज के मलबे का एक छोटा सा टुकड़ा भी, वहॉ कभी भी, प्राप्त नहीं हुआ, और स्पष्ट है कि ये सभी जहाज, एकदम गायब हो गये थे।

गायब हो गए? हॉ, वे ''समय के छेद'' में होकर, प्रति–पदार्थ के विश्व में, ठीक वैसे ही, जैसे कि युगों तक, जलपोत और आदमी और औरतें और जानवर भी, बिना कोई सुराग छोड़े हुए गायब हो चुके हैं।

ये घटनायें, केवल अलग–थलग घटनायें नहीं हैं, जो हाल में ही हुईं, वे पूरे इतिहास में हो चुकी

हैं, और यदि कोई पर्याप्त गहराई तक खोदे, वह अचानक गायब होने वाली, अत्यन्त दिलचस्प विभिन्न घटनाओं का हिसाब पा सकता है। उदाहरण के लिए, एक लड़के का, जो एक शाम को, खेत वाले मकान पर, अपने पिताजी से मिलने के लिये बाहर गया था, दस्तावेजों में भलीभांति दर्ज किया हुआ एक मामला है। वह कुंऐ से पानी लेने जा रहा था, जमीन पर, मात्र कुछ इंच, बर्फ गिरी हुई थी, और वह लड़का, आग (के स्थान) पर वापस आने के लिए उत्सुक था, इसलिए उसने प्रत्येक हाथ में एक बाल्टी के साथ, प्रारम्भ किया। उसके मातापिता, और मिलने वाले कुछ दोस्त आग की बगल में बैठे और उसकी प्रतीक्षा की, क्योंकि उन्हें उन्हें चाय बनाने के लिये पानी चाहिए था।

कुछ समय बाद, मां बैचेन हो उठी और उसने, उस पर, जो कुछ भी बच्चे को रोके हुए था, आश्चर्य किया। परंतु यह जानते हुए कि बच्चे कैसे समय बरबाद करते हैं, जबतक कि लगभग एक घण्टा नहीं गुजर गया, वह खतरे को महसूस नहीं कर रही थी। तब उनको कुछ अजीब सा महसूस हुआ और उन्होंने लालटेनें लीं और यह सोचते हुए कि शायद वह कुंए में गिर गया होगा, लड़के की तलाश में बाहर गए।

अपनी लालटेनों के साथ, अपने सामने बर्फ पर प्रकाश गिराते हुए, वे, उसके पैरों के निशानों के पीछे, मैदान में आधी दूरी तक चल सके। तभी, आगे चलता हुआ पिता, एक ऐसे भयानक आश्चर्य के साथ रुक गया कि पीछे आने वाले, उछलकर उसके ऊपर गिरे। वह बगल से खिसका और गूंगा होकर इशारा किया। दूसरों ने बर्फ में देखा और वहां उन्होंने बच्चे के कदमों की स्पष्ट छापें पायीं, और तब उसके आगे कोई भी छापें नहीं। लड़का, मानो कि उसे अचानक ही, हवा में ऊपर की ओर खींच लिया गया हो, गायब हो चुका था।

ये तथ्य है; पैरों के चिन्ह एक सीधी रेखा में गये, और अब वे आगे नहीं थे। तब से बच्चे को नहीं देखा गया है।

एक आदमी का, दिन के पूरे प्रकाश में, एक दूसरा मामला था। वह, अपनी पत्नी और स्थानीय फौजदार (Sheriff)(संयुक्त राज्य में) के द्वारा देखभाल किए जाते हुए, एक मैदान में बाहर गया। वह खेत में से शैरिफ के लिए कुछ चीज लाने के लिए जा रहा था और इन लोगों की निगाह में, वह केवल पतली हवा में गायब हो गया और फिर दुबारा कभी नहीं देखा गया!

क्या आपकी पहुॅच *'रेनोल्ड न्यूज (Reynolds' News)"* तक है ? यदि आपकी हो, तो आप 14 अगस्त 1938 का अंक देख सकते हैं। यदि आप, अब पीले पड़ चुके उन पेजों को पलटें, तो आप, आर.ए.एफ. की एक उड़ती हुई नाव, जो फेलिक्सस्टोब (Felixstowe), इंग्लेंड में, समुद्र की सतह से केवल कुछ फीट ऊपर उड़ते हुए, पानी और धुंए के एक बहुत बड़े स्तंभ में, अचानक ही गायब हो गईं थी, की एक कहानी पायेंगे। कोई टक्कर नहीं हुई, कोई झटका नहीं लगा, परंतु हवाईजहाज, केवल गायब हो गया और अभी तक, उसका कोई सुराग नहीं पाया गया।

यहॉ एक दूसरा है; 1952 के साल के मार्च के महीने में, आर.ए.एफ. का विंग कमांडर, बाल्डविन (Baldwin), कोरिया के समुद्रतट के साथ–साथ, जहाजों की गश्त पर, उड़ रहा था। वह और उसके सभी साथी नए जेट हवाईजहाजों को उड़ा रहे थे। वह एक बादल में उड़ा, उसके साथी नहीं उड़े। अंततः वे आधार पर लौट आए, परंतु कमांडर बाल्डविन नहीं लौटा, उसका कोई सुराग नहीं था और न ही उसके हवाईजहाज का, और उसके साथियों में से कोई भी, कुछ नहीं बता सका कि उनके साथ क्या हुआ था।

अनेक–अनेक ऐसे ही प्रकरण हैं। उदाहरण के लिए, 1947 में बिना किसी सुराग और बिना किसी टूटफूट के, एक अमरीकी सुपर–फोट्रैस (Super-Fortress) ही गायब हो गया। वह बरमूडा (Bermuda) के उस त्रिकोण के लगभग समीप उड़ रहा था। ये सुपर–फोट्रैस, एक बहुत बड़ा, लंबा–चौड़ा हवाईजहाज, गायब ही हो गया और यद्यपि एक वास्तविक घोर तलाश की गई, कोई भी सुराग

प्राप्त नहीं हुआ।

क्या आपको ब्रिटिश साउथ अमरीकन एयरवेज (British South American Airways) के हवाईजहाज, स्टार टाइगर (Star Tiger) का प्रकरण याद है? 1948 का साल था, महीना जनवरी, ठीक है, लगभग फरवरी, क्योंकि ये 30 जनवरी थी। परंतु इस चार इंजन वाले महान हवाईजहाज के प्रकरण ने, किंडलेफील्ड (Kindleyfield), बरमूडा में रेडियो पर सूचना दी कि ये द्वीप से लगभग 400 मील था। रेडियो ऑपरेटर ने बताया कि मौसम बहुत अच्छा था और हवाईजहाज एकदम वैसे ही काम कर रहा था, जैसा इसे करना चाहिए था। रेडियो ऑपरेटर ने और बताया कि वे समय पर आने की आशा रखते थे। ठीक है, वे नहीं आए; बेड़े के छै सदस्य और दो दर्जन यात्री गायब हो गए, और फिर, पूरी घनी तलाश के वावजूद, कभी भी, कुछ नहीं पाया गया। विभिन्न प्रकारों के लगभग पचास हवाईजहाज, इस क्षेत्र पर नीचाई पर उड़े, परंतु–कुछ भी नहीं पाया गया। सभी उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर लंदन में एक जांच हुई। लायड्स ऑफ लंदन (Lloyds of London) के बीमे के कारण, ये चीजें पूरी तरह खंगाली गईं हैं, परंतु केवल अंतिम निर्णय, जिसे जॉचकर्ता ला सके थे, वह था ''लापता, कारण अज्ञात''।

क्या आप एक और दूसरा (उदाहरण) चाहते हैं? दिसम्बर 1948–सेन जुआन (San Juan) हवाई अड्डे से फ्लोरिडा की ओर जाता हुआ एक बड़ा हवाईजहाज। उसमें तीस से अधिक यात्री थे, और जब रेडियो संचालक अपने स्टेशन के सम्पर्क में आया, उसने कहा कि हर चीज ठीक चल रही है, और सभी यात्री गा रहे थे।

सुबह 4:15 पर, रेडियो संचालक ने मियामी कन्ट्रोल टॉवर को यह बताते हुए कि वे पचास मील बाहर और क्षेत्र की दृष्टि में थे, सम्पर्क किया। उसने उतरने के निर्देशों के लिए पूछा।

जहाज गायब हो गया, यात्रीगण, हर चीज बिना सुराग छोड़े गायब हो गई, और कोई भी सुराग कभी भी नहीं पाया गया। फिर, वहॉ कोई टूट फूट नहीं थी। जांचकर्ताओं ने पुष्टि की कि कप्तान और बेड़ा उच्च अनुभव प्राप्त थे और फिर भी– अपने ठिकाने से पचास मील से कम दूरी पर, किसी छोटी सी भी पहचान को छोड़े बिना, एक बड़ा जहाज गायब हो गया।

हमें केवल एक और–इसका उल्लेख करना है, क्योंकि ये स्टार टाइगर की बहन है, परंतु पश्चातवर्ती ये, एरियल (Ariel) कहलाता था। फिर, ये बरमूडा के सम्पर्क में आया, और तब किंग्सस्टन, जमायका (Kingston, Jamaica) के रास्ते पर गुजरा। परंतु 8:25 पर, वहॉ एक संदेश था, जिसमें कहा गया था कि जहाज बरमूडा से 175 मील दूरी पर था। चालक (operator) ने पुष्टि की कि हर चीज ठीक थी और वह किंग्सटन के रेडियो स्टेशन से बदल रहा था परंतु ये अंतिम सुना गया हुआ था, जहाज बिना कोई सुराग छोड़े गायब हो गया।

युद्धाभ्यासों (maneuvers) करती हुई संयुक्त राज्य की नौसेना, बरमूडा के आसपास थी। संयुक्त राज्य की नौसेना और वायुसेना को भी, इन रहस्यों के लिए काफी कुछ करना पड़ा था, इसलिए उन्होंने रहस्य को हल करने का हर संभव प्रयास किया। हवाईजहाज ले जाने वाले दो बड़े–बड़े हवाई जहाजों (immense aircraft carriers) ने, हवा में रखे हुए जहाजों में से प्रत्येक को (अपने ऊपर) रखा, इसके अतिरिक्त वहॉ सभी प्रकार की नौकाओं के साथ, सुरंगभेदी पोत, और हल्के युद्धपोत (light cruisers) और विध्वंसक थे। फिर भी, यद्यपि पानी का हर वर्गफुट क्षेत्र छान मारा गया, कोई सुराग नहीं लगा, बिलकुल, कुछ भी नहीं।

स्पष्टीकरण यह है कि वहॉ ''समय में विभाजन (split in time)'' होता है, जिसके माध्यम से कभीकभार, लोग एक से दूसरे विश्व में चले जाते हैं। यदि आप फुटबाल की, साथ–साथ घूमती हुई दो बड़ी गेंदों की कल्पना करें, और हर फुटबाल में एक छोटी दरार हो, आप देख सकते हैं कि यदि किसी कारण से, दरार वाले दोनों क्षेत्र एक दूसरे के समीप आ जाऐं, तब एक फुटबाल पर टिका हुआ एक

असुखद छोटा कीड़ा, सीधे से, दूसरी फुटबाल की दरार में ठीक कूद सकता है। शायद यहॉ, इस विश्व और विरोधी विश्व के बीच, ऐसी ही, समान प्रकार की स्थिति है।

यदि आप इसे समझना मुश्किल पायें, इसे याद रखें; यहॉ हम त्रिआयामी विश्व में हैं। हम कल्पना करते हैं कि अपने छोटे संदूक–जैसे कमरे में हम पूरी तरह सुरक्षित हैं और हमें कोई चीज छू नहीं सकती, परंतु मानते हुए कि एक चार–आयामी व्यक्ति हम पर नजर डालता है, तब संभवतः, उसके लिए कोई छत, या कोई दीवार, अस्तित्व में नहीं हुई होती और इसप्रकार वह नीचे पहुॅच सकता था और हमें पकड़ सकता था।

ये एक अच्छा विचार हो सकता है कि आयामों, उदाहरण के लिए चौथे आयाम, के लिए समर्पित एक अध्याय हमारे पास हो। आप क्या सोचते हैं? क्या हम इसे करें? चौथा आयाम, यदि हम इसे ठीक से समझें, एक बहुत लाभदायक चीज है।

अध्याय चार
और भी अधिक आयाम

चौथे अध्याय में, चौथे आयाम के साथ व्यवहार करना, ये लगभग ठीक दिखाई देता है, क्योंकि जब हम इस पृथ्वी को छोड़ते हैं, हम सभी चौथे आयाम में जाते हैं! हम यहॉ एक अत्यंत दिलचस्प बिन्दु जोड़ें; लोग जो सियांस (seances) बैठकों में शामिल होते हैं, अक्सर, अस्पष्ट संदेशों पर, जिन्हें वे उनसे, जो ''गुजर चुके हैं,'' प्राप्त करते हैं, अव्यवस्थित हो जाते हैं। वे नहीं समझते कि व्यक्ति, जो अस्तित्व के दूसरे तल के लिए, इस पृथ्वी को छोड़ चुका है वह, जिसे हम भविष्य में हजारों वर्ष आगे कह सकते हैं, है। आप इस अध्याय में बाद में, जब हम हिन्दू राजा और उसकी पुत्री के साथ, व्यवहार करते हैं, एक दिलचस्प समानांतर (parallel) पायेंगे, परंतु सबसे पहले, एक–आयामी विश्व क्या है? जबतक कि हम ये नहीं समझ लें कि एक आयाम क्या है, हम नहीं समझ सकते कि चार आयाम क्या हैं। मान लें, हमारे पास कागज का एक टुकड़ा और एक पेंसिल है; हम कागज के ऊपर एक सीधी रेखा खींचें, और हम मान लें कि पेंसिल से (छोड़े गये सभी) कार्बन कण लोगों को निरूपित करते हैं ताकि, वास्तव में, सीधी रेखा एक पूरा का पूरा ब्रह्माण्ड है। लोगों के, वहॉ केवल दो बिन्दु होंगे, एक सीधा आगे, और दूसरा सीधा पीछे, वे केवल पीछे या आगे की तरफ चलने में समर्थ होंगे, और किसी भी दूसरे तरीके से, कहीं भी नहीं। मानते हुए कि आप उस रेखा में परिवर्तन कर सकते हैं, तब एक आयाम वाला व्यक्ति सोचेगा कि एक चमत्कार हो गया है, या यदि उन्होंने आपकी पेंसिल के बिन्दु को मात्र हल्के से कागज पर दबाते हुए देखा, तो वे सोचेंगे कि एक उड़नतश्तरी अचानक ही प्रकट हुई थी।

अपनी पेंसिल के नुक्ते को कागज पर टिकाने के लिए, आप एक त्रिआयामी प्राणी के रूप में, एक आयामी विश्व में अस्थाई रूप से प्रविष्ट हुए होंगे और एक आयामी अस्तित्व, जिसने पेंसिल के उस बिन्दु को देखा, सुनिश्चत होगा कि एक अत्यधिक असामान्य घटना हो चुकी है। एक आयामी होने के कारण, वह आपको देखने में सफल नहीं होगा, परंतु पेंसिल का केवल वह बिन्दु, कागज के सम्पर्क में होगा।

कुछ विचार करने के बाद कि एक आयामी विश्व क्या है, हम दो आयामी विश्व पर, एक नजर डालें। ये एक सपाट समतल होगा, और लोग जो ऐसे विश्व में, इस पर रहते हैं, आवश्यकरूप से ज्यामितीय दृष्टि से, सपाट (flat) आकृतियॉ होंगी। कोई विश्व, जिसमें वे अस्तित्व में हैं, उनके लिए ठीक वैसा ही होगा जैसे कि हमारा विश्व (हमारे लिये) है, सिवाय इसके कि यदि आप उनके आसपास पेंसिल की रेखायें खींचें तो वे इन सबको, उन्हें उन घेरने वाली रेखाओं के परे जाने से रोकने वाली बड़ी दीवारों के रूप में समझेंगे और वे शायद तय करेंगे कि रेखायें, जिनसे उनका सामना होता है, कहीं भी, अस्तित्व में होनी चाहिए, वे ठीक उसी ढंग से जैसे कि हम चौथे आयाम की सोचते हैं, तीसरे आयाम की सोचेंगे; उसी तरीके से, जैसे कि कई बार हम चौथे आयाम को समझने में कठिनाई अनुभव करते हैं, इसलिये इन दो आयामी लोगों को, तीसरा आयाम, जो हमारे लिये इतना सामान्य है, समझने में, सबसे बड़ी परेशानी होगी। वास्तव में, यदि तीसरे आयाम के बारे में कोई चीज उनकी चेतना को खलबला देती है, और यदि वे इस सम्बंध में किसी से बात करने के लिए पर्याप्त मूर्ख हैं, तो उनको विक्षिप्त, भयग्रस्त, झाड़फूंक वाले, या कुछ वैसे ही लोगों की भांति झूठा माना जायेगा, और अलग हटा दिया जाएगा।

दो आयाम वाले प्राणी, रेखाओं की पहचान करते हैं, वे इस व्यक्ति के द्वारा नहीं पहचाने जा सकते क्योंकि, दो आयामी व्यक्ति होने के कारण, वह ऊपर से देखने में सक्षम नहीं होगा।

काश! वैज्ञानिक केवल इतने कठिन नहीं होते, यदि वैज्ञानिक, केवल अपने सभी पूर्व विचारित भावों को उठाकर रख देते, और पूर्वाग्रह से पूर्णतः मुक्त विचार के साथ शोधकार्य में प्रविष्ट होते। हमें इस तथ्य का सामना करना होगा कि रोजमर्रा के मामलों में ''बड़े नामों (big names)'' की बातों में वजन होता है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को, एक जनरल के रूप में युद्ध में सफलता मिल चुकी है, इसलिए उसे तत्काल ही संयुक्त राष्ट्र का अध्यक्ष बना दिया जाता है। या हमारे पास एक अभिनेता है, वह समझता है कि वह पर्दे पर महिलाओं का हत्यारा है। वास्तव में, वह उस मामले में, यथार्थ में, पूरी तरह से असहाय है, परंतु कैसे भी, उसे पर्दे पर कुछ सफलता मिल चुकी है, इसलिए हम, हमें यह बताते हुए कि हमें अपने दांतों को कैसे ब्रश करना चाहिए, हमें अपने बाल कैसे कटाने चाहिए, किस प्रकार के हजामत बनाने वाने शेवर हमको उपयोग में लाने चाहिए, और संभवतः प्रेम जीवन, जिसका संभवतः ये व्यक्ति आनंद नहीं ले सका, के ऊपर सहायक संकेत, अपने साथी की फोटोग्राफी की टिप्पणियों के साथ, तत्काल ही लबालब हो जाते हैं।

तब ऐसा लगता है कि सबसे बड़ी कठिनाइयों में से एक–सबसे बड़ी कमियों में से एक–जिसका हम पराभौतिकीविदों (metaphysicsts) को सामना करना पड़ता है, वह यह है कि लोग अंधेपन से, उन लोगों के शब्दों का, जिन्हें इनके विषय में कुछ जानना चाहिये, परंतु संभवतः नहीं (जानते), अनुगमन करते हैं।

आईंस्टीन (Einstein) या रदरफोर्ड (Rutherford), या वैसे ही स्तर वाले लोगों में से कुछ को लें। ये व्यक्ति, विज्ञान के एक विशेष संकीर्ण क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं। उनके पास वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, और वे हर चीज का विश्लेषण, सांसारिक, पुराने ढर्रे के विचारों और भौतिक नियमों, जो प्रतिदिन विवादित रहते हैं, के अनुसार करना चाहते हैं। लोग विद्वान वैज्ञानिकों के शब्दों को, बाइबिल के उपदेशों की भॉति, ग्रहण करते हैं। वे फिल्मी सितारों के शब्दों को भी धर्मोपदेशों की भांति ग्रहण करते हैं, और दुर्भाग्यवश, धर्मोपदेश पर विवाद नहीं किया जा सकता और उनको बदला नहीं जा सकता। हमारी समस्या है, सत्य में बने रहना, जिसको कुछ प्रबुद्ध लोग सख्ती से छिपाने का प्रयास करते हैं।

मूलभूत नियमों को ''मूलभूत'' माना जाना चाहिए। अर्थात्, ज्ञान की वर्तमान परिस्थितियों में मान्य होते हुए (माना जाना चाहिए), परंतु ये नियम पर्याप्त रूप से लचीले होने चाहिए ताकि उन्हें बदला जा सके, सुधारा जा सके या उन्हें बढ़ते हुए ज्ञान के प्रकाश में समाप्त भी किया जा सके। हम आपको भौंरे (bumble-bee) का ध्यान दिलाते हैं। उड़ान के नियमों के अनुसार–वायुगतिकी (aerodynamics) के नियमों के अनुसार–भौंरा, संभवतः उड़ नहीं सकता क्योंकि, बेचारे जीव की संरचना, वायुगतिकी के सभी प्रकार के ज्ञात नियमों को पूरी तरह से चुनौती (defies) देती है। इसप्रकार, यदि हम अपने मूलभूत नियमों के साथ वैज्ञानिकों पर विश्वास करते हैं, तो हमको विश्वास करना चाहिए कि भौंरा उड़ नहीं सकता।

उन, सम्माननीय वैज्ञानिको ने, अपने बयानों को भौतिकी के नियमों पर आधारित करते हुए कहा है कि मनुष्य कभी भी, तीस मील प्रति घण्टा से अधिक पर यात्रा नहीं करेगा, क्योंकि, तनाव से उसकी रक्तप्रणाली टूट जायेगी, उसका दिल फट जाएगा, उसका दिमाग मर जायेगा, इत्यादि, इत्यादि। ठीक है, अद्यतन रिपोर्टों के अनुसार, मनुष्य तीस मील प्रति घण्टा से अधिक की गति से यात्रा कर सकता है। उसको प्राप्त कर लेने के बाद, वैज्ञानिकों ने कहा, मनुष्य कभी उड़ नहीं सकेगा; ये असंभव था। उसे पीछे छोड़ देने के साथ, उन्होंने कहा कि मनुष्य कभी भी ध्वनि की गति से अधिक नहीं उड़ेगा। बुरा न मानें, उन अविचलित लोगों ने कहा कि मनुष्य, कभी भी, पृथ्वी को नहीं छोड़ेगा और अंतरिक्ष में नहीं जायेगा। अफवाहों के अनुसार, ये किया जा चुका है!

थोड़ा और पीछे जाते हुए, लगभग 1910 के आसपास, सभी विद्वान मनुष्यों और विज्ञान के पंडितों ने कहा कि कोई भी व्यक्ति, अपनी आवाज को एटलांटिक के पार नहीं भेज सकेगा, परंतु

मार्कोनी (Marconi) नाम के एक सज्जन ने इस बयान को गलत सिद्ध कर दिया और अब हम न केवल आवाजों को, बल्कि चित्रों को भी अटलांटिक के पार भेजते हैं। परंतु, वर्तमान दिन की टेलीविजन–कार्यक्रमों की स्थिति को उचित सम्मान देते हुए, संभवतः ये सब अधिक लाभकारी नहीं है।

कमोवेश–ये विचार, कि अपने बंधे–बंधाये ढर्रो, संकीर्ण, अटल नियमों वाले स्थापित वैज्ञानिक, गलत हो सकते हैं, आपको पहुँचाते हुए, अब हम और थोड़ा आगे चलें। उनके मिथ्याभासों (fallacies) में से एक, वह बयान है कि ''दो ठोस, एक ही समय में, एक ही आकाश को प्राप्त नहीं कर सकते।'' वह बकवास है, वह पूरी तरह गलत है, क्योंकि पराभौतिकी के विज्ञान में, उस प्रक्रम (process) के द्वारा, जिसे अंतर्प्रतिच्छेदन (interpenetration) के रूप में जाना जाता है, दो चीजें, एक ही समय में, एक ही आकाश को घेर सकती हैं।

वैज्ञानिकों ने प्रदर्शित किया है कि हर चीज, जो अस्तित्व में है, बहुत कुछ हद तक उसी तरीके से, जैसे कि जब हम, एक स्पष्ट रात्रि में, तारों की ओर देखते हैं, हम छोटे–छोटे बिन्दु, जो कि विश्व हैं, और महान काला रिक्त स्थान, जो कि आकाश है, को देख सकते हैं, अपने बीच में काफी आकाशों को रखने वाले परमाणुओं से बनी होती है। तब इसका अर्थ है कि यदि हमारे पास, उसमें देखने के लिए, जो हमारे लिए ठोस है, एक पर्याप्त छोटा (यहॉ आपको अपनी कल्पना को थोड़ा विस्तार देना होगा) प्राणी है, तो वह प्राणी उस ठोस को वैसे नहीं देखेगा, जैसे कि हम देखते हैं, परंतु वह उस ''ठोस'' को बनाने वाले सभी कणों को (अलग–अलग) देखने में समर्थ हो सकता है। तब, उस प्राणी के पास, हमारे समान, उस ठोस को देखने वाली वह दृष्टि होगी, जिससे हम तब देखते हैं, जब हम एक स्पष्ट रात्रि में आकाश की ओर देखते हैं। आपको ध्यान दिलाने के लिए, ये केवल थोड़े से प्रकाश के बिन्दुओं के साथ, अधिक स्थान होगा। परंतु इसकी कल्पना करें : यह मानते हुए कि वहॉ पर्याप्त बड़ा एक प्राणी था, जिसने हमारे ऊपर दिखते वाले ब्रह्माण्ड को ठोस के रूप में देखा। पैमाने के दूसरी तरफ, एक वायरस के ऊपर विचार करें : यदि आप एक विशेष प्रकार के वायरस को पकड़ सकें, आप एक अकेले वायरस को एक पोर्सलीन कप में डाल सकते हैं, और बेचारा प्राणी सीधे ही आरपार गिर जाएगा–रास्ते में बिना किसी चीज को छुए हुए तली में होकर सीधा नीचे गिरेगा क्योंकि यह इतनी छोटी चीज है। ये कल्पना नहीं बल्कि सत्य है। आप जानते होंगे कि किसी प्रयोगशाला में ''वायरस को पकड़ने की ''बड़ी कठिनाइयों में से एक यह है कि चीनी मिट्टी की जालियों में से होकर कुछ चीजें, बहुत कुछ हद तक वैसे ही, जैसे कि एक कुत्ता सामान्यतः बंजर प्रदेश में दौड़ सकता है, गुजर जाती हैं।

एक पर्याप्त छोटे प्राणी के लिए, किसी ठोस में, परमाणुओं के बीच के स्थान, हमारे ब्रह्मांड में तारों के बीच के स्थान की तुलना में, उतने ही बड़े हैं, और ठीक वैसे ही, जैसे कि उल्काओं, या उल्का पिण्डों या पुच्छल तारों या अंतरिक्ष यानों की पूरी झड़ी, पिण्डों के बीच के खाली आकाश में होकर यात्रा कर सकती है, उसी प्रकार दूसरी चीजें भी उसे, जिसे हम एक ''ठोस चीज'' कहते हैं, घेर सकती हैं।

दो, या तीन, या चार ठोसों को इसप्रकार व्यवस्थित कर पाना कि उनके ''लोक (worlds)'' एक दूसरे को स्पर्श नहीं करते, परंतु ''लोकों'' का एक सैट, ''लोकों'' के दूसरे सैट के बीच के आकाश को घेरता है, एकदम संभव है। आप सराहना करेंगे कि इस तंत्र के अंतर्गत, प्रकटतः अनेक ठोस चीजें, जो एक ही आकाश को, एक ही साथ घेरती हैं, हो सकती हैं। सामान्य जीवन में, हम इसे स्पष्टरूप से नहीं समझ सकते, क्योंकि हमारे पास दृष्टि का कोई उपयुक्त या सही परास नहीं है। हमें अपने दृष्टिकोणों को बढ़ाने की आवश्यकता है, और जैसे हम यहॉ, इस लोक में, आसानी से चौथे आयाम में, प्रवेश नहीं कर सकते, हमें स्पष्टीकरण के मुद्रित शब्द या स्पष्टीकरण की टेप की हुई आवाजें स्वीकार करनी ही पड़ेंगी।

आपको मात्र एक मोटा उदाहरण देने के लिए – मान लीजए आपके पास दो फोर्क (forks),

यदि आप चाहें, साधारण बागवानी के फोर्क, या खाना खाने की टेबल के कांटे हैं। आप एक के दांतों (tines) को दूसरे दांतों के बीच के खाली स्थान में होकर, दूसरे में होकर गुजार सकते हैं। इस प्रकार जबकि एक सेट के दांते, दूसरे सेट के दांतों के बीच का स्थान घेरते हैं, तो दोनों कांटे उसको घेरते हैं, जो मुख्यतः ''दूसरे के रहने के स्थान को'' बिना अतिक्रमित करते हुए आकाश की समान मात्रा है।

मूलतः लोग सोचते थे कि चीजों की लंबाई और चौड़ाई होती थी। परंतु तब कुछ हद तक मामले सुधरे और लोग इस निष्कर्ष पर पहुॅचे थे कि लंबाई, चौड़ाई और मोटाई थी, ताकि लोग एक त्रिविमीय लोक में रहते थे; अर्थात् लंबाई बराबर एक विमा, चौड़ाई बराबर दो विमायें और मोटाई बराबर तीन विमायें। परंतु ये पूरी तरह स्पष्ट है कि हम त्रिविमीय लोक में रहते हैं। कुछ दूसरी विमायें, जैसे कि चौथी, पॉचवी और इससे आगे भी हैं। आपको इस सम्बंध में विचार के लिए कुछ देने के लिए – हमारे त्रिआयामी चीजों में लंबाई, चौड़ाई, ऊॅचाई होती है, परंतु वहॉ एक दूसरा आयाम भी होता है; ये कितने लंबे समय तक अस्तित्व में रहेगा ? इसलिए हमारे पास एक अगला आयाम, समय का है। इस मामले में समय चौथा आयाम होता है।

औसत व्यक्ति, उदाहरण के मार्ग से, अवरक्त किरणों (infra-red rays) को बिना विशेष उपकरणों के नहीं देख सकता। वास्तव में, यह सिद्ध करता है कि कुछ चीजें औसत आदमी की दृष्टि की परास से परे हैं, और इससे यह समझ में आता है कि अवरक्त किरणों को उत्सर्जित करने वाली और लंबाई, चौड़ाई और मोटाई के तल में रहने वाली चीजें, एक औसत आदमी को पूरी तरह से अदृश्य होंगी।

क्या हम, एक क्षण के लिए, विषयान्तर कर सकते हैं? क्या हम आपको ध्यान दिला सकते हैं कि कुछ ध्वनियॉ हैं, जो मनुष्यों के लिए पूरी तरह से अश्रव्य (inaudible) हैं, परंतु जिन्हें बिल्लियॉ और कुत्ते स्पष्टरूप से सुन सकते हैं? संभवतः हर व्यक्ति, कुत्ते की ध्वनिरहित सीटियों के सम्बंध में जानता है, परंतु यदि आप, ''*आप सदा के लिए (You for Ever)*" के पाठ 6 में, उदाहरण को देखें, आप उसे, जिसको हमने सांकेतिक कुंजी पटल (symbolic keyboard) कहा था, देखेंगे। आप पायेंगे कि ध्वनि के बाद, हमारे पास दृष्टि है, और कुछ निश्चित मामले हैं, जिनमें ध्वनियॉ लगभग देखी गई हैं, आत्मसात करना (apperceived) एक अच्छा शब्द होगा, क्योंकि निश्चित अवस्थाओं में यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक अतीन्द्रिय ज्ञानी है, वह ध्वनि के आकार को देख सकता है। आपने शायद, किसी को ''ओह, ये ऐसी गोल आवाज थी'' या ''कुछ–कुछ उसी के समान,'' कहते हुए सुना होगा, इससे हम ये पाते हैं कि काफी संख्या में लोग, ध्वनि का, एक आकार के रूप में विचार रखते हैं, जैसे कि गोल (round) ध्वनि, चोकोर (square) ध्वनि, या लंबी दूरी तक खींची हुई (long-drawn-out) ध्वनि।

परंतु – हम फिर उस बिन्दु पर, जिस पर हम इस पिछले पैराग्राफ में, विषयांतर करने से पहले चल रहे थे, वापस चलें।

आपको इस पर विचार करने की आवश्यकता होगी; एक त्रिआयामी वस्तु, जैसे कि एक घर या एक आदमी या एक पेड़, द्विआयामी छाया डालता है, क्योंकि छाया में लंबाई, चौडाई होती है, परंतु मोटाई नहीं होती। वास्तव में, अस्तित्व के दूसरे तलों में, हमें कहना चाहिए कि छाया में, आगे एक और भी आयाम, अर्थात् समय का, और उसके टिकने के समय का है। परंतु हम एक क्षण भर के लिए भूल जायें और वापस जाऐं और कहें कि त्रिआयामी चीजें, एक द्विआयामी छाया डालतीं हैं। हम कल्पना कर सकते हैं कि चार आयाम वाली चीजें, तीन आयाम वाली छायाऐं डालेंगी, इसलिए आप में से वे, जो वास्तव में ''प्रेत को,'' उस व्यक्ति की छाया को जो चौथे आयाम में है, देख चुके हैं। प्रेत एक व्यक्ति है, जिसमें स्पष्टरूप से चौड़ाई, मोटाई और ऊॅचाई होती है, परंतु जो कुछ हद तक, छायामय चीजों से बना होता है, उतना छायामय जितनी कि वास्तव में, एक छाया होती है। इसलिए ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि हमारा चार आयामी आगंतुक (visitor), जो अपने चार आयामों के कारण हमारे देखने में नहीं आता,

इतने पर भी, वह हमारे सामने तीन आयामों या एक प्रेत के रूप में, जिसकी आकृति, किसी ठोस पदार्थ से रहित है, प्रकट होता है।

और आगे, उन चीजों की सूचनाओं, जिन्हें संचार माध्यम, समझो कि मूर्खतापूर्ण ढंग से ''उड़न तश्तरी'' कहता है, पर विचार करें। यह चीजें कल्पनातीत गति से, और बिना किसी प्रकार की आवाज के साथ, प्रकट और गायब हो चुकी हैं। उन्होंने, मनुष्य शरीर के काफी परे की गति से दिशा बदली है। अब, हम ये कल्पना क्यों नहीं करें कि कुछ उड़नतश्तरियॉ, किसी चार आयामी चीज की छाया हो सकती हैं? उनके दिशा के परिवर्तन की दर पर विचार करें, एक दर्पण को अपने हाथ में पकड़ने और सूर्य की किरणों को एक दीवार पर फोकसित करने के ऊपर विचार करें। आप समझ सकते हैं कि प्रकाश का वह छोटा सा धब्बा, उस दर पर जो पकड़ने में काफी दूर है, जिसको मानवीय यांत्रिकी व्यवस्थित कर सके, आसपास नाचता है, और दिशा बदलता है।

फिर, कॉच की एक धुंधले शीट को एक व्यक्ति या अस्तित्व, जिसके अंदर मनुष्य जैसा प्राणी दिखने का कोई विचार नहीं है, के सामने रखने की कल्पना करें। तब यह मानते हुए कि मानव, जो इसके, धुंधले कांच की पर्त के दूसरी तरफ छिपा हुआ था, अपनी चार उंगलियॉ और एक अंगूठा कॉच के सम्पर्क में रखता है। दूसरी तरफ का, मानव की आकृति के सम्बंध में कुछ नहीं जानता हुआ व्यक्ति, देखेगा कि पॉच धब्बे हैं – पॉच गहरे काले धब्बे – जैसे कि कुछ लोग आकाश में धब्बों को देख चुके हैं।

आप आश्चर्य कर सकते हैं कि इस सबका पराभौतिकी के साथ क्या लेना देना है। ठीक है, इसे पराभौतिकी के साथ काफी व्यवहार करना है! आप देखें, हम तीन आयामी विश्व में रहते हैं, परंतु सत्य की सर्वोच्च आकृति केवल तभी समझी जा सकती है, जब हम तीन आयामी विश्व के परे चले जायें। हमको समय और आकाश के परे जाना होगा, क्योंकि समय सापेक्ष है। समय, मानवता के द्वारा, उसकी अपनी खुद की सुविधाओं के उपयुक्त स्थापित किया हुआ, मात्र एक विचार है।

आप समझते हैं कि समय सापेक्ष नहीं है? ठीक है, ये मानते हुए कि आपको एक दंत चिकित्सक के पास जाना है और आपको एक या कई दांत निकलवाने हैं। जब आप अपने दर्द और कष्ट को सह रहे होते हैं, समय खड़ा हुआ, स्थिर दिखाई देता है। ऐसा लगता है कि आप सदा से ही, दंत चिकित्सक की कुर्सी में हैं।

अब, आपके पास, एक व्यक्ति, जिसके साथ आप गहराई तक जुड़े हुए हैं, होने का एक अत्यंत आनंददायक अनुभव है। आप पायेंगे कि समय उड़ता है। इसलिए, समय मात्र एक सापेक्ष चीज है, ये आपकी अपनी मनोदशा के अनुसार, बुरी तरह से घिसटता हुआ या तेजी से भागता हुआ दिखाई देता है।

ठीक है फिर से आयामों में वापस। हम कल्पना करें कि लोगों की कोई आकृति है, जो केवल दो आयामी लोक में रहती हैं, अर्थात्, वे एक ऐसे विश्व में रहते हैं जिसमें केवल लंबाई और चौड़ाई है, परंतु गहराई नहीं। वे छाया की भॉति हैं, वे पतले से भी पतले कागज के पन्ने से भी पतले हैं – परंतु गहराई का कोई विचार न होने के कारण, उनके पास आकाश का कोई विचार नहीं है, क्योंकि आकाश वह है, जो आसमान के परे है, और आसमान में लाने के लिए, तीसरे आयाम में लाना होगा। इसप्रकार, उन लोगों के लिए आकाश अविचारणीय होगा।

रेल की पटरी, एक विमा – लंबाई वाले एक विश्व के समान है। ट्रेन का परिचालक, अपनी स्थिति को, संदर्भ के केवल एक बिन्दु, किसी ज्ञात स्टेशन या किसी सिग्नल या किसी अन्य भली भांति परिचित चिन्ह की स्थिति, के द्वारा बता सकता है, कि वह कहॉ था।

हम और आगे चलें और सहमत हों कि समुद्र के अंदर एक जलयान, दो आयामी विश्व को घेरने वाले एक व्यक्ति के रूप में है, क्योंकि जलयान पटरियों तक सीमित नहीं है, परंतु वह आगे, या

अगल–बगल से, या पीछे भी जा सकता है, इसलिए इसके लिए लंबाई और चौड़ाई दोनों का उपयोग है।

एक हवाई जहाज, तीन आयामों वाला प्राणी है?। ये आगे, अगल–बगल से, और ऊपर–नीचे भी जा सकता है। तब आपको समझ में आयेगा, कि यह हमें तीन आयाम देता है।

आयामों का ये सिद्धांत (वास्तव में, हमारे लिए यह एक ज्ञान है) अनेक चीजों का स्पष्टीकरण देगा, जो अन्यथा रहस्य समझी जानी चाहिये थीं। उदाहरण के लिए – टेलीपोर्टेशन (teleportation), जिसमें किसी चीज को, किसी दिखने वाले व्यक्ति के द्वारा चलाने का कार्य न करते हुए, एक कमरे से दूसरे में हटाया जाता है। टेलीपोर्टेशन के द्वारा, किसी चीज को, एक तालाबंद कमरे में से, दूसरे कमरे में हटाया जा सकता है। वास्तव में, ये एकदम सरल है, क्योंकि हमें केवल अपने द्विआयामी प्राणी के सम्बंध में सोचना है। यदि हम तीन आयाम वाले के पास, बिना ढक्कन वाले संदूकों की एक श्रृंखला होती, द्विआयामी व्यक्ति, जो उन बक्सों में होते, पूरी तरह से घेरे में होते, पूरी तरह अन्दर बन्द हुए, क्योंकि ऊँचाई का कोई विचार न होने के कारण, वे नहीं जान पाते कि उनके ऊपर कोई छत नहीं थी। और इसप्रकार, यदि हम तीन आयामी प्राणी, खुली छत में होकर अंदर पहुँचते और किसी चीज को, एक बक्से से दूसरे में चलाते, तो द्विआयामी व्यक्ति के लिये, ये एक पूरी तरह से चमत्कार होता, जिसमें कोई चीज, एक सुरक्षित कमरे में से, दूसरे सुरक्षित कमरे की ओर हटाई गई। ध्यान रखें, दो आयामी व्यक्ति के पास, ऊपर की छत का कोई विचार नहीं होगा। ठीक उसी तरह से, हम तीन आयामी लोगों को, किसी खुलाव, जो चौथे आयाम में पूरी तरह स्पष्ट है, का कोई विचार नहीं होता, ताकि चौथे आयाम का व्यक्ति, उसमें, जो चौथे आयाम वाले लोगों के लिए एक खुलाव था, होकर नीचे एक तालाबंद कमरे में (क्योंकि कमरा केवल तीन आयामी लोगों के लिए तालाबंद होगा) पहुँच सकता है, और जिसे वह चाहे, उसे हिला सकता है। तीन आयाम वाले विश्व से, चीज हिलाई जाएगी और क्षण भर के लिए, वह चार आयाम वाले विश्व में होगी, जहाँ वह, उसमें होकर, जिसे हम प्राथमिक रूप से, ठोस दीवारें कहना चाहते हैं, घुसेगी। जब हम उस तरीके को सोचते हैं जिसमें कि रेडियो या टेलीविजन तरंगें स्पष्टरूप से ठोस दीवारों में घुस सकती हैं। और फिर भी, किसी रेडियो या टेलीविजन के सेट को सक्रिय बना देती हैं, हमें कुछ–कुछ, एक उदाहरण मिलेगा।

समय, जिसको हम पहले ही संदर्भित कर चुके हैं, मनुष्य के जीवन में, एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, परंतु वह, जिसे हम समय कहते हैं, प्रत्येक आदमी के लिए और प्रत्येक जानवर के लिए अलग होता है। हम फिर सुझाव देते हैं कि अपने रोजमर्रा के जीवन में, आप इस पर, भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में विचार करें। जब आप किसी नियुक्ति के लिए विलंबित होते हैं, देखें कि डायल पर घड़ी की सुइयाँ कितनी तेजी से दौड़ती हैं। जब आप किसी की अपेक्षा करते हैं और वह पुरुष या स्त्री (अधिकांश सामान्यतः स्त्री) आपको प्रतीक्षा में रखती है, समय थमा हुआ दिखाई देता है।

समय के सम्बंध में जानवरों का अपना निजी विचार है, और समय का उनका विचार, आदमियों के विचार से एकदम भिन्न है। पशु भिन्न दर पर जीवित रहते हैं। एक कीट, जो मानव के समय के अनुसार, चौबीस घण्टे के लिए ही जीता है, फिर भी, वह अपना पूरा जीवनकाल, जिसे मनुष्य सत्तर वर्षों में जीता है, जी लेता है। कीट को साथी मिलता है, वह अपना परिवार बनाता है, और उनके परिवारों को बदले में, अपने खुद के परिवार को देखता है। यदि किसी पशु का आवंटित जीवनकाल बीस वर्ष का हो, उसे वे बीस वर्ष, सत्तर वर्षों की भांति दिखाई देंगे, या जैसा कि किसी आदमी को दिखता है, और पशु को आवंटित स्थान के अंदर, वह ठीक वैसे ही, कार्य करने में समर्थ होगा, जैसे कि आदमी अपने अधिक लंबे जीवनकाल में कार्य करता है। ये विचारणीय है कि सभी प्राणी, कीट, पशु, या मानव अपने जीवनकाल में, दिल की धड़कनें लगभग समान संख्या में पाते हैं।

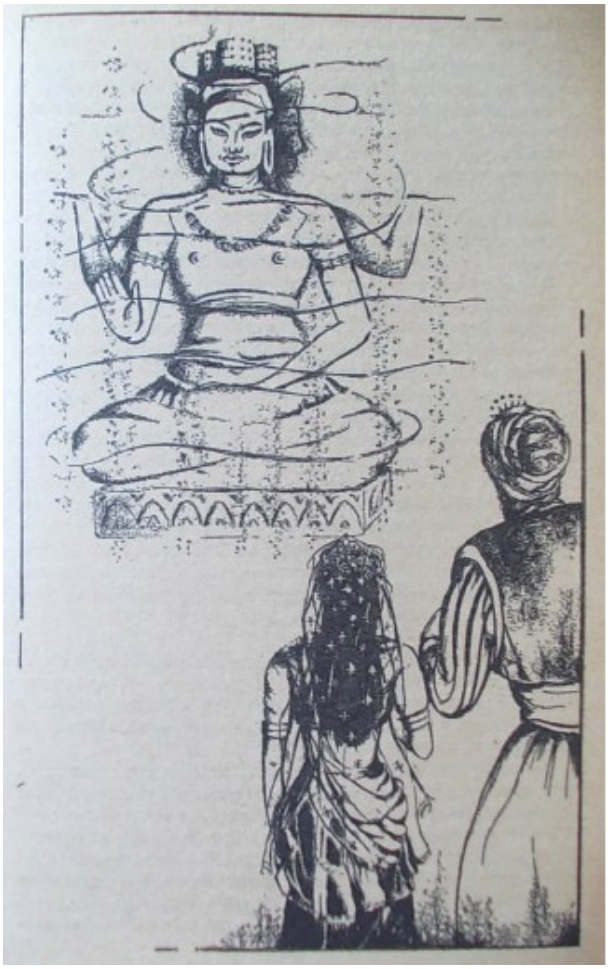

शताब्दियों पहले के विद्वान लोगों ने, समय के सम्बंध में ये सब कुछ तेजी से समझ लिया था। विभिन्न बाइबिलों (धर्मग्रन्थों) में से एक, सुदूर पूर्व की एक अत्यंत पवित्र पुस्तक है, जिसे श्रीमद्भागवत कहा जाता है, उसमें उल्लेख है : एक बार एक बड़ा राजा, अपनी पुत्री को सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के घर ले गया, जो एक भिन्न आयाम में रहता था। महान राजा सर्वाधिक दुखी था कि उसकी पुत्री शादी योग्य आयु तक पहुॅच गई है और उसे अभी तक कोई उपयुक्त वर नहीं मिला है। महान राजा, अपनी पुत्री के लिए, एक अच्छा पति पाने के लिए आशंकित था। ब्रह्मा के घर में पहुॅचने के बाद, इससे पहले कि उसे ब्रह्मा की उपस्थिति में प्रस्तुत किया जाए और इसप्रकार वह अपनी प्रार्थना कर सके, उसे अत्यंत कम क्षणों के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी। उसके अत्यंत तीव्र आश्चर्य के अनुसार, ब्रह्मा ने जवाब दिया, ''ओ राजा, जब तुम अपनी पृथ्वी पर वापस जाओगे, तुम अपने मित्रों या रिश्तेदारों, अपने शहरों या अपने महलों में से किसी को नहीं देखोगे, क्योंकि यद्यपि तुमको ऐसा दिखाई देता है, कि पृथ्वी, जिसे तुम जानते थे, से तुम यहॉ केवल कुछ क्षण पहले ही पहुॅचे हो, फिर भी, हमारे समय के ये कुछ क्षण, जब तुम पृथ्वी पर थे, तुम्हारे समय के अनेक हजार वर्षों के समतुल्य हैं। जब तुम पृथ्वी पर वापस लौटोगे, तुम पाओगे कि वहॉ एक नया युग है, और तुम्हारी पुत्री, जिसे तुम यहॉ लाये हो, भगवान कृष्ण के भाई बलराम के साथ विवाह करेगी। इसप्रकार, वह जो हजारों वर्ष पहले पैदा हुई थी, और हजारों वर्ष बाद, बलराम को विवाही जायेगी क्योंकि, जब से तुम मेरे सामने से छोड़ोगे और समय में यात्रा करोगे, केवल

उस समय में, पृथ्वी के हजारों वर्ष गुजर चुके होंगे।''

और इस प्रकार, वह आश्चर्यचकित राजा और उसकी पुत्री पृथ्वी पर वापस लौटी, जिसे, अपने खुद के समय के अनुमान के अनुसार, उन्होंने कुछ मिनिटों पहले छोड़ा था, उन्हें वह मिला, जो एक नया विश्व दिखाई दिया। उसके साथ एक नई सभ्यता – एक भिन्न प्रकार के लोग – एक भिन्न संस्कृति और एक भिन्न धर्म, दिखाई दिये। इसलिए, जैसा कि उसे बताया गया था, पृथ्वी के समय के अनेक हजार वर्ष गुजर चुके थे, यद्यपि उसने और उसकी पुत्री ने, एक भिन्न आयाम में यात्रा करते हुए, केवल कुछ मिनिटों को गुजरते हुए देखा था।

हिन्दुओं का एक विश्वास है, जिसे हजारों वर्ष पहले हिन्दुओं की पवित्र पुस्तकों में लिखा गया था। कोई, इस पर आश्चर्य करते हुए, मदद नहीं कर सकता, यदि संभवतः ये, कुछ चीजों का, जिन्हें डॉक्टर आइंस्टीन ने सापेक्षतावाद के सिद्धांत के रूप में प्रस्तुत किया, आधार नहीं होता।

संभवतः आपने आइंस्टीन के सापेक्षतावाद के सिद्धांत का पूरी तरह अध्ययन नहीं किया है, परंतु उसने अत्यंत, अत्यंत संक्षेप में, समय को चौथे आयाम के रूप में समझाया है। उसने यह भी सिखाया कि समय, 'किसी चीज का' स्थिर, अचल, प्रवाह नहीं है। उसने महसूस किया कि एक सैकंड ने टिकटिक की, सेकंड की ऐसी साठ टिकटिकों के बाद, एक मिनट गुजर चुका था, और साठ मिनटों की टिकटिक के साथ, एक घण्टा गुजर चुका था। परंतु ये सुविधाजनक समय (convenient time), अर्थात् यांत्रिकी समय (mechanical time) है। आइंस्टीन ने, समय पर एक संज्ञान के रूप में, दृष्टि की आकृति के रूप में, विचार किया। ठीक वैसे ही, जैसे कि कोई दो लोग, किसी रंग को, शुद्धतम ढंग से, एक ही रंग नहीं देखते हैं, इसलिए आइंस्टीन ने सिखाया कि, दो लोगों के समय–संज्ञान (sense of time) एक जैसे नहीं हो सकते।

हम तीन सौ पैंसठ दिन को एक वर्ष कहते हैं, परंतु ये सूर्य के चारों ओर, मात्र एक यात्रा है– सूर्य की कक्षा में चारों ओर एक परिक्रमा है। इसलिए पृथ्वी के ऊपर के हम लोग, मोटे तौर से, हर 365 दिनों में सूर्य की एक परिक्रमा करते हैं, परंतु इसकी, एक व्यक्ति, जो बुध (Mercury) पर रहता है, के साथ तुलना करो। ध्यान रखो कि बुध, सूर्य के चारों ओर अपनी परिक्रमा अठासी दिनों में करता है और उस परिक्रमा के दौरान, वह मात्र अपने अक्ष पर एक बार घूमता है, जैसे कि आप जानते हैं, पृथ्वी पर, हम लोग चौबीस घण्टे में एक बार घूमते हैं।

आपके चिंतन करने के लिए कुछ दूसरी चीज भी; क्या आप जानते हैं कि यदि एक घड़ी एक चलते हुए तंत्र के साथ संलग्न कर दी जाये, तो जैसे ही चलने वाले उस तंत्र की गति बढ़ती है, वह सुस्त हो जायेगी?

ये मानते हुए कि आपके पास– धातु, लकड़ी, चीनी मिट्टी, कोई भी चीज, जो आप चाहें, किसी पदार्थ की बनी हुई एक छड़ है, परंतु ये एक निश्चित लंबाई नापने की, एक निश्चित छड़ है। यदि आप इसको किसी गतिशील तंत्र के साथ जोड़ दें, तो ये तंत्र के गति के अनुसार, गति की दिशा में, प्रकट रूप से सिकुड़ जायेगी। इन सारी चीजों, जैसे कि घड़ी में परिवर्तन, या छड़ के संकुचन को उस चीज की संरचना से किसी भी प्रकार कोई लेना–देना नहीं है और न ही वे किसी प्रकार की यांत्रिकी घटनायें हैं। इसके बजाए, उन्हें आइंस्टीन के सापेक्षतावाद के सिद्धांत के साथ कुछ करना है। आपके पास, अपना मीटर का पैमाना हो सकता है (मान लें कि एक धातु की छड़, जो एक मीटर या एक गज लंबी हो)। इसलिए अब यदि ये प्रकाश के वेग की नब्बे प्रतिशत गति से आकाश में होकर जाती है, तो ये सिकुड़कर आधा मीटर रह जायेगी, और सिद्धांततः यदि इसकी गति तब तक बढ़ाई जाये, जब तक कि ये प्रकाश के वेग से न चलने लगे, तो आंईस्टीन के सापेक्षतावाद के सिद्धांत के अनुसार, ये सिकुड़कर शून्य हो जायेगी! और यदि कैसे भी, आप इसके साथ, मीटर की इस छड़ी के साथ, एक घड़ी बांध सकें, तो उसके समय संचालन की दर बदलती जायेगी, ताकि जैसे–जैसे मीटर नापने की

छड़ी, प्रकाश के वेग की ओर पहुंचती है, घड़ी उतनी ही अधिक, और अधिक, सुस्त पड़ती जायेगी या प्रकटतः (सुस्त पड़ती) दिखाई देगी या प्रकाश के वेग पर घड़ी पूरी तरह रुकती प्रतीत होगी, या रुक जायेगी।

जब आप इसकी, ये कहते हुए आलोचना करते हैं, ''ओह, ठीक है, मैंने कार चलाई है, और मैंने कार को सिकुड़ते हुए नहीं देखा,'' आपको ध्यान रखना चाहिए कि ये परिवर्तन केवल तभी पहचाने जा सकते हैं, जबकि चलने वाली वस्तु की गति, प्रकाश के वेग के समीप पहुॅचती है। इसलिए यदि आपके पास एक ब्रांड न्यू कार हो, और यदि आप उसे सड़क पर दौड़ायें, तो इसको कहने का मतलब यह नहीं है कि आपकी कार छोटी होती जा रही है, क्योंकि, कोई बात नहीं, आप इसे सौ या दो सौ मील प्रति घण्टा की चाल से चला सकते हैं, आपकी कार में किसी भी प्रकार का नापे जाने योग्य परिवर्तन उत्पन्न करने के लिए, ये वेग अभी भी अत्यंत धीमा है। परंतु आंइस्टीन के अनुसार इसका अर्थ ये है कि यदि एक अंतरिक्ष यान अंतरिक्ष में भेजा जाए और यदि वह प्रकाश के वेग को प्राप्त कर ले, तो वह संकुचित हो जायेगा और गायब हो जाएगा।

ये मानते हुए कि आईस्टीन सही है, क्या आप जानते हैं कि इसका क्या अर्थ है? सूक्ष्मलोक की यात्रा करने में सक्षम हम, जानते हैं कि ठीक वैसे ही, जैसे कि कुछ वैज्ञानिकों ने कहा था कि मनुष्य कभी भी ध्वनि के वेग से आगे नहीं जा सकेगा, आईंस्टीन गलत है। आईंस्टीन गलत है, ठीक वैसे ही गलत है, जैसे कि वह व्यक्ति, जिसने कहा था कि मनुष्य कभी भी तीस मील प्रतिघण्टा से अधिक नहीं चल सकेगा, परंतु हमें दूसरों की गलतियों से सीखना चाहिए। ये हमको, अपनी खुद की गलतियॉ करने से बचा सकता है। इसलिए हम देखें कि आइंस्टीन के सिद्धांत के अनुसार क्या होगा। हमें कहने दें कि हमारे पास एक अंतरिक्षयान है, और अंतरिक्षयान के अंदर उसका बेड़ा, सभी विद्वान मनुष्य, जो एकदम सही निरीक्षण लेने में सक्षम हैं, है। यान लगभग प्रकाश के वेग के समीप पहुॅचते हुए, वास्तव में, अत्यंत तीव्र गति से चल रहा है। यान किसी दूरस्थ, इतना दूरस्थ कि इसे पृथ्वी से दूसरे ग्रह तक पहुॅचने में दस वर्ष लगेंगे, ग्रह को जा रहा है। एक प्रकाश वर्ष वह दूरी है, जो प्रकाश किसी निश्चित बिन्दु से, एक पूरे साल लगातार चलते रहने पर, तय करता है, इसलिए दस वर्ष, प्रकाश को उस दूरस्थ वस्तु तक पहुॅचने में लगा हुआ समय है।

यान, लगभग प्रकाश की गति पर यात्रा करने जा रहा है। (पलभर के लिए, हम आइंस्टीन के बारे में सब चीजों को भूल जायें, और हम कहें कि ये यान प्रकाश की गति पर यात्रा कर सकता है।) इसलिए, ये मानते हुए कि यान, दूरस्थ ग्रह के लिए, दस वर्ष लगाने वाला है, और तब ये बिना रुके हुए, वापस आने वाला है। कुल मिलाकर, जैसे कि हम मान रहे हैं, हर चीज संभव है! इस प्रकार, हमारे पास एक यात्रा है, जो बीस वर्ष में समाप्त होगी – दस वर्ष जाने में और दस वर्ष आने में। ठीक है, स्वाभावतः, बीस वर्षों के लिए बंद किए हुए, यान पर बैठे हुए बेचारे मित्र, भयंकर रूप से अवसादग्रस्त होते जा रहे हैं। न केवल ये, परंतु निश्चितरूप से, उनको अपने साथ, खाने और पीने के अत्यधिक भंडार की आवश्यकता होगी। कैसे भी, हम केवल 'मान रहे हैं।'

यदि आप आइंस्टीन में विश्वास रखते हैं, तो वहॉ इसप्रकार की कोई परेशानियॉ नहीं होंगी, उन्हें बीस वर्षों के लिए कोई खाना आवश्यक नहीं होगा। यदि यान प्रकाश के वेग के लगभग सन्निकट वेग से भी यात्रा करने वाला है, तो यान पर हर चीज धीमी पड़ जायेगी। मनुष्य अपने सभी कामों में सुस्त हो जायेंगे, उनकी हृदय की धड़कनें, उनकी श्वसन दर, और उनके भौतिक कार्य, और उनके विचार तक भी (सुस्त हो जायेंगे)। यदि, हमारे साथ, कोई विचार, पृथ्वी पर एक सेकण्ड का दसवॉ हिस्सा ले सकता है, तब आइंस्टीन के अनुसार, प्रकाश के वेग से चलते हुए, उसको पृथ्वी के दस सेकण्ड लग सकते हैं, परंतु उसी विचार की अवधि, यदि वह प्रकाश के वेग की समीपी गति से चल रहा हो, दस सप्ताह होगी। परंतु आइंस्टीन के अनुसार, प्रकाश के वेग से चलते हुए, उसे कुछ निश्चित

अत्यंत महत्वपूर्ण लाभ होने वाले हैं। उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर बीस वर्ष गुजर जायेंगे, परंतु यान के लोगों के लिये, ये केवल मात्र कुछ घण्टों का मामला होगा। क्या आपको इससे और अधिक अच्छे उदाहरण की आवश्यकता है?

ठीक है : हमने 1970 में, एक अंतरिक्ष यान बनाया था, जो लगभग प्रकाश के वेग से यात्रा करेगा। यान पूरी तरह सुसज्जित है, और हमारी सौर प्रणाली के परे, मंगल, शुक्र, गुरु, प्लूटो, शनि, और उन सबसे बाहर एकदम परे, एक यात्रा पर जाने को तैयार है। इसके बजाय, ये एक भिन्न ब्रह्माण्ड में जा रहा है। प्रकाश के वेग पर, ये बीस वर्ष लेने वाला है। तब, अंतरिक्ष यान 1970 में उड़ान भरता है, यह उस दूरस्थ विश्व तक जाने के लिये दस वर्ष की यात्रा करता है। ये चक्कर लगाता है, ये कुछ फोटोग्राफ लेता है, और तब ये 10 वर्षों की दूसरी यात्रा पर वापस लौटता है – कुल मिलाकर 20 वर्ष।

बेड़े के लोग नौजवान आदमी हैं, उनमें से एक, जब वह इस रोमांच भरी यात्रा पर निकलता है, केवल 20 वर्ष की आयु का है। वह शादीशुदा है, और उसकी पत्नी, उसी के समान – 20 वर्ष आयु की है। उनका एक वर्ष का एक बच्चा है। जब बेचारा वह प्रकाश की गति के लगभग समान गति से यात्रा करते हुए, कुछ घण्टों बाद, लौटता है, तो उसे अपने जीवन का सबसे बड़ा सदमा प्राप्त होताा है। उसे पता लगेगा कि उसकी पत्नी, खुद उससे 20 वर्ष बड़ी है, जबकि वह और बेड़े के उसके दूसरे साथी, अपनी आयु में कुछ घण्टों से अधिक का परिवर्तन नहीं पायेंगे, पृथ्वी पर छोड़ दिए गए दूसरों की आयु में सांसारिक समय, अर्थात् 20 वर्षों की वृद्धि हो चुकी होगी। इसलिए 20 वर्ष और कुछ घण्टों के इस आदमी के पास, अब 40 वर्ष की एक पत्नी है!

ये वह घटना है, जिसको संयुक्त राज्य बहुत अच्छी तरह से शांत और सार्वजनिक जानकारी से बचाकर रखना चाहता है। ये विशेष मामला, जो निम्नलिखित है, पूरी तरह से आधिकारिक, पूरी तरह से असली है, और जो पर्याप्तरूप से उच्च पदस्थ हैं, वे संयुक्त राष्ट्र की नौसेना के कुछ अभिलेखों में इसको 'खोज सकते हैं।'

1943 के अक्टूबर में, संयुक्त राज्य नौसेना के एक जलयान को अदृश्य करने का एक प्रयास किया गया था! इसके आपदामय परिणाम हुए, क्योंकि, कुछ वैज्ञानिक इतने अधिक संकीर्ण विचारों के थे कि वे अपनी कल्पना का उपयोग नहीं कर सके, परंतु उन्हें 'पुस्तक के अनुसार' चलना पड़ा। आपको ध्यान होगा कि द्वितीय विश्वयुद्ध में संयुक्त राज्य, और उसके साथ–साथ दूसरे लोगों ने विचारों के लिये कि सर्वोत्तम–सर्वोत्तम हथियारों आदि को किस प्रकार बनाया जाए, विज्ञापन निकाला। प्रोफेसर आइंस्टीन के राष्ट्रपति रूजवेल्ट (Roosevelt) को लिखे गए पत्र, जिसमें 'संयुक्त क्षेत्र सिद्धांत (Unified Field Theory)' की विस्तार में व्याख्या की गई थी, के परिणामस्वरूप एक विचार था। संयुक्त क्षेत्र के तकनीकी पहलुओं में अधिक विस्तार से जाने का कोई मुद्दा नहीं है, परंतु हम कह सकते हैं कि ये कुछ मात्रा में, चौथी विमा से सम्बंधित ज्ञान को समाहित करता है।

विज्ञान के एक निश्चित आचार्य, वास्तव में एक अत्यंत चतुर व्यक्ति ने, संयुक्त क्षेत्र सिद्धांत से सम्बंधित प्रमेयों के कुछ अंश का उपयोग किया, और संयुक्त राज्य नौसेना के साथ सहयोग में काम करते हुए, वह 1943 अक्टूबर में एक कवच – एक प्रकार की किरणें – जो एक विनाशक को पूरी तरह से घेर लेती हैं, बनाने में सक्षम हुआ। क्षेत्र, जो अपने मूलबिन्दु के केन्द्र से, लगभग 300 फुट तक विस्तारित होता है और उसके अंदर की कोई भी चीज, पूरी तरह से अदृश्य हो जाती है, ताकि बाहर के किसी भी प्रेक्षक के लिये, वह यान और बेड़ा गायब हो जाता है। दुर्भाग्यवश, जब वह जहाज फिर से दिखाई पड़ा, तो उसके बेड़े में से अनेक लोग पागल थे। ऐसा लगता है कि बाद में जॉच करने वाले डॉक्टरों ने, जहाज के बेड़े के सदस्यों के अवचेतन में से, यह पता लगाने के लिए कि एकदम सही–सही क्या हुआ था, कुछ खोज निकालने का प्रयास करते हुए, सोडियम पेन्टाहॉल (Sodium Pentahol) का उपयोग किया था।

हमारे दृष्टिकोण से, और चौथे आयाम के सम्बंध में, यह दिखाई देता है कि एक अवसर पर अदृश्य जलयान, सैकड़ों मील दूर, चेसापीक (Chesapeake) की खाड़ी में, पुनः दिखाई दिया। ये बेचारगी ही है कि, उस क्षेत्र के लोग सार्वजनिक पुस्तकालयों में नहीं जा सकते और स्थानीय समाचार पत्रों की नस्तियों (files) को नहीं देख सकते, या रिलेक्रेब (Riley Crabb) के द्वारा संकलित, *एम. के. जैसप और एलैन्डे के पत्र (M.K. Jessup and the Allende Letters)* जैसी किसी पुस्तक में से कुछ अभिलेखों को नहीं पा सकते। पुस्तक प्रगटतः ग्रे बार्कर (Gray Barker) के द्वारा, संयुक्त राज्य में प्रकाशित की गई थी, जिसे डॉक्टर जैसप का अनोखा प्रकरण *(The Strange Case of Dr. Jessup)* कहा गया था।

ये एक अत्यंत गंभीर चर्चा है, ये कोई धोखे का काम या सुना सुनाया साक्ष्य नहीं है। संयुक्त राज्य की सरकार, प्रत्येक, जो भी इस जैसी चीजों के ऊपर वार्ता करता, उस को खामोश करने का प्रयास करने के कारण, अत्यंत परेशानियों में पड़ गई थी, और कुछ निश्चित जानकारी रखने वाले लोगों के सम्बंध में, लोगों के रहस्यपूर्ण ढंग से मरने की कुछ रिपोर्टें प्राप्त हुईं थीं।

संयुक्त राज्य की सरकार, प्रेस को खामोश करने के प्रयासों में कुछ सफलता पाती हुई दिखाई देती है; उसके लिये, निशिचितरूप से, वे नोबल पुरुस्कार के पात्र हैं, और अच्छे उपायों के लिए उनको थोड़े से आस्कर भी मिलने चाहिये। परंतु यह इंगित करता है कि अदृश्य जलयान के इस कार्य में काफी कुछ है।

गलती से जारी हो गई एक रिपोर्ट है, जो कहती है कि अदृश्य जलयान, एक बंदरगाह में पुनः घनीभूत हुआ था और पूर्णतः आश्चर्यचकित नाविक, विचलित होते हुए, किनारे की ओर चले और पूरी तरह से गोते खाते हुए, एक सार्वजनिक गृह (public house) में लुढ़क गये। वे, शायद, तीस या चालीस व्यक्तियों के द्वारा देखे गए थे, और अपने वाक्य के बीच ही, जब वे पेय पदार्थों का आदेश दे रहे थे, गायब हो गए, गायब हो गए, गुम हो गए, पतली हवा में चले गए। लोग, जो पर्याप्तरूप से अभिरुचि रखते हैं, उनको ऊपर वर्णित पुस्तकें पढ़नी चाहिए और उन्हें लगभग 1944 और 1956 की अवधि के समाचार पत्रों को जोड़ने के कुछ तरीके पता लगाने का भी प्रयास करना चाहिए। वहॉ संकेत हैं, और दों घटनाओं कीं कुछ वास्तविक रिपोर्टें हैं।

ये स्पष्ट है कि यदि कोई अचानक ही एक यान या एक विशेष हथियार को चौथी विमा में बदल पाता और तब इसे तीसरी विमा में, किसी पूर्व चिन्हित स्थान पर वापस ला पाता, चीनी लोगों को एकदम दबाया जा सकता था, ये रूसी लोगों को भी थोड़ा भयभीत कर सकता था! लोग लेसर किरण के बारे में हॅसे, परंतु नन्हे रूबी के उस प्रकाश ने, उस सब का, जिसका कि उसके लिए दावा किया गया था, और उसके अगल बगल से, थोड़ी सी दूसरी बातों का होना सिद्ध कर किया है। इसलिए, – यदि उपयुक्त सुरक्षा मानकों के साथ, शोधकार्य, केवल जारी रखे जायें, तो ये पाया जायेगा कि किसी बैंक के खजाने में पक्के तरीके से तालाबंद दस्तावेज, चौथी विमा के तरीके के द्वारा, हटाये जा सकते हैं, क्योंकि, ध्यान रखें, यदि आपके लिये, किसी चीज की चार दीवारें हैं, तो ये आपके एक त्रिविमीय विश्व में होने के कारण हैं, और चौथी विमा में एक खुलाव (निकास), जिसमें होकर कोई उसमें प्रविष्ट हो सके, हो सकता है।

अदृश्य जलयान के इस मामले पर वापस लौटते हुए, ये सोचा गया है कि यदि आदमियों को यह जानने के लिए कि उन्हें क्या अपेक्षा करनी चाहिए थी, अनुकूलित (conditioned) किया गया होता, तो वे पागल नहीं होते, क्योंकि जबतक कि उन्हें पूर्वानुकूलित (preconditioned) न किया गया हो, अपने आपको, भिन्न समय के सातत्यक (different time continuum) में पाए जाने का भयानक सदमा, किसी के मन को हिला देने के लिए पर्याप्त है।

अनेक–अनेक वर्षों पहले, प्लूटो (Pluto) के दिनों में, चतुर्थ विमा के सम्बंध में व्याख्या होती थी,

परंतु उन दिनों में भी, वैज्ञानिक उसे, जो रूपकों के रूप में, उनकी नाकों के सिरे पर (अर्थात् एकदम सामने) स्थित था (perched on the end of their noses), समझने में असमर्थ थे। प्लेटो का वार्तालाप (शास्त्रार्थ) हुआ था, जो चौथी विमा वाले इस वार्तालाप पर लागू होता हुआ प्रतीत होता है, और इसलिये इस क्रम में आवश्यक है कि हमको ''मनुष्य अपने आपको जान (Man know thyself)!'' उपदेश (commandment) को मानना चाहिये, हमको विभिन्न आयामों पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे के सम्बंधों को समझना चाहिए।

इसलिए इस अध्याय का अंत करने के लिये, हम यहॉ दार्शनिक प्लूटो के वार्तालाप, और उसे, जो उसको इतना अधिक स्पष्ट था, उसने लोगों को स्पष्ट करने का, कैसे प्रयास किया, समझें :

जमीन के अंदर के बिल में रहते हुए मनुष्य प्राणियो, थमो!; वे अपने बचपन से वहॉ रहे हैं, और उनकी टांगें और गर्दनें जंजीरों में जकड़ी हुई हैं – जंजीरें, मानो कि उनको सिरों को भी मोड़ने से रोकने के लिये व्यवस्थित की गई हैं। उनके ऊपर, और पीछे की तरफ, कुछ दूरी पर, किसी आग के प्रकाश की एक लपट है, और आग और कैदियों के बीच, एक उभरा हुआ रास्ता है; और यदि आप देखें, आप, रास्ते के साथ–साथ, एक पर्दे की भांति बनाई हुई, एक निचली दीवार, जो कठपुतली नचाने वालों के अपने सामने होती है, जिसके ऊपर वे कठपुतलियों का प्रदर्शन करते हैं, देखेंगे। बर्तन लेकर दीवार के साथ गुजरते हुए मनुष्यों, जो दीवाल के ऊपर दिखाई देते हैं, की कल्पना करो; लकड़ी और पत्थर और विभिन्न पदार्थों की बनी हुई पशुओं और मानवों की आकृतियॉ; और यात्रियों में से कुछ, जैसी कि आप आशा करेंगे, बातचीत कर रहे हैं और उनमें से कुछ खामोश हैं।

''ये एक अजीब छवि है, उसने कहा, और वे अजीब कैदी हैं।''

''हमारे जैसे, मैंने उत्तर दिया; और वे केवल अपनी खुद की छाया, या एक दूसरे की छाया, जिसे गुफा के सामने वाली दीवार पर, आग डालती है, को देखते हैं?''

''सत्य, उसने कहा; वे छाया को छोड़ कर, किसी भी चीज को कैसे देख सकते हैं, यदि उन्हें अपने सिरों को, कभी भी, हिलाने नहीं दिया गया?''

''और वस्तुओं के, जो उस तरीके से ले जाई जा रहीं हैं, कि वे हमेशा केवल छायाओं को देखें?''

''हॉ, उसने कहा।''

''और यदि वे एक दूसरे के साथ बात करने में सक्षम होते, क्या वे कल्पना नहीं करते कि वे उसका उल्लेख कर रहे थे, जो वास्तव में, उनके सामने था ?''

''एकदम सही।''

''और आगे ये कल्पना करते हुए कि जेल में एक प्रतिध्वनि मिली, जो दूसरी ओर से आयी थी, क्या वे इस सोच को सुनिश्चित नहीं करेंगे कि ध्वनि, जो उन्होंने सुनी, वह गुजरती हुई छायाओं में से किसी एक की थी?''

''कोई प्रश्न नहीं, उसने उत्तर दिया।''

''कोई प्रश्न नहीं हो सकता?'' मैंने कहा, और तब उनके लिए, सत्य, केवल छवियों की छायाओं (shadows of the images) के सिवाय कुछ नहीं होगा।

''ये सुनिश्चित (पक्का) है।''

''और अब फिर निगाह डालें और देखें कि उन्हें अपनी गलती से किस प्रकार सुधारा और मुक्त किया जाता है। सबसे पहले, जब उनमें से किसी एक को मुक्त किया जाता है और अचानक ही, ऊपर जाने और अपनी गर्दन को चारों तरफ मोड़ने और चलने के लिए और प्रकाश पर देखने के लिए मजबूर किया जाता है, उसे तेज पीड़ा अनुभव होगी, प्रकाश की चमक उसे परेशान करेगी और वह उन यथार्थताओं, जिन्हें वह अपनी पूर्व अवस्थाओं में देख चुका है, को छाया के रूप में देखने में अक्षम होगा;

और तब, किसी को, उसे यह कहते हुए कल्पना करें, कि जो उसने पहले देखा, वह एक भ्रम था, परंतु अब चूंकि वह सत्य प्राणियों के निकट आ रहा है, और उसके पास एक अधिक सत्य दृष्टि और अधिक सत्य चीजों की दृष्टि है – उसका क्या जवाब होगा?'' और आप, और आगे की कल्पना कर सकते हैं कि उसका शिक्षक, जैसे ही वे गुजरती हैं, उन चीजों की ओर इशारा कर रहा है, और उनका नाम रखने की मांग करता है – क्या वह परेशानी में नहीं होगा? क्या वह कल्पना नहीं करेगा कि उन चीजों की तुलना में, जो उसे अब दिखाई जा रही हैं, छायाऐं, जो उसने पहले देखी थीं, अधिक सत्य हैं?

''और अधिक सत्य।''

''और यदि उसे प्रकाश को देखने को मजबूर किया जाए, तो क्या उसकी ऑखों में दर्द नहीं होगा, जो उसे, दृष्टि की वस्तु, जिसे वह देख सकता है, और दूसरी चीजों, जो उसे अब दिखाई जा रही हैं, की तुलना में, जिसकी वह, अधिक स्पष्टरूप से धारणा करेगा, में शरण लेने के लिए, मोड़ देंगी?''

उसने कहा, ''सत्य है''

और एक बार फिर मान लीजिए, कि वह अनैच्छिक रूप से, सीधी और विषम चढ़ाई पर, ऊपर खींचा गया है, और कसकर पकड़ा गया है, और उसे बलात्, सूर्य की उपस्थिति में डाला गया है, क्या आप नहीं सोचते हैं कि उसे कष्ट और झुंझलाहट होगी और जैसे ही वह प्रकाश तक पहुॅचता है, उसकी ऑखें चौंधिया जायेगीं, और वह किसी भी यथार्थ, जो अब सत्य के रूप में संकल्पित है, को देखने में सफल नहीं होगा?

''एक क्षण में सब नहीं, उसने कहा। ''

''उसे ऊपरी विश्व की दृष्टि के लिये अभ्यस्त होने की आवश्यकता होगी, और पहले वह, छायाओं को सबसे अच्छी तरह से देखेगा, उसके बाद मनुष्यों और दूसरी चीजों के पानी से परावर्तन, और तब अपने आप में वस्तुओं को (देखेगा); इसके बाद वह चंद्रमा, और तारों के प्रकाश के ऊपर नजर टिकायेगा; और वह, सूर्य या दिन के सूर्य के प्रकाश की अपेक्षा, आकाश को, रात में तारों को, अधिक अच्छी तरह से देखेगा?

''निश्चितरूप से।''

''और अंत में, वह सूर्य को देखने में सक्षम होगा, और न केवल पानी में उसके परावर्तनों को वल्कि वह उसे देखेगा, जैसा वह खुद के उचित स्थान में है, और दूसरे के में नहीं, और वह उसकी प्रकृति पर चिंतन करेगा।

''निश्चितरूप से।''

''और इसके बाद, वह कारण देगा कि सूर्य वह है, जो मौसम और वर्षों को प्रदान करता है और उस सब का संरक्षक है, जो विश्व में दृश्य है, और एक निश्चित तरीके से, सभी चीजों का कारण है, जिसे वह और उसके मित्र निहारने के अभ्यस्त हो चुके हैं?

''स्पष्टरूप से, उसने कहा, पहले वह दूसरे की ओर आयेगा और बाद में इसकी ओर।

''और जब उसने अपनी पुरानी बसाहट और अड्डे की बुद्धि और अपने साथी कैदियों को याद किया, क्या तुम नहीं मानते कि वह परिवर्तन पर, स्वयं का अभिनंदन करेगा, और उन पर तरस खायेगा?

''निश्चितरूप से, वह करेगा।

''और यदि वे उन लोगों को, जो निरीक्षण करने, और याद रखने में कि कौन सी छाया पहले गई, और उसके बाद, कौन सी उसके पीछे गई, और कौनकौन सी साथ–साथ थी, और भविष्य कथन करने में तीव्रतम थे, सम्मान देने के अभ्यस्त होते, क्या आप सोचते हैं, वह इन सब सम्मानों और भव्यता की चिंता करेगा, या उनको रखने वालों के साथ ईर्ष्या करेगा?

''क्या वह डाक लाने वाले कबूतर (Homer) के साथ ये नहीं कहेगा–

''गरीब आदमी होना और एक गरीब स्वामी रखना,'' और उनके तरीके से सोचने और रहने की तुलना में, कुछ भी चीज झेलेगा?

''हॉ, उसने कहा, मैं सोचता हूँ कि वह उनके तरीके से रहने की तुलना में, किसी भी चीज से पीड़ित होगा।

''एक बार फिर कल्पना करो, मैंने कहा, कि सूर्य से अचानक बाहर आने वाला, ऐसा कोई, अपनी पुरानी स्थिति में, विस्थापित किया जाना था, क्या वह अपनी ऑखें पूरी तरह से अंधेरे में रखने के लिये निश्चित नहीं है।

''एकदम सत्य,'' उसने कहा।

और यदि वहॉ कोई प्रतियोगिता होती और उसे छायाओं को नापने में, उन बंदियों के साथ, जो कभी भी अड्डे से बाहर नहीं गये थे, उस अवधि में, जब उनकी नजर कमजोर है, और इससे पहले कि उसकी ऑखें स्थिर हों, (और समय जो नजर नई आदत को प्राप्त करने के लिये आवश्यक होगा, बहुत अधिक विचारणीय हो सकता है।), प्रतियोगिता करनी पड़ती, क्या वह हास्यास्पद नहीं होता? लोग उसके बारे में कहते कि वह बिना अपनी आंखों के ऊपर और नीचे गया; और कि वहॉ चढ़ाई के सम्बंध में सोचने का भी कोई उपयोग नहीं था; और यदि किसी ने दूसरे को खोने और उसे प्रकाश की ओर ले जाने का का प्रयास किया, उन्हें उस क्रिया के आक्रामक को केवल पकड़ने दो, और वे उसे मार डालेंगे।

''कोई प्रश्न नहीं,'' उसने कहा।

ये दृष्टांत (allegory), मैंने कहा, अब पिछले तर्क के साथ जोड़ सकते है; दृष्टिगत विश्व, जेल है, अग्नि का प्रकाश सूर्य है, चढ़ाई और आपके ऊपर की चीजों की दृष्टि, वास्तविक रूप से प्रबुद्ध विश्व में, आत्मा की ऊपर की ओर प्रगति मान सकते हैं।

''और आप समझेंगे कि वे, जो इस लाभदायक दृष्टि को पाते हैं, मानवीय मामलों में नीचे उतरने के इच्छुक नहीं होते; परंतु उनकी आत्मायें, हमेशा ऊपर के विश्व, जिसमें वे निवास की इच्छा रखते हैं, के लिये जल्दी कर रहीं होती हैं। और क्या वहॉ, किसी उस में, जो अपने प्रति एक हास्यास्पद तरीके से दुर्व्यवहार करते हुए, स्वर्गिक मानवीय चीजों की समझ के साथ गुजरता है, कोई आश्चर्यजनक चीज है?

''इसमें आश्चर्यजनक कुछ नहीं है,'' उसने उत्तर दिया।

कोई भी, जिसमें सामान्य समझदारी है, याद करेगा कि ऑखों की हैरत (bewilderment) दो प्रकार की होती है, और दो कारणों, या तो प्रकाश से बाहर आने से या प्रकाश में अन्दर जाने से, उत्पन्न होती है, जो शारीरिक आंख की भॉति, ठीक वैसे ही, मन के नेत्र के सम्बंध में भी सत्य है; और वह, जो इसे याद करता है जब वह ऐसे किसी की आत्मा को देखता है, जिसकी दृष्टि भ्रांत और कमजोर है, तो वह हॅसने के लिये अत्यधिक तैयार नहीं होगा; वह पहले पूछेगा, क्या वह आत्मा चमकदार जीवन से बाहर आ चुका है, और अंधेरे के प्रति अनअभ्यस्त होने के कारण देखने में अक्षम है, या अंधेरे से दिन के प्रकाश में आते हुए, अत्यधिक प्रकाश के द्वारा चौंधिया गया है। और तब वह किसी को अपने हिसाब से, उसकी अवस्था में, और अस्तित्व की स्थिति में प्रसन्न मानेगा।''

अध्याय पांच :
शब्द–चित्रण

शस्य पूर्णिमा के चंद्रमा (harvest moon) के अंतर्गत, अच्छी तरह सजाये हुए कंकड़ों की सड़क के आरपार गहरी काली छायाओं को फेंकते हुए, प्राचीन भूरी दीवारें, सफेद सी चमक रही थीं। ये वास्तव में, पुराना और प्रेम, जो प्रिय वस्तुओं को अच्छी तरह अर्पित किया जाता है, के साथ पकाया हुआ था। चंद्रमा की ओर सामना करती हुई एक दीवार से एक प्राचीन कुलचिन्ह (coat of arms) ने सगर्व चंद्र किरणों को पकड़ा और उन्हें युगों से बदरंग हुए रंगों में वापस उछाला। खड़ी धारियों से युक्त (mullioned) खिड़कियों से, विद्युत के पीले प्रकाश की आभा आई। पुराना हॉल, आज रात को आनन्द में था, आनन्द के साथ संतुष्टि, जो केवल किसी तत्काल हाल ही में घोषित की गई मंगनी (betrothal) के साथ आती है।

चंद्रमा, शांत भाव से, चमकदार आकाश पर चलता चला गया। छायायें धीमे से, खुले आकाश के आरपार, बगल के पेड़ों को काले से भी काले आबनूस (darkest ebony) में बदलते हुए आगे बढ़ीं। जैसे ही फ्रांसीसी खिड़कियॉ (French windows) खुलीं, संगीत और स्वर्णिम प्रकाश का एक सहसा विस्फोट हुआ और एक नौजवान आदमी और औरत ने छत की बालकनी पर कदम रखे। उनके पीछे की खिड़कियॉ खामोशी के साथ बंद हो गईं। हाथ में हाथ डाले हुए आदमी और औरत ने पत्थर के कठघरे (balustrade) को पार किया और अपने सामने के शांतिमय दृश्य के ऊपर नजरें टिकाईं। घूमन्तू हवा ने, छुईमुई (mimosa) की हल्की सी सुगंध को, उन तक बिखेरा। अपनी भुजा को, कोमलता के साथ, औरत की कमर में डाले हुए, आदमी उसके साथ छॉटकर छोटे किये हुए लॉन (close-cropped lawn) की ओर जाने वाली संगमरमर की चौड़ी सीढ़ियों पर चला।

वह लंबा था, और चांद की रोशनी में चमकते हुए बटनों और बिल्लों वाली, किसी वर्दी को पहने हुए था। वह काले बालों और हाथी दांत (ivory) की त्वचा वाली थी, जो अक्सर ऐसे लोगों की होती है। उसका शाम का गाउन लंबा और लगभग स्वयं चंद्रमा के रंग का था। धीमे से, वे एक वृक्ष लगे हुए पथ पर पहुंचने के लिये, लॉन के आरपार चले। कभीकभार (अक्सर नहीं), वे एक क्षण के लिये रुके और उन्होंने एक दूसरे को देखा। शीघ्र ही, वे लकड़ी के एक ग्रामीण पुल को पार करते हुए, एक शांत धारा पर आये। कुछ समय के लिये, एक दूसरे के साथ हल्के से फुसफुसाते हुए, अक्षुब्ध पानी से अपने परावर्तन को नीचे घूरते हुए, वे पुल की रेलों में से एक पर झुके।

अपने सिर को आदमी के कंधों पर टिकाती हुई औरत ने, ऊपर की ओर, जानबूझकर एक बड़े ओक (oak) के वृक्ष से नीचे देखते, चीख से अलग स्वर निकालते, एक उल्लू की ओर इशारा किया। देखे जाने से अप्रसन्न होकर, पक्षी ने अपने बड़े पंख फैलाये और बाग के आरपार दूर की ओर ऊॅची उड़ान भरी। आदमी और औरत ने अंगड़ाईयॉ लीं और भलीभांति रखरखाव की हुईं (well-tended) झाड़ियों में से गुजरते हुए, अब नींद में झुके हुए सुकोमल फूलों से गुजरते हुए, धीमेधीमे चलते गये। हमेशा और गुमनाम छोटी खड़खड़ाहट की आवाजों और चहचहाहटों ने प्रदर्शित किया कि रात के छोटे प्राणी, अपने वैध कार्यों के लिये आसपास चले गये।

रास्ता मुड़ा और चौड़ा हुआ और एक भलीभांति रखरखाव किये गये किनारे की ओर मुड़ गया। चांदनी ने कोमलता के साथ उछलते हुए पानी के आरपार एक चौड़ी सफेद धारी डाली। नन्हीं तरंगिकाओं (wavelets) ने प्रकाश को पकड़ लिया और इसे पानी पर नाचते हुए असंख्य चमकदार नगीनों में बदल दिया। एक मील दूर, एक बड़े सफेद जहाज (liner) ने समुद्र में होकर अपने राजशाही पथ को लिया, जहाज का तल रोशनियों के साथ जगमगा उठा। जैसे ही उसके बैंड ने, उसके तन के ऊपर नृत्य करते हुए जोड़ों का मनोरंजन किया, उसमें से संगीत की मंद–मंद ध्वनियॉ आईं। उसके

बंदरगाह के तरफ की लाल रोशनी चमकी और फ्लड लाइटों (floodlights) ने, उसके कीपों (funnels) के ऊपर वाले ग्रह–निशान को प्रकाशित किया। उसके धनुषों (bows) से मिलते हुए पानी के साथ स्फुरदीप्त (phosphorescent) झाग आये, और उसकी सजग गड़गड़ाहट से उठी तरंगें उसके समुद्रतट से टकराईं। एक दूसरे में हाथ डाले हुए, आदमी और औरत, खड़े रहे और राजशाही प्रगति को देखते रहे। शीघ्र ही वह जहाज के पैंदे में उतर गई और उसके बाद उसके संगीत की कोई विकृतियॉ नहीं सुनी जा सकीं।

वे, चीड़ के एक लंबे पेड़ की छाया के द्वारा डाली मखमली–जामुनी (velvet-purple) अंधेरे में, एक दूसरे को केवल वे चीजें, जिन पर प्रेमी बात करते हैं, बातें करते हुए, भविष्य की योजना बनाते हुए, स्वयं जीवन में आगे देखते हुए, साथ–साथ खड़े थे। किसी भी छाया ने चंद्रमा को पार नहीं किया, हवा कुनकुनी और मरहम लगाने वाली थी। धीमे से, नन्हीं तरंगों ने, अपेक्षाकृत गोल कंकड़ों को गुदगुदाया और (वे) अपेक्षाकृत छोटी बालू के साथ खेलीं।

शस्य पूर्णिमा के चंद्र के नीचे की रात, प्रेमियों के लिये, बनी थी। एक रात, कवियों के लिये भी, क्योंकि क्या कवितायें, स्वप्नों और जीवन की सार नहीं हैं?

* * * * * * *

दोपहर के सूर्य की जलती हुई आग के नीचे, मरुस्थल की बालुयें, गर्म चुभ रही थीं। कठोर बनाये गये किनारों के बीच बहती हुई, अपने चमकते हुए वक्ष से उष्मा की वाष्प ऊपर उठाते हुए, और पानी, जिसे कोई बंजर भूमि, इतनी अधिक खराब बर्दाश्त के साथ, कर सकती है, को खोते हुए, मां नील भी, सामान्य की तुलना में अधिक सुस्त दिखाई दी। भाग्यहीन प्रेमी ने, तपते हुए दिन को अभिशप्त कहने से भी अत्यधिक गर्म और तप्त (too hot and weary), उमस भरे आकाश के नीचे, खेतों में काम करने की निंदा की, और भारी आलस के साथ चला। एक ईविस–पक्षी (Ibis-bird), शिथिल बेंतों (wilting reeds) के पेड़ों के एक समूह से लटकता हुआ खड़ा था। महान लोगों की नई कब्रें, भारी भारी खंडों (blocks) और शिखर के पत्थरों (capping stones) के बीच, उष्मा के साथ ताजे जमाये गये गारे (mortar) को सुखाती हुई, चमकदार और लंबी खड़ी थीं।

मरहम लगाने वाले कमरे की सापेक्ष ठंडक में, जलती हुई बालू की काफी गहराई में, काफी नीचे, एक झुर्रीदार बूढ़े आदमी और उसकी मुश्किल से ही जवान सहायक ने, जैसे ही उन्होंने सुगंधित जड़ीबूटियों को एक माह पूर्व की लाश में भरा, काम किया।

मैं समझता हूँ कि फराओ (Pharaoh) पुजारियों के विरुद्ध कठिन कदम उठा रहे हैं,'' दोनों में से अधिक पुरातन ने कहा।

''हॉ,'' दूसरे ने उदासीमय संतोष के साथ जबाव दिया, ''मैंने रक्षकों को कुछ मंदिरों पर हमला करते हुए, कुछ को गिरफ्तार करते हुए, दूसरों को सावधान करते हुए और लिखे हुए भोजपत्रों की गांठों को ले जाते हुए देखा था। वे अत्यधिक दृढ़संकल्पित (determined) भी दिख रहे थे!''

''मैं नहीं जानता कि विश्व की ओर क्या आ रहा है,'' पुरातन ने कहा। ''मेरी जवानी के दिनों में ऐसा कभी नहीं था। दुनियॉ गड्डे में जा रही है, यही वह है, जो गड्डे में जा रही है!'' आह भरते हुए और फुसफुसाते हुए उसने अपने मूसल (packing rod) को उठाया और जड़ीबूटियों के अधिक मिश्रण को बिरोधरहित लाश के एक छेद में ठूस कर भर दिया।

''फराओ के आदेश के द्वारा!'' अपने आदमियों से घिरा हुआ, सुरक्षा कर्मियों का कैप्टन, जैसे ही उसने उच्च पुजारी के घरों में, शानदार ढंग से दुबकते हुए पीछा किया, चिल्लाया। ''आप पर, उनको, जो उसके विरुद्ध षड़यंत्र रचते हैं, और जादू–टोना करने का प्रयास करते हैं ताकि उसे नुकसान पहुँचा सके, खराब चीजों को, प्रश्रय देने का आरोप है।'' अपने आदमियों की ओर मुड़ते हुए उसने आदेश

दिया, ''इस स्थान की तलाशी लो– और लिखे हुए सभी भोजपत्र (papyri) जब्त कर लो।

उच्च पुजारी ने आह भरी और शांतिपूर्वक टिप्पणी की, ''ये हमेशा ही ऐसा था, वे जो उच्च ज्ञान की अभिलाषा करते हैं, वे अज्ञानी आदमियों, जो सत्य को जानने से डरते हैं और जो सोचते हैं कि कोई भी उनसे अधिक नहीं जान सकता, के द्वारा सताये जाते हैं। इसलिये, बुद्धि के हमारे कागजों को नष्ट करने से, तुम ज्ञान के दौड़ते दीपों (rush-lights) को बुझाते हो।''

दिन, सैनिकों को सतर्कता की स्थिति में रखते हुए, सुरक्षाकर्मियों को उठाते हुए, और संदेहास्पद व्यक्तियों–जिन्हें अधिकांशतः किसी पड़ौसी के माध्यम से धोखा दिया गया था, को ले जाते हुए, कठिन था। जब्त किये गये, लिखे हुए भोजपत्रों से लदी हुई, गुलामों द्वारा गलियों में होकर खींची गई गाड़ियॉ, गड़गड़ा रहीं थीं। परंतु दिन समाप्त हुआ, जैसे कि दिन अक्सर होते हैं, और हमेशा होंगे, कोई बात नहीं, वे दलन के शिकार पीड़ितों को कितने ही लंबे क्यों न दिखाई दें।

एक ठंडी हवा ऊपर उछली और भोजपत्रों तथा बेंतों (reeds) की एक सूखी पिसती हुई आवाज के साथ कुलबुलाई। मंद पड़ती हुई नील के आरपार, छोटी लहरों ने, सूर्य के द्वारा तपे हुए किनारों से टकराकर वापस आने के लिये उछाल मारी। नदी की निचली पहुॅच के साथसाथ, जैसे ही उनकी पट्टीदार पतवारें हवा के साथ बंद हुईं, नाविक आनंद के साथ मुस्कराये और उन्होंने, उनको अपने घर की ओर के पथ पर तेज कर दिया। दिन की कठोर गर्मी से मुक्त छोटे प्राणी, छेदों में से किनारों पर उभरे और उन्होंने शिकार की तलाश में अपनी रात्रि–यात्रा प्रारंभ की। परंतु मनुष्य भी, शिकार की तलाश में थे!

स्वर्ग का अंधेरा खजाना, चमकते हुए नगीनों, जो कि तारे थे के साथ, छितरा हुआ सा था। चंद्रमा, आज की रात, उगने में विलंब करेगा। गारे की झोपड़ियों में से प्रकाश की मंद जगमगाहटें और धनवान लोगों के घरों में से विरली चमकदार रोशनियॉ आईं। हवा आतंक और अनिष्ट के पूर्वाभास से भरी हुई थी। इस रात को, गलियों में मटरगस्ती करते हुए परिहास करने वाले कोई नहीं थे, किन्ही प्रेमियों ने अपने हाथ नहीं जोड़े और नील के फैलाव के चौड़े विस्तार में कोई वादे नहीं किये। आज रात, भारी कदमों और घटिया आकृतियों के साथ, खेल के लिये तैयार, फराओ के आदमी, छिपकर गलियों में घूमे। शुद्धिकरण, विद्यार्थियों, पुजारियों, और किसी के भी, जो फराओं को, उसके जल्दी मर जाने की भविष्यवाणी करने के द्वारा धमकी दे, के विरुद्ध शुद्धिकरण जारी था। ये इस रात को बाहर निकले होने की मृत्यु थी, तलाश में घूमते हुए प्रहरियों के टूट पड़ने से मौत थी।

परंतु जैसे ही फराओ के आदमी, शोर करते हुए, शहर के अंधियारे स्थलों में भीड़ लगाते हुए, समीप आये, खामोश आकृतियॉ घात लगाती रहीं और छाया से गहरी छाया में मंडराती रहीं। धीमे धीमे एक प्रादर्श स्पष्ट हुआ, अपने लक्ष्य पर चुनौतीहीन ढंग से पहुॅचने के लिये प्रत्येक उपलब्ध बचाव को उपयोग में लाते हुए, खामोश, दृढ़निश्चययुक्त मनुष्य। चूॅकि प्रहरियों ने शोर के साथ गश्त लगाई थी, और शाश्वत तारे सिर के ऊपर लुढ़के थे, एक काली आकृति के बाद, दूसरी काली आकृति, उनके द्वारा, जो एक अचिन्हित, अनखुले दरवाजे में होकर पकड़े जाने के लिये दरवाजे के पीछे थे, सरलतापूर्वक फिसलीं, और जबतक कि उनकी पहचान स्थापित सुनिश्चित नहीं कर ली गई, वे उन्हें सुरक्षित रूप से पकड़े रहे। जैसे ही अंतिम आदमी ने संकेत के साथ, अपने खामोश तरीके से अंदर जगह ली और उसे पहचान लिया गया था, प्रतीक्षारत आदमियों ने, ये सुनिश्चित करने के लिए कि वह पक्का था, लकड़ी का दरवाजे के विरुद्ध महान बाधा डाल दी।

एक पुरातन फटी हुई आवाज भर्राई, मेरे पीछे आयें, हर आदमी को एक लाइन में पीछे चलने दें और अपने सामने वाले आदमी के कंधे पर एक हाथ रखें। मेरे पीछे चलें और – **कोई शोर नहीं!** क्योंकि आज रात, हमारे सिर पर मौत आने वाली है।''

फैंटने की आवाज के न्यूनतम संदेह के साथ, आदमियों की पंक्ति ने, नीचे की तरफ एक अच्छी

तरह छिपाए हुए जाल के दरवाजे में होकर, अपने नेता का अनुगमन किया। नीचे, झुके हुए रास्ते पर नीचे, लंबी–लंबी दूरी तक, और अन्त में वे एक पुराने कब्रिस्तान में निकले, जहॉ हवा नम और बदबूदार थी।' हम यहॉ सुरक्षित रहेंगे, बूढ़ा नेता फुसफुसाया। 'परन्तु हमें अपनी आवाजों को अनुचितरूप से तेज नहीं करना चाहिये और व्यवस्था के चापलूसों को नहीं सुनने देना चाहिये और हमारी सभा की खबरों को नहीं ले जाने देना चाहिये। खामोशी के साथ, वे गोल पंक्तिबद्ध हो गए और उन्होंने अपने आपको मृतक संस्कार के फर्नीचर के बीच रख लिया। अपनी एड़ियों पर उकडू बैठते हुए, उन्होंने अपने नेता के शब्दों की प्रतीक्षा की। बूढ़े आदमी ने, निकटदृष्टि के साथ तौलते हुए, अनुमान करते हुए, समूह के आसपास झांका। अंत में उसने कहा, ''आज और अनेक दिनों से, हम अपने सर्वाधिक फले–फूले माल–असबाब को, अपने से लुटते हुए और जलाये जाते हुए देख चुके हैं। हमने शक्ति से पागल, एक अत्याचारी के द्वारा चलाई जाती हुई कुत्सित आदमियों की दुष्टदृष्टि को हमारे प्रबुद्धजनों को परेशान किये जाते हुए और गुजरे हुए युगों के संचित ज्ञान को नष्ट करते हुए भी देखा है। अब हम, एक साथ चर्चा करने के लिए कि हमारे पुरखों के लिखित ज्ञान को कैसे बचाया जा सकता है, यहॉ इकट्ठे हुए हैं।'' जैसे ही उसने कहना जारी रखा, उसने चतुराई के साथ आसपास नजर डाली, ''काफी कुछ समाप्त हो चुका है, काफी कुछ बचाया गया है। हम में से कुछ ने– मारक प्रताड़नाओं की जोखिम पर, मूल्यहीन भोजपत्रों को बदल दिया है, और अच्छों को बचाया है। उनको जो हमने सुरक्षा के साथ .....भंडारित किए हैं। अब, क्या किसी के पास कोई सुझाव है, जिसके ऊपर हम विचार कर सकें?

कुछ समय के लिए बातचीत कम हो गई और जैसे ही एक आदमी ने दूसरे आदमी के साथ, दबी जुबान से, इसके या उसके औचित्य के ऊपर चर्चा की, हलकी सी दबी सी आवाज में प्रवाहित होती रही। अंत में, ऊपरी मिस्र के मंदिर का एक नौजवान पुजारी का खड़ा हुआ और एक भिन्न स्वर में उसने कहा, ''आदरणीय श्रीमानो, मैं अपने पुराने बासीपन को इसतरह से आपको बताने के लिए, आपकी संलिप्तता (indulgence) को चाहता हूँ ।'' प्रोत्साहन में सिर हिले, इसलिए उसने कहना जारी रखा, ''पिछली रात, मंदिर में अपने कर्तव्य पर रहते हुए मैंने स्वप्न देखा। मैंने स्वप्न में देखा कि भगवान बुबास्तेस (Bubastes) मेरे सामने अवतरित हुए और मुझे अविवादनीय (indisputable) निर्देश दिए। मुझे ये कहना था कि युगों की बुद्धिमत्ता को आसवित (distilling) करते हुए, और तब उस बुद्धिमत्ता को सावधानीपूर्वक रचित कविताओं की पंक्तियों में छिपाते हुए, प्रबुद्ध लेखों के द्वारा, प्राचीन ज्ञान को छिपाया जा सकता है। भगवान बुबास्तेस ने कहा, ये अशिक्षितों की समझ के परे, परंतु प्रबुद्ध लोगों को स्पष्टरूप से प्रकट होगा। इसप्रकार हमारे ज्ञान से, और उस ज्ञान से, जो पहले चला गया, आगामी संतति (posterity) वंचित नहीं होनी चाहिये।'' वह निराशा के साथ नीचे बैठ गया। चूँकि बुजुर्गों ने आपस में चर्चा की, कुछ क्षणों के लिए वहॉ खामोशी रही।

अंत में पुरातन एक निर्णय पर पहुँचा। ''इसलिए ऐसा ही हो,'' उसने कहा। ''हम अपने ज्ञान को पद्य में छिपायेंगे। हम टेरट (Terot) की पुस्तक के विशेष चित्र भी तैयार करेंगे। और हम उतना अधिक करेंगे कि चित्र, कार्ड का एक खेल बन सकें, और समय के परिपक्व होने पर ज्ञान का प्रकाश फिर से चमकेगा, फिर से पूरित (replenished) और नवीनीकृत (renewed)।''

इस प्रकार जैसा कि ठहराया गया था, उसे पारित किया गया और बर्षों में, जो बाद में आये, उच्च उद्देश्यों और भयहीन चरित्र वाले मनुष्यों ने उस सब के लिये, जो पद्य और चित्रों में संरक्षित करने के लायक था, परिश्रम किया। और देवता लोग मुस्कराये और अच्छी तरह संतुष्ट हुए।

* * * * * * *

युगों तक मनुष्य जाति, और कई बार स्त्री जाति ने भी, शब्दों की विशेष आकृति, जिसे वे एक ही समय में, छिपा सकते थे और उगल सकते थे, का उपयोग किया है। पद्य, पाठक को मोहित करने के लिए, या घुसपैठिये को रहस्य में बनाए रखने के लिए, उपयोग में लाए जा सकते हैं।

कड़ियों, छन्दों, पद्यों, और उसी प्रकार की सभी दूसरी चीजों के द्वारा, कोई संदेशों, जिनकी किसी को आवश्यकता होती है या जो किसी के मनःअस्तित्व का भाग होने के लिये आवश्यक होता है, किसी के अवचेतन में प्रवेश करा सकता है।

किसी कविता के ऊपर देखते हुए, किसी को निर्णय करना चाहिए कि क्या कोई कवि शब्दों के साथ मात्र हल्का सा खिलवाड़ कर रहा है या उसके पास कुछ विशेष संदेश है, जिसे वह पहुँचाने का प्रयास कर रहा है। अनेक बार, कोई संदेश, जो सामान्य कठोर गद्य में एकदम अस्वीकार्य होगा, इतनी अच्छी तरह से लपेटा जा सकता है कि केवल दीक्षित (initiated) व्यक्ति ही इसका अर्थ समझ सकते हैं। अनेक ''दृष्टाओं (seers)'' ने, अपने संदेश और भविष्यवाणियॉ पद्यों में लिखीं, इसलिये नहीं–जैसा कि शंकालु कहता है– कि वे इसे साधारण भाषा में प्रस्तुत करने से डरते थे, परंतु इसलिये कि दीक्षित वे व्यक्ति, ऐसी चीजों में कविता के पीछे का गहन अर्थ पढ़ सके। अक्सर कुछ अशिक्षित लेखक (और ओह! कितने सारे यहॉ हैं!) भविष्यवाणियों की प्रसिद्ध कविताओं पर उपहास करने का प्रयास करेंगे। वास्तव में, लोग, जो अपना खुद का कुछ नही लिख सकते, मनुष्य जाति की निम्नतम अंतःप्रेरणाओं को प्रश्रय देते हुए, हमेशा एक बाजार पा सकते हैं, और इसप्रकार, क्योंकि ये कलि का युग है, हर आदमी, हर एक दूसरे को, एक सामान्य विभाजक के रूप में घटाने का प्रयास कर रहा है। ये मूल नीति–वचन कि सभी लोग एक समान नहीं है, के लिये सनकी निरादर का युग है; कोई बात नहीं कि वे ईश्वर की निगाह में समान हों, (परन्तु) पृथ्वी पर सभी आदमी एक समान नहीं है, और आजकल उत्क्रमित दम्भियों की, जो किसी आदमी से कहलवाते हैं, ''ओह, मैं उतना ही अच्छा हूँ जितना कि वह!'' एक अत्यंत बाहुल्यपूर्ण आकृति है। अब हम विस्टन चर्चिल (Winston Churchill), रूजवेल्ट (Roosevelt), और दूसरे महानायकों को अपने नाम और अपने सम्मान (reputations) दलदल में घसीटे जाते हुए, देखते हैं, परंतु केवल दुखी क्षुद्र लोगों के द्वारा, जिनके पास अपनी स्वयं की क्षमतायें नहीं हैं, और जो इस प्रकार उन लोगों को, जिनमें ये क्षमतायें हैं, नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते हुए, एक गूढ़ आनंद प्राप्त करते हैं।––134

क्या हम कविता के एक छोटे टुकड़े को देखेंगे और तब गहराई तक जायेंगे और उस कविता के पीछे के वास्तविक अर्थ को देखेंगे? यहॉ, तब, एक तिब्बती कविता है, एक बहुत बहुत प्रसिद्ध कविता, ये मात्र एक सुखद पठन नहीं है परंतु इस से सम्बंधित इसका एक विशेष अर्थ है। यहॉ कविता ''मैं नहीं डरता'' है;

मृत्यु के भय से मैंने एक घर बनाया
और मेरा घर सत्य की शून्यता का घर है।
अब मैं मृत्यु से नहीं डरता।
शीत के भय से मैंने एक कोट खरीदा
और मेरा कोट आंतरिक उष्मा का एक कोट है।
अब मैं शीत से नहीं डरता।
इच्छा के भय से मैंने सम्पदा खोजी
और मेरी सम्पदा भव्य, शाश्वत, सात गुनी है।
अब मैं इच्छा से नहीं डरता।
भूख के भय से मैंने खाना खोजा
और मेरा खाना सत्य के ऊपर ध्यान का खाना है।
अब मैं भूख से नहीं डरता।
प्यास के भय से मैंने पेय खोजा
और मेरा पेय उचित ज्ञान का अमृत है।

अब मैं प्यास से नहीं डरता।
क्लान्ति के भय से मैंने एक साथी खोजा
और मेरा साथी वरदान की शाश्वत रिक्तता है।
अब मैं क्लान्ति से नहीं डरता।
त्रुटि के भय से मैंने एक मार्ग खोजा
और मेरा मार्ग ज्ञानातीत मिलन का मार्ग है।
अब मैं त्रुटि से नहीं डरता।
मैं एक संत हूँ, जिसके पास बाहुल्य है,
इच्छा के बहुगुणित कोषों का,
और जहॉ भी मैं रहता हूँ, मैं प्रसन्न हूँ।

संतुष्ट रहो

मेरे पुत्र, मठ रूपी शरीर के साथ संतुष्ट रहो,
क्योंकि शारीरिक पदार्थ दिव्यता का महल है।
शिक्षक के रूप में मन के साथ संतुष्ट रहो,
क्योंकि सत्य का ज्ञान पवित्रता का प्रारम्भ है।
पुस्तक के रूप में बाहरी वस्तुओं साथ संतुष्ट रहो,
क्योंकि उनकी संख्या मोक्ष के पथ का चिन्ह है।
खाने के रूप में परमानन्द को पोषित करने में संतुष्ट रहो,
क्योंकि निःशब्दता दिव्यता का परम पूर्ण है।
कपड़ों के रूप में आंतरिक उष्मा को पहनने में संतुष्ट रहो,
क्योंकि आकाशचारी देवियॉ आशीष की उष्मा धारण करतीं हैं।
साथियो, त्याग में संतुष्ट रहो,
क्योंकि एकान्त दिव्य परिषद का अध्यक्ष है।
क्रोधित शत्रुओं से दूर रहने में संतुष्ट रहो,
क्योंकि शत्रुता गलत मार्ग की यात्री है।
दैत्यों के साथ शून्यता के ऊपर ध्यान करने में संतुष्ट रहो,
क्योंकि जादुई पिशाच मन के स्रजन हैं।

अब हम एक और कविता, एक तिब्बती कविता, जो वास्तव में, एक अत्यन्त ज्ञानी व्यक्ति, छठवें दलाईलामा द्वारा लिखी गई थी, को लें। एक लेखक और कलाकार वह, अनेक लोगों के द्वारा गलत समझे गये, परन्तु वह एक, जिसंने निश्चयपूर्वक पूर्वी संस्कृति पर अपनी छाप छोड़ी थी, व्यक्ति थे। आज इस विश्व में उनकी भॉति के काफी कम लोग हैं। यहॉ हिन्दी (और अंग्रेजी में भी) अनुवाद है, मुझे भय है, मैं नहीं जानता कि ये अनुवाद किसने किया है, परन्तु कोई बात नहीं, वह कौन था, किसी भी तरीके से, अनुवाद वास्तविक तिब्बती चीज के साथ न्याय नहीं कर सकता। लेखकों के महान कष्टों में से एक ये है कि दूसरी भाषा में (किया गया) अनुवाद मुश्किल से ही, उस विचार, जिसे लेखक ने मूल भाषा में देने का प्रयास किया था, के समान रुख का अनुगमन करता है। परन्तु यहॉ ''मेरा प्रेम'' कविता का किसी अज्ञात के द्वारा (किया गया) अनुवाद है।

मेरा प्रेम

प्रिय प्रेम, उनके लिये, जिनके लिये मेरा हृदय टूटता है,
यदि हम जुड़ ही पाते
तब मैंने सागर की गहनतम शैया से,
अपनी सबसे बडी पसंद पाई होती।
मुझे अपने भोले प्रियतम से मिलने का संयोग मिला,
एक दिन सड़क पर,
एक शुद्धतम नीला नीलम मिला,
दूर फेंके जाने के लिये मिला।
पहुॅच से परे, एक नासपाती के पेड़ के ऊपर,
एक पका फल वहॉ है।
इसलिये, भी, भद्रजन्म की दासी ने,
इतनी भरी हुई जीवन और भोलेपन से,
मेरे हृदय से काफी दूर, रातें गुजरतीं गईं,
अनिद्रा और खटपट में,
दिन भी मेरे हृदय की अभिलाषा को नहीं लाता,
क्योंकि मेरा जीवन निर्जीव है।
मैं पोटाला में अलग निवास करता हूॅ, मैं पृथ्वी पर भगवान हूॅ,
परन्तु नगर में शठों का प्रमुख और उद्दाम मद्यपानोत्सव,
अधिक दूर नहीं है, कि मैं घूमूॅ।
श्वेत सारस, अपने पंख मुझे उधार दो,
मैं ली थांग से अधिक दूर नहीं जाऊॅगा, और वहॉ से फिर लौट आऊॅगा।

अब हम उस महान मिलारेपा (Milarepa) के द्वारा रचित, ''मैं नहीं डरता'' कविता के ऊपर विचार करें। मिलारेपा ने लिखा है कि दीक्षित व्यक्ति ही कुछ निश्चित चीजों को जान सकता है। यहॉ छिपे हुए अर्थों में, एक संकेत है :

मृत्यु के भय से मैंने एक घर बनाया है
और मेरा घर सत्य की शून्यता का घर है।
अब मैं मृत्यु से नहीं डरता।

इसका अर्थ विभिन्न प्रकार से अनुवादित किया गया है और गलत अनुवादित किया गया है। वास्तव में, शाश्वत आस्थाओं के अनुसार, इसका अर्थ ये लिया जा सकता है कि अस्तित्व के दूसरे तलों पर भी कोई, किसी कसकर बंधे हुए रस्से के ऊपर, शांत खड़ा नहीं हो सकता। किसी को आगे बढ़ना या गिरना होगा, किसी को आगे की ओर बढ़ना होगा या कोई गिर जायेगा। सभी समयों में इसे ध्यान में रखना आवश्यक है कि यद्यपि हम यहॉ पृथ्वी पर हैं, फिर भी जब हम मरते हैं, हम अस्तित्व के किसी दूसरे चरण में पुनर्जन्म लेते हैं। जब हम, जिसे हम अस्तित्व का पार्थिव चरण कह सकते हैं, समाप्त करते हैं, हम दूसरे चक्र की ओर जाते हैं, जहॉ भिन्न क्षमतायें, भिन्न मानक हैं। उदाहरण के लिये, जीवनों के इस विशेष चक्र में हमको अनेक संज्ञान दिये गये हैं। जब हम अगले चक्र में जाते हैं, हमारे पास और अधिक संज्ञान, और अधिक उत्तरदायित्व आदि होंगे परंतु हम ऊपर चलते

हैं, पीछे की तरफ कभी नहीं, जबतक कि ये हमारी स्वयं की ऊर्जा की कमी के कारण न हो।

इसलिये, मृत्यु के भय से, मैं सूक्ष्मलोक में एक शरीर बनाता हूँ, और मेरे शरीर में सत्य की शून्यता थी। सत्य के साथ, मैं मृत्यु से नहीं डरता। दूसरे शब्दों में, हम जानते हैं, कि जब हम एक जीवन में से मर जाते हैं, हम अगले में जाते हैं। स्थाई मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं है, मृत्यु पुर्नजन्म है। मैं आपको परम कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ इसे बताना चाहता हूँ; मैं अति विशिष्ट प्रशिक्षण के कारण, इस तल में निवास करने वाले किसी को सामान्यतः अप्राप्य, अस्तित्व के दूसरे तलों की यात्रा करने में सफल हो सका। वास्तव में, उन लोगों के द्वारा, जो किसी का मार्गदर्शन करते हैं, विशेष सावधानियॉ ली जाती हैं, क्योंकि किसी के कंपनों को –और हम केवल कंपन हैं– हमारे लिये उन उच्चतर तलों में जाना संभव बनाने के लिये, इन्हें बिना सहायता के तीव्र नहीं किया जा सकता। अनुभव एकदम कष्टकारी था, ये एकदम अंधा कर देने वाला प्रकाश जैसा था। ये सफेद गर्म ज्वालाओं में होकर गुजरने के समान था, फिर भी मुझे बचाया गया, सुरक्षा प्रदान की गई।

मैंने पाया कि एक उच्चतर तल पर, मैं लगभग उसी मानक का था, जैसा कि मानव बुद्धि की उच्च अवस्था की तुलना में, कोई सुस्त (आलसी) इस पृथ्वी पर होता। इस पृथ्वी के महान वैज्ञानिक पायेंगे कि वे उन्नत तलों के ऊपर आलसियों की तुलना में अधिक ऊँचे नहीं हैं। हमें हर समय और हर समय, उन्नति करनी होती है, हम प्रत्येक जीवन के अंत में, तथाकथित, मरते हैं, ताकि हम ऊपर की ओर प्रगति कर सकें। गन्ने के एक कीड़े (caterpillar) की ओर देखें; गन्ने का कीड़ा, केटरपिलर, एक प्राणी है, जो आसपास रेंगता है, तब ये प्रगटरूप से मर जाता है और एक तितली बन जाता है, जो एक भिन्न तत्व में चलता है, जो जमीन पर रेंगने के बजाय, हवा में चलता है।

ड्रेगन मक्खी का एक पुरातन उदाहरण लें। किसी रुके हुए तालाब के बाहर से, निम्न कोटि का कोई कीट, कीट का कोई बच्चा, कष्टपूर्वक रेंगता है। वह धीमे से ऊपर की ओर भीड़ में या एक बाहर निकली हुई शाखा पर रेंगता है। ये ऊपर चढ़ता है, और एक तीखे लसदार पदार्थ से पकड़ बनाता है। तब वहॉ और अधिक हलचल नहीं होती, प्राणी मर जाता है, यह सड़ता हुआ लगता है। अंत में मरे हुए खोल से एक छोटी सी छपाक (plop) की आवाज आती है और मरा हुआ खोल फट जाता है। इसमें से एक मैली कुचैली, ड्रेगन मक्खी निकलती है। ये अपने पंखों को, जैसे वह वे थोड़े मजबूत और इंद्रधनुषीय हो जाते हैं, फैलाती है। तब, इन पर सूर्य का प्रकाश पड़ने के साथ ही ड्रेगन मक्खी हवा में ऊपर उठती है और दूर चली जाती है।

अब, क्या ये वास्तव में, मानवता के समान नहीं है? आप सहमत होंगे कि मानव शरीर, कीड़े की भांति कुछ चीज, मर जाता है; मरे हुए खोल में से कुछ चीज उभरती है, जो ऊपर की ओर चलती है। ये वह है जिसे मैं ड्रेगन मक्खियों के बारे में इतना पसंद करता हूॅ। वे शाश्वत जीवन का वायदा है, वे वचन हैं कि मात्र मांस के इस दीनतापूर्ण शरीर के अतिरिक्त भी बहुत कुछ है। परंतु मैं उस एक के लिये वायदे नहीं चाहता, क्योंकि मैंने वास्तविकता का अनुभव कर लिया है।

यदि हमें ''मैं नहीं डरता'' के साथ जारी रखना हो, हम चल सकते हैं:

भूख के डर से मैंने खाना चाहा।

और मेरा खाना, सत्य पर ध्यान का खाना है।

अब मैं भूख से नहीं डरता।

वास्तव में, इसका अर्थ आध्यात्मिक भूख, भौतिक नहीं परंतु आध्यात्मिक से है, यदि किसी व्यक्ति को शक है, वह अभी नहीं जानता कि क्या करना है, ज्ञान प्राप्त करने के लिये कहॉ जाना है। संदेह में रहने वाला व्यक्ति, एक अवसाादग्रस्त व्यक्ति होता है, एक अप्रसन्न व्यक्ति, ''आध्यात्मिक भूख के डर से मैंने ज्ञान चाहा, और मैंने सत्य पर ध्यान किया और अब सत्य को जानते हुए मैं भूख से नहीं डरता।'' मैं आपसे कहता हूॅ कि इन छोटे नम्र अध्यायों में भी आप बहुत कुछ सीख सकते है, आप अपने आप में ज्ञान के बीज बोये हुए पा सकते हैं। बीज छोटी चीज है, परंतु एक छोटे बीज से एक शक्तिशाली पेड़ उग सकता है। मैं एक बीज डालने का प्रयास कर रहा हूॅ, मैं अंधेरे में एक दीपक जलाने का प्रयास कर रहा हूॅ।

शताब्दियों पहले, पूरी मानवजाति के पास इस जैसा ज्ञान था, परंतु मानवता के कुछ निश्चित घटकों ने ज्ञान का दुरुपयोग किया, इसलिये अंधकार युग (Dark Age) आया, जब विश्व भर में ज्ञान के दीप बुझा दिये गये, जब मनुष्य ने ज्ञान की पुस्तकों को जला दिया और कुछ समय के लिये, अगाध अज्ञान में डूब गया, जब मनुष्य अंधविश्वास की पहेलियों में उलझा हुआ था परंतु अब हम एक नये युग की तरफ, एक नये चरण में, जहॉ मनुष्य को अतिरिक्त शक्तियॉ मिलने वाली हैं, आ रहे हैं। मैं अलोकप्रिय हो सकता हूॅ, जब मैं लगभग फुसफुसाहट में कहता हूॅ, परमाणु बम गिराया जाना उतना हानिकारक चीज नहीं हो सकती, जितना कि ये अक्सर मानी जाती है। यथार्थ में जाने के लिये, हम एक क्षण के लिये कविता से विषयांतर करें :

मानवजाति, शताब्दियों तक नीचे गिरती रही है। यदि हम पशु–पुरुस्कार या जानवर–पुरुस्कार प्राप्त करना चाहते हैं, हम उन्हें भेदभावरहित (indiscrimately) संभोग नहीं करने देना चाहते और उन्हें असुविधाजनक तनावों में रखकर गर्भाधान कराते हैं। पशुओं को सावधानी से चुना जाता है और गुणवत्ता के लिये, संभवतः किसी विशेष गुण के लिये, उनका गर्भाधान कराया जाता है। यदि हमारे पास पेड़ हैं, फलदार पेड़, हम सावधानीपूर्वक उन पेड़ों को बदल सकते हैं और उनमें कलम लगा सकते हैं, ताकि हमें बड़े और अच्छे फल, या एक विशेष सुगंध वाले फल मिलें। परंतु हम इन पशुओं की उपेक्षा करें, उन्हें जंगली हो जाने दें, अपने फलों के उद्यान को मरुस्थल बन जाने दें और उन्हें प्रकृति की ओर

वापस लौट जाने दें, तब वह पूरा प्रशिक्षण, जो उन्हें मिला था, वापस उलट जाता है और हमें घटिया फल, घटिया पशु प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिये, एक अत्यंत सुंदर सेब के ऊपर विचार करें, जो जंगली सेब की ओर वापस लौट सकता है। मानव, जंगली सेबों की तरह हैं, मानव बिना भेदभाव के गर्भाधान करते हैं और सामान्यतः, न्यूनतम वांछित विशिष्टताओं वाले लोग, अधिक बच्चे पा जाते हैं, जबकि लोग, जिनके पास ज्ञान और चरित्र है, जिनको वास्तव में, मानवजाति की गुणवत्ता को बढ़ाना चाहिए, उनको बिलकुल कोई बच्चे नहीं होते। अक्सर ये अत्यधिक कर लगाने या अत्यधिक आयात कर लगाये जाने के कारण होता है।

इसलिये संभवतः बूढ़ी प्रकृति मां, जिसको इन वर्षों में कुल मिलाकर एक या दो चीजें जाननी चाहिए, मानवजाति का मूल्य बढ़ाने का एक भिन्न तरीका देख सकती है। इस पर थोड़ा विचार करें; संभवतः बूढ़ी प्रकृति मां ने ऐसा किया है, ताकि परिवर्तनों (mutations) को पैदा करने के लिये, थोड़े से अजीब विकिरण (strange radiations) खुले छोड़ दिये जाते हैं। आप जानते हैं, सभी परिवर्तन बुरे नहीं होते। उदाहरण के लिये, हम एक कीट, या कीटों का एक परिवार पाते हैं। उन पर पेनिसिलीन (penicillin) के द्वारा क्रिया की जाती है, अनेक मर जाते हैं, परंतु दूसरे बदल जाते हैं, वे पेनिसिलीन के प्रति निष्प्रभावित (immune) हो जाते है। बाद में, वे न केवल निष्प्रभावित होते हैं परंतु वे पेनिसिलीन पर पनपते हैं। हम ये कैसे समझते हैं कि मनुष्य भी वैसा ही नहीं कर रहे हैं? हमें हमेशा ऊपर की ओर गति करनी होती है, हमें हमेशा उन्नति करनी है और ये मेरा दृढ़ विश्वास है, जो कि पूर्वीय चिंतन का विश्वास भी है, कि हर एक को, इससे पहले कि वे उन्नयन के अगले उच्चतर चरणों से गुजर सकें, इन सब चीजों को जानना पड़ता है।

त्रुटि के भय से मैंने एक राह खोजी
और मेरी राह, उत्कृष्ट योग की राह है।
अब मैं त्रुटि से नहीं डरता।

दूसरे शब्दों में –मैं नहीं जानता था कि किस रास्ते से चलना चाहिए, मैं नहीं जानता था कि मेरी राह किधर है, इसलिये मैंने उच्चतर लोकों से ज्ञान खोजा। मुझे ज्ञान मिला और अब मुझे डर नहीं लगता कि मैं अपने जीवन की गलती कर रहा हूँ।

मैं एक संत हूँ, जिसके पास बाहुल्य है,
इच्छा के बहुगुणित कोषों का,
और जहॉ भी मैं रहता हूँ, मैं प्रसन्न हूँ।

फिर, ये जानते हुए कि किसी को क्या जानने की आवश्यकता है, मैं चतुर हूँ, मैंने दूसरे स्रोतों से, जो होना है उसका ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इसप्रकार, पृथ्वी पर जीवन को जानते हुए मनुष्यों के आध्यात्मिक जीवनकाल की अनंतता में, जहॉ भी मैं रहता हूँ, एक पलक झपकने के समान, मैं संतुष्ट हो सकता हूँ। इसप्रकार मैं नहीं डरता।

मिलारेपा एक महान संत था, वह एक आदमी था, जो निवृत होकर पर्वतों की गुफाओं में रहता था। लोग उससे सलाह लेने और उसके साथ पढ़ने आते थे। मुझे ये बात स्पष्ट करने दें कि जो लोग उसके साथ पढ़ने आये, उन्होंने उसकी शारीरिक आवश्यकताओं का ध्यान रखा, उसकी गुफा को साफ किया, उसके पहनने के कपड़ों की देखभाल की, उसका खाना तैयार किया, संदेशों को फैलाया। इसलिये पश्चिम के अनेक लोग सोचते हैं, ''ओह! संपूर्ण ज्ञान निशुल्क होना चाहिए, आपको लोगों को किसी चीज को सिखाने के लिये कोई धन नहीं लेना चाहिए।'' परंतु, वास्तव में, ये केवल अज्ञान, मूर्खता, अनाड़ीपन का अज्ञान है। कम ज्ञान वाले लोगों के द्वारा ऐसा कहा जाता है और वास्तव में अल्प ज्ञान एक खतरनाक चीज होती है। कोई भी चीज, जो रखने लायक है, उसके लिये कार्य करना भी

योग्य है। मिलारेपा ने सिखाया कि किसी को संतुष्ट, ज्ञान के साथ संतुष्ट होना चाहिए। मिलारेपा ने बताया कि शरीर एक मठ के समान था, और उस शरीर और मन की विभिन्न शक्तियॉ और क्षमतायें, मठ के अंदर के भिक्षु थीं।

क्योंकि शारीरिक पदार्थ, आध्यात्मिकता का महल है।

फिर, शारीरिक पदार्थ, मांस, या मिट्टी या आप अपने शरीर को जो भी कहना चाहें, घर है जिसमें अधिस्वयं या आत्मा, जो साधारण सी चीजों का अनुभव प्राप्त करने के लिये यहॉ इस पृथ्वी पर है, निवास करता है। अस्तित्व के उच्चतर चरणों में, कोई उनसे, जिन्हें वह हृदय से नापसंद करता है, नहीं मिल सकता। स्पष्ट उत्तर है पृथ्वी पर आना, जहॉ आप सभी समयों में उन सबसे मिलते हैं! आप केवल सोचें – यदि आप वास्तव में खुले दिमाग से सोचते हैं, तो आप पायेंगे कि आप आश्चर्यजनक संख्या में लोगों को नापसंद करते हैं, और आप सुनिश्चित है कि उससे भी अधिक संख्या में लोग आपको नापसंद करते हैं। यदि आप ईमानदार हैं तो आप सहमत होंगे कि ये सही है। यदि आप काम पर जायें तो आप सुनिश्चित होंगे कि कोई आपको आपके काम से हटा देने का प्रयास कर रहा है, कोई आपकी तरक्की को रोकने का प्रयास कर रहा है, किसी को आपके ऊपर थूकना है। ऐसा ही है, क्या ऐसा नहीं है?

ठीक है, अधिस्वयं को उन अप्रिय अनुभवों को प्राप्त करने के लिये पृथ्वी पर आना पड़ता है। इसीलिये ऐसा है कि शरीर एक पर्याप्त टिकाऊ युक्ति है, ये आत्मा को अनुचित सदमों के विरुद्ध बचाकर रखता है। किसी को मन के साथ संतुष्ट होना चाहिए, क्योंकि मन के अंदर कोई सत्य के ज्ञान को जमा कर सकता है और छांट सकता है, और जबतक आपको सत्य का पता नहीं है, आपको पवित्रता, वगुला भगत के अर्थों वाली नहीं, परंतु सही मायनों में पवित्रता, जो ये पहचानती है कि अधिस्वयं शरीर का नियंत्रक है, और शरीर मात्र एक कठपुतली है, ज्ञात नहीं हो सकती।

मिलारेपा आगे चलता जाता हैः

क्रोध करने वाले शत्रुओ, बचने के लिये संतुष्ट हो।
क्योंकि शत्रुता एक यात्री है, गलत पथ पर।

इसका अर्थ है, आपको किसी के लिये भी घृणा या दुश्मनी नहीं होनी चाहिए क्योंकि यदि आप किसी के लिये कठोर घृणा अनुभव करते हैं तो इसका अर्थ है कि आप गलत पथ पर हैं। आप किसी कसे हुए रस्से के ऊपर सीधे शांत खड़े नहीं हो सकते, या तो आप आगे जायेंगे या पीछे जायेंगे क्योंकि वास्तव में, आप जानते हैं कि आप हमारे आध्यात्मिक कसे हुए रस्से के ऊपर से न तो गिर सकते हैं और न नष्ट हो सकते हैं। प्रायः धर्मों, सभी धर्मों में, शाश्वत निंदा, शाश्वत दुखों की बात होती है। इस पर विश्वास न करें, इस पर विश्वास न करें! ये चीजें पुराने धर्म गुरुओं के द्वारा, उसी तरह से, जैसे कि मां अपने बच्चे को बता सकती है, ''अब चुप हो जाओ नहीं तो मैं तुम्हारे पिताजी को बता दूंगी, वे तुम्हें छड़ी से मारेंगे!'', कही गई थीं।

पुराने दिनों में लोग, बहुत कुछ, बच्चों की तरह होते थे। शायद उनमें तर्क शक्ति, जो युगों से लगातार विकसित हुई है, की कमी थी, अक्सर उनकी मदद करने के लिये उन्हें धमकी देने पड़ती थी। आप पा सकते हैं कि नन्हा जो (little Joe) या चार्ली (Charlie), अपना नाश्ता नहीं करेंगे– यदि आप मूर्ख हैं – आप कह सकते हैं, ''अब तुम इसको इसी समय खा लो अन्यथा मैं तुम्हारे लिये सिपाही को बुलाउंगा।'' मैंने इसे कई बार जाना है कि ऐसा बहुत बार होता है। ठीक है, अंततः नन्हा जो, या नन्ही

चार्ली सोचती है कि पुलिस के सभी सिपाही दुश्मन हैं, वह सोचता है कि कोई पुलिस मैन, उसको दंड देने के लिये, उसे जेल ले जाने के लिये, या हमेशा हमेशा के लिये, उसके प्रति सभी प्रकार की अनुल्लेखनीय बातों को करने के लिये, और थोड़ा सा और लंबा भी, हमेशा तैयार रहता है। इसलिये गुजरे हुए दिनों में धर्मगुरु कहा करते थे, ओह शैतान आ जायेगा, शैतान तुमको विभिन्न अनुल्लेखनीय स्थानों पर कोंचेगा, वे वास्तव में, आपको एक समय का शैतान देते थे।'' इस पर विश्वास मत करो! एक भगवान है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप उस भगवान को क्या पुकारने वाले हैं, एक भगवान है, भलाई का भगवान, और किसी व्यक्ति ने, कभी भी, अपनी सीमाओं से परे नहीं झेला है।

हम में से कुछ के पास, यद्यपि, दूसरी चीजों की स्मृति है। हम में से कुछ, जैसे मेरे खुद के मामले में, के पास केवल स्मृतियॉ ही नहीं, वास्तविक ज्ञान है, और बिना स्मृतियों और बिना ज्ञान वाले कुछ लोग, जितना उन्हें झेलना चाहिए, उससे अधिक झेलने के लिये जाने जाते हैं, क्योंकि वे भूतकाल के पाठों से सीख नहीं लेते। हम इस पृथ्वी पर रहते हैं, हम, जैसा कि आप जानते हैं, लगभग 9/10 अवचेतन हैं, हमारा केवल 1/10 चेतन है, या कम से कम ये मान्य आंकड़ा है। कुछ लोगों की दृष्टि के अनुसार, कुछ निश्चित दूसरे महाद्वीपों के ऊपर, कोई संदेह करेगा कि 1/10 चेतना वाले लोग भी हैं! परंतु मैं यहॉ, दूसरे काम के बारे में, जो कि अधिस्वयं द्वारा किया जाता है, कुछ कहना चाहता हूॅ।

अधिस्वयं, वास्तव में, चेतना का दसवॉ भाग है। इसे (ऐसा) होना ही था, अन्यथा मनुष्य की चेतना 9/10 जाग्रत नहीं हो सकती थी। अधिस्वयं केवल एक शरीर के साथ व्यवहार करने तक ही सीमित नहीं है। अधिस्वयं की ऊर्जाओं का उपयोग करने वाले अन्य दूसरे तंत्र भी हैं, अब हम संक्षेप में उन पर नजर डालें।

कुछ लोग किसी समूह के सदस्य के रूप में आते हैं। उदाहरण के लिये, एक युवा लड़की पृथ्वी पर हो सकती है और वह काफी खोई हुई और शांत और अपने भाइयों, अपनी बहनों, और अपने मातापिता के साथ के बिना काफी अनाड़ी हो सकती है। ये लोग, ये केवल तभी काम करते दिखाई देते हैं, जब वे सभी एक साथ हों। मृत्यु एक भयानक सूनापन बनाती है, जबकि जब कोई शादी करता है, तब विवाहित व्यक्ति हमेशा परिवार की ओर वापस दौड़ता रहता है। ये लोग, एक ही अधिस्वयं के द्वारा नियंत्रित किये जाने वाली कठपुतलियों के रूप में हो सकते हैं।

जुड़वॉ या चौके (quads) भी अक्सर उसी अधिस्वयं के द्वारा नियंत्रित किये जाते हैं। ऐसा लगता है मानो कि दूसरों तलों के नायक जानते हैं कि ये विशेष अस्तित्व का ये चक्र, लगभग समाप्ति पर है और दूसरा प्रारंभ होगा और इसलिये वे लोगों को एक ही अधिस्वयं के नियंत्रण के अंतर्गत समूहों में काम करने के लिये, अधिकांशतः उसी तरीके से, जैसे कि एक साम्यवादी तानाशाह के पास, अनेक लोगों के एक ही परिवेक्षक के अंतर्गत प्रकोष्ठ होते हैं, और सभी पर्यवेक्षक एक वरिष्ठ पर्यवेक्षक, और इसी प्रकार आगे और भी, के अंतर्गत होते हैं, यहॉ एक ही समूह में लाते हुए लगते हैं।

अक्सर किसी ने चिड़ियों के झुंड, शायद, पचास चिड़ियों को, एक साथ घूमते हुए, लुढ़कते हुए देखा होगा, मानो कि एक व्यक्ति के निर्देशों के अंतर्गत हो। ठीक है, ऐसा है ये होना भी चाहिए क्योंकि, ये सभी चिड़ियॉयें एक ही व्यक्ति (person) के द्वारा, ठीक उसी तरीके से, जैसे कि चीटियों का एक पूरा मोहल्ला (colony), एक अधिस्वयं के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, या मधुमक्खियों का छत्ता एक अधिस्वयं के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, नियंत्रित की जा रहीं हैं।

जो लोग अधिक आत्मज्ञान प्राप्त हैं, अधिक उन्नत हैं, उनके पास एक भिन्न तंत्र है, और ये आपको चिंतन कराने वाला है। इसलिये, हम इसे धीमे धीमे और संक्षेप में लें, क्योंकि, वास्तव में, वह सब जिसके विषय में हमें परेशान होना हैं, इस सम्बंध में है कि हम इस पृथ्वी पर किस प्रकार व्यवस्था कर रहे हैं– दूसरे लोकों को, जबतक कि हम उन तक नहीं जाते, अपनी चिंता करने दें।

इस पृथ्वी के समान दूसरे अनेक लोक हैं, एक अच्छे शब्द की इच्छा के लिये, मैं इसे केवल

''समय'' कह सकता हूँ – में नहीं। परंतु यदि हम संगीत का एक शब्द ''अनुनादी (harmonics)'' उपयोग करें, तो शायद, हमको कुछ अच्छा करना चाहिए। हमें संगीत का एक सुर (note), एक शुद्ध सुर, मिल सकता है, परंतु तब हम सुर के अनुनादी पा सकते हैं। सभी अनुनादी, मौलिक सुर (original note) के आधारभूत (fundamental) होते हैं। उदाहरण के लिये, बहुत कुछ हद तक, ये पृथ्वी वैसी ही है, जिसे हमको शायद अर्थ डी (Earth D) कहना चाहिए, तब सी (C), बी (B), ए (A), और ई (E), एफ (F), जी (G), पृथ्वियॉ भी हैं। ये समान पृथ्वियॉ, समान विश्व होंगीं, और वे समांतर ब्रह्मांड (parallel universes) या समांतर विश्व (parallel worlds) कहलाते हैं, आप जिसे भी प्राथमिकता दें।

एक अधिस्वयं जो उन्नत हो चुका है और जो महसूस करता है कि पृथ्वी के एक अदने से, छोटे से शरीर को नियंत्रण करना, समय बर्बाद करने जैसा है, और, पर्याप्त रूप से शैक्षणिक नहीं है, अनेक विश्वों में से प्रत्येक के ऊपर एक कठपुतली रख सकता है। ताकि, उदाहरण के लिये, एक लोक A में नन्हीं बैनी (little Bennie) एक प्रबुद्ध (genius) बन सके, परंतु 'F' विश्व में, नन्हीं फ्रेडी (little Freddie) एक निपट बेवकूफ बन सके। उस तरीके से, अधिस्वयं, एक ही सिक्के के दो पहलुओं को एक साथ देख सकता है, और पैमाने के दोनों सिरों के अनुभव प्राप्त कर सकता है।

वास्तविक रूप से अनुभवी एक अधिस्वयं, नौ भिन्न भिन्न कठपुतलियॉ रख सकता है और वह नौ भिन्न भिन्न जीवनों को जीने के समान है, जो विकास के क्रम को थोड़ी सी गति प्रदान करता है। परंतु ये विषय पहले ही अध्याय दो में विस्तार के साथ बताया जा चुका है।

जैसा कि इस अध्याय के प्रारंभ में कहा गया था, किसी चीज को किसी के अवचेतन में अंदर तक घुसा देने के लिये, कविता या पद्य या एक निश्चित लयबद्ध प्रारूप उपयोग में लाया जाता है। हॉ, अब हम आपको, उस प्रकार की चीजों का, जिनको मिस्री लोग उपयोग में लाते थे, एक उदाहरण देने वाले हैं। दुर्भाग्यवश अंग्रेजी में अनुवाद किये जाने पर, इसने अपनी शक्तियों को काफी हद तक खो दिया, मूल मिस्री भाषा में शब्द, लयबद्ध रूप से चलते थे, और वांछित उद्देश्य को प्राप्त करते थे परंतु केवल अपने आप में सोचें, यदि आपको कविता का एक खंड मिल जाये और आप उसे अंग्रेजी से या स्पेनी भाषा से, मान लो, जर्मन भाषा में अनुवाद करें, आप सभी गलत ध्वनियॉ पाते हैं, आप पूरे संतुलन को गलत पाते हैं, इसलिये यह वैसा ही प्रभाव नहीं रखता। वास्तव में, कुछ कवितायें दूसरी भाषा में बिल्कुल भी अनुवादित नहीं की जा सकतीं, इसलिये ''मात की स्वीकारोक्ति (confession to Matt)'' उतनी अच्छी नहीं है, जितनी कि यह मिस्री भाषा (Egyptian) में हुई होती।

ये एक मंदिर–स्वीकारोक्ति (temple confession) है, जिसे 'मिस्री दीक्षा मंदिर (Egyptian temple of initiation)' के 'मात प्रकोष्ठ (Chamber of Maat)' में कहा गया था। ये मिस्री लोगों की 'मृतकों की पुस्तक (book of Dead)' में लिखा गया है, ये वास्तव में एक आह्वान (invocation) था। मात, आप याद रख सकते हैं, एक मिस्री शब्द है, जिसका अर्थ है 'सत्य'। इसलिये मात का प्रकोष्ठ, सत्य का मंदिर, या सत्य का प्रकोष्ठ बन गया।

यहॉ मात की स्वीकारोक्ति है, जिसको हर रात, सोने से पहले दोहराया जाना चाहिए। यदि कोई इसे दोहराता है, जैसे कि मिस्री लोग करते थे, तो ये उसे अधिक शुद्ध जीवन की ओर ले जाता है। इसकी जॉच करें और देखें!

मात की स्वीकारोक्ति

तुझे श्रद्धा अर्पण, ओह महान भगवान, तू पूरे सत्य का स्वामी। मैं तेरे पास आया हूँ, ओह मेरे

भगवान, और मैं अपने आपको यहॉ लाया हूँ ताकि मैं तेरे आदेशों के प्रति सजग हो सकूं। मैं तुझे जानता हूँ और तेरे, और तेरे बयालीस नियम जो तेरे साथ मात के इस अध्याय में अस्तित्व में हैं, के साथ लयबद्ध हूँ।

सत्यतः मैं तेरे साथ लयबद्ध होने के लिये आया हूँ, और मैं मात (सत्य) को अपने मन और आत्मा में लाया हूँ।

मैंने तेरे प्रति टेढ़ेपन (wickedness) को नष्ट कर दिया है।
मैंने मानव जाति के प्रति बुराई नहीं की है।
मैंने अपने परिवार के सदस्यों का उत्पीड़न नहीं किया है।
मैंने अधिकार और सत्य के स्थान पर बुराई को नहीं कूटा है।
मेरी बेकार (worthless) आदमियों के साथ कोई अभिन्नता (intimacy) नहीं है।
मैंने प्रथम महत्व (consideration) की मांग नहीं की है।
मैंने कभी आशा नहीं की कि मेरे लिये अत्यधिक श्रम किया जाये।
मैंने कभी सम्मान में बढ़ोत्तरी के लिये अपने नाम को आगे नहीं बढ़ाया है।
मैंने कभी संपत्ति से पीड़ित किसी को ठगा नहीं है।
मैंने किसी व्यक्ति को भूख से पीड़ित नहीं किया है।
मैंने किसी को रुलाया नहीं है।
मैंने किसी आदमी या जानवर को झुकाने के लिये कष्ट नहीं पहुंचाया है।
मैंने कभी उनके समर्पणों के मंदिरों को छला नहीं है।
मैंने कभी तौल को नहीं घटाया है।
मैंने कभी भूमि को नहीं उड़ाया है।
मैंने कभी दूसरे के क्षेत्रों पर अतिक्रमण नहीं किया है।
मैंने कभी विक्रेताओं को धोखा देने के लिये, तौलने के बाटों में कुछ नहीं जोड़ा है। और मैंने कभी तराजू के कांटे को कभी गलत नहीं पढ़ा है ।
मैंने कभी बच्चों के मुंह से दूध नहीं छीना है।
मैंने कभी बहते पानी को मोड़ा नहीं है।
जब आग जलनी चाहिए, तब मैंने उसे कभी बुझाया नहीं है।
मैंने कभी भगवान को उसके प्रगटन में विकर्षित नहीं किया है।

संकल्प

मैं शुद्ध हूँ! मैं शुद्ध हूँ! मैं शुद्ध हूँ!
मेरी शुद्धता, पवित्र मंदिर की आध्यात्मिकता की शुद्धता है।
इसलिये इस लोक में बुराई मेरे ऊपर नहीं आयेगी, क्योंकि मैं, मैं भी ईश्वर के नियमों, जो कि स्वयं ईश्वर हैं, को जानता हूँ।

जैसा पूर्व में कहा गया है, अनेक अवसर हैं, जब किसी विशेष संदेश को अवचेतन में उतारने के लिये, विशेष प्रकार के गद्य, का उपयोग किया जाता है। यह एक प्रार्थना है जिसे मैंने रचा है, और जिसे आपको हर सुबह तीन बार दोहराना चाहिए।

मैं अपने अधिस्वयं से प्रार्थना करता हूँ

दिनोंदिन निर्देशित ढंग से अपना जीवन जीते हुए, आज के दिन, मुझे अपनी कल्पना को नियंत्रित और निर्देशित करने दें।

दिनोंदिन निर्देशित ढंग से अपना जीवन जीते हुए, आज के दिन, मुझे अपनी इच्छाओं और विचारों को नियंत्रित करने दें, जिनके द्वारा मैं शुद्ध होऊँ।

आज के दिन और सभी दिनों में, मुझे अपनी कल्पना और विचारों को दृढ़तापूर्वक, उस काम पर, जिसे पूरा किया जाना है, कि सफलता उसके द्वारा आ सकती है, निर्देशित करते हुए, बनाये रखने दें।

मैं दिनोंदिन, सभी समयों में, कल्पना और विचारों को नियंत्रित करते हुए अपने जीवन को जिऊँगा।

* * * * * * *

आपके पास हर रात सोने से पहले तीन बार कहने के लिये भी एक प्रार्थना होनी चाहिए। यहाँ तब, विशेषरूप से बनाई गई, (मेरे द्वारा रचित) एक प्रार्थना है, जो रात तक आपके अवचेतन को अनुशासन सिखायेगी :

प्रार्थना

मुझे बुरे विचारों से मुक्त रखें। मुझे निराशा के अंधकार से मुक्त रखें। मेरी दीनता के क्षणों में, अंधेरे में एक प्रकाश चमकायें, जो मुझे लपेट ले।

मेरे हर विचार को अच्छा और स्पष्ट होने दें। मेरी हर क्रिया दूसरों की भलाई के लिये होने दें। मुझे अपने विचारों में सकारात्मक होने दें, जिससे मेरा मन शक्ति पा सके।

मैं अपने भाग्य का स्वामी हूँ। जैसा मैं आज सोचता हूँ, वैसा ही मैं कल हो जाता हूँ। इसलिये मुझे सभी बुरे विचारों को हटा देने दें। मुझे सभी बुरे विचारों से वंचित होने दें, जो दूसरों को पीड़ा पहुँचाते हैं। मेरे अंदर, मेरी आत्मा को जागृत होने दें, ताकि मैं सरलता से उस कार्य में, जो मेरे सामने है, सफल हो सकूँ।

मैं अपने भाग्य का स्वामी हूँ। इसलिये इसे होने दें।

अध्याय छै :
एक लोक, जिसे हम सभी को घूमना चाहिए

हल्की वर्षा, शहर के पुराने बाजार के कालिमा से लदे पत्थरों को हल्के से धोते हुए, टप टप करती हुई नीचे आई। ये भूरे बादलों से, नई खिड़कियों के आंसुओं की भांति, कूड़ेदानी के बर्तनों को संगीत की उंगलियों के साथ टनटनाते हुए गिरी। इसने शाम की हवाओं के प्रति कोमल कराह के लिये नृत्य किया और खिड़कियों के विरुद्ध टपकती हुई, मानो कि वह अभी भी खड़े तने के अपने निम्न भाग को सड़कों के बगल वाली कांक्रीट की दीवारों में गड़ाये हुए, ऐसे कमजोर से पेड़ों की झुलसी हुई पत्तियों को नहलाते हुए, सड़कों के आरपार झूमी। चमकती हुई सड़कों से गुजरती हुई कारों का प्रकाश, उनके टायर, पानी, जो खराब तरीके से बहने वाली सतह से बहता हुआ इकठ्ठा हुआ था, की पतली चादर में घिसते हुए परावर्तित हुआ। टप टप टप! बरसात की बूंदें चलीं, जैसे ही वे पुरानी भूरी छतों के साथ साथ उल्लासपूर्वक दौड़ीं और नीचे की पत्थर की झीने की जीर्णशीर्ण सीढ़ियों पर गिरने के लिये, टूटी हुई टोंटी में बहीं।

राहगीर, बड़बड़ाते हुए, मौसम के विरुद्ध लानत भेजते हुए, कॉलरों को पलटते हुए और छातों को तानते हुए, तेजी से चले। जो असुरक्षित फंस गये थे, उन्होंने जल्दी से बिना मुड़े समाचार पत्रों से अपनी कामचलाऊ शरणगाह बना ली। एक सजग बिल्ली, कूदती फांदती, भटकती और सबसे गंदे स्थानों को खोजने में सदैव सजग रहती हुई, घरों के साथ सटकर, तिरछी चली। गीलेपन से या शायद घर पहुंचने से थकी हुई बिल्ली ने, आसपास एक लंबी सावधान निगाह फिराई और तब सिकुड़ती हुई, आंशिकरूप से खुली हुई खिड़की में होकर, घुसी।

कोने के आसपास से, गहरे बरसाती कोट में लिपटी हुई और एक छोटे काले छाते के नीचे शरण लेती हुई, जल्दी करती हुई एक दुबली पतली आकृति आई। उसने एक क्षण के लिये रुकते हुए, सड़क के लैंप के नीचे, अपनी उंगलियों के बीच फंसे हुए कागज के टुकड़े को देखा। उसने आगे जल्दी करने से पहले, धुंधली रोशनी में झांकते हुए, फिर से पते और नंबर की जॉच की। उसने यहॉ और वहॉ आगे मुड़ने के लिये, और घर के दरवाजों पर लगे नंबरों को पढ़ने के लिये, अपनी जल्दबाजी की उड़ान को रोका। अंत में, एक थोड़े विस्मय के साथ, वह एक कोने वाले मकान पर रुक गई। उसने संकोचपूर्वक उसको देखा, एक छोटा मकान, दरवाजे पर पेंट किया हुआ, सूर्य की रोशनी से धब्बे पड़ा हुआ एक बेचारा मकान। खिड़कियों के फ्रेम, पेंट की चाह में चटक गये थे, और पत्थर के काम ने काफी अच्छे दिन देखे थे। फिर भी– उसने तय किया ये एक खुशहाल घर था।

और अधिक संकोच न करते हुए, वह पत्थर की तीन छोटी सीढ़ियों पर चढ़ी और (उसने) दरवाजे को हल्के से थपथपाया। शीघ्र ही, घर के अन्दर से कदमों की आवाज आई और जैसे ही दरवाजा खुला, हल्की सी चरचराहट की आवाज हुई।

''श्रीमती रियान (Mrs. Ryan)? सीढ़ियों पर खड़ी औरत ने पूछा।

''हॉ, मैं श्रीमती रियान हूँ, क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूँ?'' दूसरी ने जवाब दिया, तब, ''तुम बरसात में से घर के अंदर नहीं आओगी?''

आभारपूर्वक, छोटी औरत ने अपने छाते को बंद किया और सीढ़ियॉ चढ़कर अन्दर गई। जैसे ही श्रीमती रियान ने अपना गीला कोट लिया, पतली सी औरत ने अपने आसपास देखा।

उसने एक दयालु चेहरे और परिश्रम से थके हुए हाथों वाली एक बूढ़ी सी मरियल औरत को देखा। एक औरत जो, अपने घर के समान, अच्छे दिनों को देख चुकी थी, परंतु एक वह, जो जीवन के कठोर पाठों को अच्छी तरह सीख चुकी थी। फर्नीचर साफ था परंतु अच्छी तरह घिस चुका था, और

लिनोलियम (linoleum), फटना प्रारंभ कर रहा था। दुबली औरत, एक पहल के साथ मुड़ी और उसने कहा, ''ओह, मुझे अत्यंत खेद है, मेरा दिमाग घूम रहा था। मैं श्रीमती हार्वे (Mrs. Harvey) हूँ। श्रीमती एलिस (Mrs. Ellis) ने मुझे आपके बारे में बताया था। मैं **निराशापूर्वक (desperately)** सहायता चाहती हूँ!''

श्रीमती रियान ने उसको गंभीरता से टकटकी लगाकर देखा और कहा, ''मेरे साथ बैठक में आओ, श्रीमती हार्वे। हम देखें कि तकलीफ क्या है।'' उसने गली के नीचे की ओर मुंह करते हुए एक छोटे, साफ कमरे की ओर, आगे रास्ता दिखाया। कुर्सी की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, ''क्या तुम बैठोगी नहीं ?''

आभारपूर्वक, दुबली पतली औरत आरामदायक कुर्सी में बैठ गई। ''ये फ्रेड (Fred) के सम्बंध में है,'' वह चीखी, ''वह पॉच हफ्ते पहले गुजर गया और मैं उसे इतना अधिक याद करती हूँ!'' स्मृति ने उसे दबा लिया और वह भावना की पीड़ा के साथ रो पड़ी। अपने बटुए में टटोलते हुए, उसने अपना रुमाल निकाला और निष्प्रभावीरूप से, अपनी बहती हुई ऑखों पर फेरा।

श्रीमती रियान ने उसे कंधे पर थपथपाया और कहा, ''अब, अब, केवल यहॉ बैठ जाओ और अपने रोने को बाहर निकाल दो; मैं एक कप चाय बनाती हूँ और तब तुम्हें कुछ अच्छा लगेगा।'' जल्दी करते हुए, वह कमरे से रसोईघर में घुसी, जहॉ से शीघ्र ही, चाय के कपों की टकराने की आवाजें आईं।

''मैंने एक भयानक (terrible) समय पाया था!'' श्रीमती हार्वे ने, जैसे ही वे अपने बीच में चाय की ट्रे को रखते हुए, एक दूसरे के आमने सामने बैठीं, बाद में बताया। ''फ्रेड– मेरा पति– और मैं एक दूसरे से अत्यधिक प्रेम करते थे, और तब पॉच सप्ताह पहले, वह अपने कार्यस्थल पर हुए विस्फोट में तत्काल ही मारा गया! ये भयानक था! और हर रात मुझ में प्रबलतम भावना होती है कि वह मुझे कुछ बताने के लिये, मेरे संपर्क में आने का प्रयास कर रहा था।'' वह रुक गई, और उसने अपने रुमाल को, अपने निचले ओठ को काटते हुए, और फर्श के पुराने गलीचे पर पैर घसीटते हुए, निराशापूर्वक मरोड़ा। तब ''श्रीमती एलिस ने मुझे बताया कि आप फ्रेड के संपर्क में आने में सक्षम हो सकती है– मुझे नहीं मालुम, कि आप कितना (भुगतान) लेंगीं– परंतु मैं निश्चय ही, उससे कुछ सुनना चाहती हूँ!''

''मेरी प्रिय,'' प्रौढ़ औरत ने बेचैन नौजवान विधवा से कहा। ''हम केवल प्रयास, और ईश्वर में विश्वास कर सकते हैं। कईबार मैं उनसे, जो इस जीवन को छोड़ चुके हैं, संदेश प्राप्त कर सकती हूँ, दूसरी कईबार मैं नहीं कर सकती। केवल उच्चतम साधक ही हमेशा दुरानूभूतिपूर्ण (telepathic) और परोक्षानूभूतिपूर्ण (clairvoyant) हो सकते हैं। यदि मैं आपकी मदद कर सकूं, तो ये ईश्वरीय इच्छा होगी; यदि मैं नहीं कर सकी, तब यह भी ईश्वरीय इच्छा होगी। जहॉ तक मेरे भुगतान का सवाल है'' उसने कमरे के आसपास हाथ हिलाया– मुझे नहीं लगता, मानो कि मैंने कभी अधिक भुगतान लिया हो और कभी विलासिता में रहीं हूँ, क्या मैं हूँ?'' उसने दुखभरी लंबी सांस ली और कहा, ''एक मशीन बनाई जा सकती थी, जिसके द्वारा इस और अनदेखे विश्व में, ठीक वैसे ही जैसे कि हम अभी एक देश से दूसरे देश को करते हैं, संपर्क किया जा सकता है। परंतु उद्यमी जगत इसमें रुचि नहीं रखता.....मुझे अपने पति के सम्बंध में बतायें, क्या आपके पास उसकी कुछ व्यक्तिगत चीज है, जिससे मैं उससे संपर्क करने का प्रयास कर सकूं?''

बहुत बहुत देर बाद, श्रीमती हार्वे, मुस्कराती हुईं और बड़े ही आराम के साथ, जाने के लिये खड़ी हुईं, और उन्होंने कहा, '' अब मैं जानती हूँ कि माध्यम ही माध्यम हैं; कुछ बड़े धोखेबाज होते हैं, जो मैंने अपनी कीमत पर जाना है। और कुछ, बिना किसी प्रकार की सक्षमता रखते हुए झूठी आशायें जगा देते हैं। तुम–तुम **बहुत ही** अलग हो। धन्यवाद, इतना अधिक धन्यवाद, श्रीमती रियान!''

जैसे ही उसने दरवाजे को हल्के से बंद किया, दुबली सी बूढ़ी माध्यम, श्रीमती हार्वे, बड़बड़ाई,

''हे भगवान! हे भगवान! यदि हम केवल सभी धोखेबाजों को रोक सकें और सत्य शोध करें, तब हम कितनी आसानी से संप्रेषण कर सकते हैं।''

वह बैठक में आने को वापस मुड़ी और उसने एक सियांन्स (seance), जिसमें कभी वह एकबार शामिल हुई थी, के ऊपर विचार करते हुए, धीमे से चाय के समानों को इकट्ठा किया।

* * * * * * *

दुकानें जल्दी बंद हो गई थीं क्योंकि, ये सप्ताह का मध्य था, जब सभी के वेतन वाले बटुए खाली थे और आगामी कल की खरीददारी की गतिविधियों की आशा में, गोदाम भी खाली होते जा रहे थे। दुकानें जल्दी बंद हो गईं थीं, और महानगर से लिपिक और लेखापाल, टायपिस्ट और दुकान वाली लड़कियॉ प्रवाहित हो चुकीं थीं। मानवता की बड़ी नदियॉ, नलिका स्टेशनों के अवरोधों पर हमला कर चुकीं थीं और वे भारी धाराओं की भांति दहाड़ती हुईं, नीचे की ओर वाली स्वचालित सीढ़ियों पर, जमीन के नीचे ले जाने वाले रास्तों की ओर, अंत में स्टेशन के प्लेटफार्म के साथसाथ एक ठोस खंड पर खड़े होने के लिये दौड़ पड़ीं। रेलों की ब्रूम–ब्रूम की आवाजें, जैसे ही वे पहुॅचीं, गहरी सुरंगों में से गूंजती हुईं आईं। रेल की रोशनी की पहली झलक पर, बैचेन भीड़ के ज्वार ने, अंधकार में हाथ हिलाते हुए, प्रतीक्षारत भीड़ को समेट लिया। मजबूत लोग आगे की ओर धकेले गए, कमजोर बुरी तरह से एक ओर ठेले गये। एयरब्रेकों की मरती हुई कराह के साथ, स्टेशन में रुकने के लिये, रेल, जैसे ही धीमी हुई, भीड़ आगे लुढ़की और डिब्बों के द्वारा निगल ली गई। धमाके की आवाज, जैसे ही रबर की लाइनिंग वाले दरवाजे बंद हुए, और ब्रेकों को बाहर हटाने के लिये, दवाब को अंदर भेजते हुए हवा के कंप्रेसरों की धमाके की मंदी सी आवाज, और जैसे ही काम समाप्त करने वाले मनुष्यों की अगली भीड़, अभी अभी खाली किये गये प्लेटफार्म पर भेड़ों की भांति खड़े होने के लिये, जमीन के नीचे के रास्तों पर उड़ेल दी गई, गति पकड़ते हुए रेल आगे लुढ़क चली।

अंत में ठेलती हुई भीड़ हल्की पड़ी, और रिसाव की तरह क्षीण हो गई। शीघ्र ही रेलों की आवृति कम हो गई, क्योंकि ये अब कामगारों के घर लौटने का समय था। बाद में, जैसे ही थियेटर जाने वाले (theatre-goers) और बाजार में खिड़कियों पर झांकने वाले (window-shoppers), अपने शाम के आनंद (evening pleasure) से वापस लौटेंगे, ये प्रवाह आंशिक रूप से उलट जायेगा। शीघ्र ही, अंधेरे दरवाजों पर आवारागर्दी करने के लिये, या खंबों की रोशनियों के नीचे, अपने आप में इठलाती हुई, रात की महिलायें (ladies of the night) प्रकट होंगी। शीघ्र ही, बिना ताले लगे दरवाजों वाले भवनों को तलाश करते हुए, खड़ी हुई कारों में झांकते हुए और असामान्य और अवैध गतिविधियों के प्रति सहजरूप से सजग होते हुए, पुलिसमैन, बाजार के क्षेत्रों में होकर आलसपूर्वक चहलकदमी करेंगे। परंतु अभी नहीं, कामगार अभी हाल ही घर के लिये रवाना हुए हैं।

काफी दूर, उपनगरों में, लोग अपने शाम के खाने से उठ रहे थे। कुछ लोग थियेटर के लिये तैयार हो रहे थे, दूसरे फालतू घूम रहे थे, एक फालतू शाम को कैसे व्यतीत किया जाये। दूसरे लोग सभाओं में जा रहे थे.....!

सड़क पर नीचे की ओर, एक पुराने बड़े घर की ओर इकठ्ठा होता हुआ, दो और तीन (के गुट) में एक छोटा समूह आया, जो किसी व्यक्ति को, सामान्य भीड़ से अलग हटने का प्रयास करते हुए किसी बूढ़े व्यक्ति की भांति, सड़क से कुछ दूर हटकर खड़ा था। मुखौटे को छिपाने वाली झाड़ियॉ, किसी को एक लंबे, उसकी गर्दन पर बिना कटे हुए बालों वाले व्यक्ति का ध्यान दिलाते हुए, गंदी (unkempt), अनछटीं (untrimmed) थीं। पोर्टिको के ऊपर, गाती हुई मक्खियों और कीटों के द्वारा छोड़े गये घपले (mess) में होकर, एक अकेला, बिना शेड वाला बल्ब, मंदमंद जल रहा था। ऊपरी मंजिल की खिड़की पर से एक चेहरा, संक्षेप में (briefly) प्रकट हुआ और उसने समीप आते हुए लोगों

की संख्या का अनुमान करने, और तब जल्दी से खींचे गये फड़कते हुए परदे के गायब होने के साथ, सड़क पर नीचे झांका।

शीघ्र ही, लोग, मित्रों को बधाईयॉ देते हुए, अमित्रवत् संदेह के साथ नये चेहरों पर नजर रखते हुए, पोर्टिको के समीप इकठ्ठे होने लगे। शीघ्र ही दरवाजा खुला, और नकली मोतियों की मालाओं के साथ श्रंगार किये हुए, एक बहुत बड़ी, बहुत मजबूत औरत प्रकट हुई। अदृश्य साबुन और पानी के साथ अपने हाथों को धोती हुई, वह उस समूह के ऊपर, उसे देखते हुए झुकी। ''ठीक है! ठीक है!'' वह कुटिलतापूर्वक प्रसन्न हुई। आत्माओं ने मुझे बताया है कि आज रात को हमारे पास रिकार्ड संख्या में लोग होंगे। अब, क्या आप अभी अंदर आयेंगे.....'' वह एक ओर हटी और लोग, उदास से हाल के रास्ते में पंक्तिबद्ध खड़े हो गये। ''अपने प्रेमपूर्ण चढ़ावे को यहॉ छोड़ दें,'' मजबूत औरत ने, जैसे ही उसने एक आले में रखी हुई, एक गहरी प्लेट की ओर इशारा किया, कहा। 'प्रेमपूर्ण चढ़ावे' का मूक संदेश देते हुए, आधे क्राउन के चार सिक्कों के वजन के नीचे, विशाल तली में, एक नोट पहले ही वहॉ रखा हुआ था।

उस स्थूल औरत की सजग निगाहों के अधीन, भीड़ ने अपनी जेबों और पर्सों को टटोला और अपने अपने चढ़ावे को, तेजी से भरती हुई प्लेट में चढ़ाया। ''ठीक है!'' औरत ने कहा। ''हमको अपने आत्मा मित्रों (spirit friends) को, यह सोचने के लिये नहीं आने देना चाहिए कि उनके प्रयास बिना सराहना किये हुए रह गये, क्या हमको करना चाहिये? जितना अधिक हम देते हैं, उतना ही अधिक हमें प्राप्त होता है।'' उसने आत्मसंतुष्ट ढंग से (smugly) जोड़ा।

लोगों को एक छोटा समूह, एक बड़े कमरे में, जिसके एक सिरे पर एक स्टेज दिखाई दी, चला। लकड़ी की कठोर कुर्सियां अनियमित तरीके से रखी गई थीं और निराश नवागंतुकों को पीछे की पंक्तियों में धकेले जाते हुए, इन्हें भीड़ के द्वारा तेजी से घेर लिया गया।

स्थूल औरत विचारमग्न होकर आगे मंच की ओर बढ़ी और उसने अपने ब्रेसलेट के साथ अधीरतापूर्वक खेलते हुए, मध्य में अपना स्थान ग्रहण किया। एक लंबी, पतली औरत प्रकट हुई और आधे छिपे हारमोनियम के सामने नीचे बैठी और उसने किसी स्तोत्र की पहली धुनों को बजाया। ''वातावरण को ठीक करने के लिये, पहले केवल थोड़े से स्तोत्र'' स्थूल औरत ने कहा। ''तब हम अपने कार्य पर आयेंगे'' स्थूल औरत ने कहा। कुछ मिनटों के लिये आर्गन बजा और लोगों ने गाया, तब स्थूलकाय औरत ने आज्ञापूर्वक अपने हाथ हिलाये और कहा, ''रुको! रुको! आत्मायें प्रतीक्षा कर रहीं हैं! ''जैसे ही गर्जनाओं ने हवा को खाली किया, अवरोह के आलाप में अंतिम सुर ऑर्गन से समाप्त हो गये। जैसे ही लोग बैठे, और आराम में होने के लिये, आपस में थोड़ा हिलडुले, वहॉ फर्नीचर के हिलने डुलने और चटकने की आवाज हुई। रोशनियॉ मंद हो गईं, बुझ गईं, और उन्हें लाल रोशनियों के द्वारा बदल दिया गया, जिन्होंने कुल मिलाकर भयंकर आभा बिखेरी।

मंच के ऊपर स्थूलकाय औरत ने झांककर देखा और इतराती हुई चली। ''ओह! बच्चो!'' उसने जोश के साथ हावभाव दिखाते हुए कहा, ''प्रतीक्षा करो– प्रतीक्षा करो– तुमको अपनी बारी पर बोलना चाहिए! कई लोग आज रात को बोलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'' उसने अपने श्रोता समूह से अलग से कहा और वे बहुत अधिक अधीर हैं। आप में से अनेक, आज रात को संदेश पायेंगे,'' उसने जोड़ा।

कुछ समय के लिये वह, खीसें निपोरते, और अपने सिर को खुजाते हुए, मंच पर ऐंठी–ऐंठी घूमी। अब!''अंत में वह विस्मित हुई,'' उन्होंने काफी मौज कर ली है, इसलिये अब काम की बात करते हैं।'' अपने आसपास देखते हुए, उसने सहसा पूछा, ''मैरी (Mary), नाम मैरी है। क्या मैरी नाम की कोई यहॉ है, जिसने अपने किसी प्रिय को हाल में ही खोया हो?''

संदेह के साथ एक हाथ उठा। ''मैंने अपने सौतेले पिता को छः महीने पहले खो दिया,'' एक अवसादग्रस्त नौजवान महिला ने कहा। ''वह अत्यधिक पीड़ित था, मुझे पक्का विश्वास है कि ये जब वह

गुजरा, उसके लिये यह राहत थी।''

स्थूलकाय औरत ने सिर हिलाकर हामी भरी और टिप्पणी की, ''ठीक है, वह मुझे तुमको यह बताने के लिये कहता है कि अब वह प्रसन्न है, और उस सब काम के लिये दुखी है, जो उसने तुम्हारे लिये पैदा किया।'' अवसादग्रस्त नौजवान महिला ने हामी भरी और अपने साथी के साथ फुसाफुसाहट की।

''स्मिथ (Smith)!'' स्थूलकाय औरत ने पुकारा। ''मेरे पास स्मिथ के लिये एक संदेश है। मुझे ये बताने के लिये कहा गया है कि तुमको चिंता करने की जरूरत नहीं है, सबकुछ ठीक हो जायेगा। समझे, मेरा क्या मतलब है, नहीं समझे– मैं इस जैसी सभा में, इस सम्बंध में, मुश्किल से ही बात कर सकती हूँ परंतु तुम समझते हो!'' अग्रभाग के समीप एक जवान आदमी ने सहमति में अपना सिर हिलाया। –166

''आज रात को बच्चे लोग काफी उत्साह में हैं,'' स्थूलकाय औरत ने कहा, ''उनके पास आपके लिये, **बहुत ज्यादा** संदेश हैं। आप जानते हैं, मैं तो केवल एक टेलीफोन की तरह से हूँ, हमारे गुजरे हुए प्रिय, जो अभी भी हमारे साथ हैं, आत्मा में! से संदेशों को देते हुए,'' ठहरो – ठहरो – वह क्या है? ओह! वे कहते हैं कि मुझे विशेष योगदान के लिये कहना चाहिए, ताकि मैं इस कमरे को सजा सकूं, वे जीर्णशीर्ण कमरों में आना पसंद नहीं करते। क्या आप मदद करेंगे? क्या आप इस नेक काम के लिये योगदान करेंगे? मिस जोन्स (Jones), क्या आप प्लेट को आस पास घुमायेगीं कृपया। धन्यवाद!

* * * * * * *

प्रारंभ में ये कहा जाना चाहिए कि कुछ निश्चित अवस्थाओं में उन लोगों से संदेश प्राप्त करना, जो गुजर गये हैं, ये पूरी तरह संभव है। साथ ही साथ, ये भी समान निश्चितता के साथ कहा जाना चाहिए कि वे लोग, जिन्होंने इस दुनियॉ को छोड़ दिया है, उनके पास भी करने के लिये कोई काम है, और वे लोग, जवानों के गिरोह की भांति गली के कोने में प्रतीक्षा करते हुए, किसी भी प्रकार से एक शब्द पाने के लिये, आसपास समूहों में केवल बैठे नहीं रहते। अधिकांश संदेश, या तो तत्वों (elements) के द्वारा या नकली 'माध्यमों (mediums)' के द्वारा, झूठे होते हैं।

पहले हमको गूढ़विज्ञान और पराभौतिकी अथवा कोई भी चीज, जो इस वर्गीकरण में आती है, के एक या दो अत्यंत वास्तविक खतरों पर चर्चा करनी चाहिए। वास्तव में, शुद्ध उद्देश्य के लिये गूढ़विज्ञान का अभ्यास करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिये इसमें कोई खतरा नहीं है; मेरे पास मेरे मन में एक बिल्कुल अलग चीज है।

सबसे बड़े खतरों में एक, जिसका हम सामना करते हैं, ये है, जिसका सनकी, पागल, और मानसिक रूप से ठगे गये, और वे, जो सोचती हैं कि वे क्लियोपेट्रा (Cleopatra) हैं, या वैसी ही पुर्नजन्मधारी हैं, लोगों के द्वारा दावा किया जाता है। क्लियोपेट्राओं की संख्या, शायद, पूरे न्यूयार्क शहर को आबाद कर देगी और शेष संयुक्त राज्य के लिये अतिरिक्त प्रवाह पैदा करेगी।

ये बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि भावनात्मकरूप से अस्थिर लोग, मर्तबान के प्रति मक्खियों की भॉति, गूढ़विज्ञान के प्रति भीड़ (flock) बनाते हैं और, और अधिक बड़े सनकी, वे अधिक बड़े खतरे हैं जो हमारे लिये, जो अच्छा कार्य करने का प्रयास करते हैं, पैदा करते हैं।

इसे मुझे एकदम निश्चितरूप से साफ करने दें; गूढ़विज्ञान एक स्वाभाविक चीज है इसमें कुछ भी रहस्यमय नहीं है। ये केवल उन शक्तियों का उपयोग है, जो लगभग प्रत्येक के पास होती है, जिसका उपयोग करना, लगभग हर व्यक्ति भूल चुका है। इसको ऐसे समझें : हमारे पास एक साधारण, औसत व्यक्ति है जो हमारा पथप्रदर्शक–पैमाना या नापने का पैमाना होगा। ये सामान्य, औसत व्यक्ति, हमारा सूचक है। कम प्रतिभा वाला व्यक्ति, औसत से नीचे होता है, इसलिये पागलखाने के निवासी औसत से काफी नीचे हो सकते हैं। सामान्य से नीचे, जो औसत से नीचे हैं? हमारे ध्यान को आकर्षित

नहीं करते परंतु जिनके अधिकार में क्षमतायें हैं, जिनको कि हमारा औसत सूचक धारण नहीं कर सकता, तब वे सामान्य से ऊॅचे, परासामान्य हैं। गूढ़विज्ञान की क्षमताओं वाले लोग, सामान्य से ऊपर, परासामान्य हैं, उनके पास क्षमतायें हैं, जो कि औसत व्यक्तियों में विकसित नहीं होतीं।

एक गंवार व्यक्ति को गंध का विशिष्ट अभिज्ञान और अक्सर दृष्टि का भी एक बहुत अच्छा संज्ञान – होता है, वह किसी भी चीज को, जिसे तथाकथित सभ्य व्यक्ति करता है, काफी ऊंचे तक भांप लेता है। एक सभ्य व्यक्ति में भी, बढ़ाई हुई गंध या दृष्टि के लिये वैसी ही संभावनायें होती हैं, परंतु आरोपित सभ्य जीवन की परिस्थितियॉ, गंध, शक्ति और नजर की गहनता की एक धनात्मक कमी को पैदा कर देती हैं। उन रेस्टोरेंट में से कुछ में जाने पर विचार करो, यदि किसी का गंध–संज्ञान अद्भुत रूप से तीक्ष्ण हो, दुर्गन्ध किसी को पीछे की तरफ खींच लेगी।

तब, गूढ़ शक्तियों वाला एक व्यक्ति, कोई जादूगर नहीं है, उस जैसी कोई चीज नहीं, वह मात्र एक ऐसा व्यक्ति है, जिसने किसी भी दूसरे के द्वारा धारण किये जाने वाले कुछ निश्चित संज्ञानों को विकसित कर लिया है। उसी तरह से, हम सब के पास मांसपेशियॉ हैं, परंतु भारोत्तोलक (weight-lifter) ने अपनी मांसपेशियों को उस तुलना में, जिसमें कि एक छोटी बूढ़ी महिला, जो पूरे दिन अपनी कुर्सी पर बैठी रहती है, एक अत्यधिक बड़ी सीमा तक विकसित कर लिया है। और व्यक्ति, जो राजनीति में दखल रखता है, उसने अपनी स्वरनलिकाओं को, उस आदमी की तुलना में, जो पूरे समय घर पर रहता है, काफी परे तक विकसित कर लिया है; उन दोनों के पास मांसपेशियॉ हैं, दोनों के पास स्वर–तंतु हैं, परंतु उनके उन अंगों के विकास के चरण भिन्न हैं।

गूढ़विज्ञान के नियमों में से एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण नियम है कि किसी को प्रदर्शनवादिता में संलिप्त नहीं होना चाहिए, किसी को गूढ़शक्ति को नीचे नहीं घसीटना चाहिए, जिसके द्वारा मात्र सर्कस बन जाता है। कोई, कितना अक्सर, किसी औरत को कहते हुए सुनता है, ''ओह, आज मैं एक अद्भुत व्यक्ति से मिली, वह मेरे दरवाजे पर आया, सुबह वह स्पेनी–प्याज बेचने वाला है, दोपहर में वह महिलाओं के पहिनने के कपड़े बेचता है, और शाम को वह गूढ़विज्ञान का प्रदर्शन करता है। वह इतना अधिक अद्भुत है कि वह चाय का कप पीते हुए, औंधे कप को एक उंगली पर संतुलित कर सकता है ।'' या अक्सर, हम एक बेचारे छोटे आदमी को सुनते हैं, जो विश्व के द्वारा, एकांत में इतना भुला दिया जाता है कि उसे कहना पड़ता है, ''आह, मैंने गूढ़विज्ञान से सम्बंधित पुस्तक पढ़ी है। मैं एक बड़े शिक्षक और स्वामी के रूप में जमा लूंगा, इसलिये वह, शायद द्वार–द्वार पर प्रचार करते हुए, या शायद, बेचारा निरीह आदमी होने के कारण, दिन में एक दबंग नियोक्ता के अंतर्गत काम पर जाता है, और रात तक वह अपने पिछले कमरे की ओर यात्रा करता है, एक रहस्यमय नजर डालता है, अपनी भौंहों को ऊपर नीचे फड़काता है, अपनी नाक के एक पार्श्व के ऊपर नजर ड़ालता है, भयंकर आहें और कराहें निकालता है, और शायद मंच की एक या दो, दूसरी तरकीबें भी करता है और कहता है, कि वह कितने अद्भुत तरीके से सूक्ष्मलोक की यात्रा कर सकता है। वास्तव में, शायद उसने रात्रि का खाना, या खराब पनीर या शायद दूसरी चीज, बहुत अधिक खा ली है और उसे दुस्वप्न (nightmare) आने लगा है। ठीक है, वह नन्हा आदमी एक वास्तविक घातक रोग है, वह गूढ़विज्ञान के लिये, और स्वयं के लिये भी, वास्तविक खतरा है। मैं आपको ये बताने जा रहा हूॅ कि ये सभी पागल, जो मंच के प्रदर्शन करते हैं और इसे गूढ़विज्ञान कहते हैं, जबतक कि और अच्छे न सीख जायें, समय के बाद समय खराब करने वाले हैं, वे इसी पृथ्वी पर फिर वापस आने वाले हैं और वह किसी को भी टालने के लिये एक घुड़की होनी चाहिये।

भारत में फकीर कहे जाने वाले लोगों का एक सम्प्रदाय है। वे पवित्र आदमी होने का दिखावा करते हैं। वे भारत भर में भ्रमण करते हैं और कोई आकर्षक महिला उनसे सुरक्षित नहीं है, परंतु वे रंगमंचीय प्रदर्शन भी करते हैं, वे चालाकियॉ भी करते हैं। ठीक है, एक मेरे लिये, यदि मैं जादू एक

प्रदर्शन देखना चाहता हूँ, इसके बजाय मैं पैसा अदा करूंगा और एक अच्छी प्रकार के थियेटर में जाऊंगा। मैं एक अदने से गंदे आदमी को, उकड़ू बैठकर, लोगों के पूरे समूह को सम्मोहित करने का प्रयास करते हुए नहीं देखना चाहता, ये मुझे कोई आध्यात्मिक चीज सिद्ध नहीं करता। इसके बजाय ये सिद्ध करता है कि आध्यात्मिकता के बारे में व्यक्ति का प्रथम चिंतन तक भी नहीं है। भारतीय रस्से की चालाकी, केवल सम्मोहन का एक साधारण मामला है। मैं आपको ये बताने वाला हूँ, यद्यपि पूरी तरह निश्चयपूर्वक, कि सच्चे स्वामी, जो देखने वालों की फालतू उत्सुकता को शांत करने के लिये कभी भी कुछ नहीं सिद्ध करते, वास्तव में, तथाकथित भारतीय रस्से की चालाकी को स्वाभाविक शक्तियों का उपयोग करते हुए कर सकते हैं और वह सम्मोहन का उपयोग नहीं करते। मैं पूरी तरह सत्यतापूर्वक कहूंगा कि मैंने और अनेक दूसरों ने लेवीटेशन (levitation) को देखा है। लेवीटेशन वास्तव में, एक अत्यंत सत्य चीज है और ये बिल्कुल भी गूढ़ नहीं है। ये चुम्बकीय धाराओं को उल्टा करने का मामला है। यदि आप दो चुम्बकों, प्राथमिकता के साथ दो दंड चुम्बकों, को पकड़ें, यदि आप उनमें से हरेक को एक हाथ में पकड़ें और उन्हें साथ लायें तो वे बहुधा थोड़े से मांस को बीच में दबाते हुए, एक जोरदार धात्विक चटाक की आवाज के साथ, एक साथ उछल सकतीं हैं! परंतु यदि आप किसी एक की दिशा बदल दें, अर्थात् यदि आप एक को दायें हाथ में रखें और दक्षिणी ध्रुव को वहॉ रखें, जहॉ पहले उत्तरी ध्रुव था और अब उन्हें दोनों चुम्बकों को साथ साथ लाने का प्रयास करें, आप देखेंगे कि वे एक दूसरे को टालने का एकदम कठोर प्रयास करते हैं, वे एक दूसरे का विरोध करते हैं, उनके बीच, परस्पर कोई चुम्बकीय आकर्षण नहीं है, बदले में, उनके बीच विकर्षण है।

एक दूसरी बातः कोई, एक प्रकार की प्रेरण कुंडली (induction coil) को, बैटरी के या मुख्य स्रोत के साथ जुड़ा हुआ पा सकता है और एक धुरी के ऊपर, जो ऊपर की ओर निकली हुई है, कोई एक एल्युमीनियम की रिंग गिरा सकता है। यदि धारा को चालू कर दिया जाये, तो प्रकटरूप से रिंग गुरुत्वाकर्षण का विरोध करती है और हवा में तैरती है। यदि कोई इस सत्य के ऊपर संदेह करते हैं, ठीक है, उन्हें कुछ वैज्ञानिक पत्रिकाओं का परामर्श लेना चाहिए, या एक प्रदर्शन किट के लिये संयुक्त राष्ट्र को लिखना चाहिए। परंतु अब हम उस पर वापस चलें, जिसके ऊपर हम पहले गंभीरतापूर्वक चर्चा कर रहे थे।

लेवीटेशन, अपने खुद के चुम्बकीय आकर्षण को बदलने की एक विधि है, जिससे कि हमारा भार उतना नहीं रहता। इंग्लैंड में लगभग साठ या ऐसे ही कुछ वर्षों पहले, होम (Home) (डेनियल डगलस होम (Daniel Dunglas Home)–संपादक) नाम का एक आदमी था; उसने अंग्रेजों के गॉव के घर में, लेवीटेशन का वास्तविक प्रदर्शन किया था। विश्व के कुछ सर्वाधिक प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने इस प्रदर्शन की गवाही दी थी, परंतु प्रदर्शन उन नियमों का अनुमोदन नहीं करता था, जो उन वैज्ञानिकों ने बनाये थे, उन्होंने एक निष्पक्ष रिपोर्ट नहीं दी। तिब्बत और चीन में – चीन में, साम्यवादियों के वहॉ कुछ हलचल करने से पहले, और जापान, संयुक्त राष्ट्र के सैनिकों की भी हलचल होने से पहले, वहॉ कोई, वैसे ही लेवीटेशन और वैसी ही तमाम चीजों को देख सकता था। परंतु ये चीजें कभी भी सर्कस की भांति नहीं, बल्कि ये केवल गंभीर और असली विद्यार्थियों में कुंडली जगाने के विज्ञान के लिये की गईं।

तब हमें, सही गूढ़वादी होने दें और हमें, किसी उस पर, जो एक उंगुली पर संतुलन करने के प्रदर्शन का प्रस्ताव देते हैं, या वास्तव में उन पागल (crackpotted) मूर्खों (asininities), स्वयं में विश्वास नहीं रखने वालों और बिल्कुल भी कोई गूढ़शक्ति नहीं रखने वाले व्यक्तियों, जो असावधान लोगों को ठगने का प्रयास करते हैं, में से किसी पर भी, अत्यंत, अत्यंत गंभीरतापूर्वक संदेह करने दें। सही गूढ़वादी, जबतक कि उसके पीछे पूरी तरह से अधिभावी (overriding) अच्छा कारण न हो, अपनी क्षमताओं का कोई प्रमाण, कभी नहीं, कभी भी नहीं देता।

मुझे इसमें पिछली गली के परोक्षदर्शी, दीनाह डिपड्राय (Dinah Dripdry) जैसे लोगों को भी

शामिल करना चाहिए। ये बेचारी औरत, एक बाल्टी और पोंछे को आसपास ढोते हुए, शायद, प्रतिदिन कई घंटों तक फर्शो को रगड़ती है। तब वह अपने काम की समाप्ति पर, पैर घसीटते हुई अपने घर जाती है (वास्तव में वहॉ बस की हड़ताल होती है!), वह घर की ओर जाती है, और किसी वास्तविक विचित्र तरीके से, अपने आप को थका हुआ पाती है।

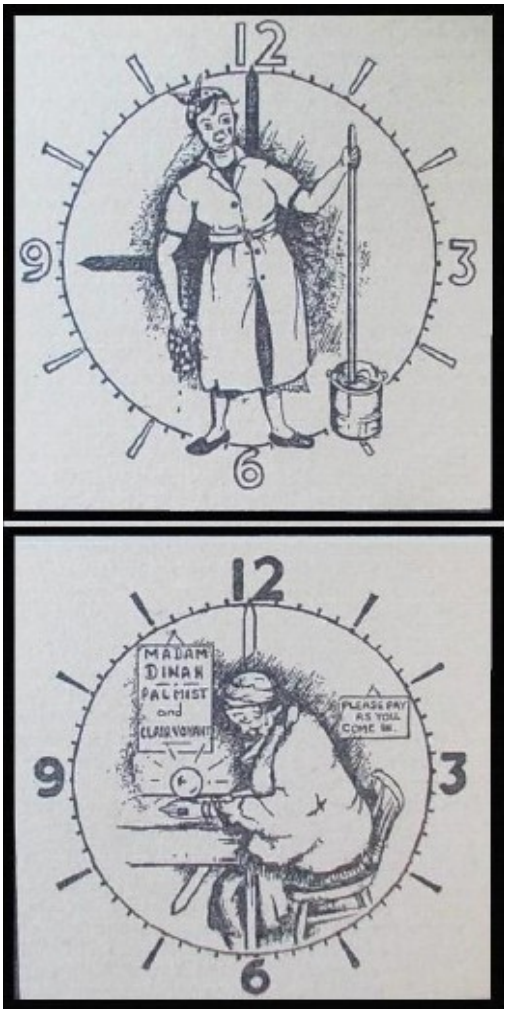

वह एक रंगीन चीज को अपने आसपास लपेटती है, और तब एक प्रकार को भड़कीला (gaudy) रुमाल अपने सिर के आसपास लपेटती है, जो उसके विचार से, पगड़ी जैसा दिखता है। उसके कमरे में काफी मंद रोशनियॉ हैं, ताकि ग्राहक नहीं देख पायें कि वह वास्तव में कितना गंदा है, तब वह अपना कार्य करने के लिये तैयार है। वह जल्दी जल्दी, कहीं से क्रिस्टल जैसे प्रकार की कुछ चीजों को उठा लेती है, अक्सर ये, एक प्रदर्शन चीज के रूप में, धूप में खुले हुए रखे जाते हैं, ताकि लोग इस चीज को देख लें और सोचें कि जब वह फर्शों को रगड़ नहीं रही होती है, कितनी आश्चर्यजनक औरत है। ठीक है, धूप में रखे जाने की तुलना में, ऐसी कोई चीज नहीं है, जो किसी क्रिस्टल को पूरी तरह से खराब कर दे, ये क्रिस्टल की दंत शक्ति (odonetic power) को मार देती है।

तब, दीनाह डिपड्राय, किसी भी प्रकार से एक मूर्ख ग्राहक को अपने कमरे में ललचाती है। सामान्यतः वह उसके सामने बैठती है, उसको ऊपर से नीचे तक देखती है, और उसे थोड़ी बात करने देती है। अधिकांश लोग अपनी खुद की आवाज को सुनने के इतने शौकीन होते हैं कि वे सबकुछ, और थोड़ा अधिक ही बता देते हैं। इसलिये दीनाह डिपड्राय को, केवल अपने खुद के परावर्तन को छोड़कर कुछ नहीं देखते हुए, और कुछ चीजों को, जो उसके ग्राहक ने ही खुद उसको बता दी थीं, वापस उदास स्वर में दोहराते हुए, केवल अपने क्रिस्टल में देखना होता है। तब वह एक महान दृष्टा होने का सम्मान पा जाती है। ग्राहक अक्सर, उसको बताई हुई किसी भी बात को याद नहीं रखता, और वह बिना बड़बड़ाहट के, उसके धन को लेकर चलती बनती है! दीनाह डिपड्राय, यदि वह इसे धन के लिये कर रही है, कोई परोक्षदर्शी नहीं हो सकती क्योंकि, इससे उसकी शक्ति नष्ट हो जाती है, भले ही पहले मामले में, वह रह चुकी हो।

कोई भी औसत परोक्षदर्शी, पूरे चौबीस घंटों के लिये, पूरे समय परोक्षदर्शी नहीं होता। कोई व्यक्ति अधिकांशतः असुविधाजनक समय पर, उच्चतमरूप से परोक्षदर्शी हो सकता है, परंतु तब, जब परोक्षदर्शन की आवश्यकता हो, वह व्यक्ति परोक्षदर्शी नहीं होता, और यदि आप इसे धन के लिये कर रहे हैं तो आप ये नहीं कह सकते, ''ओह ये मेरा छुट्टी का दिन है, आज मैं आपको सत्य बताने के योग्य अनुभव नहीं करता।'' इसलिये दीनाह डिपड्राय जैसे लोगों को अपना धन कमाना होता है, और जब वे क्रिस्टल –जो उनके साथ हर समय रहता है– में कुछ भी नहीं देख सकते, तो उन्हें चीजें बनानी पड़ती हैं।

आपने हर समय सर्वोच्च अवस्था में न रहने का अनुभव किया होगा। आप कह सकते हैं, ''मुझे नहीं मालूम, मेरे साथ क्या गलत है, मैं आज एकाग्र नहीं हो सकता'' ठीक है, उसी प्रकार से परोक्षदर्शन में भी; आप एकाग्र नहीं हो सकते, आप इसका ठीक उल्टा करते हैं, इसलिये यदि कोई व्यक्ति तनाव में है, या अत्यधिक उत्तेजित है, तब वह व्यक्ति शिथिल (relax) नहीं हो सकता, और कुछ समय के लिये उसकी परोक्षज्ञान की क्षमता खत्म हो जाती है। आपकी खुद की जेबी पुस्तक के लिये, दूसरा नियम है, कि किसी भी क्रिस्टल देखने वाले या वैसे ही व्यक्ति के द्वारा, आपके भाग्य के सम्बंध में कुछ भी क्यों न बताया गया हो, कोई भी चीज, किसी को, कभी मत, कभी मत दो। वे इसे धन के लिये नहीं कर सकते और यदि वे इसे व्यापारिक आधार पर करते हैं, तब उन्हें समय समय पर केवल ''प्रसाधन (make up) बनाना'' होता है, और जितना ज्यादा कोई व्यक्ति चीजों को बनाता है, उतनी ही तेजी से वे अपने परोक्ष ज्ञान को, जो हो सकता है उनके पास पहले रहा हो, जल्दी ही खो देता हैं।

एक और चीज, जो अब स्पष्ट की जानी चाहिए, वह है कि कोई भी व्यक्ति, किसी दूसरे के सूक्ष्मशरीर को नियंत्रित नहीं कर सकता। कईबार आप, एक मूर्ख प्रकार की औरत को पाते हैं, जो एक विशेष प्रकार का अंडा सेने के लिये, हॅसी किकियाती है, ओह, मुझे आपके ऊपर पकड़ है, पिछली रात को, मैं आपसे सूक्ष्मलोक की यात्रा में मिली थी, और अब मैं आपके सूक्ष्मशरीर को नियंत्रित कर सकती हूॅ। यदि आप कभी इसप्रकार से, ऐसे व्यक्ति से मिलें तो सबसे अच्छी चीज है, उन सफेद कोट वाले सहायकों को बुलाना, जो मानसिकरूप से सताये हुओं को, सुविधाजनक गुदगुदे प्रकोष्ठ में ले जाते हैं।

कोई व्यक्ति, जब वह सूक्ष्मयात्रा में हो, कोई चोट नहीं खा सकता। सूक्ष्मयात्रा में कोई भी व्यक्ति, किसी भी दूसरे व्यक्ति के द्वारा, नियंत्रित नहीं किया जा सकता। डरने की केवल एक चीज है, खुद डरना। डर, घड़ी जैसी किसी चीज की यांत्रिकी पर, एक क्षरणकारी तेजाब की तरह है। भय संक्षारित कर देता है। भय भ्रष्ट कर देता है। जब तक आप भयभीत नहीं हैं, कुल मिलाकर आपके साथ कुछ भी बुरा नहीं हो सकता। इसलिये फिर, यदि कोई मूर्ख आपको नियंत्रित करने में सक्षम होने का दावा करता है, तो अच्छा है आप उसे किसी मनोचिकित्सक के द्वारा परीक्षण किये जाने के लिये चलता कर दें, अथवा पुलिस को बुलायें, यही समय है, जब पुलिस को किसी भी प्रकार से कुछ करना चाहिए!

कुछ निश्चित परिस्थितियों और अवस्थाओं को छोड़कर, किसी व्यक्ति को, उस व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध सम्मोहित करना, संभव नहीं है। वास्तव में, जो लोग तिब्बत में, और केवल गहनतम गूढ़ विद्याओं के मंदिर में प्रशिक्षित किये गये हैं, वे ही ऐसी चीजों को कर सकते हैं, यदि वे इसे अच्छे उद्देश्य के लिये करना चाहें, परंतु प्रत्येक व्यक्ति में, जो तिब्बत के आंतरिक गूढ़विज्ञान के मंदिर (Temple of inner mysteries of Tibet) में प्रशिक्षित किये गये हैं, स्वयं मुझ में भी, सम्मोहित शर्तें डाली गईं हैं ताकि वह किसी को भी, किसी प्रकार की हानि पहुँचाने वाला कोई काम न कर सके, परंतु केवल किसी को मदद करने के लिये, और वह भी केवल बहुत असामान्य परिस्थितियों में ही, ऐसा करे।

यदि कोई आपकी ओर घूरना प्रारंभ करता है और आपको सम्मोहित करने का प्रयास करता है, और तब सीधे उसके नासिका सेतु के ऊपर, दोनों ऑखों के बीच, वापस घूरना प्रारंभ करें और यदि वह अधिक नहीं जानता होगा तो आपके बदले में वह शीघ्र ही सम्मोहित हो जायेगा। सिवाय डरा हुआ होने के, आपके डरने के लिये कोई चीज नहीं है। गूढ़विज्ञान, वैसे ही जैसे कि सांस लेना या एक पुस्तक को उठाना, एक कदम रखना, एक सामान्य चीज है। आप सुरक्षितरूप से चल सकते हैं, जबतक कि आप फूहड़ और लापरवाह न हों, और तब आप एक केले के छिलके पर फिसल सकते हैं। ठीक है, ये आपका दोष है, चलने का दोष नहीं। चलने की तुलना में, गूढ़विज्ञान अधिक सुरक्षित है, क्योंकि गूढ़ विज्ञान में कोई केले का छिलका नहीं है। डरने के लिये केवल चीज है, मैं दोहराता हूँ, डरा हुआ होना।

वास्तव में, लोगों के साथ तर्क करने का प्रयास करना काफी कठिन है, किसी व्यक्ति को किसी चीज को समझाने का प्रयास करना अत्यंत कठिन है, क्योंकि यह एक निश्चित नियम है कि भावना और तर्क के बीच युद्ध में हमेशा भावना विजयी होती है, भले ही किसी की बुद्धि कितनी भी प्रखर क्यों न हो। यदि कोई, वास्तव में, उत्तेजित हो जाता है या क्रोध करता है तो भावना तर्क के ऊपर सवार हो जाती है।

एक व्यक्ति, एक बड़े अपार्टमेंट भवन में, यदि आप चाहें, नौ मंजिल ऊँचे में रहता है। इन भवनों में, उनकी बालकनी के किनारों पर, लोहे की पतली सी रेलिगें हैं, एक अच्छा सा धक्का, शायद, चीजों को ऊपर फैंक देगा, परंतु भावना हमें बताती है कि ये पूरी तरह सुरक्षित है, क्योंकि, वहॉ एक रेलिंग है और हम बिलकुल भी भय अनुभव नहीं करते। परंतु मानते हुए कि रेलिंग हटा दी गई, तब हमको गिरने का बहुत बड़ा भय लगा रहेगा, यद्यपि हम पूरी तरह से एकदम ठीक उसी स्थिति में, जहॉ भले ही यदि रेलिंग वहॉ रही होती, तो वहीं खड़े होते, खड़े हों।

तब हमको पूरे समय, ये ध्यान में रखना चाहिए कि भावनाओं और तर्कों के बीच किसी भी युद्ध में, हमेशा भावना विजयी होती है, और उस बजह से, हमको अपने आपको अनुचित ढंग से उत्तेजित नहीं होने देना चाहिए, बदले में, हमें निर्वाण, जो कि भावनाओं पर नियंत्रण करना है, के एक कदम समीप जाने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि ये तर्क के क्रियाकलापों को और अधिक देर तक न रोक सके।

हमको अनुभव करना चाहिए कि पिछली गलियों वाले इन तुच्छ लोगों में से कुछ एक, जिन्होंने यह पुस्तक पढ़ी है या पुस्तक का शीर्षक मात्र ही सुना है, आवश्यकरूप से सर्वोत्तम शिक्षक नहीं है। केवल मात्र व्यक्ति, जो गूढ़ विज्ञान के सम्बंध में कुछ करने के लिये, किसी भी चीज की शिक्षा देने का पात्र है, वह व्यक्ति है जो स्पष्टरूप से जानता है। एक ऐसा व्यक्ति जो किसी सम्मानीय स्थान में प्रशिक्षित किया गया है। मैं, उदाहरण के लिए, कर सकता हूँ और मैंने ये दिखाते हुए कि मैंने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, और चुंगकिंग (Chungking) विश्वविद्यालय से चिकित्सा शास्त्र में उपाधि धारण करता हूँ, कागजात प्रस्तुत किए हैं, और मेरे कागजात, मुझे ल्हासा के पोटाला मठ के एक लामा के रूप में बताते हैं। स्वाभाविकरूप से, कोई ऐसे कागजातों को मात्र उत्सुकता चाहनेवालों के लिए या या दॉव को पूरा करने के लिए प्रस्तुत नहीं करता, जैसा कि मुझे अक्सर पूछा जाता है! प्रकाशकों ने ऐसे

कागजातों को देखा है और वे मेरी एक या अधिक पुस्तकों में अपने अग्रेषण में इसे प्रमाणित करते हैं।

कोई आदमी, किसी नीम हकीम, जो हमें बेहोश करने के लिए सिर पर हथौड़े से चोट करता हो, के पास नहीं जाएगा, और दर्द के इतना स्पष्ट होने पर, कोई हमेशा एक योग्यता प्राप्त डॉक्टर के पास जाएगा। उसी तरह से, किसी आदमी को, किसी नौसिखिए, जिसके पास सिर में कुछ काल्पनिक ध्वनियों के सिवाय, गूढ़विज्ञान का वास्तविक ज्ञान नहीं है, के पास नहीं जाना चाहिए; जैसा आप जानते हैं सिर की सभी आवाजें, अक्सर मानसिक गड़बड़ी की हो सकती हैं। आपको अपना गूढ़ विज्ञानी उतनी ही गहराई के साथ चुनना चाहिए, जितना कि आप अपनी बीमारी के डॉक्टर को चुनते हैं।

जब कोई व्यक्ति इस पृथ्वी को छोड़ता है, वे जो अगले तलों में जा चुके हैं, कुछ आगे बढ़े हुए (advanced) लोग हो सकते हैं। उस मामले में, केवल अधिक विचारणीय शक्तियों वाला कोई माध्यम ही सम्पर्क कर सकता है क्योंकि, सामान्य भौतिक अवधारणाओं में, वे जो लोग गुजर (मर) चुके हैं, एक भिन्न समय क्षेत्र में जा चुके हैं, और यदि आप इंग्लेंड से आस्ट्रेलिया को टेलीफोन करने का प्रयत्न करें, तब, जबतक कि आप अपने मित्र का समय क्षेत्र नहीं जानते, आप सम्पर्क नहीं कर सकते, उदाहरण के लिए, आप मध्यरात्रि में टेलीफोन करने का प्रयास करते हो सकते हैं। परंतु हमारे माध्यम के मामले में, हम किसी को बुलाने का प्रयास कर रहे हैं, जो पहले से ही भविष्य में, कुछ हजार प्रकाश वर्षों की दूरी पर है! अधिकांशतः कोई माध्यम, जिसके पास अनुभव की कमी है, उन बहकाने योग्य प्राणियों के द्वारा, जो मूलभूत प्राणी (fundamentals) कहलाते हैं, छला जाएगा। शायद हमको मूलभूत प्राणियों के ऊपर चर्चा करनी चाहिए ताकि हम विषय के सम्बंध में कुछ जान सकें।

बल्कि, उन प्राणियों के क्रम के सम्बंध में, जिन्हें हम मूलभूत कहते हैं, लोगों के पास उल्लेखनीय विचार हैं। अक्सर वे मानवों की आत्माओं के साथ भ्रमित हो जाते हैं, परंतु वे उस जैसे बिलकुल नहीं हैं। वे ठीक वैसे ही, जैसे कि बंदर आदमियों की नकल करते हैं, वे मानवों की नकल करते हैं, और एक औसत माध्यम, जो सूक्ष्मलोक में नहीं देख सकता, मूलभूत प्राणियों की मानवों की नकल के द्वारा बरबादी की ओर ले जाया जाएगा।

मूलभूत बुरी आत्मायें भी नहीं होतीं, वे केवल विचार आकृतियॉ होती हैं जो लगातार दोहराने के द्वारा पैदा की गई हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति लगातार पीता जाता है, तब वह व्यक्ति भ्रमित विचारों वाला हो जाएगा और अत्यधिक ऊर्जावाला और लंबे समय तक नियंत्रण में न रहने वाला, जंगली हो जाएगा और शायद गुलाबी हाथियों के विचारों या धब्बे वाली छिपकलियों, या कुछ वैसी ही चीजों के जंतर–मंतर पढ़ेगा। ये चीजें मूलभूत प्राणी होते हैं।

जैसा हमने कहा, उन्नयन का प्रत्येक चक्र, उनके द्वारा, जो एक चक्र को छोड़ते हैं और उनके द्वारा, जो एक चक्र को प्रारंभ करते हैं, बनता है, इसलिए हम उसे, जो प्रभावीरूप से, जीवित आत्माओं की या अपनी स्वयं की एक जीवन तरंग है, पाते हैं, और उन 'तरंगों' में से हरेक का, उन्नयन के लिए अपना खुद का योगदान होता है, ये ठीक वैसे ही, अपना स्वयं का प्रादर्श छोड़ता है, जैसे कि ऑक्सफोर्ड का आदमी, येल के आदमी की सभ्यता के ऊपर एक भिन्न प्रादर्श छोड़ता है, और बोस्टन का आदमी, एक भिन्न प्रकार का प्रादर्श छोड़ता है। इसलिए जब ये जीवन तरंग, एक स्थिर बल के रूप में, उनके स्मृति अवशेषों में जाती है, और चूंकि वहॉ अनेक सम्बंधित लोग रहे हैं, इस बल से उसमें, जो सूक्ष्मतल है, एक ठोस प्राणी विकसित हो जाता है।

ऐसे प्राणी, जो बन चुके हैं और बाद वाली तरंग आकृतियों या उन्नयन के चक्रों को अपने पीछे छोड़ देते हैं, ठोस प्राणी होते हैं, परंतु उनमें 'दिव्य चिनगारी (devine spark)' की कमी होती है, उनमें बुद्धि की कमी होती है, और बदले में, वे केवल नकल करने या उन चीजों का, जो उनकी चेतना में किसी समय प्रविष्ट हुई थीं, पुनरुत्पादन करने में समर्थ होते हैं। आप यदि काफी कड़ा प्रयत्न करें, एक

तोते को कुछ शब्द दोहराने के लिए पढ़ा सकते हैं; जिन शब्दों को वह आवश्यकरूप से समझता नहीं है, परंतु तोता, ध्वनि के प्रादर्श को दोहराता है। ठीक वैसे ही, मूलभूत प्राणी किसी सायबरनेटिक प्रादर्श (cybernatic pattern) को दोहराते हैं।

उन लोगों के लिए, जो वास्तविकरूप में, इस विषय में रुचि रखते हैं, मूलभूत प्राणियों को अनेक विभिन्न प्रकारों में, ठीक वैसे ही विभाजित किया जाता है, जैसे कि मानव, काले लोग, भूरे लोग, पीले लोग, सफेद लोग इत्यादि होते हैं। पृथ्वी के सूक्ष्मतल के साथ संलग्न, मूल प्राणियों के समूहों में मुख्य रूप से चार प्रकार होते हैं, और वैसे ही, हम कुछ को, ज्योतिष विज्ञान के गुणों के रूप में पाते हैं। ज्योतिषी, चूंकि ये मूलभूत प्राणियों के चार मुख्य प्रकार हैं, हवा की आत्माओं, अग्नि की आत्माओं, जल की आत्माओं और पृथ्वी की आत्माओं को जानता है।

जादूगर या कीमियागार, उनके प्रथम समूह को जादुई बौने (gnomes), दूसरे समूह को परी (sylph), तीसरे समूह को कुलदेवी (salamaders), और चौथे अंतिम समूह को उनींदा (undines) के रूप में संदर्भित करते हैं।

यदि आप इसे थोड़ा और आगे, ज्योतिषी से परे और जादूगरनियों के परे ले जाना चाहें, आप रसायन विज्ञानियों की स्थिति तक जा सकते हैं, क्योंकि आप कह सकते हैं कि पृथ्वी वाले समूह एक ठोस, जिसमें सभी अणु चिपके रहते हैं, को निरूपित करते हैं। ठोस के बाद, हमारे पास द्रव (पानी) है, जिसमें अणु स्वतंत्रता से घूमते हैं। हमारी सूची में अगली, वायु है, जिसमें विभिन्न प्रकार की गैसें भी सम्मिलित हैं, और हवा में अणु एक दूसरे को विकर्षित करते हैं। हमारे रासायनिक संवाददाताओं के लिए, अंतिम रूप से अग्नि है और अग्नि में अणु बदल जाते हैं या किसी दूसरे पदार्थ में रूपांतरण कर लेते हैं।

शब्द ''मूलभूत (fundamental)'' अधिकांशतः हमेशा उन प्राणियों के लिए, जो अभी अभी बताए गए समूहों में से किसी में, स्थान पाते हैं, आरक्षित रहता है, परंतु दूसरे समूह, जैसे कि प्रकृति आत्मायें (nature spirits), भी हैं। प्रकृति आत्मायें, पेड़ों और पौधों की बढ़त नियंत्रित करती हैं, और कार्बनिक यौगिकों के रूपांतरण करने में मदद करती हैं ताकि पौधों को समृद्ध बनाया जा सके और उन्हें खाद दी जा सके। इन सभी समूहों का, एक अधिस्वयं प्रमुख (Overself Head), और यदि आप प्राथमिकता देना चाहें, एक अधिआत्मा (Overspirit) होता है; ये मनु जाने जाते हैं। मनुष्य जाति का एक मनु है, हर देश का एक मनु है, और प्रकृति आत्माओं का एक मनु है, एक मनु है, जो पेड़ों की आत्माओं के कामों को, ठीक वैसे ही नियंत्रित करता है और देखभाल करता है, जैसे कि एक मनु, जो चट्टानों की आत्माओं के कामों को नियंत्रित करता है। अनेक–अनेक शताब्दियों पहले, मिस्र में, उच्चरूप से प्रशिक्षित पुजारी, इन मनुओं के सम्पर्क में आने के लिये सक्षम होते थे। उदाहरण के लिए, बिल्लियों का देव, हर जगह की बिल्लियों का मनु, बूवास्तेस (Bubastes)।

हमारे पास ऋणात्मक होने चाहिए अन्यथा हम धनात्मक नहीं पा सकते, इसलिए ठीक जैसे कि जहॉ अच्छी आत्मायें हैं, वैसे ही वहॉ बुरी आत्मायें, यदि आप चाहें तो उन्हें दैत्य कह सकते हैं, भी होती हैं। वे हमारे लिए यहॉ बुरी हैं, परंतु अस्तित्व के दूसरे तलों में वे अच्छी हो सकती हैं। यदि आप, कुल मिलाकर, विद्युतीयरूप से झुके हुए हों, तो यह स्पष्टीकरण आपको आकर्षित कर सकता है; मान लो आपके पास बारह वोल्ट की एक कार बैटरी है; इसका एक सिरा धनात्मक और दूसरा सिरा ऋणात्मक होता है। परंतु अब ये मानते हुए कि आप, इस पहली बैटरी के साथ श्रेणीक्रम में, छै या बारह वोल्ट की दूसरी बैटरी जोड़ते हैं, तब मूल बैटरी का ऋणात्मक, दूसरी बैटरी के लिए उतना ही धनात्मक होगा और दूसरी बैटरी का ऋणात्मक, पहली बैटरी के ऋणात्मक की तुलना में, उतना ही अधिक ऋणात्मक होगा! साधारण रूप में कहा गया ये सब, यह है कि हर चीज सापेक्ष और एक दूसरे के साथ तुलना किये जाने के लिये है। वर्तमान में, हमारे पास यहॉ दुष्ट आत्मायें हैं परंतु यदि हम एक और अधिक

खराब विश्व पा सकें, तब हमारी दुष्टात्मायें, उस विश्व में उतनी ही अच्छी होंगीं, और जो इस विश्व में अच्छी है, कुल मिलाकर, उच्चतम लोकों में, उस विश्व में, बहुत अच्छी नहीं होगी।

मैंने बताया कि आदमी के पास उन्नयन की विभिन्न तरंगे रहीं थीं। ठीक है, वास्तव में ऐसा ही है। उदाहरण के लिए, लेमूरिया (Lemuria) की एक प्रजाति थी, जो प्रमुखतः अंतःप्रेरणाओं (instincts) और अवधारणाओं (passions) से संचालित होती थी, और तभी उच्चतर भावनायें उन्नयित हुईं। उसके बाद, एटलांटिक की प्रजाति आई, जिसने उच्च भावनाओं से प्रारंभ किया और तब एक तार्किक मन (reasoning mind) का विकास किया। उसके बाद, आर्यों की प्रजाति आई; इसने और आगे से, क्रियाशील मन के साथ, प्रारंभ किया और अंततः एक अभौतिक मन प्राप्त किया। आर्यों के बाद, छठवीं प्रजाति में हम आए, जिसने अभौतिक मन के साथ प्रारंभ किया और अंततः आध्यात्मिक दृष्टि प्राप्त करेंगे। सातवीं प्रजाति के साथ, जो आध्यात्मिक दृष्टि से प्रारंभ करेगी, वह ब्रह्माण्ड की चेतना को प्राप्त करने तक चलती जाएगी।

आप लोगों में से उनके लिए, जो भूमि के खिसकने के सिद्धांत (theory of land drift) में रुचि रखते हैं, अर्थात्, कि प्रारंभ में, सम्पूर्ण विश्व एक ही महाद्वीप था और तब ये अपकेन्द्रीय घूर्णन (centrifugal rotation) के प्रभाव में टूट गया, अब वहॉ काफी विचारणीय प्रमाण हैं कि ये जो पेंजिया (Pangea) के नाम से जाना जाता था, पहले, लौरासिया (Laurasia), जो कि उत्तर में, और गोंडवाना देश (Gondwana land), जो दक्षिण में था, के नाम से जाने जाने वाले अलग–अलग दो बड़े महाद्वीपों में टूट गया। ये समय–समय पर, अलग–अलग भूमियों और महाद्वीपों में टूटे, तथापि ये हमको अपने मुख्य विषय से दूर ले जा रहा है।

माध्यम एक व्यक्ति है, जो मस्तिष्क की संरचना में कुछ भेद के साथ, अस्तित्व के दूसरे तलों से संदेशों को प्राप्त करने में, ठीक वैसे ही, जैसे कि एक रेडियो संदेशों को प्राप्त कर सकता है, जिसे बिना सहायता प्राप्त मानवीय कान, नहीं प्राप्त कर सकते, सक्षम होता है।

सामान्यतः माध्यम के ऊपर निर्भर करते हुए, एक माध्यम, सम्मोहन की एक प्रकार की या तो हल्की या भारी निद्रा में जाता है और सम्मोहन की तन्द्रा की उस अवधि में, माध्यम की चेतना दबा दी जाती है, ताकि दूसरे अस्तित्व, उनके नियंत्रणों को संचालित कर सकें और कुछ विचारों को शब्दों के रूप में अभिव्यक्ति दे सकें।

अधिकांश माध्यम, उन के बीच से, जो किसी विशेष उद्देश्य के लिए निम्नतर सूक्ष्मतल में रखे गए हैं, एक आत्मा पर नियंत्रण रखेंगे। आत्मा पर नियंत्रण या पथप्रदर्शक, जैसा भी आप उसे कहना चाहें, पुलिस के एक सिपाही की तरह काम करता है, और कुछ प्रकरणों में, उपद्रवी मूलतत्वों को माध्यम को नुकसान पहुंचाने से रोकता है।

माध्यम का अधिस्वयं, पथप्रदर्शक को स्वतंत्र लगाम देने के लिये जा चुका है, परंतु माध्यम, जो एक कुर्सी पर बैठा हुआ है, या एक कोच के ऊपर लेटा हुआ है, कुल मिलाकर, किसी भी चीज के प्रति जागरूक नहीं होगा। यदि आप देखते हैं कि माध्यम, घटनाओं में अत्यधिक रुचि लेते हुए आसपास देख रहा है, तब आप अधिक तार्किकरूप से सुनिश्चित हो सकते हैं कि आपके पास एक असली (geunine) माध्यम नहीं है। कुल मुद्दा ये है कि माध्यम को अपने स्वयं के व्यक्तित्व को पूरी तरह से एक ओर उठाकर रख देना चाहिए, और केवल मात्र एक टेलीफोन की तरह काम करना चाहिए। कुल मिलाकर, यदि आपको मृत्यु के दूसरी तरफ से कोई संदेश मिलने वाला है, आप माध्यम का बयान नहीं चाहते, आप एक स्पष्ट निष्पक्ष बयान चाहते हैं, और इसका केवल मात्र तरीका, जिससे कोई उस स्पष्ट निष्पक्ष बयान को प्राप्त कर सकता है, माध्यम के हस्तक्षेप के बिना, आत्मा के संप्रेषक को संप्रेषण करने देना है।

आपको फिर याद रखना चाहिए कि जब कोई, किसी, जिसे हम गुजरे हुए व्यक्ति की आत्मा

कह सकते हैं, के सम्पर्क में आता है, ताकि वे हमें, जिन्हें हम दूसरे विश्व में उनके स्वप्नों के लेखों के रूप में मात्र सुनते ही हैं, क्योंकि वास्तविक उन्नयित आत्मायें एक दूसरे आयाम में, जहॉ औसत माध्यम संभवतः नहीं पहुंच सकता, जा चुकी होती हैं, अपने अनुभवों को बता सकें। ये केवल तभी (सम्भव) है जब किसी के पास एक सच्चा स्वामी (master) हो, जो किसी को समय में आगे पहुॅचा सकता है, और उन बहुत आगे गई हुई आत्माओं से, एक संदेश वापस ला सकता है और यही कारण है कि उन लोगों से, जो गुजर चुके हैं, एक असली योग्य बयान को पाना, इतना मुश्किल है।

यह मानते हुए कि हम, एक औसत माध्यम के मामले में देखने का प्रयास कर रहे हैं। हमें कहने दें कि औरत के पास माध्यम सम्बंधी कामों के कुछ उपहार होते हैं और वह उन लोगों के साथ, जो गुजर चुके हैं, तालमेल बिठा सकती है, परंतु हम ध्यान रखें कि ये लोग, जो अभी अभी गुजरे हैं, अभी भी निम्नतर सूक्ष्मतल में हैं, वे उसमें हैं, जिसे हम सुधारगृह (purgatory) कह सकते हैं, वे माध्यमिक चरण में हैं, वे निर्देशों को पाने की प्रतीक्षा में कि क्या करना है, और कहॉ जाना है, प्रतीक्षाकक्ष में हैं।

मान लें कि आप इन लोगों को एक अस्पताल में, रोगियों के रूप में देखते हैं, चूंकि यह तथ्य है कि इन लोगों में से अनेक को, अपने पृथ्वी के अनुभवों के सदमों से उबरने के लिए, आत्माओं के निश्चित इलाज से होकर गुजरना पड़ता है। इसलिए हमें कहने दें कि हम इन लोगों में से एक के, जो एक अस्पताल में रोगी के रूप में हैं, सम्पर्क में हैं; रोगी बिस्तर में हैं, और इसप्रकार उसका ज्ञान केवल उसके बिस्तर से दिखाई देने वाले उस छोटे से क्षेत्र में, उसके आस पड़ौस तक सीमित है, वह अस्पताल के पूरे काम को नहीं देख सकता, और यदि वह दूसरे परिदृश्यों को देख सकता है, तब संभवतः यह केवल वह है, जिसे वह खिड़की में से देख सकता है।

मान लें कि आप, पथ प्रदर्शकों में से एक से, या किसी आत्मा से, जिसका विशेष कार्य है उन लोगों की मदद करना, जो मृत्यु के समीप हैं या वास्तव में मर चुके हैं, तारतम्य बैठा लेते हैं। यदि वे उसे बोलते हैं जोकि किसी अनुभवहीन छोटी नर्स, या अस्पताल में वार्ड की नौकरानियों के, साथ तारतम्य बिठाने के अधिक समान है और हालांकि आप अस्पताल कमेटी के व्याख्यान में नहीं जा सकते हैं, क्या आप पूरे दृश्य को, जो हो रहा है, अनुभव कर सकते हैं और आप अस्पताल को छोड़ने के द्वारा और कोई जैसा कह सकता है, नगर में दौरा करते हुए, मूल्यांकन कर सकते हैं।

जब कोई इस दुनियॉ को, जिसको हम पृथ्वी कहते हैं, छोड़ता है तो वह निम्नतर सूक्ष्मलोक, जिसे बाइबल सुधारगृह कहती है, में जाता है, और उसे, जैसा हम कह चुके हैं, बीमार आत्माओं के अस्पताल के रूप में माना जाता है, जहॉ अनेक सदमों, जो उन्होंने इस कठोर–कठोर पृथ्वी पर झेले या संजोकर रखे, के लिये उनका इलाज किया जाता है। दुर्भाग्यवश, निम्नतर सूक्ष्मलोक की तुलना, किसी मानसिक गृह, जिसमें रोगी आते हैं और उनके मामलों पर विचार किया जाता है, के साथ अधिक अच्छी तरह से की जा सकती है, ठीक वैसे ही जैसे कि एक मनोचिकित्सक, कई बार, रोगी के साथ चीजों की चर्चा करता है, ताकि वह अपने दोषों और बीमारियों को स्वयं ही बता सके, वैसे ही नई पहुंची हुई आत्मायें, ये देखने के लिए कि उसने पृथ्वी पर क्या गलत किया, और ये देखने के लिए कि अब उसे सुधारने के लिए क्या किया जा सकता है, निम्नतर सूक्ष्मलोक में रखी जाती हैं। तब थोड़े से समय के लिए आत्मा आराम करती है और स्वस्थ हो जाती है, और शायद, खुद को सहायता करने के लिये, सभी समय दवाइयॉ और इलाज लेते हुए, या अस्तित्व के अगले चरण में जारी रखने के लिए, सुखद उद्यान की भूमि में टहलती है।

आप पूर्णरूप से सराहना करेंगे कि सूक्ष्मलोक में लोग एक दूसरे के प्रति एकदम ठोस होते हैं। आप इस विश्व में एक दीवार से टकरा सकते हैं, परंतु एक 'प्रेत' उस दीवार में होकर चल सकता है, फिर भी, सूक्ष्मलोक और दूसरे लोकों में, उन निवासियों के लिए दीवारें अधिक ठोस होती हैं।

इस सब से आप देख सकते हैं कि यदि आप कुछ हलचल करें और किसी के साथ, जो गुजर

चुका है, सम्पर्क में आने का प्रयास करते हुए, माध्यम से माध्यम तक, और सियांस से सियांस तक जायें, तब आप उस व्यक्ति के लिए, विचारणीय हानि का कारण बन रहे होंगे। इस पर इस तरह विचार करें; एक प्रिय व्यक्ति पूरी तरह बीमार है, और मानसिक अस्पताल, या किसी दूसरे प्रकार के अस्पताल में ले जाया गया है, मान लें आप लगातार मिलते रहें और उस व्यक्ति को परेशान करते रहें, तब आप उस व्यक्ति की प्रगति को रोकते हैं। डॉक्टर अपना पूरा ध्यान वहॉ नहीं लगा सकते क्योंकि आप उसके मामलों में दखल देते हैं। आप इलाज को रोक रहे हैं और विचारणीय परेशानी खड़ी कर रहे हैं।

जब आप किसी अस्तित्व के साथ, जो निम्नतर सूक्ष्मलोक के परे जा चुका है, सम्पर्क में आने का प्रयास करते हैं, तब आप एक व्यक्ति के साथ, जो एक विशेष कार्य करने का प्रयास कर रहा है, हस्तक्षेप कर रहे होंगे। लोग जो इस दुनियॉ को छोड़ चुके हैं, केवल बादलों पर वीणा बजाते हुए, और स्तोत्रों को गाते हुए बैठते नहीं हैं। उनके पास, उसकी तुलना में जो यहां पृथ्वीलोक पर था, करने के लिए, काफी अधिक काम होता है! और यदि वे निरन्तर अन्यमनस्कता के शिकार हैं, तब वे अपने काम को नहीं निभा सकते।

मान लें आप एक बहुत व्यस्त कार्यकारी अधिकारी (executive), या किसी शोध वैज्ञानिक, या किसी शल्य चिकित्सक, जो एक मुश्किल शल्यक्रिया कर रहा है, को मिलते हैं, मान लें आप उसके कोट के किनारे को झटके देना जारी रखते हैं, तो आप उसे परेशान करते हैं और वह उस पर ध्यान नहीं दे सकता, जो वह कर रहा है।

माध्यमों को, जबतक कि अत्यधिक आवश्यक विशेष अवस्थाऐं न हों, और वे अत्यंत विशेष सुरक्षा साधनों के साथ न हों, कभी भी, कभी भी, गुजरी हुई आत्माओं के साथ सम्पर्क में आने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। सौभाग्यवश, यहॉ पहले से ही स्वयमेव बना हुआ एक सुरक्षा कवच है; अपनी खुद की कर्तव्यनिष्ठा में पूरी तरह से विश्वास करते हुए, अनेक लायक माध्यम, मात्र मूल प्राणियों से सम्पर्क करते हैं, जिनके पास काफी कुछ मौज है! यदि आप जानते हैं कि आप मूलतत्वों के साथ सम्पर्क कर रहे हैं, तो ये सब ठीक है, परंतु यदि आप उसे जानते ही हैं, तो आधे मसखरे बंदरों के गिरोह के साथ क्यों खेलना।

अध्याय सात

एक अध्याय का अन्त

अपने कानों को, शोक के साथ नीचे जमीन की ओर लटकाये हुए, कुत्ता, निराशापूर्ण ढंग से रिरियाया (whined disconsolately)। रिरियाया, और अपनी पूंछ को निरुत्साहित ढंग से अपनी टांगों के बीच लटकाते हुए, फिर से रिरियाया। उसके शरीर में, सहसा, भय की एक कंपकंपी, सिहरन हुई और जिसने उसे भौंकने की एक छोटी, तीखी आवाज को उदासीपूर्वक निकालने के लिये बाध्य कर दिया। जैसे ही कुत्ता दरवाजे पर दुबका, पेड़ों की पत्तियॉ, मानो कि सहानुभूति में खड़खड़ाईं। जैसे ही उसने कुछ दूरी पर किसी आवाज को सुना, दबी हुई ऊर्जा के साथ जोशयुक्त, वह क्षण भर के लिये सजग हो गया, तब वह फिर से निराशापूर्ण दैन्यता में गिर पड़ा। वह एक आवेग में उछला और लकड़ी के काम पर बड़ी खरोंचे डालते हुए, उसने दरवाजे को खरोंचा। अपने सिर को पीछे की ओर फेंकते हुए, उसने भेड़िये जैसी चीखों और आवाजों को सुर दिया।

घर के कोने के आसपास, नर्म, गद्दीदार कदम, ध्वनित हुए, और बूढ़ी आवाज ने कहा, ''ब्रूनो (Bruno), ब्रूनो! चुप रहो, क्या तुम चुप होगे? तुम अंदर नहीं आ सकते, मालिक बहुत बीमार है।'' तब, एक पश्च विचार (after thought) के रूप में, जोड़ते हुए, ''यहॉ– तुम मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें मलमूत्र त्याग के सायबान (Potting-Shed) में बाधूंगा, जहॉ तुम रास्ते से दूर रहोगे।'' बूढ़े माली ने अपनी जेबों को टटोला और जिल्दसाजी के धागे की लंबाई को निकाला। एक सिरे को कुत्ते की गरदन से गुजारते हुए, वह उसे दूरी पर स्थित पेड़ों के झुण्ड की ओर ले गया। कुत्ता अपना मुंह लटकाये हुए और रिरियायाते हुए, उदासीन भाव से, पीछे चला।

क्या गलत है, जार्ज (George)?'' रसोईघर की खिड़की में से एक जनानी आवाज ने पूछा।

''आह! कुत्ता जानता है कि क्या हो रहा है, कि क्या गलत है!'' अगला कुछ कहने से पहले, न रुकते हुए, जार्ज ने जवाब दिया। औरत, किसी अनदेखे साथी की ओर मुड़ी और फुसफुसाई, ''ठीक है, मैंने कभी नहीं किया, ये केवल ये दिखाता है कि, गूंगे पशु जानते हैं कि क्या चल रहा है, ये वह है, जो मैं कहती हूॅ?'' कुछ सूंघते हुए, उसने अपनी पीठ खिड़की की तरफ मोड़ी और अपने काम में लग गई।

पुराने बड़े घर में सबकुछ शांत था। क्रोकरी के बर्तनों की कोई आवाज नहीं, गृहकार्य की कोई आवाजें नहीं। शांति। लगभग श्मशान जैसी शांति। एक विस्फोट की भांति, छिपा हुआ टेलीफोन गूंजा और इससे पहले कि उसे जल्दी से उठा लिया जाये, फिर से गूंजा। दूर से फोन करने वाले की हल्की सी खड़खड़ाहट भरी आवाज और गंभीर मर्दानी आवाज में जवाब; ''नहीं श्रीमान्, मैं डरा हुआ नहीं हूॅ। कोई आशा नहीं है। डॉक्टर अब उसके साथ है।'' जबतक कि छोटी घंटी फिर से बजी, एक क्षणिक विश्राम, और प्रत्युत्तर आया, ''हॉ श्रीमान्, जैसे ही मुझे प्रथम अवसर मिलता है, मैं उसे आपकी ओर से सहानुभूति दूंगा। अलविदा!''

दूर के दरवाजे पर एक कोमल, छोटी, और समझदारी भरी झनझनाहट हुई। चूंकि दरवाजा खोला गया था, जल्दी करते हुए कदमों की शस–शस (shush-shush) चुप! चुप! और आवाज की अत्यन्त हल्की सी फुसफुसाहट हुई, ''आह, हॉ, फादर!'' एक अधेड़ सी जनानी आवाज ने कहा। ''वे आपके आने की अपेक्षा कर रहे हैं, मैं आपको ले चलूंगी,'' बूढ़ी गृहरक्षिका और पादरी ने शांतिपूर्वक, गलीचे बिछे हुए गलियारों के साथ साथ, और चौड़े जीने के ऊपर अपना रास्ता पकड़ा। एक शयनकक्ष के दरवाजे पर कोमलतम थापें और पादरी के प्रति फुसफुसाता हुआ एक शब्द। दरवाजा खामोशी के साथ खोला गया था और एक नौजवान औरत प्रकट हुई, और लैंडिग पर आई और उसने अपने पीछे के दरवाजे को बंद किया।

''वह तेजी से पीट रहा है,'' उसने पादरी से कहा, ''और उसने अकेले आपको बताने के लिये

कहा है। जब आप प्रवेश करेंगे, तब डॉक्टर कमरे से बाहर चला जायेगा। क्या आप मेरे साथ आयेंगे?'' वह मुड़ी और उसने शयनकक्ष में जाने वाले रास्ते को दिखाया।

कमरा बड़ा, बहुत बड़ा था, और वास्तव में, गुजरे हुए जमाने का अवशेष था। ऊँची खिड़कियों पर, प्रकाश और ध्वनि दोनों को बंद करते हुए भारी परदे लटक रहे थे। लगभग भूले हुए पूर्वजों के पोट्रेट, पुरानी पेंटिगें, दीवारों को सजा रहीं थीं। बड़े, पुराने पलंग के बगल से, हरे रंग के एक लैंप ने, उदास कमरे के आसपास, अनिश्चित प्रकाश को फेंका। एक छोटी, सिकुड़ी हुई आकृति – बदरंग हुई धुंधली त्वचा के साथ, झुर्रीदार और सूखा सा एक आदमी– चौड़े दोहरे पलंग (double bed) के ऊपर गतिहीन पड़ी थी। उसके पलंग के बगल से एक डॉक्टर बैठा था, जो पादरी का अभिवादन करने के लिये उठा। ''वह आपसे बहुत अधिक मिलना चाहता था,'' पहले वाले ने कहा। ''मैं कमरे को छोड़ दूंगा और बाहर आपकी प्रतीक्षा करूंगा। वह बहुत कमजोर है, इसलिये यदि मेरी आवश्यकता हो, तो मुझे बुला लेना।'' हामी भरते हुए, वह पलंग के आसपास टहला और नौजवान महिला के साथ कमरे के बाहर हो लिया।

एक क्षण के लिये पादरी ने अपने आसपास देखा, तब अपने छोटे डिब्बे को, पलंग के बगल की मेज पर रखा, ताकि वह रस्म के कुछ निश्चित समानों को निकाल सके। ''आह! मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है, धूल की भांति सूखी हुई एक आवाज फुसफुसाई। आओ और इसके बदले में मुझसे बात करो, फादर!''

पादरी ने पलंग की परिक्रमा की, झुका, और उसने मरते हुए बूढ़े आदमी के हाथों को पकड़ा। ''क्या तुम्हारी आत्मा तैयार है, मेरे बेटे?'' पादरी ने पूछा।

''यही तो वह है, जिसके बारे में, मैं भी आपसे पूछना चाहता हूँ,'' पुरातन आवाज से खीज उठी। ''मेरे साथ क्या होगा, मैं दूसरी तरफ क्या देखूंगा? क्या इसके बाद जीवन है?''

शांति से पादरी ने बात की, केवल उसे बताते हुए जिसकी कि उसका धर्म, उसे इजाजत देता था या जो वह जानता था। पीड़ित व्यक्ति की सांस उथली और मंद होती गई। पादरी शीघ्रतापूर्वक, दरवाजे की तरफ जोर से भागा और उसने डॉक्टर को इशारा किया। ''क्या मैं अंतिम संस्कारों को करूं?'' उसने फुसफुसाकर कहा।

डॉक्टर बिस्तर की तरफ गया और उसने एक व्यर्थ भुजा को उठाया। नब्ज को न पाते हुए, उसने अपना स्टेथोस्कोप अपने कानों में लगाया और बीमार आदमी के दिल की आवाज को सुना। अपने सिर को दुख के साथ हिलाते हुए, उसने चादर को खींच कर, मृतक के चेहरे पर ओढ़ा दिया और फुसफुसाया, ''मुझे आश्चर्य है, फादर, जीवन के दूसरी ओर क्या है? मैं आश्चर्य करता हूँ!

* * * * * * *

पश्चिमी धर्म, अपने खुद के कारणों से, मृत्यु के सम्बंध में कुछ अधिक नहीं बताते, परंतु, कुल मिलाकर, हम सबके लिये, जन्म की भांति मृत्यु, एक अत्यंत गंभीर मामला है और ऐसा लगता है कि तार्किक रूप से, मृत्यु, माध्यमों के सम्बंध में अध्याय के बाद आनी चाहिए, क्योंकि यदि कोई मरे नहीं तो माध्यम उसके संपर्क में आने का प्रयास नहीं कर सकते थे। इसलिये हम मृत्यु पर चर्चा करने वाले हैं क्योंकि, कोई बात नहीं हम कोई भी हों, मृत्यु वह चीज है, जो वैसे ही, जैसे जन्म आता है, हम में से सभी को आती है। परंतु, आप जानते हैं, मृत्यु वास्तव में जन्म है! हमें देखें कि वह कैसे करीब आती है।

एक बच्चा, अपनी मां के अंदर उस गर्म, सुखद, अंदर के जीवन को समाप्त करता है, और अनिच्छापूर्वक एक ठण्डे, कठोर बाहरी विश्व में प्रकट होता है। जन्म की पीड़ा, मृत्यु की पीड़ा है, पुराने का मरण और एक नई अवस्था में जन्म। एक व्यक्ति पृथ्वी पर मरता है, और मृत्यु के कष्ट, अस्तित्व की किसी भिन्न अवस्था में जीवन के कष्ट होते हैं। अधिकांशतः, मृत्यु –स्वयं मृत्यु– पूरी तरह से

कष्टरहित प्रक्रिया है। वास्तव में, जैसे ही मृत्यु समीप आती है, प्रकृति, विभिन्न शारीरिक प्रक्रियाओं के रूप में, शरीर के तंत्र में एक प्रकार की बेहोशी ला देती है, बेहोशी, जो कुछ निश्चित हलचलों को चलाये रखने के लिये, शारीरिक अनैच्छिक क्रियाओं को चलने देते हुए, वास्तविक दृष्टियों को छीन लेती है, जिसे लोग मृत्यु के कष्ट समझते हैं। लोग वास्तव में, कष्ट और मृत्यु या यदि आप प्राथमिकता दें, मृत्यु और कष्ट, को जोड़ देते हैं, क्योंकि अधिकांश मामलों में, लोग जो गंभीर रूप से बीमार हैं, प्रकट रूप से कष्ट में मरते हैं, परंतु वह कष्ट, ध्यान रखें, मृत्यु का कष्ट नहीं है, परंतु वह कष्ट, स्वयं बीमारी के द्वारा पैदा किया हुआ होता है। शायद कैंसर, शरीर के अंगों को प्रभावित करने वाली कोई चीज, नाड़ियों के सिरे की जकड़न, या उन्हें खाती हुई कोई चीज हो। परंतु हम याद रखें कि ये कष्ट, बीमारी का कष्ट है, शिकायत का कष्ट है, स्वयं मृत्यु का नहीं।

मृत्यु, इस लोक से अगले लोक में संक्रमण की वास्तविक अवस्था, इस भौतिक शरीर को छोड़ने की वास्तविक स्थिति, बेहोश करने वाले गुणों के कारण, एक कष्टरहित प्रक्रिया है, जो मृत्यु के क्षणों में, अधिकांश शरीरों में होती है। हम में से कुछ जानते हैं कि मरना और हर चीज को याद रखना, और फिर भी सबकुछ याद रखते हुए वापस आना, क्या है। मृत्यु की प्रक्रिया में, हमारे पास एक शरीर, जो बीमार है, जिसकी क्रियायें मंद पड़ रही हैं, होता है। परंतु इसको याद रखें, प्रक्रियायें असफल हो रंही हैं, इसका अर्थ है देखने समझने, या आत्मसात् करने की क्षमता, या कष्ट के आवेगों को समझने की भी क्षमता मंद पड़ रही है। हम जानते हैं कि कईबार लोग, मरते समय कष्ट का आभास देते हैं परंतु फिर से ये एक भ्रम है।

मरता हुआ शरीर, वह शरीर है, जो सामान्यतः (दुर्घटना के मामले को छोड़कर) बर्दाश्त के अंत की सीमा तक पहुॅच चुका होता है, वह और अधिक आगे नहीं जा सकता, यांत्रिकी क्षीण होती जाती है, गिरते हुए जीवधारियों में पुनः नवीनीकरण के लिये शारीरिक क्रियाओं को करने की और अधिक क्षमता नहीं रह जाती। अंततः हृदयगति बंद हो जाती है, श्वसन बंद हो जाता है, डॉक्टरी रूप से कोई व्यक्ति तब मृत होता है, जब उसके होंठों के सामने रखे गये एक दर्पण के ऊपर उसकी सांस जमती नहीं; डॉक्टरी और वैधानिक रूप से, एक व्यक्ति तब मृत होता है, जब वहॉ नब्ज या हृदय धड़कन नहीं रहती।

तथापि, लोग क्षण भर में नहीं मरते। दिल की धड़कन बंद होने, और फेफड़ों के पंप करना बंद होने के बाद, मरने वाली अगली चीज, मस्तिष्क होता है। मस्तिष्क, ऑक्सीजन की अमूल्य आपूर्ति के बिना, और अधिक जीवित नहीं रह सकता, परंतु मस्तिष्क भी तत्काल ही नहीं मरता, उसमें भी कई मिनट लगते हैं। कुछ एकदम अधिकृत मामले हुए हैं, जिनमें लोगों के सिर काट दिये गये और सिर को शरीर से अलग कर दिया गया, (और) सार्वजनिक निरीक्षण के लिये लटका दिया गया। (फिर भी) होठों ने हिलना –डुलना जारी रखा और होठों को पढ़ने वाला कोई, बनते हुए शब्दों को सभेद पहचान सकता है। स्पष्ट रूप से, केवल होठों को पढ़ने वाला ही बता सकता है कि क्या कहा जा रहा है, क्योंकि जब गरदन काट दी गई हो, और फेफड़ों में से हवा की आपूर्ति बंद कर दी गई हो, कोई बोली नहीं निकल सकती। ये स्वरतंतुओं (vocal chord) में होकर गुजरने वाली हवा की आपूर्ति ही है, जो ध्वनि पैदा करती है।

मस्तिष्क के मर जाने के बाद, ऑक्सीजन की कमी के कारण मस्तिष्क के काम करने के अक्षम होने के बाद, शेष शरीर धीमे धीमे मरता है। विभिन्न अंग पूरे एक दिन या ऐसे ही कुछ (समय) में मरते हैं। तीन दिनों की समाप्ति के बाद, शरीर, सड़ते हुए प्रोटोप्लाज्म का मात्र एक लोथडा रह जाता है, किंतु लाश का कोई अर्थ नहीं होता, यह अमृत्य आत्मा –अधिस्वयं ही है, जिसका कोई अर्थ है। परंतु अब हम, डॉक्टरी मृत्यु के क्षण पर पीछे चलें।

इस अवस्था में लाश एक बिस्तर पर पड़ी है। सांस लेना बंद हो गया है। अतीन्द्रिय ज्ञानी, जो

(मौके पर) उपस्थित है, शरीर के ऊपर एक हल्की सी धुंध जैसा बादल बनते हुए देख सकता है। ये शरीर में से प्रवाहित होता है, सामान्यतः नाभि से, यद्यपि विभिन्न लोगों के, रजत तंतु के निकास, भिन्न भिन्न होते हैं।

धीमे धीमे बादल आपस में मिल जाते हैं और घनीभूत हो जाते हैं, अब इनके अणु कम छितराये हुए होते हैं। धीमे धीमे शरीर के ऊपर एक छायामय आकृति बनती है; जैसे जैसे मृत्यु की प्रक्रिया आगे बढ़ती है, आकृति उतनी ही अधिक, और अधिक शरीर जैसी हो जाती है। अंततः जैसे जैसे दूसरे अंग काम करना बंद करते हैं, अंत में शरीर, जिसके ऊपर ये तैरते हैं, की एकदम सही आकृति प्राप्त करते हुए बादल मोटा और बड़ा होता जाता है।

तंतु, जिसे हम रजत तंतु कहते हैं, भौतिक शरीर और सूक्ष्मशरीर को जोड़ता है, क्योंकि बादल वास्तव में, सूक्ष्मशरीर है। यह तंतु, धीमे धीमे, जबतक कि अंत में यह धुंधला नहीं हो जाता, पतला होता जाता है और चला जाता है। केवल तभी, शरीर वास्तव में मरता है, केवल तभी, वास्तविक व्यक्ति दूसरे जीवन में, उन्नयन के दूसरे चरण में, प्रवाहित होता है। एकबार जब धुंधली आकृति चली जाती है, इससे बिल्कुल भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि मांस के उस खोल का क्या होता है, इसे जलाया जा सकता है, या दफनाया जा सकता है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या होता है।

यहॉ, एक क्षण के लिये, उस मुद्दे के ऊपर, जिसे चेतावनी के रूप में समझा जा सकता है, विषयांतर करना, शायद मौके की बात होगी, क्योंकि अनेक लोग, वास्तव में, नये 'मृतकों' को जीवन में जारी रहना मुश्किल बना देते हैं! जब कोई व्यक्ति मर चुका है, तो उस व्यक्ति को, यदि संभव हो, दो या तीन दिनों के लिये बिना स्पर्श किये छोड़ दिया जाना चाहिए। निश्चितरूप से, उस लाश को प्राप्त करना और किसी मुर्दाघर में एक ताबूत के अंदर संभाल कर रखना और तमाम सदाशयी लोगों का जाना और सभी प्रकार की श्रद्धाजंलियों, जो अधिकांशतः उनका आशय नहीं होता, को बड़बड़ाना, हानिकारक होता है।

जब तक रजततंतु कट न जाये और स्वर्णिम कटोरा ध्वस्त न हो जाये, तैरती हुई सूक्ष्म आकृति, लोगों के, जो उसके गुजर जाने पर टिप्पणियॉ कर रहे हैं, उन विचारों को पकड़ सकती है। और आगे, यदि कोई लाश तीन दिन से कम समय में जला दी जाये, सूक्ष्म आकृति में, अक्सर तेज दर्द होता है, और पर्याप्त उत्सुकतापूर्वक, कष्ट, जलती हुई गर्म आग का नहीं होता, बल्कि तीव्र ठंड का होता है। इसलिये यदि आप उन लोगों को महत्व देते हैं, जो पहले जा चुके हैं और यदि आप वैसा करेंगे, जैसा कि आप अपने लिये कराना चाहते हैं, जब भी संभव हो, आप सुनिश्चित करें कि कोई व्यक्ति, जो मर चुका है, के पास, अपने भौतिक शरीर से पूरी तरह से अलग होने के लिये, पूरे तीन दिन हों।

परंतु हम उस चरण में आ गये हैं, जहॉ आत्मा या जीवात्मा ने शरीर को छोड़ दिया है, आत्मा वहॉ जा चुकी है, जहॉ कि वह दूसरी आत्माओं से मिलती है, और वास्तव में, वे एक दूसरे को एकदम ठोस रूप में देखते हैं, जैसे कि पृथ्वी पर हम लोग। आप तथाकथित प्रेत को केवल एक पारदर्शी या अर्द्धपारदर्शी व्यक्ति के रूप में देख सकते हैं क्योंकि मनुष्य के हाड़मांस के शरीर की तुलना में प्रेत उच्चतर कंपनों में होता है; परंतु– और मैं इसका मजाक नहीं बना रहा हूँ– दो प्रेत, जैसे कि हम मांस के शरीर में रहने वाले दो मानव एक दूसरे के लिये होते हैं, एक दूसरे के लिये दो ठोस लोग होते हैं।

यदि किसी के पास, भिन्न आयाम वाला एक व्यक्ति है, तब वे संभवतः, मांस में होने वाले मानवों को प्रेतों की भांति देख सकते हैं, क्योंकि इसपर विचार करें; कोई द्विविमीय वस्तु, एकविमीय छाया डाल सकती है, कोई त्रिविमीय वस्तु, द्विविमीय छाया डाल सकती है, परंतु एक चार आयाम वाली वस्तु (चौथा आयाम फिर से!) एक तीन विमीय छाया डालता है, और आप ये कैसे समझते हैं कि, किसी चौथे आयाम वाले व्यक्ति के लिये, आप मात्र एक अर्द्धपारदर्शी छाया नहीं हैं।

आत्मा, तब, शरीर को छोड़ चुकी है और ऊपर जा चुकी है, और यदि यह एक उन्नयित आत्मा

है, अर्थात् यदि यह मृत्यु के बाद के जीवन को जानती है, तब इसे वहॉ, जिसे स्मृतियों का हॉल (Hall of memories) कहा जाता है, जहॉ पिछले जीवन की सभी प्रकार की घटनायें देखी जा सकती हैं, जहॉ सभी गलतियॉ समझी और सुधारी जाती हैं, जाने में सहायता पहुंचाई जा सकती है। इसे, वास्तव में, कुछ धर्मों के अनुसार, निर्णय का दिन या निर्णय का हॉल कहा जाता है, परंतु हमारे धर्म के अनुसार मनुष्य स्वयं ही अपने आप का निर्णय करता है, और वहॉ, निर्णय करता हुआ, स्वयं मनुष्य की तुलना में, कोई कठोर न्यायाधीश नहीं होता।

दुर्भाग्यवश, अक्सर ऐसा होता है कि कोई व्यक्ति मरता है और वह मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास नहीं रखता। उस मामले में, वह कुछ समय के लिये आसपास, मानो कि अंधेरे में, मानो कि किसी विलक्षण काले धुंध में भटकता रहता है। वह अधिक और अधिक दीनतापूर्ण अनुभव करते हुए, जबतक कि अंत में, वह यह अनुभव न कर ले कि वह कुल मिलाकर, अस्तित्व की किसी आकृति के रूप में है, आसपास भटकता रहता है; तब शायद, कुछ प्रारंभिक शिक्षायें, उसकी मदद को आयेंगी, वह रविवासरीय स्कूल को गया हुआ हो सकता है, वह ईसाई, मुसलमान हो सकता है, जहॉ तक कि उसने कुछ मूलभूत प्रशिक्षण पाया है, जहॉ तक कि इन चीजों के सम्बंध में, उसके पास पहले से समझा हुआ कुछ विचार है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह क्या है, उसे सहायता पहुॅचाई जा सकती है।

मान लीजिये एक व्यक्ति, ईसाई धर्म की किसी शाखा के अंतर्गत पालापोसा गया था, तब उसकी विचार आकृतियॉ, स्वर्ग और देवदूतों और उसी प्रकार की दूसरी चीजों की हो सकती हैं, परंतु वास्तव में, यदि उसे पूर्व के किन्हीं निश्चित भागों में पालापोसा गया होता, तो वह भिन्न प्रकार के स्वर्गों का विचार करता, जहॉ मांस (शरीर) के सभी आनंद, जिनको वह जीवित रहने के दौरान– या मानो कि जब वह मांस के शरीर में था, संतुष्ट नहीं कर पाया था– कहने के लिये, उसके हैं।

इसप्रकार हमारा आदमी, जो अभी अभी धर्ममंडली में था, कुछ समय के लिये, विचार आकृतियों से आबाद, इस पर निर्भर करते हुए कि वह विश्व के किस भाग से आया है, देवदूतों की विचार आकृतियॉ या सुंदर कुमारियों की विचार आकृतियॉ, जो उसने स्वयं ही पैदा की हैं, एक काल्पनिक लोक में जाता है, और वह, जबतक कि वह आसपास के विभिन्न भुलावों, विभिन्न गलतियों को समझना प्रारंभ नहीं करता, अनंत समय के लिये आगे चलता जाता है। उदाहरण के लिये, वह पाता है कि देवदूतों के पंख पिघल रहे हैं, या एक पूर्व दिशावासी होने पर वह पा सकता है कि सुंदर कुमारियों में से कुछ निश्चतरूप से उतनी सुंदर नहीं हैं, जैसी उसने सोची थीं; ईसाई इस निष्कर्ष पर पहुॅच सकता है कि यह वैसा स्वर्ग नहीं है, जहॉ लोग पीतल के मुकुट धारण करते हैं, क्योंकि लोग, हर समय अपने सर्वोत्तम रात्रि परिधानों को पहने हुए, वीणा बजाते हुए, बादल पर बैठे नहीं रह सकते। इसलिये अंदर संदेह, विचार आकृतियों का संदेह, जो देखा जा रहा है, उसकी वास्तविकता पर संदेह पैदा होता है। परंतु हम दूसरे पक्ष को लें।

एक व्यक्ति बहुत अच्छा आदमी नहीं था, वह नर्क की सोचता है, वह सभी प्रकार के कष्टों और दर्दों को पाता है, क्योंकि वह विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर, उसे उकसाते हुए एक बूढ़े शैतान का प्रतिबिंब है। उसके पास आग, गंधकाश्म (brimstone), गंधक, और सभी प्रकार की उन चीजों, जो किसी दवा बनाने वाली प्रयोगशाला में अधिक लाभदायक और उपयोगी रही होतीं, के विचार हैं। फिर संदेह घुसता है, इस कष्ट का उद्देश्य क्या है, उसे किस प्रकार इतनी बुरी तरह से उकसाया जा सकता है जबकि वहॉ खून नहीं है, उसकी हड्डियां, हर कुछ मिनटों या ऐसे ही कुछ समय में कैसे तोड़ी जा सकती हैं!

धीमे–धीमे संदेह बढ़ते जाते हैं, धीमे–धीमे उसका आध्यात्मिक मन, उनकी, जिन्हें हम आध्यात्मिक विश्व के ''सामाजिक कार्यकर्ता'' कह सकते हैं, पकड़ में आता जाता है। अंत में, जब वह सहायता के लिए विनम्र हो जाता है, वे उसे हाथ में लेते हैं, वे सभी प्रकार के नाटकीय उकसावों को,

जो आदमी की कल्पनाओं ने बनाये हैं, साफ कर देते हैं, वे उसे वास्तविक यथार्थ देखने देते हैं, वे उसे देखने देते हैं कि मृत्यु के बाद का दूसरा पक्ष, उसके इस पक्ष (पृथ्वी के पक्ष) की तुलना में, अच्छा, बहुत अच्छा स्थान है।

अब हम, एक बार फिर, विषय से थोड़ा हटें; ये आदत बनती जा रही है, परंतु –हम विषय से हटें। हम किसी रेडियो स्टूडियो में माइक्रोफोन के सामने एक व्यक्ति की कल्पना करें, वह कुछ विशेष प्रकार की आवाज – ''आह'' करता है, वह ''आह'' उसको छोड़ देती है, माइक्रोफोन में कंपन के रूप में प्रवेश करती है, एक विद्युतधारा के रूप में अनुवादित हो जाती है और एकदम अकेले पथ पर यात्रा करती है। अंततः वह अनेक उपकरणों में होकर गुजरती है और आह का बहुत ऊंची आवृत्ति वाला संस्करण हो जाती है। ठीक उसी तरह से, पृथ्वी के ऊपर कोई शरीर, ध्वनि का निम्न कंपन है, आत्मा, या अधिस्वयं या आप उसे जो भी कहना चाहें, को रेडियो कंपनों को आह के निकट सम्बंधी के रूप में निरूपित किया जा सकता है।

क्या आप समझ रहे हैं कि मैं किसके बारे में बात कर रहा हूँ ? संस्कृत शब्दों को उपयोग में लाए बिना अथवा बौद्ध–दर्शन में जाये बिना व्यक्त करना, मानो कि एक कठिन अवधारणा है, परंतु हम अभी उस तरह की ऐसी कोई चीज नहीं करना चाहते। अभी हम चीजों के ऊपर, तथ्यात्मक पदों के रूप में, तथ्यात्मक बात करें। मृत्यु तथ्य का एक स्पष्ट मामला है, और जबतक कि अंत में, हम पृथ्वी पर जीवन–मरण के दुःखों से, कष्टों से मुक्त न हो जायें, हम समय–समय पर इसमें होकर गुजरते हैं। परंतु याद रखें, जब हम उच्चतर तलों, और अस्तित्व के विभिन्न रूपों में आगे बढ़ते हैं, वहॉ भी हमको उसके साथ संतुष्ट होने के लिये, ''जन्म'' और ''मृत्यु'' मिलती है, परंतु हम जितना ऊपर जाते हैं, हमारे अस्तित्व के चरण में ये दोनों चीजें उतनी ही कष्टरहित और आनंददायक होती हैं।

ठीक है, हम बेचारे उस मित्र की ओर वापस चलें, जिसको हमने आत्मालोक में छोड़ा था, वह शायद हमारी प्रतीक्षा करते–करते थक गया है, परंतु आत्मालोक, या मानो कि सूक्ष्म चरण, ध्यान रखें, एक माध्यमिक चरण है। कुछ धर्म इसे स्वर्ग से सम्बंधित करते हैं; उनमें पृथ्वीलोक बैकुण्ठ और अंततः स्वर्ग होते हैं – बशर्ते कि पीड़ित को पहले नरक में न भेजा जाए।

हमारा आदमी, ये देखने के लिए कि उसने अपने जीवन में किसप्रकार का घपला किया है, आत्मलोक में है। क्या उसने कुछ काम, जो उसको करने चाहिए थे, बिना सम्पन्न हुए छोड़े हैं, क्या उसने वह काम किए हैं, जो उसको नहीं करने चाहिए थे? यदि वह एक सामान्य मानव है, तो दोनों अवस्थाओं में उत्तर ''हाँ'' में होगा। इसलिए वह, ये देखने के लिए उसने अपने पिछले जीवनों में क्या किया, वह चीजों को सीखने में, जो उसको सीख लेनी चाहिए थीं, किस प्रकार असफल रहा स्मृतियों के हॉल में जाता है और तब, जब वह अपने दोषों और अपनी कामयाबियों को देखता है, वह विशिष्ट पथप्रदर्शकों के साथ चर्चा करता है– जो संयोगवश, लाल भारतीय या लंबी दाढ़ी वाले प्राचीन चीनी नहीं, बल्कि व्यक्ति के अपनी ही प्रकार के अत्यंत विशिष्ट पथप्रदर्शक, उसकी खुद की मूल आस्थायें इत्यादि, होते हैं, लोग जो समस्याओं, जिनके साथ उसका मतभेद हुआ, को जानते हैं, वे जानते हैं कि वह उनमें कैसा रहा है, वे जानते हैं कि समान परिस्थितियों में उन्होंने कैसे व्यवहार किया होता। वे थोड़े से अधिक उन्नयित, थोड़े से अधिक प्रशिक्षण प्राप्त हैं, उसी ढंग से जैसे कि कैरियर का एक सलाहकार किसी व्यक्ति को बता सकता है कि किसी निश्चित पात्रता को किस प्रकार प्राप्त किया जाए ताकि बाद में वह किसी विशिष्ट नियुक्ति के लिए प्रयत्न कर सके, वे देख सकते हैं कि इस व्यक्ति को क्या सीखना है।

इस मुलाकात के बाद, अवस्थायें और परिस्थितियॉ चुनी जाती हैं ताकि वह व्यक्ति पृथ्वी पर एक छोटे बच्चे, शायद एक नर के रूप में, शायद एक मादा के रूप में शरीर में वापस आ सके। ये आप में से कुछ को विचलित कर सकता है, परंतु लोग इस पृथ्वी पर पहले नर के रूप में और तब

मादा के रूप में आते हैं, ये सब, उस पाठ के प्रकार पर, जो सीखा जाना है, सीखने के लिये कौन सा सर्वाधिक लागू होता है, निर्भर करता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि चूंकि आप अभी नरत्व वाले, नर (male male) ही हैं, या एक सीमांत रूप से स्त्रीत्व वाली मादा (extremely feminine female), आप अगले जीवन में या बाद के जीवन में वही होंगे, आपको रवैये में परिवर्तन करने की आवश्यकता हो सकती है, आप ये देखना चाह सकते हैं कि दूसरे व्यक्ति को क्या झेलना पड़ा था।

किसी व्यक्ति के बारबार जन्म ले चुकने के बाद, वे उस हालत में आते हैं कि उन्हें इस पृथ्वी के तल पर और अधिक नहीं पैदा होना पड़ता, परंतु अपने अंतिम जीवन को पृथ्वी पर जीता हुआ व्यक्ति लगभग बिना अपवाद के अत्यंत कठोर समय, दीनतापूर्ण, पीड़ाओं, गरीबी, नासमझी से भरा हुआ समय गुजारता है। कैसे भी, दीनता, गलतफहमी और सभी प्रकार की पीड़ायें होती हैं, जैसा कि कोई कह सकता है, प्रभाव, जो अंततः किसी व्यक्ति को एक अस्वाभाविक मानव होने के बजाए, एक अच्छी आत्मा बनने के लिए, उठने के लिए तैयार करता है।

इस पृथ्वी पर अंतिम जीवन जीने वाला व्यक्ति, उनकी बजाए जो सर्वाधिक भाग्यशाली, इस पृथ्वी पर अंतिम जीवन जी रहे हैं, अक्सर (पृथ्वी पर) सबसे अधिक दुर्भाग्यशाली व्यक्तिओं में से एक माना जाता है। उनकी सभी कठिनाइयॉ इस कारण से होती हैं क्योंकि वे ऋणों का भुगतान इत्यादि करते हुए, साफ हो रहे हैं, बाहर जाने के लिए तैयार हो रहे हैं। वे अगले जीवन में मांस के शरीर के माध्यम से नहीं सीख सकते, इसलिए उन्हें इस जीवन में भारी खुराक दी जाती है। इसलिए वे मरते हैं, और अधिकांशतः, यदि वे कभी इसके बारे में सोचते हैं, वे अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

तब आत्मालोक में वापस आकर वे अच्छा विश्राम करते हैं, क्योंकि निश्चितरूप से उन्होंने इसे कमाया है, वे विश्राम पाते हैं, जबकि वे कुछ वर्षों के लिए, पृथ्वी के समय के अनुसार, थोड़े से ही वर्षों के लिए सोए हुए हो सकते हैं। तब उनका पुनर्वास किया जाता है, और कोई कह सकता है कि पुनः परिस्थितियां बनाते हुए, वैसा ही सब कुछ बनाया जाता है। इसके बाद, वे फिर से ऊपर, हमेशा ऊपर, हमेशा ऊपर की तरफ की तरफ वाले पथ पर, प्रारम्भ करते हैं। इसलिए एक जीवन में महान पैगम्बर, जो जानने को था, उसे पूरा सीख चुका है या ऐसा सोचता है कि उसके पास (ये सब) है, उन्नयन के दूसरे चरण में, जहॉ सभी प्रकार की विभिन्न क्षमतायें, सभी प्रकार की भिन्न भिन्न प्रतिभायें, जिन पर उसको स्वामित्व पाना है, चलता जाता है। वह उस लड़के की तरह से है, जो साइकिल पकड़े हुए है – लड़का चढ़ना और दूसरी खराब चीजों को सीखता है, तब, जब वह कमोवेश बिना गिरे हुए टिकने लगता है, वह एक मोटरसाइकल के ऊपर प्रयत्न करता है ; ये थोड़ी अधिक जटिल है, क्योंकि उसके पास, संभालने के लिए, दूसरे नियंत्रण होते हैं। मोटरसाइकल से कार तक, कार से हवाईजहाज तक, एक सामान्य हवाईजहाज से और अधिक कठिन हेलीकॉप्टर तक। कोई, हर समय, अधिक, और अधिक, कठिन चीजों को सीख रहा होता है।

जब हम सोने को जाते हैं, हम सभी –ठीक है, असलियत में, हम कहें कि हम में से लगभग नब्बे प्रतिशत –सूक्ष्मलोक की यात्रा करते हैं, हम आत्मालोक में, सूक्ष्मलोक में जाते हैं। जैसा ईसा ने कहा था, ''मेरे पिता के घर में अनेक विले (mansions) हैं, मैं आपके लिए रास्ता बनाने के लिए जाता हूॅ।'' आत्मालोक में अस्तित्व के अनेक तल, अनेक ''विले'' हैं। पृथ्वी तल के सर्वाधिक समीप सूक्ष्मलोक है, इसके परे वह है, जिसको कोई आत्मालोक कह सकता है। लोग, जो पृथ्वी पर मर चुके हैं, आत्मालोक में जाते हैं, परंतु यदि वे चाहें तो वे, उन लोगों को, जो पृथ्वी के दिन की समाप्ति के बाद ऊपर हैं, देखने के लिए सूक्ष्मलोक में नीचे आ सकते हैं। ये कुछ वैसा ही है, जैसे कि किसी जेल में आगन्तुकों का मिलने आना, परंतु आपके लिए ये सुखदायक विचार हो सकता है, क्योंकि, जब आप आत्मालोक में हैं, उस समय आप, उन लोगों से मिलना चाह सकते हैं, जो पृथ्वी पर आपके सहयोगी थे।

उच्चतर लोक में जाते हुए, आपके लिए ये अनुभव करना, कि जब आप (सूक्ष्मलोक में नहीं) आत्मालोक में हैं, आप केवल उन लोगों से मिल सकते हैं, जो आपके साथ अनुशीलनीय (compatible) हैं, आप उनसे नहीं मिल सकते, जो आपसे घृणा करते हैं या जिनसे आप घृणा करते हैं, और भी अधिक सुखदायी होगा। आपके आसपास वे लोग हैं, जो आपके प्रति आकर्षित हैं, आप केवल उन से मिल सकते हैं, जिनके लिए आप अनुशीलनता, दयालुता, सहनशीलता, या प्रेम अनुभव करते हैं।

सूक्ष्मतल में आप, अक्सर उन लोगों से मिल सकते हैं, जिन्हें आप विशेष रूप से पसन्द नहीं करते; आप पृथ्वी पर, किसी व्यक्ति को तीव्रता के साथ नापसंद कर सकते हैं और तब, जब आप दोनों रात को अपने शरीरों को छोड़ें, आप सूक्ष्मलोक में जायें और आप मिल सकते हैं, सूक्ष्मलोक की भाषा, या स्पेनिश, अंग्रेजी, जर्मन, या किसी दूसरी भाषा में, चर्चा कर सकते हैं और आप निर्णय कर सकते हैं कि आप दोनों के बीच मतभेदों को पाटने का प्रयत्न करेंगे, आप अनुभव कर सकते हैं कि मतभेद काफी दूर तक जा चुके हैं। इसलिए आप चर्चा करते हैं, आप और आपके सलाहकार, दोनों ही सूक्ष्मतल में, आप तय करते हैं कि आप अपने मतभेदों को पाटने के लिए क्या कर सकते हैं।

सूक्ष्मलोक में भी, आप अक्सर चर्चा करते हैं कि आप पृथ्वी के भौतिक विश्व में क्या करने जा रहे हैं। सूक्ष्मलोक में आप फैनी (Fanny) आन्टी, जो एडीलेड (Adelaid) या वैसे ही किसी दूसरे स्थान में रहती है, से मिल सकते हैं और वह कहेगी, ''ओह, मारिया मटिल्डा (Maria Matilda) (या वैसा ही कोई दूसरा नाम), काफी समय पहले, मैंने तुम्हें ऐसे ऐसे, एक पत्र लिखा है, वह तुम्हें कल, जब तुम पृथ्वी पर अपने शरीर में वापस पहुंचोगी, मिल जाएगा। तब, जब आप सुबह जगती हैं, आपको फैनी आंटी के सम्बंध में एक फालतू सा विचार या ये जो कुछ भी हो, आता है, और, आप आधे मन से, अपनी पत्र पेटी की तरफ पैदल आते हुए डाकिए के लिए, एक खुली निगाह रखती हैं, और तब आपको अधिक आश्चर्य नहीं होता कि आपको एडीलेक से, फैनी आंटी से, या जिस किसी से भी, जो वह था जिसके सम्बंध में आप सोच रहे थे, एक पत्र मिलता है।

फिर, जब कोई सूक्ष्मलोक में है, वह अक्सर, आत्मालोक के उन लोगों से मिल सकता है, जिनकी पहुँच किसी ज्ञान तक है। वह व्यक्ति कहेगा, ''अब, जो कुछ आपने नीचे पृथ्वी पर किया है, आप अगले सप्ताह या एक सप्ताह बाद, बस के साथ एक तर्क पाने वाले हैं, और वह बस जीतने वाली है, इसलिए अच्छा हो, यदि आप अपने मामलों को व्यवस्थित कर लें, आप अपने इस जीवन के कार्यों को लगभग पूरा कर चुके हैं।'' व्यक्ति अत्यधिक प्रसन्न अनुभव करता है, जबकि वह सूक्ष्मलोक में यह सोचने के लिए है कि पृथ्वी पर उसका जीवन लगभग समाप्त है, परंतु जब वह पृथ्वी पर वापस आता है, वह थोड़ा सा उदास और डरा हुआ अनुभव करता है और अपनी पत्नी, यदि उसकी कोई हो, को बताता है, कि उसने ऐसा भयानक दुःस्वप्न देखा था, जिसमें वह देख सका था कि वह शीघ्र ही विधवा हो जाएगी। इस पर वह, वास्तव में, अपने आनंद को छिपाती है और जब वह कार्यालय या भंडार को जाता है, वह उसकी तिजोरी में देखने के लिए जल्दी करती है कि मोटे बीमा की वह पॉलसी, सभी प्रीमियमों का भुगतान किए जाते हुए, एकदम ठीकठाक है।

दूसरा तरीका, जिसमें कि अधिक उन्नयित व्यक्ति भविष्य के बारे में जान सकता है, ये है; वह सूक्ष्मलोक के परे, और ऊपर उसमें, जिसे, अच्छे शब्द की चाह में, हम प्राथमिक आत्मालोक (primary spirit world) कह सकते हैं, की यात्रा करने में सक्षम होता है। वहॉ वह, आकाशिक अभिलेख और संभावनाओं के अभिलेख से परामर्श ले सकता है, क्योंकि, कुल मिलाकर, ये देखना कि किसी व्यक्ति या राष्ट्र की संभावनायें क्या हैं, कठिन नहीं है। कोई हमेशा एकदम ठीक नहीं कह सकता कि किसी व्यक्ति विशेष को वास्तविक मिनट या एक घण्टे में भी, क्या होने वाला है परंतु, कोई अत्यधिक निश्चितता के साथ कह सकता है कि किसी देश या विश्व को क्या होने वाला है।

ठीक है, इस विशिष्ट अध्याय में, हमने निश्चितरूप से मृत्यु के साथ व्यवहार किया है, और

इसलिए आपको इसे, ठीक वैसे ही, जैसे कि बच्चे, जब उनके स्कूली जीवन को समाप्त करने के लिए, उनके (स्कूल) छोड़ने का दिन आता है, समझते हैं, एक अत्यंत सुखद मामला समझना चाहिये। हम एक क्षण के लिए विचार करें कि मृत्यु के लिए कैसे तैयार होना है, क्योंकि जैसे कोई शादी के लिए तैयार होता है, कोई अधिक अच्छा समय पा सकता है, यदि वह जानता हो कि क्या अपेक्षा की जाती है।

तिब्बत में ऐसी चीजों के लिए तमाम पुस्तकें समर्पित हैं; ''मृतक की तिब्बती पुस्तक (The Tibbetan Book of the Dead)", पृथ्वी के पूर्वी भाग में, एक सबसे बड़ा पुरातन ग्रन्थ है, वह, हर चीज को, जो कि इस शरीर को छोड़ने वाली और अगले जीवन की यात्रा पर बाहर जाने वाली आत्मा के साथ हो सकती है, सूक्ष्मतम विस्तार के साथ बताता है। तिब्बत में, विशेषरूप से अतीन्द्रिय ज्ञानी और विशेषरूप से प्रशिक्षित एक लामा, मरते हुए व्यक्ति के समीप बैठता है और दूरानुभूति से उसके साथ सम्पर्क में रहता है, ताकि भौतिक को छोड़ने के बाद, सूक्ष्मलोक के बाद तक भी, बातचीत जारी रखी जा सके। यहॉ मुझे अत्यधिक जोर देकर कहने दें कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि पश्चिम के शंकालु लोग क्या कहते हैं, पूर्वी लोग जानते हैं कि तथाकथित मृत लोगों से संदेश प्राप्त करना संभव है। हर चीज विस्तार से, एकदम ठीक तरीके से, बताई गई है कि क्या होता है, असल में वह कैसा अनुभव करता है।

मिस्री लोगों के पास भी एक मृतक की पुस्तक (Book of the Dead) थी, परंतु उन दिनों में पुजारी लोग, बहुत बड़ी शक्ति, खुद के लिए, अपने हाथ में रखना चाहते थे, और इसलिए उन्होंने हौरस (Horus) और ओसिरिस (Osiris) देवताओं और एक पंख के साथ, आत्मा के भार की तुलना करने के बारे में काफी कुछ प्रतीकात्मक चीजें बनाईं। वह एक अत्यधिक सुंदर कहानी है, परंतु इसका वास्तविक तथ्यों से, सिवाय इसके कि मिस्री लोग, जिनको इन सब चीजों को पढ़ाया गया था, पूरी तरह से पूर्व अवधारित (preconceived) विचारों से भरे हुए मनों के साथ मर गये, कोई सम्बंध नहीं है, इसलिए उन्होंने, वास्तव में, देवता ओसिरिस को देखा, वास्तव में न्याय प्रकोष्ठ (Judgement Chamber) को देखा, जो वास्तव में, इन सब उत्सुक चीजों के माध्यम से, मन में रहता था, जहॉ आत्मा को एक चिड़िया की तरह उड़ते हुए देखा गया और जहॉ बिल्ली देवता बुबास्तेस (Cat God Bubastes) और दूसरे, विचारित थे। परंतु ध्यान रखें, ये मात्र एक सुंदर चित्र है, जिसको, इससे पहले कि कोई वास्तविकता तक पहुॅच सके, फाड़ना पड़ता है, ये सत्य विश्व (true world) के बजाय, वाल्ट डिजनी विश्व (Walt Diseny World) में रहने का प्रयास करने के समान है।

अनेक लोग पूर्व अवधारित विचार रखते हैं, जो शायद, किसी विशेष विश्वास, या किसी विश्वास की पूर्णतः कमी के कारण पोषित किये गये हैं, वे नहीं जानते, कि जब वे मर रहे होते हैं, क्या अपेक्षा की जानी चाहिए और इसलिए वे अपनी खुद की सृष्टि की उल्लेखनीय कल्पनाओं में पकड़ लिए जाते हैं, या किसी अंधियारे में, समझ की कमी के कारण किसी अंधियारे में, और भी अधिक बुरे तरीके से पकड़े जाते हैं।

मैं आपको इस पर खुले दिमाग से विचार करने के लिए कहूंगा, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप विश्वास करते हैं या अविश्वास करते हैं, केवल अपना दिमाग खुला रखें और उस पर सोचें जो मैं आपको अब कहने जा रहा हूॅ, ये आपको बाद में मदद करेगा।

मृत्यु के विषय पर ध्यान (बाद के अध्याय में ध्यान को देखें) को एक या दो घण्टा दें, इस विचार को स्वीकार करने के लिए तैयार रहें कि जब आपका इस पृथ्वी को छोड़ने का समय आता है, तब आप स्वयं को, इस अद्भुत मिट्टी के शरीर से, जो ठंडा हो रहा है और असुखद अनुभव कर रहा है, कष्टरहित ढंग से बलपूर्वक बाहर धकेलने जा रहे हैं, और तब आप लेटे हुए शरीर के ऊपर, एक बादल में इकट्ठे होने जा रहे हैं। तब उस बादल में (रहते हुए), आप अपने प्रियजनों को, जो आपसे आगे, अगले जीवनों में गए हैं, सहायता के लिए, एक मानसिक पुकार भेजेंगे। आप दूरानुभूति के सम्बंध में

अधिक नहीं जान सकते, परंतु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, जब आप वृहत्तर जीवन के लिए इस जीवन को छोड़ते हैं, तब आपको स्वतः ही दूरानुभूतिक क्षमतायें प्राप्त हो जाती हैं, परंतु आपकी सहायता करने के लिए अब मुझे इसे कहने दें; जब आप मर रहे हैं, याद करने का प्रयास करें, तब आप, दूसरी तरफ, एक व्यक्ति को देखते हैं, जिसको आप सबसे अधिक प्रेम करते थे। उस व्यक्ति को वास्तव में देखने का प्रयास करें, उसको एक विचार भेजने का प्रयास करें कि आप चाहते हैं कि वह व्यक्ति आये और मिले और आपकी मदद करे। बहुत कुछ उसी तरीके से, यदि आप एक यात्रा पर जा रहे हैं, तो आप कई बार, यह कहते हुए, एक तार भेजते हैं, ''फलां फलां ट्रेन पर मिलो।'' तब आप अपने आपको शान्ति से विश्राम करने दें, आप हलकेपन का एक संज्ञान पायेंगे, एक संज्ञान कि आप एक दबाने वाले कठोर प्रकोष्ठ में से पलायन कर चुके हैं।

दिमाग खुला रखें, हंसी न उड़ायें, अंधेपन से विश्वास न करें परंतु इस पर तर्क करें, अभ्यास करें कि जब आप मर रहे हैं, आप क्या करने जा रहे हैं, अपने आपको बलपूर्वक, मरते हुए शरीर में से और जीवन में निकालने का अभ्यास करें। विचार करें कि ये किस प्रकार से जन्म ग्रहण करने के समान है, विचार करें कि आप, उन व्यक्तियों से, जिन्हें आप सर्वाधिक प्यार करते हैं, मदद के लिए, कैसे मिलने जा रहे हैं, तब जब समय आता है, आप पायेंगे कि आपका गुजरना (मरना) कष्टरहित होगा और आपको कोई भी चीज, जिसे मांस का शरीर अनुभव कर रहा है, बिलकुल हल्की सी भी परेशान नहीं करेगी।

आप पायेंगे कि जैसे ही आप वहॉ शरीर के ऊपर तैरते हैं, आपको जोड़ने वाला तंतु, पतला, और पतला, होता जाता है और मंद हवा में धुंए की तरह से बिखर जाता है। आप ऊपर की तरफ, अपने प्रिय लोगों की भुजाओं में, जो आपसे मिलने के लिए वहॉ हैं, खिसकते जायेंगे। आप अपने लिए अधिक नहीं कर सकते क्योंकि, अधिकांशतः उसी तरीके से, जैसे कि आप अपने मित्रों से हाथ नहीं मिला सकते, जबकि ट्रेन अभी भी, स्टेशन पर चल रही हो, तंतु टूट चुका है।

उन चीजों में से एक, जो अनेक लोगों को मृत्यु के सम्बंध में परेशान करती हैं, ये है; मृत्यु का भय सार्वभौमिक (universal) क्यों है, जबकि मृत्यु के परे केवल शांति और अधिक उन्नयन होता है? उत्तर बहुत आसान है; यदि पृथ्वी के लोग जानते कि इस लोक को छोड़ना कितना सुखद है, लोग यहां रुकते नहीं, यहॉ आत्महत्याऐं होती और वह वास्तव में, बहुत खराब चीज हुई होती क्योंकि, आत्महत्या गलत है। इसलिए लोग इस पृथ्वी पर, मृत्यु के एक बने बनाये डर के साथ नीचे आते हैं। ये लोगों को आत्महत्या करने से रोकने या अपनी खुद की ''मृत्यु की अभिलाषा'' को भव्य बनाने का प्रयास करने से रोकने के लिए, प्रकृति का प्रावधान है।

जैसे ही मृत्यु, वास्तव में, समीप आती है, तथापि, उस चरण का सभी भय घटने लगता है। इसलिए, यदि आप मरने से डरे हुए हैं जबकि आप पूरी तरह स्वस्थ अर्थात् मामलों की सामान्य अवस्था में हैं क्योंकि हमें यहॉ, बच्चों की तरह से, ठीक वैसे ही, जैसे वे स्कूल में रखे जाते हैं, रखा जाना है और बच्चे जो स्कूल जाने से बचते हैं, कठोर अधिकारियों के बीच अधिक लोकप्रिय नहीं होते।

जब आपकी मृत्यु का समय आता है तब, अपना दिमाग खुला रखें, अपनी चेतना के सामने विचार रखें कि आपको सहायता पहुंचाने की अत्यधिक इच्छा रखने वाले वे लोग भी वहॉ हैं, ध्यान रखें कि वहॉ नरक जैसी कोई चीज नहीं होती, वहॉ शाश्वत निंदा जैसी कोई चीज नहीं होती, वहॉ प्रतिशोधी देवता (vengeful God), जो केवल आपके विनाश की इच्छा रखता है, जैसी कोई चीज नहीं होती। हम विश्वास नहीं करते कि किसी को ''भगवान से डरना चाहिए'', बदले में, हम विश्वास करते हैं कि भगवान भला है, भगवान को प्यार किया जाना चाहिए, उससे डरना नहीं चाहिए और – मृत्यु भी अच्छी है, इसको प्यार किया जाना चाहिए और जब वह समय आता है, खुली बाहों से इसका स्वागत किया जाना चाहिए, परंतु जब तक वह समय नहीं आता, ''वैसा करो जैसा आप दूसरों से पाना चाहते हो,''

नियम के अनुसार जियें।

यदि आप थोड़ा सा समय, और धैर्य और काफी कुछ आस्था देने के इच्छुक हैं, तब सर्वाधिक निश्चितरूप से, आपको मृत्यु के मामले की जॉच करने में, एक गंभीरतापूर्ण अभिरुचि रखने वाले दर्शक की भांति, सक्षम होना चाहिए, परंतु आप पायेंगे कि ऐसी जॉच कुछ त्यागों (sacrifices) को लागू करेगी। उदाहरण के लिए, आप पार्टियों को नहीं जा सकते, आप सिनेमा को नहीं जा सकते, आप बुला नहीं सकते और जल्दी ही पा नहीं सकते। बदले में, आपको संत की तरह बनना होगा।

मैं एक संत हूं, और मैं संत होने को प्राथमिकता देता हूॅ क्योंकि मेरे पास वे सारी शक्तियॉ हैं, जिनके सम्बंध में, मैं लिखता हूॅ और उनमें से अनेक आपकी हो सकती हैं यदि आप पर्याप्त कठिन और पर्याप्त आस्था के साथ प्रयास करें। मैं सूक्ष्मलोक की यात्रा कर सकता हूॅ, मैं आकाशीय अभिलेख को देख सकता हूॅ, और इस विशिष्ट अध्याय के अंत में, मैं भविष्यकथन की चर्चा करने जा रहा हूॅ।

ध्यान और एकाग्रता के द्वारा काफी कुछ किया जा सकता है। इसके लिए, स्पष्टरूप से, किसी को संत बनना होगा। संत, साधु, भिक्षु, लामा, आप उन्हें जो कुछ भी कहें, पूरी तरह से एकांतवासी लोग होते हैं, सामाजिक जीवन के सामान्य वृत्त से कटे हुए, अपनी खुद की इच्छा से त्यागी, ताकि वे एकाग्र हो सकें, ध्यान कर सकें, और सूक्ष्मलोक की यात्रा में आगे जा सकें। सूक्ष्मलोक की यात्रा का ये कार्य, वास्तव में, बहुत–बहुत वास्तविक है, यह एक तथ्य है, परंतु यह उतना ही सरल है, जितना कि सांस लेना। परेशानी ये है कि आप अपने साथ कोई सामान नहीं ले जा सकते, सागर के पार दूसरे देश की यात्रा करना और ये सोचना कि आप सप्ताहांत में मित्रों के साथ वहॉ रुकेंगे, निरर्थक है। परेशानी ये है कि आपके मित्र, जबतक कि वे उसी स्थिति के न हों, आपको देखने में सक्षम नहीं होंगे, परेशानी यह है कि आप न तो कोई चीज अपने साथ ले जा सकते हैं और न ही कोई ऐसी चीज अपने साथ वापस ला सकते हैं, जो कि भौतिक या ठोस हो।

एक अत्यंत दिलचस्प चीज ये है कि सूक्ष्मलोक के तल में कोई आकाशिक अभिलेख को देख सकता है, बशर्ते वह उन कुछ सौभाग्यशालियों में से हो, जिसके पास, जिसे मैं विशेष अनुमति कह सकता हूॅ, हो। मुझे अब और यहॉ कहने दें कि उनमें से अनेक लोग, जो सूक्ष्मलोक में जाने और आपके आकाशिक अभिलेख को देखने का दिखावा करते हैं, जालसाज और, वास्तव में, ठग हैं। वे सामान्यतः लगभग 50 डॉलर तक, आपका धन ले लेते हैं, परंतु वे वैसा कुछ भी करने में पूरी तरह असमर्थ हैं, जिसका वे दावा करते हैं। इसलिये यदि कोई आपसे कहता है कि वह सूक्ष्मलोक में जाने वाला है और पचास डॉलर में आपके आकाशिक अभिलेख को लायेगा –तो अपने पचास डॉलरों पर चिपके रहिये।

ये एक सौभाग्यपूर्ण प्रावधान है कि हर कोई आकाशीय अभिलेख को नहीं देख सकता, क्योंकि, सोचकर देखें कि ये ब्लेकमेल करने वालों और अपराधियों के हाथों में कितना भयानक हथियार हुआ होता। आकाशिक अभिलेखों का अंधाधुंध उपयोग अनकही हानियों का कारण बनता। इसप्रकार, ऐसा है कि केवल वे ही, जो शुद्ध आशय वाले हैं, आकाशिक अभिलेख तक अपनी पहुॅच कर सकते हैं।

ये आकाशिक अभिलेख क्या है? ये एक सिनेमाआलेख (cinematograph) फिल्म की तरह से है। उदाहरण के लिये, आपके पास रजत पर्दे के कोई महान महाकाव्य हैं और यदि आप जानते हैं, कैसे, तो आप फिल्म के किसी निश्चित हिस्से पर पहुंच सकते हैं, और इच्छानुसार किसी भी विशेष भाग को देख सकते हैं। अधिकांशतः उसी प्रकार, हर चीज जो भूतकाल में हो चुकी है, अभिलेख में है। इस पर इस तरह से देखें –हम किसी चीज, जो केवल सूक्ष्मलोक में ही संभव है, की कल्पना करें, मान लें कि भौतिक लोक में हम तत्काल ही, बहुत दूरी तक, बहुत दूर, हजारों प्रकाश वर्ष दूर स्थित ग्रह पर यात्रा कर सकते थे। तब ये मानते हुए कि हमारे पास एक उपकरण था, जो आपको देखने में सक्षम बनाता कि पृथ्वी पर क्या हो रहा था –वास्तव में, आप पृथ्वी को, अब जैसी है, वैसी नहीं देख रहे होंगे, वल्कि आप पृथ्वी को वैसा देखेंगे जैसी ये वर्षो पहले थी, क्योंकि प्रकाश की एक चाल है, हर चीज जो

आप देखते हैं, वह चीज हो जाने के बाद की होती है। कहने के लिये, प्रकाश की गति, आपेक्षित रूप से बहुत, बहुत तेज है।

परंतु इसके बदले में हम ध्वनि पर विचार करें। आप वहॉ, नीचे, आधी मील दूर स्थित उस आदमी को देखते हैं ? उसके हाथ में एक कुल्हाड़ी है, वह बड़ी ऊर्जा के साथ लकड़ी काट रहा है। आप कुल्हाड़ी को लकड़ी पर मारते हुए देखते हैं, और तब, कुछ समय बाद, आप ध्वनि को सुनते हैं। फिर, एक सुपरसोनिक जेट विमान आकाश पर दहाड़ता है, आप ऊपर उस स्थान पर देखते हैं, जहॉ से ध्वनि आती हुई प्रतीत होती है, परंतु तबतक जहाज, ध्वनि, जिसे आप सुन रहे हैं, से, लगभग पॉच मील या ऐसे ही कुछ, आगे जा चुका होता है। ध्वनि की चाल, प्रकाश की चाल की तुलना में धीमी है, और ध्यान रखें, प्रकाश, दृष्टि के पर्याप्त समीप है।

यह मानते हुए कि आपके पास, तत्क्षण ही ब्रह्मांड में जाने और किसी विशेष क्षण में वहॉ रुके रहने और स्पष्टरूप से उस प्रकाश चित्र को, जो पृथ्वी से पहुॅच रहा है, देखने की क्षमता है, कुछ वर्षों के लिये, अर्थात् कुछ प्रकाश वर्षों के लिये बाहर जायें, आप जानते हैं, तब आप देखेंगे–हम क्या कहें? हम नेपोलियन (Napoleon) को दूर मास्को की ओर मार्च करते हुए, या जनरल आईजन हॉवर (General Eisenhower) को अपने गोल्फ का अभ्यास करते देख सकते हैं। परंतु थोड़ा और दूर जायें और आप संयुक्त राज्य के अधिकांश देहातों को झाड़ियों, अमेरिकी आदिवासियों की कुटियों (wigwams) और भारतीयों से ढका हुआ देखेंगे और शायद यहॉ–वहॉ कुछ प्रसिद्ध ढकी हुई गाड़ियॉ (wagons) देखेंगे।

पीछे वापस चलें, एक हजार या वैसे ही कुछ साल पहले, दो हजार साल, इतिहास के पन्नों में वापस जायें। आप पायेंगे कि इतिहास, उससे, जो इतिहास की पुस्तकों में लिखा हुआ है, एकदम अलग है। इतिहास को तत्कालीन राजनीति के अनुरूप, देश की मनोदशा के अनुरूप और देश की आस्थाओं के अनुरूप लिखा जाता है। आकाशिक की कोई यात्रा, आपको सत्य प्रदर्शित करेगी। उदाहरण के रूप में हम इंग्लैंड के महानायक, फ्रांसिस ड्रेक का संदर्भ दें, इसे क्या होना है? इंग्लैंड का महानायक सर फ्रांसिस ड्रेक (Sir Francis Drake) या, जैसे कि स्पेन के लोग उसे समझते हैं, बिना आज्ञा के अपहरण करने वाला (pirate), जलदस्यु (buccaneer) फ्रांसिस ड्रेक, एक आदमी, जिसने स्पेन के व्यापार को नष्ट करने का प्रयास किया?

स्पेन की न्यायिक जांच (inquisition) को देखें। इसका सत्य क्या था? क्या जांचकर्ता साधु थे या वह बेलसेन (Belsen) के समान या जर्मनी के दूसरे यातना–शिविरों (concentration camps) के समान थे? आकाशिक अभिलेख आपको बतायेगा।

परंतु आकाशिक अभिलेख, आप जानते हैं, केवल वही नहीं है, जो भूतकाल में हुआ, आप भविष्य की महान संभावनाओं को भी देख सकते हैं। यहॉ इस विशेष समय में, हम एक घुमावदार सड़क पर, अनेक अवरोधों, जिनके परे हम नहीं देख सकते, वाली सड़क पर, एक अकेले मनुष्य की तरह से हैं परंतु उस आदमी को हेलीकाप्टर में ऊपर चढ़ा दो और वह और आगे, अवरोधों के परे देख सकता है, वह आगे की सड़क को देख सकता है। इसलिये आकाशिक अभिलेख के साथ भी ऐसा ही है, आप संभावनाओं, जो आगे हैं, को भी देख सकते हैं।

अब इसका अर्थ ये नहीं है कि पूरा भविष्य पहले से ही तय है। हॉ, मुख्य घटनायें हैं। एक उदाहरण के रूप में, मुझे कहने दें आप जानते हैं कि कल, और कल के बाद अगला दिन परसों होगा और उसके बाद एक सप्ताह, और तब आप सुरक्षित ढंग से इसका भविष्यकथन कर सकते हैं, परंतु, आप उसके अत्यंत छोटे विस्तारों को, सुरक्षित रूप से, नहीं कह सकते। आप कह सकते हैं कि कोई बस यहॉ से कुछ निश्चित दूरी तक जायेगी, समय–सारणी आपको बताती है कि ये अमुक अमुक समय पर छूटेगी और बीच के स्टेशनों पर अमुक अमुक समय पर पहुॅचेगी और अंततः पूर्व नियोजित समय पर

अपने ठिकाने तक पहुँचेगी। आपको कोई भय नहीं है कि बस या ट्रेन पहुँचने में असफल होगी, दूसरे शब्दों में आप भविष्यकथन कर रहे हैं कि क्या होगा। आप उस बस के भविष्य का भविष्यकथन कर रहे हैं।

एक अत्यंत जटिल सिद्धान्त है, जो वास्तव में, समानांतर ब्रह्मांडों (parallel universes) के बारे में, और इस प्रभाव तक कि हर चीज पहले हो चुकी है, और हम भिन्न समय–सातत्य (continuum) में रह रहे हैं, एकदम सत्य सिद्धान्त है। तथापि, हम यहाँ, उसमें जाना प्रस्तावित नहीं करते, बदले में ये कहा जाना चाहिए कि भूतकाल के दृष्टा, भविष्य में देख सकते थे, वर्तमान के दृष्टा भी ऐसा कर सकते हैं। अब मैं आपको इसका एक उदाहरण देने जा रहा हूँ। ये कुछ वैसी चीज है, जो मेरे साथ हुई, जो पूरे नियंत्रण में हुई। मैं तंद्रा में गया और यह वह है, जो मैंने देखाः

पहले मैंने एक संभावना देखी कि युद्ध प्रारंभ हो रहा होगा। अब, पीछे देखते हुए, मैं कह सकता हूँ कि – हाँ, यह ऐसा ही था, वह युद्ध था, जो फ्रांसीसी लोगों के वहां से हटने के बाद वियतनाम में शुरू हुआ, विदेशी सेना (Legion) भंग कर दी गई (disbanded)। परंतु ये सही सिद्ध हुआ।

दूसरी चीजें हैः भविष्य में साम्यवाद द्वारा इटली को जीत लिया जायेगा। कुछ समय के लिये ईसाई धर्म नष्ट हो जायेगा और वेटिकन (Vatican) बंद हो जायेगा, प्रमुख (Cardinals) और विशप (bishops) मारे जायेंगे, पूरे यूरोप में साम्यवाद फैल जायेगा। ये वैसा साम्यवाद नहीं होगा जिसे हम वर्तमान में जानते हैं। ये कुछ हद तक संशोधित किया हुआ होगा। रूस का मूल साम्यवाद, आज की तुलना में कड़ा मामला, चीन के साम्यवाद की तरह अधिक खुरदरा (rough) था। अंततः बचाव में, इंग्लैंड और संयुक्त राज्य मिल जायेंगे और इंग्लैंड, अमेरिका के निर्देशों के अंतर्गत आ जायेगा, वास्तव में, एक अमेरिकी को अपने गर्वनर के रूप में पायेगा, जो वास्तव में, जब कोई सोचता है कि इंग्लैंड के लोग अमेरिका को खोजने के लिये गये थे, और अब अमेरिकी लोग, इंग्लैंड को पुनः खोजने के लिये वापस जा रहे हैं, एक अद्‌भुत विचार है।

अंततः पृथ्वी की सतह चटक जायेगी। यदि आपने अंतर्राष्ट्रीय भूभौतिकी वर्ष (International Geographical Year) की रिपोर्टें पढ़ी हैं तो आप जान जायेंगे कि समुद्र की सतह के नीचे, दबाव (stress) वाले बड़े बड़े क्षेत्र हैं, क्षेत्र जहाँ परिवर्तन हो रहे हैं। समुद्र का तल, पहले से ही ऊंचा उठ रहा है। गुमे हुए महाद्वीप, जो अभी समुद्र की सतह पर हैं, ऊंचे उठेंगे और नई भूमियाँ बनायेंगे, वर्तमान भूमियाँ डूब जायेंगी और पृथ्वी कुछ समय के लिये आपदा और भगदड़ में होगी। न्यूयार्क जमीन के तल पर आ जायेगा और अंततः अटलांटिक महासागर के जलों के नीचे डूब जायेगा। प्रशांत महासागर के समुद्र तट पर, लॉस एंजिल्स और सेन फ्रांसिस्को, और सियाटेल और वैंकोवर जमीन के तल पर आ जायेंगे और तब उठते हुए प्रशांत महासागर में डूब जायेंगे। अधिकांश समुद्रतटीय सीमा बह जायेगी, पूरी भूमि बदल जायेगी। साम्यवादी रूस की ओर से अलास्का के ऊपर से बमों के साथ रॉकेट आयेंगे, संयुक्त राज्य और कनाडा में अत्यधिक जनहानि होगी। वास्तव में, इन देशों के प्रतिशोध के तरीकों के माध्यम से, रूस में भी महान जनहानि पैदा होगी, परंतु उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में जीवित बचे रहने वाले कुछ लोग, महाद्वीप को पुनः बसाने के लिये, रॉकी पहाड़ की चोटियों पर इकठ्ठे होंगे।

कनाडा में बड़ी झीलें, जो अभी ताजे पानी की झीलें हैं, पृथ्वी के अक्ष के झुक जाने के कारण, अपने प्रवाह की दिशा उल्टी कर देंगी, ताकि समुद्र क्यूबैक (Quebec) से मॉन्ट्रियल (Montreal) की तरफ, मॉन्ट्रियल से बफेलो (Buffalo) की तरफ, बफेलो से डेट्रॉइट (Detroit) की तरफ बहेगा और पानी शिकागो (Chicago) में बाढ़ के रूप में इकठ्ठा होगा और शहर की भूमि को बाढ़ से भर देगा और खुद के लिये मिसीसिपी (Mississippi) में, एक नमकीन जलमार्ग निकाल लेगा। विश्व के अक्ष के बदल जाने के कारण, दहाड़ती हुई जलधारा के रूप में दौड़ता हुआ पानी, शीघ्र ही अनेक देशों को मिटा देगा ताकि वहाँ एक नया द्वीप बन जाये। वह सबकुछ, जो पानी के द्वारा विभाजित है और समुद्र

के सामने है, एक नई भूमि बनेगा।

यूरोप में भूमध्यसागर का तटीय क्षेत्र ऊँचा उठेगा और उच्चभूमि (highland) बन जायेगा और तब नयी बड़ी समाधियां, डूबे हुए मिस्र का कुछ भाग, और वर्षों पहले डूबी हुई भूमि का कुछ भाग अनावरित हो जायेगा।

पूरा का पूरा दक्षिण–अमेरिकी महाद्वीप भूकम्पों के द्वारा अव्यवस्थित हो जायेगा। फाकलैंड के द्वीप और अधिक समय तक द्वीप नहीं रहेंगे वल्कि उच्चभूमि के रूप में संगठित होकर, अर्जेंटीना (Argentina) के निचले एक तिहाई भाग के साथ जुड़ जायेंगे। अर्जेटीना के निचले एक तिहाई भाग के आसपास एक दरार प्रकट होगी, ताकि वहॉ पर एक रिक्त स्थान, जो किसी भी तरह से उससे अधिक चौड़ा नहीं होगा जो कि भूमध्य सागर और जिब्राल्टर (Gibraltar) के बीच में है, में होकर प्रशांत महासागर से अटलांटिक महासागर तक पहुँच का रास्ता बन जाये। भार–वितरण में परिवर्तन के अंतर्गत पृथ्वी और अधिक झुक जायेगी और मौसम में परिवर्तन होंगे, ध्रुव पिघलेंगे और इन क्षेत्रों में, आश्चर्यजनक खनिजों और अनेक नये संसाधनों के साथ अधिक भूमि उपलब्ध होगी।

जापान और कोरिया और चीनी समुद्री तट का कुछ हिस्सा पानी के नीचे डूब जायेगा, परन्तु समुद्रों से नये द्वीप उभरेंगे। रूसी लोग, अंतरिक्ष में बड़े उपग्रह भेज चुके होंगे। शीघ्र ही चीनी भी अंतरिक्ष में प्रवेश करेंगे, क्योंकि वे संयुक्त राज्य के वैज्ञानिकों को, जो बाढ़ों और विनाश से भागे हुए होंगे, पकड़ लेंगे। 2000 का वर्ष, अंतरिक्ष में महान घटनाओं को देखेगा, हमेशा शांति के लिये ही नहीं, क्योंकि साम्यवाद की शाखाओं के बीच महान प्रतिद्वन्द्विता होगी। 2004 के वर्ष में चीन और रूस के बीच अंतरिक्ष में भयंकर युद्ध होगा। पृथ्वी पर, लोग गहरे शरणगाहों में सिमट जायेंगे और अनेक बच जायेंगे। अधिक भूमि डूबेगी और अधिक भूमि उठेगी।

इस भविष्यकथन का एक भाग, विचार करने के लिये, मुझे इतना अधिक कारण बताता है, कि मैं आश्चर्य करता हूँ, क्या मुझे विवक्त रूप से (discretely) खामोश रहना चाहिए और इसका उल्लेख नहीं करना चाहिए, परंतु इससे क्या फर्क पड़ता है, हमें सत्य बताने दें, हमें, जैसे हम काफी दूर तक जा चुके हैं, थोड़ा और आगे जाने दें।

2008 या इसके करीब ही, एक अत्यधिक बड़ी चीज की प्रेरणा के प्रभाव में, रूसी और चीनी अपने मतभेदों को व्यवस्थित करेंगे। अंतरिक्ष में काफी दूर से, इस पूरी प्रणाली के एकदम परे से, लोग आयेंगे, मानव, जो यहॉ आयेंगे और पृथ्वी पर व्यवस्थित होना चाहेंगे। पहले से ही यहॉ रहने वाले मानव, भय के साथ इस सबके आसपास से गुजरेंगे और वे पीलियाई आंख (jaundiced eye) से, अपने बिना बुलाये मेहमानों को देखेंगे। कुछ समय के लिये एक विचारणीय हलचल होगी, तथापि, अंततः सामान्य समझदारी और तर्क प्रचलन में बने रहेंगे।

बाहरी अंतरिक्ष से (आये) लोग, शांतिपूर्ण आशयों को प्रदर्शित करेंगे, और यह वह चीज है, जो दुख के साथ, इस पृथ्वी पर पिछड़ रही है। समय के साथ, बाहरी अंतरिक्ष के लोग, उनके साथ जो इस पृथ्वी के मूल निवासी हैं, व्यवस्थित होंगे, वे आपस में विवाह करेंगे, सभी प्रजातियॉ आपस में विवाह करेंगी, ताकि अंत में केवल एक ही प्रजाति होगी और उसे भूरों की प्रजाति (Race of Tan) के रूप में जाना जायेगा, क्योंकि सभी रंग, सफेद, काला, पीला, भूरा एक अत्यंत सुखद भूरे रंग के रूप में परिणामित होंगे।

पृथ्वी के उन्नयन के इस चरण में, ये स्वर्णिम युग, शांति का युग, शमन का युग और उच्च गूढ़ ज्ञान का युग होगा। ये एक ऐसा युग होगा, जब मनुष्य, भले ही इस भूमि के हों, या इस भूमि से अलग भूमि के हों, सामंजस्यपूर्ण ढंग से घुलमिल जायेंगे।

उसके बाद का भविष्य? हॉ, वह भी स्पष्ट है, परंतु हम इस प्रथम घटनाक्रम (first episode) से संतुष्ट हों, क्योंकि ये वास्तव में, एक सत्य घटनाक्रम है।

क्या आप हॅस रहे हैं, क्या आप सनकी, शंकालु हैं ? ठीक है, जैसे कि मैं अपने ज्ञान का दावेदार हूॅ, वैसे ही आपको अपनी राय बनाने का हक है। यदि आपके पास मेरा ज्ञान होता, तो आप अभी मुझे नहीं सुन रहे होते, और आप हॅस नहीं रहे होते।

अत्यंत थोड़े समय पहले, ये कहा गया था कि मनुष्य कभी एटलांटिक के आरपार रेडियो से संदेश नहीं भेज सकेगा। तब ये कहा गया था कि मनुष्य कभी एटलांटिक से हवाईजहाज में नहीं उड़ेगा। ये कहा गया था कि संभवतः कोई भी, ध्वनि की चाल से अधिक चाल से नहीं चल सकेगा, क्योंकि लोग मर जायेंगे, ये भी सूचित किया गया था कि मनुष्य अंतरिक्ष में जाने में सफल नहीं होगा क्योंकि चाल के द्वारा पैदा हुई ऊष्मा, उसे जला देगी। आदमी अंतरिक्ष में जा चुका है, और औरत भी। चीजें, जो आज पूरी तरह से असंभव हैं, कल सामान्य होती हैं। अभी हम टेलीविजन–कार्यक्रमों को एक कृत्रिम उपग्रह से, उछालते हैं, अब हम रेडियो संदेशों को चंद्रमा, मंगल, शुक्र से उछालते हैं। आप कैसे कह सकते हैं कि मेरा भविष्यकथन सत्य नहीं है?

ये एक दुखद चीज है कि लोग उसकी, जिसे वे नहीं समझते, निंदा करते हैं। ये दुखद चीज है कि यदि लोग इसे, या उसे, या किसी और भी चीज को, नहीं कर सकते, तब वे ये कहने के लिये प्रवृत हो जाते हैं, ''ओह, परंतु ये असंभव है, एकदम असंभव, ऐसी चीजें मानवीय ज्ञान के परे हैं।'' ये वास्तव

में, अनर्गल है, क्योंकि जब कोई, हर चीज, जो हो चुकी है, के आकाशिक अभिलेख को देख सकता है, कोई, संभावनाओं के अभिलेख को भी देख सकता है।

और यदि आप आश्चर्य करें कि संभावनाओं का अभिलेख क्या है, मुझे आपको एक साधारण उदाहरण देने दें। संभावनायें वे चीज हैं, आप जिनके होने की आशा करते हैं, आप आशा करते है कि कल, परसों और वर्षों बाद तक, जलयान समुद्रों पर दौड़ रहे होंगे, हवाई जहाज आकाश के आरपार उड़ रहे होंगे, और कारें जहरीले धुंए को पूरे देहात में उगल रही होंगी। आप, वास्तव में, आशा करते हैं कि ये होगा, क्योंकि ये इतना संभाव्य है। किसी प्रजाति या देश का भविष्यकथन, उच्चतम कोटि की सुग्राहकता के साथ किया जा सकता है, और संभावनाओं का अभिलेख, उस सब को, जो होगा, इंगित करता है। यहॉ आप उसमें, जो होगा, एक अंतर्दृष्टि पाईं, परंतु दूसरी चीजें भी है, छोटी घटनायें, जो रास्ते का इशारा करती हैं। क्या आप कुछ और चाहते हैं?

ठीक है– आने वाले वर्षों में, इंग्लैंड, बहुत कुछ हद तक वैसे ही, जैसे कि हवाई (Hawaii) और अलास्का (Alaska) संयुक्त राज्य के राज्य हैं, संयुक्त राज्य का एक राज्य (state) बन जायेगा। अंततः इंग्लैंड को संयुक्त राज्य के द्वारा, और वहीं से, नियंत्रित किया जायेगा और अंततः इंग्लैंड, संयुक्त राज्य के संघीय कानूनों (Federal Laws) से सहमत होगा।

आने वाली शताब्दियों में, कनाडा, विश्व के अग्रणी देशों में से एक होगा, कनाडा और ब्राजील। वर्तमान में, ब्राजील अवनति की ओर है, परंतु ब्राजील ऊपर उठेगा, और शायद, विश्व में दूसरा सबसे बड़ा राष्ट्र होगा, ये वास्तव में, एक बार फिर, ''उच्च (High)" ब्राजील होगा।

आने वाले वर्षों में, फ्रांस और रूस, वास्तव में, जर्मनी को पूरी तरह कुचल देने के लिये मिल जायेंगे। फ्रांस और रूस, दोनों ही जर्मनी से भयभीत प्रतीत होंगे, वे उस धमकी को समाप्त करने के लिये, अपनी सैनाओं को मिला देंगे, और जर्मन प्रजाति, दूसरे राष्ट्रों में उसी ढंग से तितरबितर हो जायेगी, जैसे कि यहूदी आजकल दूसरे राष्ट्रों में छितराये हुए हैं।

चीन, नया चीन, जो हर जगह सभ्यता के लिये खतरा प्रस्तुत करता है, को हराने के लिये, संयुक्त राज्य और रूस, इकठ्ठे होंगे, और इसप्रकार अजगर (Dragon) को हराने के लिये, भालू (Bear) और गरुड़ (Eagle) इकठ्ठे होंगे और जबतक अजगर हरा लिया नहीं जाता, कोई चिरस्थाई (endurable) शांति नहीं होगी।

आपमें से वे जो ज्योतिष की ओर झुकाव रखते हैं, याद रखेंगे कि 5 फरवरी 1962 को सूर्य के 16 अंशों ने चंद्रमा, बुध, मंगल, गुरु और शनि को, उस समय एक ग्रहण के दौरान ढक लिया था। अगली बार ये 5 मई 2000 को होगा और उस समय से थोड़ा पहले ही, अप्रैल 1986 में हैली का पुच्छल तारा वापस लौटेगा। ये सभी संरचनायें, विश्व भर में एक क्षणिक घटना की ओर ले जायेंगी। ये नये युग का प्रारंभ होगा, समय जब आशायें नर्म बसंती फूलों की तरह से पल्लवित होंगी जो पूर्णविकास को पुर्नजीवित करेंगी और फिर से नये फूल खिलेंगे, जबकि सर्दी की बर्फ, धूप के लिये रास्ता छोड़ेगी, और जैसे बसंत के फूल मौसमों के द्वारा नई की जाती है, और नवचेतना जो लगभग हर वर्ष आती है, वैसे ही, आदमी, आदमी की आशायें और आध्यात्मिक महत्वकांक्षायें, वर्ष 2000 के बाद, फिर से नई हो जायेंगी।

यहॉ पृथ्वी के मौसम के परिवर्तन के सम्बंध में कुछ कहना उचित होगा, क्योंकि विश्व में लगभग प्रत्येक ने महान परिवर्तनों पर ध्यान दिया होगा। मौसम, भविष्यवाणियों का एक सुयोग्य विषय है।

आने वाले वर्षों में अनेक भूकम्प आयेंगे, जमीन ऊॅची उठेगी और जमीन नीचे गिरेगी और काफी जमीन पर पानी हो जायेगा। प्रशांत महासागर में, हजारों मीलों बाहर तक विस्तारित हुआ एक बड़ा दोष है। ये पृथ्वी की चटखन है, और यदि, और अधिक राष्ट्रों ने और अधिक परमाणु बमों या उससे खराब, को छोड़ना प्रारम्भ किया, तो चटखन थोड़ी सी और चौड़ी होगी, काफी आगे तक बढ़ेगी, और तब वहॉ

भूकम्पों और बाढ़ों की पूरी श्रंखला होगी।

सैकड़ों सालों से मौसम की भविष्यवाणी करना कमोवेश संभव रहा है। कोई मौसम विज्ञान के दफ्तरों में रखे हुए चार्टो से परामर्श ले सकता है, और ये चार्ट इंगित करते हैं कि, अमुक अमुक समय में, मान लो, कनाडा का तापक्रम, सामान्यतः, अमुक अमुक सीमाओं तक गिरता है, जबकि, उदाहरण के लिये, ब्यूनस आयरिश (Buenos Aires) में चढ़ाव और गिराव की सीमायें भिन्न होती थीं। अभिलेखों, जो इंगित करते थे कि अनेक वर्षों पहले, दूसरे अनेक समतुल्य समयों पर, औसत तापमान क्या होना चाहिए, से परामर्श लेते हुए, मास्को (Moscow), टिम्मकटू (Timbuktu) या कहीं भी, मौसम की भविष्यवाणी करना संभव था। हम ये पता कर चुके हैं कि प्रत्येक मौसम में क्या होगा, हम ये भी पता कर चुके हैं कि क्या सर्दी की तुलना में, गर्मी पहले से अधिक गर्म होने वाली है और सर्दी की सीमायें क्या होने वाली हैं, और गर्मी की सीमायें क्या होने वाली हैं परंतु ये सब उन कारणों, उनमें से अधिकांश मनुष्य द्वारा निर्मित हैं, के पूरे संगुटीकरण के माध्यम से बदल रहा है, और तेजी से बदल रहा है।

क्या आपने ध्यान दिया है कि अभी हाल में ही सनकी (freak) मौसम की रिपोर्टें बढ़ रही हैं? संयुक्त राज्य में एकदम असामान्य ठंडी सर्दी रही है। जोर्जिया (Georgia) में मौसम शून्य से काफी नीचे रहा है, एरिजोना (Arçona) में भी सर्दी का काफी प्रकोप रहा है, कई बार 40 डिग्री नीचे तक।

मुझे कनाडा और संयुक्त राज्य के मित्रों से पत्र मिले हैं और मुझे सनकी मौसम, चौंका देने वाली ठंड, की सूचनायें प्राप्त हुई हैं। तब एक सप्ताह बाद, लगभग एक गर्मी की लहर। किसी दूसरे दिन, मुझे नियाग्रा प्रपात (Niagara Falls), कनाडा से सूचना मिली कि मौसम सीमान्त रूप से (extremely), गर्म झुलसाता हुआ गर्म था, और तभी वह एकदम भयानक रूप से ठंडा हो गया। डेटट्राइट संयुक्त राज्य अमेरिका, में मौसम भौंचक्का करने वाला ठंडा रहा था और अचानक ही ये गर्म में बदल गया।

पूर्वी और उत्तरी संयुक्त राज्य में, शुष्कता रही है, वास्तव में, संयुक्त राज्य के पहले कभी भी, अभिलेखित किये गये मौसमी स्टेशनों पर, इस साल का अप्रैल सर्वाधिक शुष्क रहा है। पौधों के लिये कोई पानी नहीं था, सिंचाई की कोई प्रणाली काम नहीं कर रही थी, सूखी जमीन में पौधे मुरझा गये थे।

मैं नहीं जानता कि आप में से कितने लोग संयुक्त राज्य में गये हैं, परंतु कनाडाई सीमा से बहुत अधिक दूर नहीं, मोन्टाना (Montana) में, एक बड़ा राष्ट्रीय उद्यान है, और उद्यान में एक हिमनद (glacier) है, वास्तव में वहॉ अनेक हैं, परंतु कुछ पूरी तरह पिघल गये हैं और दूसरे महान रूप से मिट गये हैं।

संयुक्त राज्य और कनाडा के कुछ निश्चित क्षेत्र, बहुत कुछ हद तक स्की (ski) कार्यक्रमों, कच्ची (snow) और जमी बर्फ (ice) के लिये आमंत्रण देते हुए कार्यक्रमों पर निर्भर होते हैं। ठीक है, वहॉ कोई कच्ची या पक्की बर्फ नहीं रही है और इसलिये ऐसे मौसम की अवस्थाओं पर निर्भर रहने वाले लोग बरबाद हो गये हैं।

मध्य–पश्चिम (mid-West) में भारी तूफान (tornados) आये हैं, अत्यधिक भारी तूफान। तूफानों की संख्या, और गति और उग्रता बढ़ती रही है। अभी हाल में ही वहॉ, मध्य संयुक्त राज्य में, एक वर्ष में 800 से अधिक बर्फीले तूफान रहें थे।

परंतु संयुक्त राज्य को जाने दें। विश्व के दूसरे भाग हैं। मैं पूरे विश्व से डाक पाता हूँ, परंतु इसके लिये, मौसम की सूचना लाने के लिये, डाक की नहीं, केवल समाचारपत्रों की आवश्यकता है। इंग्लैंड में मौसम एकदम सनकी, अभिलेखों में सबसे ठंडा, रहा है, और इंग्लैंड में सदैव का सबसे खराब बर्फानी तूफान (blçzard) आया था, यातायात थम गया था, लोगों के पास खाना कम पड़ गया था और वे जम रहे थे, अनावरण और भूख से पशु मर गये थे।

भूमध्य सागरीय क्षेत्र में मौसम पूरी तरह से सनकी रहा है, उदाहरण के लिये असामान्य रूप से ठंडा, और सिसली (Sicily) में लगभग एक मीटर गहराई का हिमपात हुआ, जिसको धूपभरी सिसली विज्ञापित किया गया। ठीक है, उन्हें धूप मिली होगी, परंतु निश्चितरूप से, साथ ही उन्हें अत्यंत कठोर ठंड भी मिली। ये सब सनकी मौसम है, विश्व का जलवायु बदल रहा है। रोम में बर्फ थी, 500 साल में पहली बार टिबर नदी (river Tiber) के ऊपर बर्फ। कोई रोम, इटली, को एक दयालु मौसम के रूप में गर्मी के साथ जोड़ता है, टिबर नदी के ऊपर बर्फ, जिस पर लोग फिसल सकें, के साथ नहीं।

और विश्व का दूसरा भाग–जापान। उन्हें जीवन के इतिहास में, अत्यंत खराब सर्दी का मौसम प्राप्त हुआ। तूफान, फसल की बर्बादी, उन्हें हर चीज खराब प्राप्त हुई।

दूसरी तरफ, रूस में, मौसम कुछ नर्म होता दिखाई देता है। साइबेरिया (Siberia) कम ठंडा है, और वास्तव में, इन सभी परिवर्तनों के साथ, जलवायु की अवस्थाओं में अधिक परिवर्तन उत्पन्न होते हैं, क्योंकि यदि हम भूमि के एक क्षेत्र को गर्म करें तो इसके ऊपर की हवा उठती है और मेघपुंज (cumulus clouds) बनाती है। हो सकता है कि अनेक परमाणु बमों ने, पृथ्वी पर (आने वाले) सूर्य के प्रत्यक्ष विकिरण को रोक लिया हो और अंतरिक्ष में वापस (कर दिया हो), जिससे उसने पूरे विश्व में तापक्रम के क्षेत्रों को बदल दिया हो। इसलिये ऐसा है, जैसी कि भविष्यवाणी की गई है, कि बहुत अधिक दूर भविष्य में नहीं, इस पृथ्वी पर, चीजें बदलने वाली हैं।

क्या आपने कभी इस सम्बंध में सोचा है? यदि उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव की बर्फ पिघल जाये तो पूरी पृथ्वी पर, जलस्तर कम से कम 600 फीट ऊँचा उठ जायेगा। सोचें, यदि रूस के समुद्रतटों पर थोड़ी सी भी बर्फ पिघल जाय, परिणामी बाढ़ न्यूयार्क (New York) या मांटेविडियो (Montevideo) को डुबा देगी; वास्तव में, यूरुग्वे (Uruguay) में पूरी तरह से बाढ़ लाने के लिये अनेक फुट पानी की आवश्यकता नहीं होगी। परंतु यदि युरुग्वे के लोग बाहर की ओर भागना चाहें और पानी के पंख और नहाने के सूट पा जायें, मुझे ये कहने दें; भविष्यवाणियों के अनुसार, विश्व का वह भाग ऊँचा उठेगा ताकि बाढ़ में डूबने के बजाय, ये जलस्तर के ऊपर काफी लंबा रास्ता होगा। न्यूयार्क लहरों के नीचे डूब जायेगा, ऐसी भविष्यवाणी की गई है, और अर्जेंटीना के अंत सिरे के समीप, नीचे, अर्जेंटीना की पूंछ को उसके मुख्य भाग से विभाजित करते हुए, एक दरार उत्पन्न होगी, इसलिये असल में, वहॉ पर एक द्वीप और प्रशांत महासागर में होकर एक जल्दी वाला रास्ता होगा। ये स्वयं में थोड़ी हलचल पैदा करेगा क्योंकि प्रशांत महासागर, एटलांटिक में तुलना में अधिक खारा है, और इसलिये हमारे पास कमोवेश एक विरोधाभास है; प्रशांत महासागर का पानी गर्म, परंतु भारी होगा, इसलिये ये एटलांटिक के ठंडे पानी में डूब जायेगा, क्योंकि, एटलांटिक उतना खारा नहीं है, इसलिये हल्का है।

रूसी लोग, गल्फ की धारा (Gulf Streme), से छेड़छाड़ करते हुए, जो गर्म पानी पैदा करती है, जो सामान्यतः साइबेरिया के बगल से बहता हुआ, यूरोप की ओर जाना चाहिए जिससे साइबेरिया पिघलता जा रहा है और रूस की सूदूर भूमि बन जायेगा, अपने लाभ के लिये मौसम को बदलने में व्यस्त हैं। परंतु संतुलन के हिचकोले में, इंग्लैंड में एक दूसरा हिमयुग आ सकता है, और बर्फ यूरोप के अधिकांश भाग का सफाया कर सकती है।

सामान्यतः पृथ्वी हवा की परतों से घिरी हुई है, उनमें से कुछ, उसी तरीके से जैसे कि पानी की धारायें होती हैं, हवा की धाराओं के रूप में चलती हैं। सामान्यतः प्रविष्ट होने वाली, और पृथ्वी से टकराने वाली अंतरिक्ष किरणों (Cosmic rays) की मात्रा, काफी कुछ हद तक स्थिर है, परंतु अब ऊपरी वायुमंडल में रॉकेटों और ऊपर जाने वाले बमों के द्वारा हस्तक्षेप किये जाने के कारण, बाहरी वायुमंडल की जेट धारायें विक्षुब्ध और विचलित हो चुकी हैं। इस प्रकार तापक्रम के उत्क्रमण होते हैं ताकि गर्म हवा, शायद, नहीं उठ सकती और वर्षा की कमी और ऊष्मा की बहुतायत के कारण, पूरी जमीन धब्बेदार हो जाती है। पूरे विश्व में तापक्रम के क्षेत्र, मुख्यतः सबसे खराब होते हुए, बदल रहे हैं, और जबतक कि

मानव जाति उनको, जो युद्ध चाहते हैं, नियंत्रित करने लिये नहीं जागती, तब मानव जाति, इससे पहले कि वे अच्छा समय पायें, को एक अत्यंत खराब, खेदपूर्ण समय देखना पड़ सकता है। तथापि, हम अभी कलि के युग, कष्ट पीड़ा और निराशा के युग में है। शीघ्र ही भोर होगी, जब मनुष्य फिर से आशा कर सकता है, जब और जान सकता है कि वह बृहत्तर चीजों, बृहत्तर प्रसन्नता, बृहत्तर आध्यामिकता और अपने साथियों के प्रति बृहत्तर आस्था की ओर प्रगति कर रहा है।

अध्याय आठ :
ध्यान

बड़ा पेड़, अंधेपन से टटोलती हुई शाखाओं के साथ, स्वर्ग की ओर, प्रकाश देने वाले की ओर अंधाधुंध ऊंचा बढ़ता गया। जमीन पर उसकी छाया, काली, और लंबी, और अधिक लंबी होती हुई फैल गई, और फिर, जैसे–जैसे सूर्य, देरी से प्रकट हुए आसमान की अपनी शाश्वत यात्रा पर आगे बढ़ा, और भी अधिक लंबी होती गई। पेड़ ने धूप सेकी और जीवनदायिनी किरणों के नीचे फलाफूला। पत्तियों की अनेकता के द्वारा उसकी शाखाओं में छिपी हुईं, चिड़ियाऐं फड़फड़ाईं, और उन्होंने पुकार लगाई और अपने जीवन–व्यापार के दायरे में, यदाकदा, दूसरे पेड़ों की ओर तेजी से उड़ीं। पेड़ की हरियाली के अंदर छिपी हुई किसी दरार से, सहसा एक घुसपैठिये बंदर के विरुद्ध, विरोधस्वरूप चीखती हुई किसी चिड़िया की एक तीखी, चीख आई। और जैसे ही वानरों की सेना शाखा से शाखा पर झूली, चीखें जारी रहीं और चरम सीमा तक उठीं। सहसा, मानो कि एक बटन दबाने के साथ ही, पेड़ों की जनता पर अपेक्षित शांति घिर गई। मनुष्य समीप आ रहे थे!

एक झुके हुए बूढ़े आदमी ने, झाड़ियों में होकर आने वाले एक धुंधले रास्ते पर ठोकर खाई और उसने अपना रास्ता लिया। वह फिसलते हुए हाथों से, अच्छी तगड़ी डाल को पकड़ते हुए आगे की ओर बढ़ा। उसके पीछे, दो नौजवान आदमी, छोटे बंडलों को ले जा रहे थे। बूढ़ा आदमी रुका और उसने पेड़ की ओर इशारा किया। ''हम वहॉ ठहरेंगे!'' उसने कहा, ''हम थोड़ी देर आराम करेंगे और मैं रात में ध्यान लगाऊॅगा।'' वे, थोड़ी सी साफ जगह में, जहॉ महान पेड़ों की उभरी हुईं जड़ों ने गहरे खांचे और टीले बना लिये थे, एक साथ आगे चले। वे सर्वोत्तम स्थिति खोजते हुए, उस शक्तिशाली तने के चारों ओर साथ साथ चले। शीघ्र ही उन्हें एक स्थान मिल गया, जहॉ ठूंठ की सूर्य की तरफ वाली बगल में, एक बड़ी चौरस शीर्षवाली चट्टान, जमीन से बाहर निकली हुई थी। इस चट्टान पर आराम से खुजाता हुआ एक बंदर पसरा हुआ था। पहुॅचते हुए आदमी को देखकर, वह भय में चीखा और छिपाने वाली शाखाओं के बीच गायब हो जाने के लिये, सीधा ऊपर की ओर कूद गया।

दोनों सहायकों में से छोटे ने, किसी समीपी झाड़ी से, सावधानीपूर्वक कुछ शाखायें इकठ्ठी कीं। उन्हें एक कोमल लंबी शाखा के साथ कसकर बांधते हुए, शीघ्र ही, उसे एक कामचलाऊ बुश मिल गया, जिसके साथ उसने, मलबे को साफ झाड़ते हुए, चट्टान के शीर्ष पर प्रहार किया। प्रेमपूर्ण देखभाल के साथ, दूसरे सहायक ने एक नुकीला पत्थर उठाया और उसके साथ चमकदार हरी काई (moss) के फैले हुए लॉन जैसे भाग पर गया। घुटनों के बल चलते हुए, उसने नुकीले पत्थर को गहराई से दबाया और तबतक उसके साथ चला जबतक कि उसने बड़ी चट्टान के शीर्ष की काई में, मोटा खाका (rough outline) नहीं काट डाला। उसने कोमलता के साथ काई की परत को उधेड़ा और उसे एक गलीचे की भांति वापस लपेटा। छोटे आदमी की सहायता से, उसने इसे आगे निकाला और एक मोटा गद्दा बनाते हुए, चट्टान के ऊपर फैलाया, ताकि उम्रदराज हड्डियॉ उस कठोर पत्थर से बचाई जा सकें। बूढ़ा आदमी, अपनी फटी हुई पोशाक को कसते हुए, आश्चर्यजनक दक्षता के साथ, हाथ पैरों के बल, कठिनाई से उस कच्ची सतह पर ऊपर चढ़ा।

तेजी से डूबते हुए सूर्य की प्रखर किरणों ने, यहॉ किसी पेड़ के शिखर को जाली बनाते हुए, वहॉ निचली शाखाओं में होकर खूनी–लाल चमकाते हुए, बहुत बड़ी संख्या में, रंगों को जंगली देहात के आरपार भेजा। शीघ्र ही, दोनों सहायकों में से बड़े ने, बटुये में रखे थोड़े जौ, थोड़े चावल, एक छोटा सा पका हुआ आम का फल, और समीप की धारा से (लाकर) पानी छिड़कते हुए, उनका सादा खाना तैयार किया। शीघ्र ही अल्पाहार (meagre repast) समाप्त हुआ और बर्तन साफ किये गये और छोटे बंडलों

में जमाकर रख दिये गये।

''मैं ध्यान लगाऊँगा,'' अपने आपको पालथी मारकर व्यवस्थित करते हुए और अपनी पोशाक को आसपास समेटते हुए, बूढ़े आदमी ने कहा। ''मुझे परेशान मत करो, जब मैं तैयार हो जाऊँगा, बता दूंगा।''

दोनों सहायकों ने सम्मानजनक स्वीकारोक्ति में हामी भरी। मुड़ते हुए, वे चट्टान से थोड़ी दूर जाकर आराम करने लगे, अपनी पोशाकों में अपने आपको अधिक कसकर लुढ़क गये और उन्होंने अपने आपको नींद के लिये शांत किया। सहसा सूर्य पृथ्वी की गोलाई से नीचे डूब गया और जैसे ही रात के स्वामी ने समस्त छोटे निशाचर प्राणियों को, अपना काम अपना व्यापार शुरू करने के लिये जगाया, भारतीय रात की कोमल, खुशबूदार जामुनी चमक का साम्राज्य छा गया। कहीं, एक उनींदी सी चिड़िया, स्वप्नों में जाकर व्यवस्थित होने से पहले, चूं–चूं की आवाज में अपने साथी, हो सकता है मोटे कीड़ों और रसदार फलों के लिये चहकी।

जैसे ही प्रेमियों की देवी (Goddess of lovers) आकाश में चढ़ी, और उसने सोते हुए विश्व के ऊपर अपने प्रकाश का झरना गिराया, रात का जामुनी, धीमे धीमे उज्जवल चांदी के रूप में परिवर्तित हो गया। दिन की गंधों का सफाया करने के लिये, अब नींद में मुड़ गये छोटे जंगली फूलों को प्रेमपूर्वक अस्तव्यस्त करने के लिये, और उनके लिये, जो रात में निवास करते हैं, ताजा सुगंधियॉ लाने के लिये, रात की मृदुल हवाऐं आईं। घंटे धीमे धीमे रेंगते रहे। चंद्रमा ने अपनी रोशनी, दूरस्थ क्षितिज के नीचे कर दी और हल्के रोयेंदार बादल, शांत भाव से, पृथ्वी के ऊपर चले। बूढ़ा आदमी, सब ओर से ध्यान हटा कर, ध्यान लगाता हुआ, सीधा, अचल, बैठ गया। गोल बिना झपकती आंखों से ताकने के लिये छोटे प्राणी, अपनी मांदों (burrows) और खरगोशों के बाड़ों (warrens) में से, आगे आये और अपने को कोई खतरा न पाते हुए, अपने विधिसम्मत व्यापार के लिये चल पड़े।

जैसे ही पहली चमक विस्तृत हुई और भोर के भूरे अंधकार में बदली, बूढ़ा आदमी, अचल ध्यान लगाता हुआ सीधा बैठ गया। कहीं से, सोता हुआ एक बंदर धकेला गया और वह चीखा और उसने उनींदेपन के रोष में अस्पष्ट आवाजें निकालीं। तेजी से, प्रकाश अधिक चटकदार हो गया और कुनकुनाहट की एक झलक ने रात में ठंडे हुई जमीन के आरपार सफाई की। पेड़ों पर से पुकारें और नई जगी हुई चिड़ियों की फड़फड़ाने की आवाजें आईं। आतंक की चीख के साथ, एक छोटे बंदर–अभी अनुभवहीन–ने अपनी पकड़ छोड़ दी और इससे पहले कि भय से लकवा खाई हुई भुजाऐं बाहर पहुँच सकें, किसी शाखा को पकड़ सकें, एक दर्जन फुट गिरा और सुरक्षा के लिये झूल गया। बूढ़ा आदमी, चूंकि उसके सहायक, नींद को भगाने के लिये अपनी आंखों को रगड़ते हुए, अपने पैरों पर खड़े थे, अचल बैठा रहा।

दिन में काफी देर बाद, जैसे ही गर्म सूर्य ने अपनी गर्मी की लहरों को उड़ेला, बूढ़े भिक्षु ने अपने लंबे ध्यान को समाप्त किया और एक मिताहारी (frugal) नाश्ता लिया। उसने सहायकों में से बड़े की ओर मुड़ते हुए कहा, ''यही समय है, जब तुम ध्यान की कला को सीखो मेरे बेटे, क्योंकि मैंने तुम्हें अच्छी तरह से परखा है और तुम्हारे निर्देशों का समय आ चुका है।''

''परंतु स्वामी, क्या ध्यान लगाना अत्यधिक कठिन है? क्या हर कोई इसे नहीं कर सकता?'' छोटे ने पूछा।

''नहीं, मेरे बेटे,'' बूढ़े आदमी ने जबाव दिया। ''कुछ लोग कभी ध्यान नहीं लगाते क्योंकि वे इस लायक नहीं हैं और कुछ, जो लायक हैं, वे ध्यान नहीं लगाते क्योंकि वे नहीं जानते, कैसे। ध्यान एक कला है, जो दी जानी चाहिए, ये एक कला है, जो किसी के अह्म को उन्नत ऊंचाईयों तक उठाती है।'' वह एक क्षण के लिये, विचार में रुका, तब उसने छोटे से कहा, ''आज खाना तलाशने के लिये, तुम अकेले ही यात्रा करो। मुझे तुम्हारे वरिष्ठ को निर्देश देने चाहिये। समय पर, यदि तुम योग्य हुए

तुम्हारा अवसर आयेगा।''

* * * * * * *

अनेक लोग कहते हैं कि वे ''ध्यान लगाने जा रहे हैं'', परंतु वास्तव में, इन लोगों में से अधिकांश को इसका हल्का सा भी विचार नहीं है कि सही ध्यान का अर्थ क्या है। वे सोचते है कि ये कोई गूढ़ चीज है, जबकि, अधिकांश पराभौतिकी मामलों की तरह, ध्यान सरल है और मात्र एक सिरे की ओर जाने का एक साधन है, एक तरीका, जिसके द्वारा कोई निश्चित परिणामों को प्राप्त कर सकता है।

पराभौतिकी के औसत विद्यार्थी के सामने आने वाली बड़ी परेशानियों में से एक यह है कि अधिकांश मौलिक प्रशिक्षण और अधिकांश मौलिक शोध, तिब्बत और भारत में किया गया था, जहॉ इससे पहले कि वहॉ पश्चिमी विश्व में कोई भी सभ्यता पनपती पाती, शताब्दियों पहले सभ्यतायें पनप चुकीं थीं।

वास्तव में, वहॉ प्राचीन चीन की एक महान सभ्यता थी, परंतु, यद्यपि चीन के एक महान धार्मिक महिमामय होने का गुण गाया गया है, वास्तव में, चीन युद्धकलाओं में अधिक रुचि रखता था। चीन की सभ्यताओं ने हमको, विस्फोटकों के रूप में, ऊंची उड़ने वाली पतंगों, जो जहरीले बाणों के झरने निकालती हैं, जैसी संदिग्ध पूंजी दी, और, पर्याप्त आश्चर्य के साथ, शताब्दियों पहले के चीनी लोग, राकेट की युद्ध सामग्री को काम में लाने वाले, सर्वप्रथम थे। उनके ''परमाणु बम'' रॉकेट के सिरों पर ले जायी जाने वाले ज्वलनशील पदार्थों की भारी मात्रा थी; ये ज्वलनशील पदार्थ, शत्रु के क्षेत्र में चलाये जाते थे, जहॉ वे आदमियों और सामग्रियों को, बिना विचारे जला दिया करते थे।

चीन ने हमको कलायें और हस्तकलायें भी दीं, जिनके ऊपर, वास्तव में, अधिकार किया जाना है, परंतु चीन ने, मुख्यतः, भारत के धर्म ग्रहण किये और उन्हें चीनी विचारों के अनुरूप बदल दिया।

जापान की अवहेलना की जा सकती है, क्योंकि, कुछ वर्षों पहले तक, जापान, दूसरे देशों के प्रभावों से अप्रभावित, एक अलग–थलग द्वीपीय देश था और जैसा कि जापान का वास्तविक इतिहास हमें बताता है, उन्होंने अपने धर्मों और संस्कृतियों में चीनियों की नकल मात्र की है। जहॉ से जापानियों ने द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रदर्शित, अपनी क्रूरता, जो केवल अनुमान का विषय हो सकती है, पायी, परंतु निश्चितरूप से, वे विश्व को खराब और क्रूर व्यवहारों की ओर ले जाते हैं, और ये कुछ आश्चर्य जैसा है कि ये छोटे लोग, अब दूसरे राष्ट्रों के बीच सहन किये जाते हैं। निस्संदेह, इसे मित्रता के बजाय व्यापार कहते हैं।

अनेक कठिनाइयों में एक बड़ी–अपने मूल विषय पर वापस आने के लिये– यह है कि, संस्कृत और दूसरी पूर्वी भाषाओं में अनुवाद करने में, किसी पश्चिमी भाषा जैसे कि अंग्रेजी में सही अर्थ को समझा पाना, हमेशा संभव नहीं होता। पश्चिमी भाषायें ठोस मामलों के साथ अधिक व्यवहार करती हैं जबकि सूदूर, सूदूरपूर्व की भाषायें, अभौतिक विचारों के साथ व्यवहार करती हैं, इसलिये ऐसा है कि अनेक चीजें, जो किसी मुहावरे के असल उपयोग पर निर्भर करती हैं, और जिनका दूसरी भाषा में कोई समांतर नहीं है, अनुवादकों को बेकार चीजों की ओर ले जाती हैं और गंभीर गलतफहमी पैदा करती हैं। निर्वाण, एक शब्द जिसे हमको यथार्थ रूप से पूर्वी अर्थ में समझ लेना चाहिए, के मामले में एक उदाहरण है, और इसलिये, जो ध्यान पर जाने से पहले, शीघ्र ही संदर्भित किया जायेगा, ये क्या है, और इसे कैसे किया जाये।

भारत की सभ्यता महान थी, एक सभ्यता जो स्वभावतः उच्चतम रूप से आध्यात्मिक थी। भारत, वास्तव में, उन्नयन–चक्र के इस विशेष काल में, सत्य धर्म का पालना (cradle of true religion) था, और अनेक राष्ट्रों ने भारतीय धर्मो की नकल की और उनको बदल डाला।

प्राचीन चीन की संस्कृति के कुछ चरणों में, जब राष्ट्राध्यक्ष माओ या युद्ध की तुलना में, आध्यात्मिकता और किसी के पूर्वजों की उपासना अधिक महत्व की थी, धर्म फलेफूले, परंतु कुछ चीनियों और कुछ भारतियों ने भी अपनी धार्मिक आस्थाओं को अत्यधिक शाब्दिक अर्थो में लिया क्योंकि, धर्म पहचान का एक चिन्ह, एक पथप्रदर्शक, व्यवहार की एक आचारसंहिता होना चाहिए। भारतीय और चीनी उसे भूल गये, और अक्सर मामला ये था कि एक चीनी या एक भारतीय, अपने पूरे जीवन को एक पेड़ के नीचे बैठकर निष्क्रिय चिंतन मनन में व्यतीत करते थे, ''ओह, मैं अभी, इस जीवनकाल में, इसे आसानी से लूंगा, जब मैं इस पृथ्वी पर दुबारा वापस आऊंगा, मैं इसके लिये तैयार हो सकता हूँ।'' ये कोई अलंकार नहीं है, ये कोई अतिशयोक्ति नहीं है, ये तथ्य है, और बहुत थोड़े समय पहले तक, किसी चीनी आदमी के लिये, इस समझ के साथ कि वह इसे (ऋण को) अगले जीवन में ब्याज सहित अदा कर देगा, इस जीवन में ऋण लेना, पूरी तरह से संभव था। क्या आप किसी पश्चिमी साहूकार की कल्पना कर सकते हैं– मैं देखता हूँ कि वे अब, अपने आपको उच्चश्रेणी का वित्त समवाय (finance companies)– कहते हैं, जो आज कुछ धन को, इस समझदारी पर अग्रिम दे कि ये उसे, जब वह अगले जन्म में आयेगा, वापस कर दिया जायेगा? निश्चितरूप से, इसमें कुछ मजेदार बहीखाते रखने की जरूरत होगी!

दोहराने के लिये– पूर्वी भाषायें मुख्यरूप से अभौतिक चीजों और आध्यात्मिक विचारों के साथ, व्यवहार करती हैं, जबकि पश्चिमी भाषायें, परिवहन, धन (या इसकी कमी!), और दूसरे सांसारिक विषयों के साथ काम में आने वाले शब्दों के साथ व्यवहार करती हैं। आप ये जानने में रुचि रखते होंगे कि कुछ वर्षों पहले तक जापानियों के पास कोई भावचित्र (ideographs) नहीं थे, अभिव्यक्ति की (ऐसी) कोई लिखित आकृति नहीं थी, जो रेडियो या अभियांत्रिकी में तकनीकी शब्दों के साथ व्यवहार कर पाती, इसलिये मेरी निजी जानकारी के अनुसार, जापानी तक्नीशियन, रेडियो, अभियांत्रिकी और दूसरी वैज्ञानिक अवधारणाओं पर, केवल समुचित शब्दों को अंग्रेजी में सीख लेने के बाद ही चर्चा कर सकते थे। उस सम्बंध में, यहॉ कुछ विशेष उल्लेखनीय नहीं है, क्योंकि हमारे पास, पश्चिमी देशों में, मामलों की, कुछ हद तक, वही स्थिति है, जहॉ विभिन्न राष्ट्रों के डॉक्टर, एक दूसरे की भाषा का एक शब्द न समझते हुए भी, लैटिन की सामान्य भाषा का उपयोग करते हुए, चिकित्सीय शब्दों और इलाजों पर अभी भी चर्चा कर सकते हैं।

संक्षिप्ताक्षरों (abbreviations) और उच्चरूप से शैलीकृत (highly stylised) संकेतों का उपयोग करते हुए, नौसिखियों (amateur) सहित रेडियो संचालक (radio operators), काफी अच्छी तरह से बातचीत कर सकते हैं, ताकि वे एक दूसरे को समझ सकते हैं, यद्यपि हर एक की भाषा, दूसरे को अज्ञात है। संभवतः आपने Q.R.M. जिसका अर्थ है शोर, या स्थैतिक (static), –या ''Q.R.T.'' जो किसी व्यक्ति को शांत होने के लिये कहता है, सुना होगा।

निर्वाण एक शब्द या अवधारणा है, जो पश्चिमी समझ के एकदम परे है। संभवतः पूर्वी शब्दों में निर्वाण को सर्वाधिक गलत रूप में समझा जाता है। पश्चिम के लोग सोचते हैं कि एक अच्छा पूर्वी व्यक्ति, मात्र बैठना और मात्र फूलों –इस मामले में कमल– को सूंघना चाहता है, और अपने आपको शून्यता (nothingness), की स्थिति में ले जाता है। अक्सर ये सोचा जाता है कि निर्वाण, उस स्थिति की ओर ले जाने वाला, जहॉ कुछ भी चीज अस्तित्व में नहीं है, जहॉ कुछ भी नहीं है, जहॉ स्मृति नहीं है, कोई क्रिया नहीं है, कुछ नहीं, जीवन का पूरी तरह से लोप (extinction) है। पश्चिमी लोगों के द्वारा निर्वाण को अक्सर ही, पूर्ण निर्वात् के उदाहरण के रूप में माना जाता है, और वे पूर्वी धर्मों, जिनको वे, अपने अज्ञान में, समझते हैं कि वे उनको पूर्ण और एकदम शून्यता की ओर ले जाते हैं, को त्याग देते हैं।

ये पूरी तरह से गलत है, निर्वाण का अर्थ स्वर्ग या उसके विपरीत नहीं है, इसका तात्पर्य किसी

ऐसे स्थान से नहीं है, जहॉ किसी प्रकार का, कुछ भी नहीं है– कोई स्थान भी नहीं! शून्यता की स्थिति में अस्तित्व में बने रहना संभव नहीं है, और फिर भी औसत पश्चिमी सोचता है कि कुशल व्यक्ति या मास्टर, या गुरु या आत्मज्ञान प्राप्त, एक ऐसी स्थिति पाने के लिये संघर्ष करता है, जहॉ वह हर चीज को, जिसको सीखने में उसने संघर्ष किया था, भूल जाता है और जिसमें वह और अधिक कुछ नहीं जानता, और किसी चीज को और अधिक अनुभव नहीं करता, न और अधिक अस्तित्व में होता है। ये हास्यास्पद है! ये कल्पनातीत रूप से अनर्गल है, और किसी ने सोचा होता कि साधारण समझदारी इंगित करती है कि, जहॉ कुछ भी नहीं हो, वहॉ अस्तित्व की कोई संभावना नहीं है।

कुशल, या गुरु, या स्वामी या आत्मज्ञान प्राप्त व्यक्ति या आप उसे जो कुछ कहना चाहें, निर्वाण चाहता है। निर्वाण, जैसा कि सामान्यतः माना जाता है, हर चीज को नकारना नहीं है, इसके बजाय, ये उन वासनाओं का, जो गलत हैं, समूल नाश करना है, ये घोटाले (scandal) का समूल नाश करना है, मिथ्या साक्ष्य, लालच, वासना, और दूसरे दोषों का समूल नाश करना है। आत्मज्ञान प्राप्त व्यक्ति, भूखा रहता है ताकि वह बुरी भावना से रिक्त हो सके और उनकी आत्मा उनके अंदर ऊपर उठ सके और इच्छानुसार शरीर को छोड़ सके।

इससे पहले कि लोग संज्ञानपूर्वक सूक्ष्मलोकी यात्रायें कर सकें, उन्हें अपने विचारों को शुद्ध करना होता है, उन्हें ये सुनिश्चित करना होता है कि वे केवल निष्क्रिय उत्सुकता के लिये, या ताकि वे किसी दूसरे व्यक्ति के निजी मामलों में झांक सकें, यात्रा नहीं करना चाहते। इससे पहले कि कोई व्यक्ति, संज्ञानपूर्वक और पूर्ण नियंत्रण के अंतर्गत, सूक्ष्मलोक की यात्रायें कर सके, ये एकदम आवश्यक है कि उनको संपूर्ण कामनाओं और वासनाओं से छुटकारा पाना चाहिए।

सुदूरपूर्व में अनेक लोग, अर्थात् वे अनेक लोग, जो आध्यात्मिक पथ पर हैं, चेतनापूर्वक सूक्ष्मलोक की यात्रायें कर सकते हैं। परंतु पूर्व (east) में, जीवन के तथ्यों के साथ भिन्न रूप से व्यवहार किया जाता है, और हमारे पास, उसके पीछे व्यवहार करने के लिये कारण हो सकता है। जबकि पश्चिमी विश्व में, शरीर के पाप, आत्माओं को जंजीर से जकड़ कर रखते हैं, वास्तव में, किसी व्यक्ति के लिये चेतनापूर्वक सूक्ष्मलोक की यात्रा, विरले ही होती है। आत्मा के बंधन को बनाये रखने के सामान्य तरीकों में से एक तरीका, गलत प्रकार का यौनजीवन (sex life) है। जबतक कि आदमी और औरत के बीच में प्रेम न हो, भले ही किसी प्रकार का हो, कोई यौन सम्बंध (sex) नहीं होना चाहिए; यदि ये लोग प्रेम में हैं, तब कोई सामान्य यौन–जीवन, जैसा कि कोई भी अतीन्द्रियज्ञानी बता सकता है, प्रभामंडल के रंग में चमक और स्पष्टता लाते हुए, प्रत्येक के प्रभामंडल की धाराओं की शक्ति को बढ़ाता है।

यदि एक आदमी और औरत, मात्र पाशुविक आनंद के लिये यौन जीवन में जुड़ते हैं, तब वे अपने प्रभामंडल के रंगों को काला कर लेते हैं, और वे धारा के परिवर्तनों को कमजोर बनाते हैं। गूढ़ चिन्तन की अनेक पूर्वी शालायें (Eastern schools of occult thoughts), चेतावनी देती हैं, और फिर से चेतावनी देती हैं कि यदि कोई प्रगति करने का प्रयास कर रहा हो, तो उसे विषय (sex) के गलत प्रकारों में नहीं उलझना चाहिए। दुर्भाग्यवश, पश्चिमी अनुवाद (translations), या गलत अनुवाद (mistranslations), बताते है कि आध्यात्मिक तलों में, कुल मिलाकर, पूर्वी लोगों का कोई यौन जीवन नहीं होता। ये फिर से गलत है, यदि दो लोगों को इसकी आवश्यकता है और वे वास्तव में प्रेम में हैं, यौन एकदम ठीक है।

भारत के मंदिरों में, और तिब्बत के मंदिरों में भी, चित्र हैं जिन्हें पश्चिमी लोगों ने, अपने अंधेपन में, उन्हें उत्तेजक (erotic), अश्लील (obscene), या अभद्र (pornographic) होने का विचार करते हैं। ऐसा नहीं है, और इन चित्रों पर टकटकी लगाकर देखना, किसी भी प्रकार से किसी पूर्वी व्यक्ति को परेशान नहीं करता। वे चित्रों को, जिसके लिये वे हैं, देखते हैं, वे देखते हैं कि ये इसका स्मरण मात्र है

कि क्या हो सकता है। संभोग की क्रिया (sexual act) जीवन का उत्पादन है, ये प्रबलतर प्रभामंडलीय धाराओं का उत्पादन है और चित्र, जो वास्तव में, भारत और तिब्बत में मंदिर की दीवारों को सुशोभित करते हैं, जो वास्तव में, सत्य यौनजीवन, और गलत यौनजीवन को भी, प्रदर्शित करते हैं ताकि दीक्षित लोग दोनों की तुलना कर सकें क्योंकि, कुल मिलाकर, जबतक कोई आपको दिखाता नहीं, आप कैसे जान सकते हैं कि क्या गलत है, और जबतक कोई आपको यह भी नहीं बताता, तबतक आप किसी चीज को सही ढंग से कैसे कर सकते हैं? गलत प्रकार का यौन जीवन, असुखद अभिव्यक्तियों, ठंडेपन, और तंत्रिका सम्बंधी परेशानियों की ओर ले जाता है, और एक आदमी और एक औरत की अच्छी अंतःप्रेरणाओं को दबाता है, जबकि यौनजीवन की सही आकृति, उन लोगों के लिये, जिन्हें इसकी आवश्यकता है, दोनों की आध्यात्मिक क्षमताओं को बढ़ाने की ओर ले जाती है।

कुछ समय बाद, जैसे ही दीक्षित व्यक्ति प्रगति करता है, और आत्मज्ञानी बन जाता है, वह इसे अपने आसपास के लोगों के सहयोग के बिना भी कर सकता है, वह इसे बिना यौनजीवन के भी कर सकता है, जिस पर कुछ निश्चित लोग विश्वास करते हैं, उसके विपरीत, इसके द्वारा वह कोई चीज खोता नहीं है। पृथ्वी पर यौनजीवन, एक बहुत ही भौतिक चीज है, परंतु जैसे जैसे कोई उच्चतर, और उच्चतर, तलों पर प्रगति करता है उसके अनुभव और भी शक्तिशाली, और अच्छे होते हैं, और, आप ये जानकर आश्चर्यचकित हो सकते हैं कि जब आप, अगले जीवन के लिये, इस पृथ्वी को छोड़ते हैं ये पूरी तरह से एक आवश्यकता, वास्तव में एक ''अनिवार्यता,'' है कि किसी के पास विपरीत लिंग की जानकारी हो, ताकि वह संतुलन प्राप्त कर सके!

कहने के लिये, ये एक अच्छा बिन्दु है कि हमको उन सभी विशिष्ट व्यक्तियों के द्वारा, जो दावा करते हैं कि वे बड़े विशेषज्ञ, बड़े स्वामी, और वास्तव में, महान सर्वज्ञ हैं, क्योंकि उन्होंने कुछ पुस्तकें पढ़ ली हैं, और उसके बाद में बिना ज्ञान के हो जाते हैं, ठगा नहीं जाना चाहिए; पुस्तकें अनुभव प्रदान नहीं करतीं, कोई एक पुस्तक को पढ़ सकता है और उसके बाद ज्ञानहीन हो सकता है। किसी आदमी या किसी औरत के लिये, घर की छतों के ऊपर से दावा करना कि वह एक बड़ा/बड़ी आत्मज्ञानी कुशल है, क्योंकि उसने अमुक–अमुक व्यक्ति के द्वारा लिखी हुई ये पुस्तक पढ़ी है, कल्पनातीत है, और ऐसा बहुधा घटित होता है। मुझे, अभी हाल में ही, ऑस्ट्रेलिया के एक निरक्षर साथी से एक पत्र मिला था। उसने मुझे विश्वास दिलाया कि वह एक अवतार था, वह जानता था कि वह ऐसा था, क्योंकि, उसकी पत्नी ने उसे ऐसा बताया था, और क्योंकि उसने एक या दो पुस्तकें पढ़ीं थीं और इस सम्बंध में काफी बातें की थीं!

असली पैमाना ये है कि एक व्यक्ति के पास क्या अनुभव है? उदाहरण के लिये, क्या आप, अपने जीवन को हवाईजहाज के किसी ऐसे चालक को सौंप देंगे, जिसने उड़ान के सम्बंध में एक पुस्तक, केवल पढ़ी है? क्या आप यहॉ से, एक दूसरे महाद्वीप की ओर, ऐसे एक कैप्टन और अधिकारियों, जिन्होंने नौकाचालन, जलयान के प्रबंधन के ऊपर, केवल एक पत्राचार पाठ्यक्रम किया है, के द्वारा कमान में लिये जाते हुए एक जलयान के ऊपर जलयात्रा करेंगे ? स्पष्ट रूप से नहीं। समान तर्कों का उपयोग करते हुए, आप अपना प्रशिक्षण किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं सौंपेगें, जिसने कुछ किताबें पढ़ी हैं, या जिसने पत्राचार पाठ्यक्रम किया है, जो वह कुछ अधिक भुगतानों के लिये आपको बेचना चाहता है। किसी चीज का अध्ययन करने से पहले, आपको उस व्यक्ति, जिस पर आप स्वयं को पढ़ाने के लिये विश्वास करते हैं, के अनुभव से परिचित होना चाहिए।

ठीक है, ये समय है कि हम ध्यान के ऊपर वापस चलें। अनेक लोग नहीं जानते कि ध्यान क्या है। ये क्या है? ध्यान केन्द्रीयकरण (concentration), या निर्देशित चिन्तन (directed thinking) का एक विशेष प्रकार है, जो मन को अनुशासित करता है और जो मन का एक विशेष रवैया बनाता है। ध्यान, प्रत्यक्ष विचारों की वह आकृति है, जो हमको अवचेतन के माध्यम से झांकने में सक्षम बनाती है,

और हमारे लिये, जिन्हें दूसरी प्रणालियों, या किसी भी दूसरे तरीके से देखना संभव नहीं होगा।

चूंकि ध्यान, मन को उच्चतर चेतना तक जाग्रत करता है, सीमांतक (extreme) महत्व का है। और ठीक वैसे ही, जैसे कि किसी व्यक्ति के पास एक बड़ा पुस्तकालय हो सकता है और वह किसी विशेष सूचना के लिये, अपनी पुस्तकों तक जाता है, मन को अधिक मुक्तरूप से अवचेतन में झांकने देने की आज्ञा देता है। जबतक कि वह व्यक्ति नहीं जानता कि उसे कहॉ देखना चाहिए, उसके एक बड़ा पुस्तकालय हो सकता है, परंतु वे इतनी बड़ी रद्दी कागज मात्र ही होंगी।

यदि किसी को आध्यात्मिक उपलब्धियों में वास्तविक उन्नति करनी है, तो ध्यान का अनुशासन आवश्यक है। ठीक वैसे ही, जैसे कि बिना अनुशासन के और बिना व्यायाम के, सेना अनुपयोगी होती है, इसलिये मानव मनस्थिति, ध्यान के अनुशासन और प्रशिक्षण को सही ढंग से लागू किये जाये बिना, भीड़ के एक सदस्य के रूप में बन जाती है।

एक पुस्तक, जो ऐसे किसी व्यक्ति, जो स्वयं ध्यान नहीं लगा सकता, के द्वारा लिखी गई है, को पढ़ने के द्वारा ध्यान के अभ्यास का प्रयास करना अनुपयोगी है। गूढ़ विज्ञान की अनेक पुस्तकें, गलत समझे गये पूर्वी दृष्टांतों के, मात्र अपाच्य ढेर हैं; पुस्तकें, जो ऐसे व्यक्तियों के द्वारा लिखी गई हैं, जो वास्तव में, ध्यान के सम्बंध में पहली चीज भी नहीं जानते, क्योंकि ये स्पष्ट है कि जबतक कि कोई व्यक्ति, जो स्वयं ध्यान नहीं लगा सकता, तो वह दूसरों को भी नहीं बता सकता कि ध्यान कैसे लगाया जाये।

इसे ध्यान में रखना चाहिए कि विश्व के अनेक देशों में– अर्थात् गैर ईसाई देशों में– मंदिर के कर्मचारी, मंदिर में प्रवेश करने से पहले, ध्यान में गुजरते हैं, वे ध्यान लगाते हैं ताकि उनका मन साफ हो जाये और उसे प्राप्त करने के लिये खुला हो जाये, जिसे पश्चिमी वार्तालाप (Western paralance) के शब्दों में कोई ''दैवीय रहस्योद्घाटन और निर्देश (Devine Revelation and instruction)'' कह सकता है। उदाहरण के लिये, यदि कोई, किसी के भगवान को, निर्देश की बकवास मात्र दे रहा है, तब प्रार्थना करना एकदम निरर्थक है। ये प्रार्थना करना बेकार है कि कोई सौन्दर्य प्रतियोगिता को जीत जाय या, वह आयरलैंड की लॉटरी (sweepstake) को जीत जाय। प्रार्थना करने की प्रक्रिया का प्रारंभ, हमेशा ही, ध्यान की एक अवधि, जो मन को, विचारों के कूड़े करकट से साफ कर देती है और किसी को उच्चतलों से ज्ञान प्राप्त करने के लिये तैयार करती है, के द्वारा किया जाना चाहिए। दोहराने के लिये–अनेक लोग अपने घुटनों पर बैठ जाते हैं और ''माल की आपूर्ति के लिये,'' अपने भगवान को आदेश देना प्रारंभ कर देते हैं, तब वे कहते हैं कि प्रार्थना कभी कारगर नहीं होती। ठीक है, पहले उन्हें ध्यान का प्रयास प्रारंभ करने दें। ध्यान के, वास्तव में, चार भिन्न भाग होते हैंः

1. पहला भाग है, ध्यान सम्बंधी वह अभ्यास, जो ध्यान लगाने वाले के व्यक्तित्व के वास्तविक विकास में सहायता देता है, और यदि कोई ध्यान लगा सकता है, और अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है, तब वह अधिक सुखद और अधिक सफल जीवन पाता है। कोई, जीवन के व्यक्तिगत पहलुओं में, पहले से अधिक सुखी हो जाता है, और कोई अपने साथियों से जुड़ने में अर्थात् काम में अधिक सफल हो जाता है। सफल ध्यान, यहॉ मानसिक क्षमता को भी बढ़ाता है।

2. ध्यान का द्वितीय चरण वह है, जो अधिकाांशतः प्रथम चरण के सफलतापूर्वक पूरा होने पर अपने आप आता है। ध्यान का दूसरा चरण वह है, जो भौतिक शरीर को, अधिस्वयं के साथ तालमेल (rapport) में लाता है, और अधिस्वयं को राष्ट्र के मनु के साथ तालमेल में लाता है। इससे पहले कि कोई इस पर, और उच्चतर मानकों पर, ध्यान लगा सके, ये आवश्यक है कि किसी का जीवन शुद्ध और वासनारहित (lustless) हो।

3. ध्यान का अगला चरण वह है, जो किसी को चरण एक तथा चरण दो के सभी लाभ प्रदान करता है परंतु जो इसके अतिरिक्त, किसी को पूर्ण गूढ़ समझदारी के लिये पात्र बनाता है। अर्थात् जब

कोई ध्यान के तीसरे चरण में पहुंचता है, वह समझने और आत्मसात् (apperceive) करने में सक्षम हो जाता हैः

आत्मसात् करना, वास्तव में, अनुभव करने से अलग है। आत्मसात् करना, मन का खुद को अनुभव करना है (वह सभी, जो अधिस्वयं को, अपनी स्वयं की आध्यात्मिकता की स्थिति को सुधारने के लिये पात्र बनाता है)।

4. अंत में, तथाकथित गूढ़ ध्यान (mystical meditation) आता है, क्योंकि ये पार्थिव अवधारणाओं से इतना परे, वल्कि उन लोगों की भी समझ के परे होता है, जो उस अवस्था तक पहुॅचने में सफल नहीं हुए हैं। ध्यान का चौथा चरण, रजत तंतु के माध्यम से हमें अपने अधिस्वयं तक ले जाता है, और तब आपके अधिस्वयं के रजत तंतु के माध्यम से, उस महान अस्तित्व की उपस्थिति में ले जाता है, महान अस्तित्व, जिसे अच्छे शब्द की तलाश में यहॉ अवनत किया जाता है, हम 'ईश्वर' कहते हैं। परंतु ध्यान के पहले दो चरण, आवश्यक चरण हैं और आपको उनके ऊपर पहले केन्द्रित करना चाहिए।

ध्यान का प्रारम्भ करने से पहले आवश्यक है कि अनुशासन हो, क्योंकि यदि कोई ध्यान के साथ, खेल कर रहा है, तो मानो वह आग के साथ खेल रहा है। आप एक बच्चे को, बारूद की नली और एक माचिस की डिब्बी के साथ नहीं खेलने देना चाहेंगे, कम से कम, आप उसे केवल एक ही बार ऐसा करने देंगे! उसी ढंग से, आपको, पराभौतिकी के ऐसे उच्चतर चरणों के अभ्यास के लिये महान अंकुश लागू करने चाहिए।

यदि आप किसी मनुष्य की, जो अचानक ही तय करता है कि वह मिस्टर एटलस (Mr. Atlas) की मांसपेशियों को पाना चाहता है, थोड़ी सी खरपतवार मात्र भी पा जायें, तो उसे कुछ निश्चित व्यायामों में होकर गुजरना होगा, बेचारा वह व्यक्ति अचानक ही, लोहे के दंड (barbell) इत्यादि, को नहीं पकड़ सकता और एक दिन में चौबीसों घंटे अभ्यासों में नहीं रह सकता, वह टूट जायेगा। उसी तरीके से, ये पूर्णतः आवश्यक है कि ध्यान को आत्मा के अभ्यास के रूप में समझा जाये, और यदि आप ध्यान के अभ्यास में वेटिकन (Vatican) में होकर दौड़ते हुए एक अमेरिकी यात्री की तरीके से, केवल यह कहने के लिये कि वह वहॉ रहा है, दौड़ लगायेंगे, तब आप पायेंगे कि आपका जोश घटना शुरू हो जायेगा। आपको पूर्व व्यवस्थित योजना के अनुसार, अनुशासन और काफी पूर्व तैयारियों के साथ, अभ्यास करना चाहिए, क्योंकि, हम खरपतवार जैसे नाचीज मनुष्य हैं– यदि वह अत्यधिक अभ्यास करता है और बहुत अधिक बजन उठा लेता है और अत्यधिक अभ्यास करता है, तो वह पायेगा कि वह अपनी मांसपेशियों में इतना कड़ा हो गया कि वह मुश्किल से ही चल फिर पाता है। परंतु आप याद रखें, कि ध्यान के साथ, आप मन में कड़े हो सकते हैं और वह मामलों की एक भयानक अवस्था है।

इसलिए इस सब के बावजूद, आप ध्यान लगाना चाहते हैं ? आप वास्तव में, इस चीज में चलते रहना चाहते हैं ? ठीक है, हमें देखने दें कि अब आप इससे थोड़ा आगे कैसे पसंद करते हैं; ध्यान लगाने के लिए आपके पास, अपने दिन में एकदम शांति का समय होना चाहिए और आपको ये समय सुबह जल्दी निकालना चाहिए। ये कारणों में से एक है कि पुजारी लोग, क्यों खाना खाने से पहले ध्यान लगाते हैं। ध्यान लगाने से पहले, आपको कोई भोजन नहीं लेना चाहिए, और आपको बिस्तर में ध्यान नहीं लगाना चाहिए, यदि आपने ऐसा करने का प्रयास किया, तो आप सो जायेंगे। इसलिए – सामान्य से एक घण्टा पहले जगने की व्यवस्था करें, और जब आपका अलार्म बजना बंद हो जाए और आपको जगा दे, बिस्तर में से उठें, मुंह धोयें और परिधान पहनें, क्योंकि मुंह धोने और परिधान पहनने की प्रक्रिया आपको इतना जगा देगी कि आप फिर से बिस्तर में जाने और सोने के लालच में नहीं पड़ेंगे।

यदि आप इस चीज को, वास्तव में गंभीरता से करना चाहते हैं आपको अपने अंदर वाले कमरे का एक कोना अपने लिए रखना चाहिए। आपके पास एक छोटा मंदिर होना चाहिए, जो आपके ध्यान

को उस पर, जिस पर आप करना चाहते हैं, जोड़कर रखने में सहायक होगा। इसलिए, उन लोगों के लिए जो वास्तव में गंभीर हैं, यहॉ वह है कि कैसे आगे बढ़ा जाए :

शरणस्थल के रूप में, एक कमरा लें, एक छोटा कमरा भी चलेगा, एवं जब आप उसमें अंदर न हों, उस कमरे के दरवाजे बंद रखें। कोने में, सफेद कपड़े से ढकी हुई एक छोटी टेबल रखें। सफेद कपड़े के ऊपर कोई चित्र, उदाहरण के लिए, एक हो ताई (Ho Tai), सजीव ईश्वर का चित्र (नहीं, आप कब्र के बुतों (graven-images) की पूजा नहीं कर रहे हैं! हो ताई मात्र एक चिन्ह है), रखें। (अगर जलाने के लिये) एक तेज अंगीठी रखें और मोटी अगरबत्ती, जिसे आप जलाऐं और तब उसे बुझा दें ताकि ये एक सुखद धुंआ निकालती रहे। ये आपको मदद देगी, यदि आपने अगरबत्ती के जलने का समय पहले से नाप लिया है, जैसे कि, उदाहरण के लिए, आधे घण्टे तक के लिए, ताकि जब आपकी सुगंध खत्म हो जाए, आप अपना ध्यान समाप्त कर दें।

गंभीर ध्यान लगाने वाले एक विशेष प्रकार का ध्यान का परिधान पहनते हैं क्योंकि ध्यान की

पोशाक का पूरा विचार ये है कि आप अपने आपको बाहरी प्रभावों से बचा कर रख रहे हैं। ध्यान लगाने की पोशाक, एकदम पूरी लंबाई के साथ, ढीली आस्तीन वाली, और खींचकर टोपी सिर के ऊपर लगाने वाली होनी चाहिए। आप इसे पतली काले रेशम में बना सकते हैं या यदि आप पायें कि ये अत्यंत खर्चीली है, तो पतली काली सूती भी हो सकती है। जब ध्यान का परिधान उपयोग में न हो तो इसे काले रेशमी कवर में रखना चाहिए, जहॉ इसे किसी दूसरे के द्वारा नहीं छुआ जाये। आप सोच सकते हैं कि ये सब फालतू है, परंतु ऐसा नहीं है, आप जानते हैं, ये वांछित परिणामों को प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका है, और यदि आप वांछित परिणाम चाहते हैं तो आपको नियमों के अनुसार काम करना होगा। इसलिए जब आप ध्यान लगाने वाले हों– अपनी ध्यान की पोशाक को पहनें।

अब कि आपके पास अपना कमरा है, अपनी ध्यान की पोशाक है, अपना हो ताई है, और अपनी सुगंध है, कमरे में जायें और शांति से नीचे बैठें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कैसे बैठते हैं, आपको पालथी ही मारकर बैठने की जरूरत नहीं है। किसी भी तरीके से बैंठें, जो आपको सुखप्रद हो और जो आपको तनाव या दर्द की अकड़न की लहर से बचाता हो, क्योंकि प्रारंभिक चरणों में, यदि आप सुखासन में नहीं हैं, आप ध्यान नहीं लगा सकते। जब आप कुछ क्षणों के लिए खामोश चिंतन (quit CONTEMPLATION) में, बैठ चुके हैं, आपको (इस) प्रार्थना को दोहराना चाहिए :

आज के दिन, दिन पर दिन, प्रस्तावित तरीके से अपने जीवन को जीते हुए, मुझे अपनी कल्पना को नियंत्रित और निर्देशित करने दें।

आज के दिन, दिन पर दिन, प्रस्तावित तरीके से अपने जीवन को जीते हुए, मुझे अपनी इच्छाओं और अपने विचारों को नियंत्रित करने दें ताकि उसके द्वारा मैं शुद्ध हो जाऊँ।

आज के दिन और सभी दिनों में, मेरी कल्पना और मेरे विचारों को उस कार्य पर, जिसे पूरा किया जाना है, जिस के द्वारा सफलता आ सकती है, दृढ़ता के साथ निर्देशित करें।

मैं सभी समयों पर, दिन पर दिन, मैं अपने जीवन को, कल्पनाओं और विचारों को नियंत्रित करते हुए जीऊंगा।

आपने देखा होगा कि वास्तव में, कमरे में प्रकाश नहीं है, परंतु बहुत अच्छी तरह से छायामय (अंधकारमय), वास्तव में, काफी हद तक अंधेरा है, ताकि हर चीज, काले की बजाए भूरी (grey) दिखाई देती है। आप शीघ्र ही अंधेरे की मात्रा, जो आपके लिये सर्वाधिक उपयुक्त है, जान जायेंगे।

यदि आप ठंडे पाने का एक गिलास लें, और उसे अपने दोनों हाथों के बीच इस तरह पकड़ें कि आपकी हथेलियॉ और उंगलियॉ ग्लास के चारों ओर हों परंतु शीर्ष पर एक दूसरे के ऊपर चढ़ी हुई नहीं हों, आप पायेंगे कि आप दूसरे अभ्यास के लिए समुचित स्थिति में हैं। अब एक हाथ की उंगलियों को फिसलायें, ताकि वे दूसरे हाथ की उंगलियों के रिक्त स्थानों के बीच फंस जायें ताकि आपके हाथ और उंगलियॉ, जितना अधिक संभव हो, ग्लास पर व्यवस्थित हो जायें।

शांति से बैठें और एक लंबी सांस लें। उन अभ्यासों का अभ्यास करें, जो *पुरातनों की बुद्धिमत्ता (Wisdom of the Ancients)* में बताए गए हैं, परंतु एक लंबी सांस लें और एक लंबी खींची हुई आवाज के साथ हवा को बाहर निकल जाने दें। 'रर्ररर्ररर अअअअअ' ध्वनि होगी। आपको इसे जोर से करना चाहिये, इसके लिए आपको चीखने की जरूरत नहीं है, यद्यपि आप इसे एकदम स्पष्ट मृदुलता से कर सकते हैं, और आपको इसे गंभीरता से लेना चाहिये, क्योंकि ये एक गंभीर अभ्यास है। इसे तीन बार दोहराऐं, तब बैठें और कई मिनिटों के लिए ध्यान से निरीक्षण करें, चूंकि दंत से सम्बंधित या चुंबकित, पानी, शरीर के ईथरिक को, पानी के ग्लास के आसपास, एक बादल के रूप में फोकसित करता है। ये (ईथरिक) संघनित होगा ताकि आप, काफी भारी धुंध को, जो आपको, सिगरेट के नीले धुंए के बादल के रूप में संघनित हुई, की याद दिलायेगी, या यदि आप चाहें, अपने आपको एक बादल

के रूप में संघनित हुए अगरबत्ती के धुंऐ के रूप में याद करें, आसानी से देख सकें।

जब आप इसे एक या दो सप्ताह के लिए, और अपनी गंभीरता के ऊपर निर्भर करते हुए, शायद एक या दो महीनों के लिए कर लें, आप अपने जीवन बल में से कुछ को, पानी में देखने में सक्षम होंगे, और जब जीवन बल पानी में आता है, ये पानी को, ठीक वैसे ही जैसे कि, सोडावाटर प्रफुल्लित करता है, आवेशित कर देता है, परंतु आप अपने खुद के जीवन बल से जो चिनगारी और चमक देखेंगे, प्रकाश की चमकती हुई रेखायें और विभिन्न रंगों का घूर्णन होंगी। चीजों की ओर दौड़े नहीं, क्योंकि आपके पास काफी अधिक समय है; कुल मिलाकर, आपको रातभर में शहतूत का पेड़ नहीं उगाना है और आप जितने अधिक गंभीर हैं, आपको उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी और अंततः सफलता पानी के उस ग्लास को, संवेग के साथ जलती हुई आग की बहुरंगी चिनगारियों वाले एक लघु ब्रह्माण्ड और ग्लास की सीमाओं के अंदर घूमते हुए पानी के रूप में बदल देगी।

आपको अपना ध्यान, एक निश्चित प्रादर्श या समय–सारिणी में व्यवस्थित करना चाहिए। एक माला को रखना ताकि आप ध्यान के अपने चरणों के ऊपर नियंत्रण रख सकें, बहुत अच्छा विचार है। आप एक बौद्ध माला प्राप्त कर सकते हैं, या आप चाहें तो भिन्न भिन्न आकार के मनकों की अपनी खुद की माला बना सकते हैं, परंतु कोई बात नहीं कि आप एक बड़ी सख्त समय सारिणी में, कौन सी विधि उपयोग में लाते हैं। आपको उसी कमरे में, और उसी समय पर, और ध्यान के उसी परिधान को पहनकर ध्यान लगाना चाहिए। एक विचार या एक ख्याल को चुनते हुए, और अपनी छोटी वेदी के सामने खामोशी के साथ बैठे हुए प्रारंभ करें। सभी बाहरी विचारों का उन्मूलन करने का प्रयास करें, अपने ध्यान को अपने अंदर लगायें और वहॉ उस विचार पर, जो आपने तय किया है, ध्यान लगायें। जैसे ही आप केन्द्रीयकृत करते हैं, आप पायेंगे कि आपके अंदर एक हलका सा हिलना प्रारंभ हो जाता है; ये सामान्य है, कि हलके कंपन दिखाते हैं कि ध्यान लगाने वाला तंत्र कार्य कर रहा है।

सुझाव :

1. पहला ध्यान, प्रेम के ध्यान पर लगायें। इसमें आप सभी प्राणियों, जो जीवित हैं, के प्रति दयामय विचारों पर विचार करें। यदि पर्याप्त लोग दयालु विचारों को सोचते हैं, तब अंततः इसमें से कुछ, दूसरे लोगों पर अपनी छाप छोड़ता है, और यदि हमारे पास, खराब विचारों को सोचने वाले लोगों के बजाए, दयापूर्ण विचारों को सोचने वाले काफी लोग हों, तो संसार एक बिलकुल भिन्न स्थान हो जाएगा।

2. प्रेम के प्रथम ध्यान के बाद, आप दूसरे ध्यान के ऊपर एकाग्र हो सकते हैं, जो आपको परेशानियों में सोचने के लिए प्रेरित करता है। जैसे ही आप, जो परेशानी में हैं, उनके ऊपर सोचते हैं, आप वास्तव में, उनके दुखों के साथ और उनकी दैन्यता में 'रहते' हैं, और आप अपनी करुणा में से विचारों को– समझदारी और सहानुभूति की किरणों को भेजते हैं।

3. तीसरे ध्यान में आप दूसरों की प्रसन्नता की सोचें, आप महसूस करेंगे कि अंत में उन्होंने सौभाग्य और वह सब, जिसके लिए वे इच्छा करते हैं, प्राप्त कर लिया है। आप इन चीजों की सोचें, और आप आनंद के विचार बाहर के विश्व की ओर प्रक्षिप्त करें।

4. चौथा ध्यान है, बुराई का ध्यान। इसमें आप अपने मन को, पाप और बीमारी के ऊपर ध्यान लगाने के लिए जाने दें। आप सोचते हैं कि पागलपन और सामान्य के बीच, स्वास्थ्य और बीमारी के बीच, कितना संकरा फासला है। आप सोचें कि क्षण का आनंद कितना संक्षिप्त है, और देने के पूरे दोष को, क्षण के आनंद में कैसे बॉधें। तब आप दुख की सोचें, जो बुराई का मंथन करते हुए, उत्पन्न हो सकता है।

5. पांचवा ध्यान वह है, जिसमें हम शान्ति (serenity) और शमन (tranquility) प्राप्त करते हैं। शान्ति के ध्यान में आप क्षुद्रतल से ऊपर उठते हैं, आप घृणा की भावनाओं से ऊपर उठते हैं, आप

सांसारिक प्रेम की भावना से भी ऊपर उछलते हैं क्योंकि वास्तविक चीजों के लिये, पार्थिव प्रेम बहुत कमजोर स्थानापन्न (substitute) होता है। शान्ति के ध्यान में, आप दमन के द्वारा, और अधिक परेशान नहीं होते और न ही आप डरते हैं, न आप अपने खुद के लिए संपत्ति चाहते हैं, परंतु केवल उस भलाई के लिए, जो आप इसके द्वारा, दूसरों के लिए ला सकते हैं, संपत्ति चाहते हैं। शान्ति के ध्यान में, शांति के साथ ये जानते हुए कि आप, अपनी खुद की उन्नति के चरण में, सभी समयों पर, अपना सर्वोत्तम करने और अपना जीवन जीने जा रहे हैं, आप अपने खुद के भविष्य को समझ सकते हैं। वे, जो ऐसी अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं, उन्नति के मार्ग पर ठीक हैं, और वे जो हैं, विश्वसनीयता को, अपने ज्ञान से ऊपर और जीवन और मरण के चक्र से मुक्त करने वाले अपने अंतर्ज्ञान के ऊपर, रख सकते हैं।

आप आश्चर्य कर सकते हैं कि ध्यान के बाद क्या आता है। ठीक है, इसके बाद तन्द्रा आती है। हमको, अच्छे शब्द की चाह में, 'तन्द्रा' शब्द का उपयोग करना पड़ता है। वास्तव में, तन्द्रा ध्यान की ही एक अवस्था है, जिसमें यथार्थ 'आप' बाहर जाता है, और शरीर को छोड़ देता है, जैसे कि कोई कार से चला जाता है और उसे छोड़ देता है।

अब, जैसे कि हम सब, अक्सर अपनी लागत पर जानते हैं, यदि किसी के पास ठहराई हुई कार (parked car) है, वह कई बार, कार को कार चोरों के द्वारा चुराया हुआ पाता है। उसी तरह से, यदि लोग, पर्याप्त गहराई से, उसमें प्रवेश करने के लिए, जिसे हमें तन्द्रा की अवस्था का नाम देना चाहिये, अपने मन को वासनाओं इत्यादि से साफ किए बिना ध्यान लगाते हैं, तब वे दूसरे अस्तित्वों के द्वारा 'चुरा लिये जाने' को आमंत्रित करते हैं। तन्द्रा की अवस्था, उच्चरूप से खतरनाक अवस्था है, जबतक कि कोई सक्षम पर्यवेक्षण के अंतर्गत अभ्यास नहीं करता।

मौलिक तत्वों (elements) और देहमुक्त अस्तित्वों (discarnate entities) के विभिन्न रूप हैं जो हमेशा, आसपास ये देखने के लिए कि वे कितनी अधिक शरारत कर सकते हैं, चहलकदमी करते रहते हैं, और यदि वे किसी व्यक्ति के शरीर को लेकर काफी शरारत कर सकते हैं, तब वे, ठीक वैसे ही, किशोरों की भांति, जो कई बार एक कार को सड़क पर आसपास दौड़ाने के लिए चुरा लेते हैं, कुछ मौज पाकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं; निस्संदेह किशोर, बिना नुकसान पहुॅचाये, कार को वापस करने का पूरा इरादा रखते हैं, परंतु अक्सर कार को नुकसान पहुॅचता ही है। इसलिए जब कोई शरीर अधिग्रहीत कर लिया जाता है तो अक्सर ये हानिकारक होता है।

मुझे दोहराने दें कि यदि आपके विचार शुद्ध हैं, यदि आपके इरादे शुद्ध हैं, और यदि आप निर्भय हैं, तब आपको अतिक्रमित नहीं किया जा सकता, घेरा नहीं जा सकता या काबू में नहीं किया जा सकता, स्वयं भय को छोड़कर, वहॉ भयभीत होने के लिए कुछ नहीं है। मुझे दोहराने दें कि; यदि आप डरें नहीं तो आप एक ऐसा प्रभामंडल उत्सर्जित करते हैं, जो आपके शरीर को अधिकांशतः उसी तरीके से बचाता है, जैसे कि एक चोर घण्टी किसी घर को बचा सकती है, और यदि आपके विचार शुद्ध हैं और आपके पास कामनाऐं नहीं हैं, तब, जब कि शरीर पर अधिकार पाये जाने की कामना, आपकी चेतना में सिहरन पैदा करती है, आप तुरंत ही नीचे रजत तंतु को देखते हैं और देखते हैं कि ये क्या है, ठीक वैसे ही जैसे कि एक किसान, अपने सेवों को बचाने के लिए अपने बगीचे के ऊपर निगाह रखता है! जब तक कि आप डरे हुए न हों, आप पर कब्जा नहीं किया जा सकता, या आपको पकड़ा नहीं जा सकता या अतिक्रमित नहीं किया जा सकता। परंतु यदि आप ऐसी चीजों से डरे हुए हैं – ठीक है, अपने खुद के मन की शांति के लिए, और अपने खुद के शरीर की शांति के लिए, ध्यान की गहन तन्द्रा के चरण में खेल न करें ।

मैं, सिवाय अत्यधिक महान सुरक्षा उपायों के साथ, महान रूप से, सम्मोहन के विरुद्ध हूॅ क्योंकि यदि आपको किसी अनुभवहीन व्यक्ति के द्वारा सम्मोहन की तन्द्रा में रखा जाता है, यदि आप पूरी तरह ठीक हों, तो उसके पास अनेक भयानक अनुभव, घूमन्तू आश्चर्य हो सकते हैं, घूमते हुए यदि वह आपको

तन्द्रा के बाहर ला सकता है, इत्यादि। सम्मोहन की तन्द्रा एक निष्क्रिय तन्द्रा है, ये वह तन्द्रा है, जो किसी व्यक्ति के विश्वास, कि उसे सम्मोहित किया जा सकता है, के द्वारा प्रबलित किए हुए शक्तिशाली सुझावों की श्रंखला के द्वारा पैदा की जाती है। वास्तव में, जब कोई व्यक्ति सम्मोहित किया जाता है, हालात लगभग वैसे ही होते हैं जैसे कि जब कोई व्यक्ति भेंगा हो जाता है, क्योंकि ईथरिक दोहराव (etheric double) को, तुल्यकालन (synchronisation) से थोड़ा सा बाहर फैंक दिया जाता है, जिसका अर्थ है कि भौतिक और ईथरिक शरीर, अब एक दूसरे के और अधिक साथ नहीं हैं।

यदि आप एक बुरा सम्मोहकर्ता (hypnotist) पायें तो वह भयानक मात्रा में नुकसान कर सकता है, वह आपको बरसों के लिए नुकसान पहुॅचा सकता है। कुल मिलाकर, आप किसी ऐसे शल्य–चिकित्सक के पास नहीं जायेंगे, जिसने एक पत्राचार पाठ्यक्रम के द्वारा, अभी–अभी, शल्य चिकित्सा की तकनीकों को सीखा है, आपको एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है, जो निश्चयपूर्वक और कुशलतापूर्वक, आपकी चीरफाड़ कर सके। इसलिए– अपने स्वास्थ्य और अपने चिंतन की खातिर, अपने आपके सम्बंध में, नौसिखियों को दखलंदाजी नहीं करने दें। यदि आप किसी कारण से सम्मोहित होना चाहें, या आपके पास सम्मोहित होने के लिए कोई कारण हो, तब अपने खुद के क्षेत्र (area) में, किसी चिकित्सीय समिति के सम्पर्क में आयें और वे आपको कुछ नैतिक चिकित्सीय सम्मोहकों को, जो सावधानीपूर्वक निरीक्षण की हुई अवस्थाओं के अंतर्गत प्रशिक्षित किए गए हैं, बताने में सक्षम होंगे। आप सोच सकते हैं कि मैं खतरे को बढ़ा चढ़ा कर कह रहा हूॅ परंतु – ओह! हानि, जो अयोग्य, अपराधियों, और लापरवाह शौकीनों के द्वारा, सम्मोहन में पैदा की गई है, के सम्बंध में, आपको कुछ पत्र, जो मुझे प्राप्त हुए हैं, देखने चाहिए। ध्यान रखें कि जब आप सम्मोहित होते हैं, आपकी आत्मा को, आपकी चेतना के केन्द्र से बाहर की ओर दबा दिया जाता है।

माध्यमों के मामले में, ये अक्सर वे लोग होते हैं, जो तन्द्रा की स्वप्निल अवस्था में जाते हैं, सम्मोहन की एक स्वप्निल अवस्था क्योंकि जानबूझकर या अनजाने में वे अपने आपको हल्का सा सम्मोहित कर लेते हैं ताकि वे कुछ अधिक सुझाव देने योग्य (hyper-suggestible) हो सकें, और ऐसे किसी मामले में, जीवन के दूसरे छोर पर स्थित लोगों के द्वारा उनका उपयोग एक टेलीफोन के रूप में किया जा सकता है। परंतु जो हमने कहा है, साथ–साथ जो हमने देहमुक्त अस्तित्वों के सम्बंध में सीखा है, उसे याद रखें। यर्थाथतः भले लोग, जो गुजर चुके हैं, संदेशों को मृतात्मा आवाहन बैठकों (seances) में देते हुए, बेवकूफ बनाने में अत्यधिक व्यस्त होते हैं।

कुछ निश्चित अवस्थाओं के अंतर्गत, वास्तव में, किसी को एक अत्यंत कुशल और चेतनापूर्ण व्यक्ति मिल सकता है, जो भौतिक अवस्था में इस तन्द्रा में जा सकता है और फिर भी, सूक्ष्मलोक में सजग रह सकता है, और इसलिए प्रभावीरूप से उस प्रकार के व्यक्ति का निरीक्षण कर सकता है, जो नीचे, मृतात्मा–आवाहन बैठक के समूह के लोगों को संदेश दे रहा है। जब कोई विस्तारपूर्वक शोध कर रहा हो, ये एक अत्यंत उपयोगी साधन (tool) है, परंतु ये सुनिश्चित करना एकदम आवश्यक है कि मृतात्मा–आवाहन बैठक में, शोर या दूसरे लोगों की अनपेक्षित प्रविष्टि के द्वारा हस्तक्षेप न किया जाए।

गूढ़ तन्द्रा (occult trance) का एक अत्यन्त विशेष प्रकार है, दक्ष लोग, इसे 'मंदिर की नींद (tample sleep)" कहते हैं, और ये उन सब से, जो पूर्व में उल्लेखित की गई हैं, अलग, एक पूर्णतः भिन्न प्रकार की तन्द्रा है, क्योंकि कोई दीक्षित व्यक्ति, जिसने इस सब को मंदिर की अवस्थाओं में पढ़ा है, ही जानता है कि वह क्या कर रहा है, और वह अपने आपको जानबूझकर तन्द्रा की अवस्था में, ठीक वैसे ही फैंक सकता है, जैसे कि एक व्यक्ति अपने आपको किसी कार में फैंक सकता है, और उसे चलाकर ले जाता है, वह अपने स्वयं के नियंत्रण में है और दूसरों के द्वारा उस पर काबू नहीं किया जा सकता। परंतु वास्तव में, ये बरसों के अभ्यास पर निर्भर करता है, और जब तक कि एक व्यक्ति के पास आवश्यक अनुभव नहीं है, उसे हमेशा एक व्यक्ति के, जिसके पास इस प्रकार के अनुभव हैं, सर्वाधिक

सावधानीपूर्ण पर्यवेक्षण में रहना होगा।

तन्द्रा की अवस्थाओं के आसपास खेलते हुए, एक औसत व्यक्ति के पास, एक बहुत अच्छा लाभदायक सुरक्षा तंत्र होता है; आप तन्द्रा के आसपास खेलने का प्रयास करें, और यदि आप एक सामान्य शालीन व्यक्ति हैं तो आप पायेंगे कि आप नींद में जा पड़ते हैं! वह आपको मृत अस्तित्वों के द्वारा आक्रमित किए जाने से रोकता है। परंतु यहॉ भी दो बड़े खतरनाक स्थल हैं, उदाहरण के लिए : आप जगे हुए हैं, यद्यपि तन्द्रा की अवस्था में हैं, परंतु तब आप सो सकते हैं। अब उस क्षण पर, जब आप सोने और जगने के बीच में हैं, आप घेरे जाने के सर्वाधिक सम्भावित लक्ष्य हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कि, आप घेरे जाने से संक्रमित हो सकते हैं, जब (इन अवस्थाओं में) आप नींद में जा चुके हैं और अब जगे हैं। कृपया ध्यान दें कि ये केवल उसे संदर्भित करता है, जब लोग सम्मोहन या तन्द्राओं के आसपास खेल रहे होते हैं, और वहॉ सामान्य दिन और रात के रहने की, जाग्रत/नींद की अवस्था में और नींद की अवस्था/जाग्रत अवस्था में, किसी भी प्रकार का कोई खतरा नहीं है।

इस सबसे ये समझ में आता है कि जब तक आपकी सावधानीपूर्वक निगरानी नहीं की जाती, आप तन्द्रा की अवस्थाओं में दखल देने में बहुत अधिक विद्वान नहीं होंगे, क्या ऐसा नहीं है ?

कुछ निश्चित मंदिरों में, प्रशिक्षण पा रहे व्यक्ति की, दो वरिष्ठ लामाओं, जो वेदीसेवक (acolyte), कुछ भी सोच रहा हो, उसके (सोच के) साथ सम्पर्क रखने में सक्षम होते हैं, के द्वारा निगरानी की जाती है, और तब उनके नम्र परंतु दृढ़ पथप्रदर्शन के द्वारा, वेदीसेवक को स्वयं को किसी प्रकार की क्षति करने से, या किसी दूसरे को भी क्षति पहुंचाए जाने से रोका जाता है। जब वेदीसेवक निश्चित परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर सकता है, तब उसे स्वयमेव गहरी तन्द्राओं में जाने की आज्ञा दी जाती है, और सामान्यतः, पहली कुछ चीजों में से एक, जो वह करेगा, वह है अत्यंत गहरी तन्द्रा में जाना, जिसे हम ''दृष्टि की तन्द्रा (trance of vision)'' कहते हैं। ये वास्तव में, गहरी तन्द्रा है, और दीक्षा प्राप्त व्यक्ति, पूरी तरह से अचल होगा, वह एकदम कड़ा, कड़े मांस के साथ भी, दिखाई पड़ सकता है। इस विशेष अवस्था में, वह अभी भी अपने शरीर में होता है, परंतु बहुत कुछ हद तक, किसी मीनार की चोटी पर चढ़े हुए किसी ऐसे आदमी, जिसके पास एक उच्चशक्ति वाला दूरदर्शी है, जो उसे स्पष्ट रूप से और काफी आवर्धित करके देखने में सक्षम बनाता है, के समान है। दूरदर्शी वाला व्यक्ति किसी भी दिशा में घूम सकता है, और अपने भौंचक्केपन की स्पष्टता के साथ देख सकता है कि क्या हो रहा है।

कोई, दृष्टि की तंद्रा में, अपने शरीर से बाहर नहीं जाता, इसके बजाय, इससे कि पहले कि आप बाहर जा सकें, आपको इंतजार और प्रक्षेपण की तंद्रा का अभ्यास करना पड़ता है और इस मामले में शरीर कोमल और झूलता हुआ, तथा सभी चेतना निकाला हुआ और धनुस्तम्भ (cataleptic) अवस्था में बचा हुआ, जैसा ये, देखभाल करने वाले के पर्यवेक्षण के अंतर्गत था, होता है। सांस, काफी कुछ घटी हुई दर पर चलती रहती है, और दिल की धड़कन घट जाती है और जीवन बड़े आराम से प्रवाहित होता रहता है।

सबसे पहले, जब आप इन तंद्राओं में जाते हैं, आप आश्चर्य करेंगे कि क्या जो आप देख रहे हैं, वह कल्पना है, परंतु अभ्यास के साथ आप जानेंगे कि सत्य क्या है और आसानी से उसे पहचान जायेंगे जो कि किसी दूसरे अस्तित्व, भले ही पुर्नजन्म वाला हो या बिना जन्म वाला, के द्वारा, मात्र एक विचार प्रक्षेपण है।

आपको एक उदाहरण देने के लिये; आप कहीं भी, जहॉ आप पसंद करें, शांति से बैठे हुए और गहरी तंद्रा में ध्यान लगाते हुए हैं। यदि आप अपनी चेतना को, अव्यस्थित (willy-nilly), बिना इसके ऊपर अधिक नियंत्रित किये हुए, घूमने देते हैं, आप स्वयं को एक व्यक्ति, जिसने काफी कुछ शराब पी रखी है, के पास पा सकते हैं, और आप सभी प्रकार के अजीब–अजीब जंतुओं को उसके आसपास

सताते हुए देखकर भयभीत हो सकते हैं। हॉ, ये धारीदार हाथी, विचारों की आकृति में, सत्य ही, अस्तित्व में होते हैं! उससे भी और अधिक खराब, यद्यपि, मानते हुए कि आप अपने आपको मात्र घूमने देते हैं और आप अपने आप को, अपने दिल में हत्या को रखे हुए, एक बहुत बहुत बुरे मिजाज वाले व्यक्ति के पास पाते है; यदि वह हत्या की सोच रहा है, तब आप, बेचारे पीड़ित आप, वास्तविक दृश्यों को देखेंगे मानो कि वे विचार मात्र होने के बजाय, यथार्थ थे और आप, ये सोचते हुए कि आपने एक हत्या या खराब चीज को देखा है, अगले चौबीस घंटों के लिये एक सिरदर्द पायेंगे, एक झटके के साथ, अपने शरीर में वापस आ सकते हैं!

दीक्षा प्राप्त पराभौतिकीविद् सरलता से उसे, जो कि सत्य है और उसे जोकि कल्पना है, पहचान सकते हैं, परंतु फिर ये सलाह दी जाती है कि जब तक कि आप के पास, गहन तंद्रा में जाने के लिये, कोई वास्तविक कारण न हो, आप इसे अकेला छोड़ दें।

यदि आप इस सलाह पर ध्यान नहीं देते है, ठीक है, इस पर ध्यान न दें; यदि एक गहरी तंद्रा में या सूक्ष्मयात्रा में, आपको, आप पर मुंह चिढ़ाते हुए भयानक अस्तित्व, या और भी खराब, मिलते हैं तब आपको, उनके बारे में, केवल मजबूत विचारों, कि आप नहीं डरे हैं, को सोचना है और यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप पायेंगे कि ये लोग गायब हो जाते हैं। वे केवल भय पर पोषित हो सकते हैं, और यदि आप डरे हुए नहीं हैं, तब वे, वास्तव में, हटा दिये जाते हैं।

निष्ठापूर्ण मित्रता में, मैं आपको, किसी सक्षम चिकित्सीय व्यक्ति के सिवाय, स्वयं को सम्मोहित न होने देने की सलाह देता हूॅ और मैं आपको सलाह देता हूॅ कि आप, सिवाय पात्रता प्राप्त पर्यवेक्षण के अंतर्गत तंद्रा में न जायें। साधारण ध्यान पूरी तरह से सुरक्षित है, आपको बिल्कुल कोई नुकसान नहीं होता, क्योंकि आप पूरी तरह से अपनी क्षमताओं (faculties), के अधिकार में हैं। इसलिये– ध्यान लगायें और इसका बहुत अधिक आनंद लें। सम्मोहन और गहरी तंद्रा को अनदेखा करें क्योंकि वे आपके विकास को रत्तीभर (jota) भी आगे नहीं बढ़ायेंगे।

अध्याय नौ :
क्या सूक्ष्मशरीरी यात्रा आपके लिये है?

रात की अंधेरी धुंध, धीमे धीमे भूरी में बदल गयी और उगते सूरज के पीछे से धीमे से वापस हुई। कुछ समय के लिये, लंबी घास से, कुहासे के गीले तंतु ऊपर उठे। शीघ्र ही, कोई, कॉट्सवोल्ड पहाड़ियों (Cotswold hills) के समीप गहरी घाटी में बसे हुये, पुराने–विश्व के गॉव को अत्यधिक गुनगुनाते हुए पहचान सकता था। जंगल, मानो कि छोटे गॉव को निगल जाने की धमकी देता हुआ, नीचे ढलानों पर फैला था, मुख्य सड़क के मध्य में होकर एक छोटा नाला टिमटिमाया और प्राचीन सभ्यता के कूड़े करकट को अपने साथ ले जाते हुए ठनठनाया।263

समीपवर्ती दलदल के पीले गारे के साथ छाया हुआ (thatched), पत्थरों के छोटे घरों वाला, अत्यधिक गुनगुनाता हुआ, एक विशिष्ट (typical) अंग्रेजी गॉव था। गॉव के दूर वाले सिरे पर, बत्तखों वाले तालाब के केन्द्र में, गॉव की हरियाली (village green) थी, जहॉ झिड़कियॉ (scolds), रुके हुए कीचड़ से ढके हुए पानी से काफी बाहर की तरफ प्रक्षिप्त होते हुए एक लंबे दंड के सिरे पर कुर्सी में डुबा दी गई थीं। थोड़ी दूरी पर, तालाब के गॉव की तरफ वाले पार्श्व के समीप, पर्वत की ओर, संभवतः पुराने लावा प्रस्तर (besalt) के निस्सारण का अवशेष, पत्थर का एक छोटा सा प्लेटफार्म था। यहॉ, जादूगरनियों को पकड़ना और ये देखने के लिये कि वे डूबती हैं या तैरती हैं, उन्हें पानी में फेंक देने का रिवाज था। यदि वे डूबतीं तो वे अनजान या भोली होतीं; यदि वे तैरतीं, तो ये माना जाता कि शैतान उनका समर्थन कर रहा था, और इसलिये, बेचारी गरीब फिर से, तबतक वापस फेंक दी जाती जबतक कि ''शैतान की बांहें,'' अंतिम रूप से थक नहीं जातीं और वह डूब नहीं जाती।

फूल से सजाया हुआ डंडा (maypole) अभी भी रिबनों से बांधा हुआ था, क्योंकि गुजरा कल, एक पवित्र दिन रहा था, और गॉव के जवान डंडे को नचाते रहे थे और शादी करने का वचन दे रहे थे।

जैसे ही प्रकाश बढ़ा और दिन आगे बढ़ा, धुंऐ के छोटे धब्बे, ये संकेत देते हुए कि इंग्लैंड के किसानों ने, अपने काम के लिये बाहर जाने से पहले, स्वयं को अपने नाश्ते लेने के लिये प्रेरित किया है, गारे की छतों के छेदों या छाई हुई छतों की छोटी चिमनियों में से रिसते गये। नाश्ता – पीने के लिये एल (ale) और खाने के लिये सूखी खराब रोटियॉ, क्योंकि उन दिनों में चाय या कॉफी के समान ऐसी कोई चीज नहीं थी, कोको भी नहीं, और वे विरले ही – शायद वर्ष में एक बार– किसी भी प्रकार का मांस खाते थे, केवल धनाड्य परिवारों ही किसी मांस– जिसे वे अपने खुद के आसपड़ौस में पैदा कर सकते थे, का स्वाद जानते थे।

वहॉ हड़बड़ी की, अत्यधिक हलचलों की आवाजें आईं। शीघ्र ही, लोग माल ले जाने वाले पानी के जहाज, या अनाजघर की ओर या खेतों में घोड़ों को पकड़ने और उन्हें पोषित करने के लिये बाहर जाते हुए, दरवाजों के बाहर उमड़ पड़े। औरतें, अपने घरों में सफाई करती हुईं, धूल झड़ाती हुईं, बनाती और मरम्मत करती हुईं, और आश्चर्य करते हुए कि उपलब्ध कम रकम में कैसे काम चलाया जाये, व्यस्त थीं, क्योंकि अदलाबदली (barter) से इतना किया जा चुका था, और अब गॉव में हर आदमी जानता था कि हर दूसरे व्यक्ति के पास क्या था, और अब ये, कुछ यात्रियों के आने और नई चीजों को लाने का समय था।

सुबह, सूर्य के प्रकाश की चमकीली किरणों को गॉव की गलियों के साथ हरी सी बैल की ऑख (greenish bull's eye) वाली कॉच की कुछ खिड़कियों में से प्रखरता के साथ परावर्तित करके चमकाते हुए, बढ़ती गई। शीघ्र ही बड़ी हलचल हुई; श्रीमती हेलन हाईवाटर (Mistress Helen

Highwater), गली के अंत के एक घर में से उछल कर निकलीं और मरम्मत करने वाले रास्ते (cobbled way) की तरफ धमाधम दौड़ पड़ी, उसके पुराने इलास्टिक किनारे वाले बूट, उसके ढीलेढाले, भारीभरकम घाघरे के नीचे से शर्म के साथ दिख रहे थे, क्योंकि, वे उसके दौड़ने के कारण थोड़ी तेजी के साथ घूम रहे थे। फीतों से सजे टोप (beribboned poke-bonnet), जिसे वह पहने थी, के नीचे उसका चेहरा, गहरा लाल चमक रहा था और पसीने की हल्की सी, पतली सी पर्त के साथ ढका हुआ था। वह, सर्दी के तूफान के सामने दौड़ते हुए, पूरी तरह से तैयार, दो मस्तूल वाले जहाज की तरह से समेटती हुई, आगे घूमी, चट, चट, चट, चट, चट, चट, उसने अपनी ऐड़ियों को चिकने पैबंदों के शिखरों के ऊपर ठोका। अपनी नाक की सीधी वाली दौड़ को बिना रोके, उसने अक्सर अपने सिर को घुमाया, अपने कंधों पर झांकने के लिये मुड़ी, मानो कि उसने सोचा हो कि किसी शैतान के द्वारा उसका पीछा किया जा रहा था। मात्र एक नजर, तब वह नवीनीकृत ऊर्जा के साथ आगे बढ़ी, उसकी सांस छोटे छोटे टुकड़ों में और हॉफनी में आ रही थी। शीघ्र ही, जब तक वह गली के अंत तक पहुंची, उसकी सांस सुअर की गुर्राहटों (staccato grunts) के समान असम्बद्ध श्रंखला के रूप में आ रही थी।

पैबंद लगाने वालों की गली के अंत में, वह दायीं ओर मुड़ी, जहॉ दवा की दुकान (apothecary's shop), शेष सभी घरों से अलग हट कर, एकांत भव्यता में खड़ी थी। अपनी नाक की सीध दौड़ से, वह क्षण भर के लिये रुकी और उसने फिर अपने आसपास देखा, तब उसने, अपने ऊपर वाली सीसायुक्त खिड़कियों को देखा। घर के बगल के आसपास झांकते हुए, उसने देखा कि दवा बेचने वाले का घोड़ा रस्सी से बंधा हुआ नहीं था, इसलिये सामने की ओर लौटते हुए, वह जीर्णशीर्ण पत्थर वाले तीन पायदानों पर ऊपर की ओर दौड़ी और उसने बलूत की लकड़ी के (oaken) दरवाजे को धक्का देकर खोला। जैसे ही उसने अपना रास्ता अंधेरे और उदास कमरे की ओर बढ़ाया, टुन, टुन, टुन, टुन, एक छोटी घंटी की आवाज हुई।

गंध ने हर तरफ से, उसके ऊपर हमला किया, कस्तूरी और दालचीनी, नीबू, चंदन, और चीड़, और दूसरी अजीब सुगंधियॉ, जिन्हें उसे नकुए नहीं पहचान पाये। वह हॉफती और छोटी सांसें लेती हुई और अपनी सांस को वापस लौटने की प्रतीक्षा करती हुई वहॉ खड़ी रही, जबकि दुकान के पीछे के कमरे में से एक दूसरी औरत, दवा बेचने वाले की पत्नी प्रकट हुई।

''वहॉ, वहॉ'' वह चिल्लायी, ''केवल अपने आपको व्यवस्थित करो, और इसके बारे में मुझे पूरा पूरा बताओ। मैं एल (ale) का एक पैमाना तुम्हारे लिये उड़ेल दूंगी और तब तुम अच्छा अनुभव करोगी।''

''ओह इडा शेक्स (Ida Shakes)!'' हेलन हाईवाटर ने कहा। ''मैंने फिर से इसे पिछली रात को देखा, वह आकाश में, अपनी पृष्ठभूमि में चंद्रमा के साथ, ऊँची थी वह नग्न, एक जेवर्ड (Jaybird) की भांति नग्न और भोजपत्रों के पत्तों की बड़ी झाड़ू पर चढ़ती हुई थी।'' उसने अपने कंधे उचकाये और देखा मानो कि वह बेहोश ही होने वाली थी, इसलिये इडा शेक्स जल्दी से आगे बढ़ी और छोटे कोने के बगल से एक कुर्सी की ओर उसका मार्गदर्शन किया।

हेलन हाईवाटर ने नाटकीय रूप से आह भरी, और अपनी ऑखों को स्वर्ग की ओर लुढ़कने दिया। ''मैं वहॉ थी,'' उसने कहा, ''मैं अपनी जनानी कुटी में, अपने शयनकक्ष की खिड़की के सामने खड़ी होकर, बाहर की ओर चंद्रमा की दैवीय भव्यता और रात के आकाश को देख रही थी।'' वह रुकी और फिर से कराही। ''अचानक ही,'' उसने कहना जारी रखा, ''मैंने दायीं ओर देखा और एक बड़ी बूढ़ी उल्लू खिड़की के आरपार उड़ी, और जैसे वह उड़ी मैंने देखा कि वह किसी चीज से दूर भाग रही थी। मैंने अपनी गर्दन को, सारस की तरह से, दायीं ओर को टेढ़ा किया और वह आसमान में, परंतु अपनी नजर को उससे थोड़ा सा भी न हटाते हुए उड़ान भर रही थी, और मैंने सोचा, ''ओह मेरी प्रिय! वे सभी अनाड़ी और घुमक्कड़ (benights and gypsies), आदमी जो बाहर और नीचे आश्रय लिये थे, शैतान की लड़की को इस प्रकार सिर के ऊपर उड़ते हुए देखकर, वे जो कुछ भी सोचें।''

इडा शेक्स ने और अधिक एल (ale) उड़ेली और, थोड़े समय के लिये, उन्होंने, खामोशी में साथ–साथ पी। तब दवाई वाले की पत्नी ने कहा, ''हम साथ–साथ चलें और इस कहानी को अपने पादरी, आदरणीय श्रीमान् डोग्यिड (Mr. Doguid) को बतायें, वह जानेंगे कि इसके साथ क्या किया जाये। अब, जबतक कि मैं अपनी टोपी पहनती हूँ, तुम केवल अपनी सॉस को वापस लाओ और हम साथ–साथ बाहर जायेंगे। दुकान के बाद, मेरा दिखावा नौसिखिये (apprentice) का होगा।'' इसके साथ ही वह अपनी एड़ियों पर घूम गई, और तेजी से अपने पीछे के कमरे में गई, जहॉ हेलन हाईवाटर ने उसे, संक्षिप्त परंतु तीखी आवाज में आदेश देते हुए सुना।

शीघ्र ही, दोनों महिलायें, बगल की सड़क पर, गप्पियों (magpies) की तरह बतियाते हुए, तेजी से नीचे, पादरी के निवासस्थान की ओर, और एक लायक पादरी और आत्माओं के रखवाले, आदरणीय श्रीमान् डोग्यिड के साथ संगोष्ठी की ओर जा रही थीं।

लंदन से मीलों दूर, एक छोटे से गॉव में, तीखा प्रमुख वोल्से (cardinal Wolsey), अपने बिस्तर में, बैचेनी के साथ पलटा। वह जादूगरनियों का शिकार करने की योजनाऐं बना रहा था, राजाओं को बनाने और न बनाने, तथा राजकुमारियों और साथसाथ कंगालों के लिये संपन्नता लाने की, अपनी योजनाऐं बना रहा था। वह, लंदन नगर से कुछ मील दूर, हैम्पटन (Hampton) के गॉव में, अपने देहाती महल में निवृत (retire) हो चुका था। तब भी, वह हवेली को दोबारा बनाने, और लंदन के राजा के प्रतिद्वन्द्वी की भांति, इसे असंदिग्ध न्यायालय बनाने की योजना बना रहा था। परंतु अब, प्रमुख, जो थोड़ा सा जानता था कि भविष्य के वर्षों में, उसका नाम, अंतर्परिधान (underwear) के लिये व्यापार चिन्ह (trademark) हो जायेगा, बैचेनी से उछला, जबकि इंग्लैंड के पूरे विस्तार में, उसके विशेष खोजकर्ता छद्मवेश में, निगरानीपूर्ण, जादूगरनियों की ओर आशा करते हुए कि उन्हें प्रताड़ित किया जा सके, और ईश्वर की भव्यता के नाम पर उन्हें जलाया जा सके, और इसप्रकार उनकी आत्माओं को बचाने के लिये, घूमते थे।

लायक प्रमुख ने इन सभी चीजों पर चिन्तन किया और वह अपने नर्म गद्दों के ऊपर वापस झुका, और उसने? शिष्टतापूर्ण आत्मसंकोच के साथ विचार किया कि जब वह अंततः वहॉ होगा, वह स्वर्ग को कैसे पुनर्व्यवस्थित करेगा, यद्यपि पृथ्वी को इसी क्षण छोड़ने की उसकी कोई योजना नहीं थी, चूंकि वह शक्ति का काफी मजा ले रहा था।

अत्यधिक सुगबुगाहट वाले गॉव में वापस, दोंनों महिलायें, आदरणीय मिस्टर डोग्यिड से विदाई

लेने के लिये, उनके सामने खड़ी हुईं। ''ठीक है, तब महिलाओ,'' उसने गंभीरता से कहा, ''हम उस खिड़की पर, जिसके बारे में तुमने बताया है, निगाह रखेंगे, और हम देखेंगे कि हम क्या देखते हैं, और देखने के बाद, ईश्वर की भव्यता के लिये कार्यवाही करेंगे।'' उसने गंभीरता से सिर हिलाया और इडा शेक्स और हेलन हाईवाटर को पादरी के निवास स्थान के दरवाजे से बाहर रास्ता दिखाया।

शेष दिन के लिये, औरतों के छोटे समूह, एक दूसरे के साथ, गुप्त रूप से फुसफुसाते हुए, और जंगल, जो गॉव की परिसीमाओं तक फैला था, में ऊपर की ओर ताकते हुए देखे जा सकते थे। वहॉ हामी में सिरों का काफी हिलाना, और सिरों को काफी हिलाना, एप्रिनों के नीचे से हाथों का काफी जोड़ा जाना होता था। आदमी लोग, इससे अनजान कि क्या चल रहा था, अपनी औरतों के समाज के अजीब व्यहार पर रहस्यमय दिखाई दिये, जैसा कि आदमी लोग, अक्सर, कैसे भी करते है, और इसे एक प्रकार के चंद्रमा के पागलपन (moon-madness), जो औरतों पर अक्सर आता रहता था, का नाम दिया।

डंडे के पास, नीचे, लड़कों और लड़कियों का एक छोटा समूह, आसपास घूमा, नाचा और उछला कूदा चूंकि वे एक नये प्रकार के डंडे के नृत्य के पद–चालनों का अभ्यास कर रहे थे, जिसे वे दूसरे गॉव के आगंतुकों के सामने, शीघ्र ही प्रस्तुत करने वाले थे।

शीघ्र ही रात की छायायें एकत्रित हुईं, और आदमी लोग, जिन्होंने दिन भर काफी लंबा श्रम किया था, थकान के कारण कुम्हलाते हुए, अंधेरे होते खेतों में से वापस आये। वे मरम्मतशुदा गलियों में पांव घसीट कर चल रहे थे, और झटककर अपने घरों में घुस गये। पादरी के निवासस्थान की छाया में, दीवार के विरुद्ध झुके हुए चार आदमी, निम्नतम से भी निम्न फुसफुसाहट में बातें करते हुए, प्रतीक्षा कर रहे थे। तब जैसे ही अंधेरा अधिक गहरा हुआ, पादरी के निवासस्थान के बगल के दरवाजे में से एक आकृति प्रकट हुईः वह स्वयं आदरणीय श्रीमान् डोग्यिड थे। चारों आदमियों ने, सम्मानपूर्वक, माथे की लट (fore-lock) को पादरी के निवासस्थान से छुआया। उसने कहा, ''मेरे पीछे, खिड़की की कुटी तक, आओ, मैंने प्रश्न पूछने वाले को लाने के लिये, एक संदेशवाहक भेजा है।'' ऐसा कहते हुए वह मुड़ा, और उसने गॉव के मुख्य भाग की परिक्रमा करते हुए और जंगल की ओर बढ़ते हुए, अपने कपड़े उतारे। बीस मिनट के लगभग वे टहले, और तब वे चीड़ के पेड़ों द्वारा डाली गईं गहरी छायाओं में प्रविष्ट हुए। यहॉ प्रगति काफी कठिन थी, यहॉ केवल रात के आकाश के जामुनी ताने–बाने थे, जो विरली शाखाओं में से नीचे की ओर छानते थे, परंतु वे परिचय के माध्यम से, अपने रास्ते को महसूस कर सकते थे, और पहचान सकते थे, इसलिये वे उतने शांत रहते हुए, जितने कि वे हो सकते थे, चलते गये। अंत में, वे एक खुले स्थान में पहुॅचे और अखरोट की टहनियों और जले हुए कोयले के कुछ अवशेषों के ढेर के पास से गुजरे। उससे गुजरते हुए वे बायीं ओर मुड़े और खराब झोपड़ी के अंधेरे खाके को अपने सामने देखा। अब उनकी सावधानी पराकाष्ठा पर थी, वे पूरी तरह से आत्मनिरीक्षण करते हुए, सावधानी से आगे चले, कोमलता से उन्होंने पैर के पंजों को, झोपड़ी की ओर के खाली स्थान के पार रखा।

एकल पंक्ति में वे खिड़की के समीप पहुॅचे, जिस पर खराब तरीके से पर्दा पड़ा हुआ था, परंतु प्रकाश की नाममात्र की दरार (chink) बाहर चमकी। पादरी आगे बढ़ा और उसने दरार के ऊपर निगाह डाली, और अंदर देखा। अंदर, उसने एक तितरबितर कमरा देखा, खुद पेड़ों से काटे हुए, घर के बने फर्नीचर से मुश्किल से सजाया हुआ। रोशनी, जो उसने देखी, एक जलते हुए चीड़ के पेड़ के ठूंठ से आती हुई थी, जिसके ऊपर से राल (resin) अभी भी चू रहा था। जैसे ही वह धधकी और थुकथुकाई, वह देख सकता था कि कमरे के मध्य में एक बूढ़ी औरत, फर्श पर बैठी हुई थी। सावधानीपूर्वक सुनते हुए, वह पहचान सका कि वह कुछ चीज बड़बड़ा रही थी, परंतु वह देखभाल करता हुआ और सुनता हुआ, कुछ क्षणों के लिये वहॉ खड़ा रहा। तब एक चमगादड़ अचानक अंधेरे में से झपट पड़ा, वह नीचे

डूबा और उसने आदमियों में से एक के बाल को पकड़ लिया; भय की चीख के साथ, वह अपने पैरों पर झुका और तब सपाट होकर, डर से चेतना शून्य होते हुए, अपने चेहरे के बल गिर पड़ा।

जैसे ही, पादरी और तीन दूसरे आदमियों ने, हैरानी के साथ आश्चर्य में देखा, झोंपड़ी का दरवाजा चटाक से खुल गया, और बूढ़ी औरत इसमें खड़ी हुई थी। पादरी कुपित जीवन में आ गया, नाटकीय रूप से तर्जनी उंगुली का इशारा करते हुए वह चीखा, ''शैतान की बेटी, हम तुम्हारे लिये आये हैं!'' बूढ़ी औरत डर से, और अच्छी तरह जानते हुए कि अब उसके भाग्य में क्या है, खड़ी हो गई, क्रन्दन करते हुए, अपने घुटनों पर गिरी। पादरी के संकेत पर, तीन दूसरे लोग, जिनके पीछे अब चौथा था, जो डरते डरते अपने पैरों पर खड़ा हुआ था, बूढ़ी औरत तक गये, दो ने बेदर्दी से उसकी बाहों को उसके पीछे पकड़ा और दो झोंपड़ी में प्रविष्ट हुए। उन्होंने आसपास का चप्पा चप्पा छान मारा (rummaged around) और कोई मंत्र या जादू के उपकरणों का कोई चिन्ह न पाते हुए, उन्होंने चीड़ की गांठ (pine knot) को, चीड़ की सुईयों (pine needles) के ढेर में पलट दिया, जिससे झोपड़ी में लपटें उठीं और जैसे ही आदमी बापस लौटे, जलकर ध्वस्त हो गई।

चर्च के तलघर में, बूढ़ी औरत पादरी के सामने घुटने टेके बैठी थी। ''मैंने पूछताछ करने वालों को भेजा है,'' उसने कड़क कर कहा। ''तुम शैतान की बेटी हो, तुमने शैतान के साथ–साथ, आकाश में नंगे होकर यात्रा की है।

बेचारी बूढ़ी औरत, ये जानते हुए कि चूंकि उसका घर जलाया जा चुका है, बिना किसी सुनवाई के उस पर निर्णय सुना दिया गया है, भय के साथ चीखी। ''तुमको सम्राट के प्रश्न पूछने वालों के आनंद की प्रतीक्षा में, रात भर के लिये एक कोठरी में रखा जाना है,'' पादरी ने कहा, और चारों आदमियों की ओर मुड़ते हुए, उसने उनको बूढ़ी औरत को स्थानीय जेल में ले जाने के लिये और अगली सुबह तक उसको ताले में रखने के लिये निर्देशित किया।

अगली सुबह, विलंब से, जैसे ही घुड़सवार मरम्मतशुदा मुख्यसड़क पर आये और उन्होंने पादरी के निवासस्थान पर लगाम लगायी, कठोर दबी हुई जमीन की सड़क पर, खलबली में समाप्त होती हुई टापों की आवाज हुई। आगे वाले घोड़े से, जादूगरनियों से शाही प्रश्न पूछने वाला, निश्चितरूप से फूले चेहरे वाला (bloated-faced), सुअर जैसी संकरी आंखों वाला आदमी उतरा। उसके पीछे उसका सहायक और दो प्रताड़ना देने वाले थे, जिन्होंने प्रेम से अपने कार्य सम्बंधी उपकरणों से भरे हुए थैलों को घोड़ों की पीठों से हटाया। वे एक साथ पादरी के निवासस्थान पर गये, जहॉ पादरी उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ समय के लिये वहॉ कुछ सजीव वार्तालाप हुए, और तब आदमियों ने पादरी के निवासस्थान को छोड़ दिया और उस कमरे की ओर, जिसका उपयोग स्थानीय जेल के रूप में किया जाता था, अपनी राह पकड़ी। प्रवेश करते ही, उन्होंने बूढ़ी औरत को पकड़ा, जो अब भय के साथ बड़बड़ा रही थी और उसको कपड़े उतार कर नंगा कर दिया। सूक्ष्मरूप से उसकी जॉच करते हुए, उन्होंने, सिर से पैर तक, एक–एक इंच तीखी सलाईयां उसमें कोंची, और ये देखने के लिये कि वहॉ कोई ऐसा स्थान हो, जो कष्ट से बेजान (immune) हो, जादूगरनियों के लिये एक मानक परीक्षण।

शीघ्र ही, उन्होंने, उस पर, अंगूठे को कुचलने वाला शिकंजा कसा और उसे और अधिक कसा जबतक वह चीखी नहीं और पेच लाल नहीं हो गये।

अभी तक उसके द्वारा कोई स्वीकारोक्ति नहीं पाते हुए, क्योंकि सत्य ही, उसके पास स्वीकार करने के लिये कुछ भी नहीं था, उन्होंने उसे उसके बालों से पकड़ा और गॉव की मरम्मतशुदा गली में पूरे रास्ते खींचकर सड़क पर दौड़ाते हुए, उस बत्तखों वाले तालाब तक, जहॉ अबतक, एक उत्सुक जादूगरनी को डुबाते जाते हुए देखने और इसकी जानकारी की आशा में उत्साही, उत्सुक लोगों की भीड़, इकठ्ठी हो गयी थी, बाहर लाये। बूढ़ी औरत को पत्थर के चबूतरे पर, नंगा, सीधा खड़ा किया गया, जबकि आदमी तालाब के हर ओर फैल गये। तब पादरी उसके सामने खड़ा हुआ और उसने कहा,

''पिता, पुत्र और प्रेतात्मा के नाम पर, अब मैं तुमको जोर देकर कहता हूँ कि अपनी सत्य स्वीकारोक्ति करो कि ईश्वर की दया के अनुसार, तुम ये जानते हुए मर सको कि तुम्हारी आत्मा को बचा लिया गया है। इससे पहले कि अत्यंत विलंब हो, तुम स्वीकार कर लो।'' इसके साथ ही, उसने हवा में सूली का चिन्ह बनाया और एक बगल से खड़ा हो गया। बूढ़ी औरत आतंक के मारे शब्दहीन हो गयी।

चार आदमियों ने उसको हाथों और पैरों से पकड़ा, और उसे हवा में ऊँचा उछाल दिया। वह ऊँची गई और उसने झागदार फनीले तालाब में सिर के बल नीचे गिरने से पहले, हवा में एक कुलांच खाई। कुछ क्षणों के लिये, सतह पर केवल लहरें उठीं, और तब उसके बहते हुए बाल और सिर प्रकट हुआ। वह बेढंग तरीके से पानी पर छटपटाई और तैरने में कुछ प्रगति करती हुई दिखाई दी। तब किसी दर्शक ने एक भारी पत्थर फेंका, जो उसके सिर के बगल से लगा। इसके बाद दूसरे पत्थर फेंके गये। बेचारी बूढ़ी औरत ने भयानक, आत्मा को कष्ट देने वाली चीख निकाली, और ऑख की पुतली (eyeball) उसके गाल से नीचे, आगे पीछे झूलती हुई देखी गयी। अगले पत्थरों ने इसे वहाँ से विस्थापित कर दिया और लाश पानी, जो लाल रंग गया था, के नीचे डूब गई। एक मिनट, शायद अधिक के लिये, पानी के नीचे कुछ हलचल दिखाई दी और लाल का पूरा झरना, खून से रंगा पानी टीले के रूप में थोड़ी ऊंचाई तक उछला।

प्रश्न पूछने वालों में से एक, दूसरे की ओर मुड़ा और उसने कहा, ''इसलिये! शैतान ने उसे नहीं बचाया; शायद, जैसा वह दावा करती थी, अंततः वह अंजान थी।''

आदमी, जिसको उसने कहा था, ने अपने कंधे उचकाये और ज्योंही उसने कहा, ''ओह ठीक है, क्या बात है? हममें से हर एक को किसी समय मरना है, हमने उसको उसकी दीनता से मुक्ति दिला दी!'', एक बगल से घूम गया।

अलक्षित, अलग–थलग और अकेला, एक बूढ़ा कुबड़ा, छाया की तलाश में, पेड़ों के एक छोटे झुरमुट के नीचे भटक रहा था। उसकी ऑखों से ऑसू धीमे धीमे बहे और उसके झुर्रीदार गालों से नीचे गिरे। समय–समय पर, अपने गठीले हाथों के पीछे से, उसने उन्हें पोंछने का प्रयास किया। उसने जानबूझकर, सफेद रोयेदार भोहों के नीचे से, आगे झांका। ऐंठन के साथ, उसके बायें हाथ ने, मरोड़ी हुई पुरानी छड़ी, जिसका वह कष्टमय संचालन में, चलने में, खुदको सहायता पाने के लिये उपयोग करता था, को पकड़ा, और फिर पकड़ा।

जैसे ही बेचारी बूढ़ी औरत, अपनी मृत्यु की पीड़ा में नीचे की खरपतवार में फंसने के साथ साथ, अंतिम बार पानी की सतह के नीचे डूबी, वह बड़बड़ाया, ''बुरा, बुरा।''

एक औरत ने, सबकुछ समाप्त होने से पूर्व, कुछ देखने का प्रयास करने के लिये, रास्ते पर जल्दी करते हुए, उस ऐंठे हुए आदमी की जासूसी की और उसके बगल से रुक गयी। ''उसको क्या हुआ, बाबा? उसने तीखी आवाज में पूछा।

''हत्या कर दी गई!'' कुबड़े ने निश्चयात्मक स्वरों में जबाव दिया। ''अज्ञानता और अंधविश्वास की वेदी पर हत्या कर दी गई। वह कोई जादूगरनी नहीं थी, मैं उसके साथ स्कूल में पढ़ता था। वह एक शुद्ध आत्मा थी, जिसमें कोई बुराई नहीं थी।''

नौजवान औरत खिल उठी और उसने डरावने ढंग से कहा ''अच्छा हो कि आप, उससे, जो आप कह रहे हैं, सावधान रहें, बाबा, या आप अपने आप को, उसी तालाब में, उसके साथ पायेंगे; आप जानते हैं, आपके बारे में कुछ भद्दी अफवाहें रही हैं– यदि मैं आपकी अच्छी नातिन नहीं होती तो मैं खुद आपको बता चुकी होती। ऐसा कहते हुए, मोहक घटना के बीच झाकने के लिये लालायित, वह जल्दी से, अब शांत तालाब की उस सतह, एक सतह, जो केवल कभी कभी, सतह पर अचानक थपकी देते हुए लबालब भरे हुए बुलबुलों से अस्तव्यस्त होती थी, पर चली गई।

कुबड़े ने चिंतित ऑखों के साथ टकटकी लगाकर उसकी तरफ देखा और तब खुद में

बड़बड़ाया, अंधविश्वास, अंधविश्वास, हमेशा प्रगति का दुश्मन। हम, जो सूक्ष्मलोक की यात्रायें करते हैं, उन टेढ़े, अनजान, ईष्यालुओं, जो स्वयं इसको नहीं कर सकते, और उनको, जो इसे कर सकते हैं, को गलत विचार देते हैं, के शिकार होते हैं। मुझे सावधान रहना चाहिए, मुझे सावधान रहना चाहिए! ''दुखपूर्वक उसने फिर से तालाब की तरफ देखा, क्योंकि जॉच करने वाले, अब बूढ़ी औरत के कपड़े लाये थे, जिसको उन्होंने, जहॉ वह खड़ी थी, पत्थर के नीचे दबा दिया। उत्सवपूर्वक, अनेक धार्मिक मंत्रोचारों के साथ, बूढी चटकनों के साथ, उन्होंने चकमक पत्थर और टहनियॉ लगाईं। पहली चिंगारियों को हवा देते हुए उन्होंने कपड़ों से लपटें उठा दीं, और सामग्री के काले जले हुए छोटे कण, ऊपर की ओर चलती हुई घूमन्तू हवा में समेट दिये गये।

बूढ़ा कुबड़ा दुखी होता हुआ मुड़ा, उसने अपने कंधे उचकाये, और अंधेपन से ठोकरें खाता हुआ शरणदायक जंगल में चला गया।

हॉ, शताब्दियों से, जो सूक्ष्मलोक की यात्रा कर सकते थे, उनको, उन ईष्यालुओं के द्वारा, जो सूक्ष्मशरीर से यात्रा नहीं कर सकते, और जो इस विचार के ऊपर आक्रोश व्यक्त करते हैं कि जिसे दूसरे कर सकते हैं, उसे वे नहीं कर सकते, सजा और प्रताड़ना दी जाती रही है। फिर भी, अधिकांशतः कोई भी, यदि उनके इरादे ठीक हों, यदि उनके विचार ठीक हों, और यदि वे अभ्यास करते हों, सूक्ष्मशरीर से यात्रा कर सकता है। अब हम देखें कि सूक्ष्मशरीर से यात्रा में क्या करना होता है।

सब से पहले, किसी के विचार एकदम पवित्र होने चाहिए, क्योंकि जब कोई सूक्ष्मशरीर से यात्रा कर सकता है, ये वास्तव में, किसी व्यक्ति के घर जाने और उन्हें मिलने जैसा है, कोई बात नहीं कि वे उस घर में कहॉ है, कोई बात नहीं कि वे क्या कर रहे हैं। किसी व्यक्ति, जो एक पत्र लिख रहा हो, के कंधे पर देखना और पत्र को पढ़ना संभव है; ये संभव, परंतु गलत है, आपराधिक रूप से गलत। सूक्ष्मशरीर से यात्रा करने वाला असली व्यक्ति, कभी ऐसा करने की, दूसरे के निजत्व में घुसपैठ करने की नहीं सोचेगा, और यदि किसी ने दुर्घटनावश घुसपैठ की है, तब वह, उसकी जो उसने देखा था, कभी भी, कभी भी बात नहीं करेगा। इसलिये, जबतक कि आप सुनिश्चित नहीं हैं पूरी तरह से सुरक्षित, संदेह की तनिक सी छाया के परे तक सुरक्षित, कि आप किसी दूसरे के निजत्व में घुसपैठ नहीं करना चाहते हैं, तब आप पायेंगे कि वास्तव में, सचेतनरूप से सूक्ष्मशरीर से यात्रा में जाना बहुत मुश्किल है अर्थात्, जब कोई नींद में है, परंतु चेतना में है, वह एक अलग मामला है।

मुझे, सूक्ष्मशरीरी यात्रा से अमुक–अमुक व्यक्ति से मिलने जाने, और ये बताने के लिये कि उसके साथ क्या गलत है, यह कहते हुए अत्यधिक संख्या में पत्र मिलते हैं, परंतु मानो कि मैं इसे करने के लिये तैयार होता, अभी भी, दिन में केवल चौबीस घंटे हैं, और उपयोग में लाये गये समय के कारण, सभी स्थानों में जाना, पूरी तरह से असंभाव्य होगा। किसी भी मामले में, किसी के घर की ओर दौड़ना और शयनकक्ष में या किसी दूसरी जगह, उन पर झांकना, नैतिकरूप से गलत है। बहुत अधिक बार, लोग सूक्ष्मशरीरी यात्रा में जाना चाहते हैं, क्योंकि वे, आवश्यक कदम उठाने के लिये, स्वयं का इलाज करने के लिये, या मात्र अपनी निष्क्रिय उत्सुकता के लिये, अत्यधिक आलसी हैं।

जाग्रत अवस्था में, सूक्ष्मशरीरी यात्रा में, दूसरा बंधन उन लोगों पर, जो सूक्ष्मशरीरी यात्रा में (केवल) इसलिये जाना चाहते हैं, ताकि वे इसके सम्बंध में बात कर सकें और ये प्रदर्शित कर सकें कि वे कितने होशियार हैं, लगाया हुआ है। यदि आप जागरुकतापूर्ण सूक्ष्मशरीरी यात्रा करते हैं, तो आप इसके सम्बंध में कभी बात नहीं करेंगे, क्योंकि इसको करने में सक्षम होना, अत्यंत महान विशेषाधिकार है और इसके बारे में कोई केवल तभी बात करता है, जब वह दूसरों की मदद करने का प्रयास कर रहा हो। इसलिये यदि आप सोचते हैं कि सूक्ष्मशरीरी यात्रा, पथप्रदर्शनयुक्त यात्रा (guided tour) का स्थान ले लेगी या टेलीविजन की तुलना में अधिक मनोरंजन प्रदान करेगी– तो ये आसान होगा!– सूक्ष्मशरीरी यात्रा के सम्बंध में और अधिक न सोचें क्योंकि यदि आप ऐसा सोचते हैं तो ये आपके लिये

नहीं है।

तीसरा प्रतिबंध उन लोगों पर लगाया गया है, जो सूक्ष्मशरीरी यात्रा करना चाहते हैं, ताकि वे दूसरों के मामलों को नियंत्रित कर सकें। अनेक लोग हैं, जो ''भलाई करने वाले (do- gooders)" हैं, वे, बिना ये जाने कि चीजें अनुमानतः (presumably) गलत क्यों हैं, चीजों को व्यवस्थित करते हुए, सूक्ष्मशरीर से दुनियॉ भर में दौड़ना चाहते हैं! किसी व्यक्ति को मदद लेने के लिये जबरदस्ती करना, ये वास्तव में, बहुत गलत है। अंततः, संबंधित व्यक्ति, अपने खुद के मामलों को सबसे अच्छी तरह जानता है, इसलिये यदि कोई सूक्ष्मशरीर में बड़बड़ाता है, और झांकने और शिकार बनाने का प्रयास करता है, और तब वह शिकार को बताता है कि यह, वह या कोई दूसरी चीज, की जानी चाहिए, वह अनधिकृत आजादी ले रहा है।

आप आश्चर्य कर सकते हैं कि यदि इतने सारे बंधन हैं तो सूक्ष्मशरीरी यात्रा से क्या किया जा सकता है। ठीक है, एकदम ठीक, एकदम ठीक, यह वह है, जो किया जा सकता है– आप विश्व भर में बड़े पुस्तकालयों में से किसी में भी यात्रा कर सकते हैं, आप विश्व के किसी भी भाग में जा सकते हैं, आप पुरातन हस्तलिपियों (manuscripts) में से पढ़ सकते हैं, यदि आप पर्याप्त आगे बढ़ जायें (हॉ, ये एकदम सत्य है!), दूसरे लोकों की यात्रा कर सकते हैं। परंतु यदि आप यात्रा करना चाहते हैं और यदि आप सूक्ष्मशरीरी यात्रा में सफल हो जाते हैं और तब आप लालचों के सामने हथियार डाल देते हैं और आप केवल किसी को, उन्हीं के घर में, निजत्व में झांकते हैं, तब आप गलत कर रहे हैं, और शायद, आप दुबारा सूक्ष्मशरीरी यात्रा नहीं कर पायेंगे।

मेरी अभिरुचियों में से एक है, रात में लोगों को बाहर जाते हुए देखना। मैं एक खिड़की के पास, वरीयता के साथ एक ऊंचे लाभदायक स्थान पर बैठना, और सोते हुए शहर को देखना पसंद करता हूॅ। मैं आपको क्या बताऊॅ कि ये किस जैसा है? क्या मैं आपको बताऊं कि मैं चीजों को कैसे देखता हूॅ?

रात घिर चुकी है, और शाश्वत सितारे, हमारे ऊपर चांदी जैसे, या नीले, या लाल प्रकाश के साथ टिमटिमाते हैं। हवा साफ और शांत है, सड़क की रोशनियॉ, आकाश में, कुछ हल्का सा विकिरण बिखेरती हैं और इसको प्रगट कराती हैं कि नृत्य करते हुए छोटे मोटे धूल के कण, गलियों में ऊपर बुलबुला रहे हैं।

शहर की छतों के ऊपर से, नीली सी सफेद बाड़, मानो कि, एक अदृश्य धुंध उठ रही है। नीली, और अधिक नीली होती हुई धुंध, शायद, तीस फीट, शायद, सौ फीट, ऊपर तक उठती है। तब धुंध की सतह, बर्तन में उबलते हुए टार के बुलबुलों की भांति, बुलबुले निकालती है। बुलबुले फूटते हैं और नीली सफेद प्रकाश की चमकती हुई धाराऐं उभरती हैं और रात के आकाश को रेखांकित करती हैं, प्रकाश के तंतु, पतले, और पतले, होते जाते हैं परंतु वे हमेशा वहॉ हैं, वे सभी दिशाओं में विकिरण करते हैं, उत्तर की ओर, पश्चिम की ओर, दक्षिण की ओर, पूर्व की ओर। कुछ सीधे ऊपर जाते हैं, सीधे अनंत तक ऊपर, और फिर भी पर्याप्त उत्सुकता के साथ, कोई सीधे नीचे जाते हैं, मानो कि हमारी इस पृथ्वी के आंतरिक भाग में, किसी दूसरे प्रकार के जीवन को खोज रहे हों। इस शहर के लोगों के शरीर नींद में हैं, परंतु उनके सूक्ष्मशरीर यात्रा कर रहे हैं, जिसके प्रमाणस्वरूप उनकी रजत तंतुयें रात के अंधियारे में चमक रही हैं। वे ऊपर की ओर, और अधिक ऊपर की ओर खिंचती जाती हैं, और हमेशा और एक छोटा गुमनाम रोमांच या तरंग रजत तंतुओं के साथ दौड़ती हुई चली आती है, और एक झटका लगता है और गुदगुदी होती है और तंतु सिकुड़ता है, और शीघ्र ही सूक्ष्मशरीर नीचे आ जाता है, नीले धुंधों में गायब हो जाता है और बाद में, फिर से शरीर में चला जाता है। ये वे लोग हैं, जिनको या तो शायद दरवाजे को खोलने के द्वारा, या भागीदार के उछलने के द्वारा परेशान किया गया है, ये वे लोग हैं, जो सुबह, सिरदर्द और दुस्वप्न की भयानक स्मृतियों के साथ जगते हैं। लगभग हर आदमी

सूक्ष्मशरीरी यात्रा करता है, परंतु दुर्भाग्यवश, अधिकांश लोग, पश्चिम की शिक्षाओं के कारण, जब वे शरीर में वापस आते हैं, तो उसे भूल जाते हैं, जो उन्होंने सीखा था और जो उन्होंने किया था और यदि सूक्ष्मशरीरी यात्रा को अचानक ही समेट लिया गया हो तो ये दुस्वप्नों को जन्म देता है, और वास्तविक अनुभव की सभी स्मृतियों को पूरी तरह समाप्त कर देता है।

अधिकांश लोगों ने, जब वे नींद में जा रहे हों, एक हिंसक झटके का अनुभव प्राप्त किया है, अधिकांश लोगों को, उठने और गिरने का अनुभव, और यह संज्ञान कि वे एक पेड़ या एक चोटी से गिर रहे थे, है। वह सूक्ष्मशरीरी यात्रा को याद करने की सीमा पर आती है, परंतु फिर, याद रखें कि सूक्ष्म शरीरी यात्रा एक चीज है, जिसे यदि कोई इस अध्याय में पहले बताये गये प्रतिबंधों और परंतुकों (provisos) को याद रखता है, सजग अवस्था में, लगभग हर व्यक्ति कर सकता है।

मेरी नजर की सीध में, कुछ दूरी पर, एक बड़ा ऊंचा भवन, एक जेल, था। दीवारों के चारों ओर रोशनियॉ रात भर जलती थीं और कभी–कभार, दीवारों के आसपास, एक चमकीली तीव्र रोशनी टिमटिमाती थी, परंतु रात के इस समय में, अधिकांश कोठरियॉ अंधेरी थीं– फिर भी इसलिये अंधेरी नहीं क्योंकि, रजत तंतुओं की रोशनियॉ ऊपर चली गई थी, रात तक, कैदी सूक्ष्मशरीरी यात्रा में भाग गये थे, क्योंकि सत्यरूप में ऐसा कहा जाता है कि लोहे की सलाखें जेल को नहीं बनाती; जेल की सलाखें मांस को रोकती हैं, परंतु वे सूक्ष्मशरीरी यात्रा के लिये बंधन नहीं होतीं। इसलिये ऐसा है कि जो दोषी ठहराये गये हैं, या भोलेभाले हैं, एक जैसे घुलेमिले रहते हैं, और वे अपनी अपनी अलग अलग यात्राओं में रात को ऊपर जाते हैं।

सभी, अक्सर, ऊॅचे भवनों की छत पर सायवान में से जाते हैं, कोई भयानक घिनौने विचार पाता है और रजत तंतुऐं भी, जो ऐसे स्थानों से निकलती हैं, अक्सर, धुंधली और विकृत होती हैं। उन लोगों के लिये, जो मांस की कामनाओं को प्रश्रय देते हैं, उच्चतम तलों पर नहीं पहुंच पाते, बदले में वे निम्न सूक्ष्मलोकों तक ही सीमित रह जाते हैं, जहॉ वे अपने साथ मेल खाते हुए भ्रष्ट और अनुन्नत व्यक्तित्वों से मिलते हैं।

मानते हुए कि आप इस सब में होकर गुजर चुके हैं, और आप ये तय कर चुके हैं कि आप के पास कोई कामनायें नहीं हैं या अपने खुद के घरों में, दूसरों को, उनकी निजता में झांकने की कोई इच्छा नहीं है, मान लें आप तय करते हैं कि आप वह एक हैं, जो सजग रूप से यात्रा कर सकता है, ठीक है, ये वह है, जिसे आपको जानना चाहिएः

एक निश्चित प्रयोग करें, किसी अतिसमीपी मित्र के साथ व्यवस्था करें कि आप, उसकी आज्ञा से, उस रात को (उसके) घर की यात्रा करेंगे। क्या आपका मित्र कुछ, शायद, मेज पर लिखा हुआ कुछ संदेश ताकि आप, अपने लिये रखे गये उस संदेश को पढ़ सकें और अपनी प्रगति को परखने के लिये, अगले दिन वापस दोहरा सकें, रखने को सहमत हो गया है।

जब आप सोने के लिये अपने बिस्तर पर जायें तो ये निश्चित करें कि ये एक युक्तिसंगत समय, अर्थात् काफी कुछ जल्दी हो। आपको सोने से पहले, अधिक भारी खाना नहीं लेना चाहिए, और वास्तव में, सोने से पहले आपको बहुत अधिक शराब भी नहीं पीनी चाहिए अन्यथा आपका विश्राम, अपरिहार्य रूप से विकृत हो जायेगा और सूक्ष्मशरीरी यात्रा के आपके अनुभवों को भुला देगा।

जब आप अपने बिस्तर पर विश्राम करें, सुनिश्चित हो जायें कि आप पूरी तरह से आराम में हैं, न तो अत्यधिक गर्मी, और न ही अधिक सर्दी, अच्छा होगा यदि आप अपने दरवाजे को बंद करके अकेले सोयें क्योंकि, यदि आप अपने साथी के साथ सो रहे हैं और रात में वहॉ बैचेनी होती है तो आप एक बड़े झटके साथ सूक्ष्मशरीरी यात्रा से वापस ले आये जाओगे, जो आपको हर चीज को, जो आपने अनुभव की थी, भूलने का कारण होगी।

तय करें कि आप कहॉ जाने वाले हैं। आप अपने मित्र के घर जा रहे हो सकते हैं, उस मामले

में आप रास्ता जानते होंगे या एक भिन्न देश को जा रहे हो सकते हैं। परंतु मानते हुए कि आप एक विशेष घर में या एक विशेष व्यक्ति के पास जा रहे हैं, तब घर को कल्पना में देखें, कल्पना में देखें कि आप उस घर तक कैसे जायेंगे, क्या आप कार से या टहलते हुए जा रहे होगे। अपने शरीर को सोने जाने देने से पहले, उत्साहपूर्वक संकल्प पक्का करें कि आपकी सूक्ष्मशरीरी यात्रा घर तक जायेगी और जब आप सुबह जागेंगे तो आपको उसकी, जो कुछ हुआ था, पूरी स्मृति रहेगी, आपको संकल्प करना चाहिए कि ये होगा, और आप याद रखेंगे। अपने संकल्प को तीन बार दोहरायें, और तब इस सब का सोचते हुए, जो आपने किया है, अपने आपको नींद में खिसकने दें। यदि आप सफल होते हैं तो यह वह है, जो होगा; आपको अपना शरीर भारी होता लगेगा, आपको अपनी आंखें थकी हुई लगेंगी और आप पूरी तरह सामान्य, सामान्य तरीके से नींद में चले जायेंगे। परंतु जैसे ही आप नींद में गिरते हैं, आपको अंधेरे कमरे से, तीव्र प्रकाशित ''बाहरी खुले स्थान (outdoors)'' में जाने के समान, अनुभव होगा। गुजरते समय, आपका भौतिक शरीर थोड़ा झटका खायेगा और यदि ये झटका, आपके भौतिक शरीर को जगाता नहीं है, आपकी चेतना विस्तारित और स्पष्ट हो जायेगी, आप वस्तुतः आश्चर्यजनक, वस्तुतः आनंदमय श्वास को छोड़ने और बंधनों से मुक्त होने की भावना को अनुभव करेंगे।

आप एहसास करेंगे मानो कि आप जीवंतता के साथ भड़क और उबल रहे हैं। आपके आश्चर्य के लिये, ये कुछ समय बाद घटित होगा कि ये सब किस सम्बंध में है और तब आप आसपास देखेंगे और आप देखेंगे कि आप एक चमकती हुई, धड़कती हुई, नीली–सफेद तंतु के साथ, जैसे कि एक बच्चा, अपनी मां के साथ गर्भनाल से जुड़ा होता है, अपने भौतिक शरीर से जुड़े हुए हैं।

कुछ भय और अरुचि के साथ, आप मिट्टी के एक ढेले को, जो वहॉ आराम करता हुआ, आपका भौतिक शरीर, शायद, मरोड़े हुए अंगों का एक विकृत गुच्छा है, देखेंगे। आप भय, जो अंततः आपको उस धारक शरीर में वापस कर देगा, अनुभव करेंगे। परंतु अभी समय नहीं है। आप चीजों को अपरिचित दृष्टिकोण से देखते हुए, अपने आसपास घूरकर देखें। आप ऊपर उठ सकते हैं। परंतु तब, जैसे ही आप कमरे के आसपास घूमते फिरते हैं, आप पाते हैं कि किसी इतने छोटे स्थान में बंद रहना, उदास करने वाला है, और आप सोचते हैं कि इस कमरे में से कैसे बाहर निकला जाये– ठीक है, सोचने से पहले ही, ये हो जाता है। आप पाते हैं कि आप, इस स्मृति के बिना कि आप शायद, आपके रास्ते में दूसरे शयनकक्ष होते हुए, कैसे बाहर निकलें, छत के परे, बाहर प्रक्षेपित हो रहे हैं, अब आप, अपने नीले सफेद तंतु के सिरे के अंत में, छत के ऊपर तैरते हुए, बाहर हैं।

कुछ क्षणों के लिये, मानो अनदेखी धाराओं के ऊपर धीमे धीमे उठते हुए, आप वहॉ तैरते हैं। शायद, आप नीचे देखते हैं और अपने घर, और मित्रों के घरों को पहचानते हैं, शायद आप, तेजी से उच्चपथ पर जाती हुई, विलंब से आने वाली कारों की निगरानी करते हैं। आप अपने शहर या जिले को मानो एक गुब्बारे में से देख रहे हैं, परंतु आप के ऊपर ये छाप बढ़ती जाती है कि ये, मात्र समय को गंवाना है, आप इसे दूसरे उद्देश्य के लिये कर रहे हैं, केवल एक सोये हुए शहर को, लेटे हुए नीचे की ओर देखते रहने से कुछ मिलने वाला नहीं है।

आप उन योजनाओं पर सोचते हैं, जो आपने बनाई हैं, आप उन स्थानों की सोचते हैं, जिन्हें आप घूमना चाहेंगे– ये कहॉ होगा बुल्गारिया (Bulgaria), ब्युनस आयर्स (Buenos Aires), लंदन (London), बर्लिन (outdoors)? कहीं भी! शायद आप, सावधानीपूर्वक तैयार किये गये संदेश को पढ़ने के लिये, ताकि आप उसे, उसके सामने कल इसकी पुष्टि के लिये दोहरा सकें, मात्र अपने मित्र के घर जाने से संतुष्ट होंगे। तत्काल ही, आप सोचते हैं कि आप कहॉ जा रहे हैं, और आप सोचते हैं कि वहॉ कैसे पहुॅचा जाये। शायद आयरलैंड के डब्लिन (Dublin) से आप निर्णय करते हैं कि आप न्यूयार्क (New york) घूमना चाहेंगे। जैसे ही आप इसको सोचते हैं, आपका सूक्ष्मशरीरी तंतु विस्तारित होता है, और विस्तारित होता है, और आप ऊॅचे उठते हैं, और ऊॅचे उठते हैं और अंतरिक्षयात्रियों, जहॉ

वे जा चुके हैं, से भी अधिक ऊँचे उठते हैं। जैसे जैसे आप ऊपर उठते हैं, आप देखते हैं कि नीचे की पृथ्वी धीमे से घूम रही है, आप सागर को देखते हैं, जो इतनी ऊँचाई से, गॉव के एक शान्त तालाब की तरह दिखता है, और तब आप जैसे ही नीचे नजर डालते हैं, आप अपने गंतव्य, न्यूयार्क को देख लेते हैं। यहॉ समय चार घंटे पहले है, इसलिये लोग अभी सोने को नहीं जा रहे है, उनके शहर की बत्तियॉ जल रही हैं और ये आपके लिये अच्छा संकेत है। आप अपनी नजर को न्यूयार्क शहर पर जमाते हैं, और आप, लगभग विचार की गति के साथ, न्यूयार्क शहर की ओर, नीचे उतर रहे हैं। जैसे जैसे आप समीप आते जाते हैं, शहर बड़ा, और बड़ा, होता जाता है, आप अपने वास्तविक गंतव्य को चुन सकते है। शायद ये मेनहट्टन (Manhattan) हो सकता है, शायद आप, ब्रॉडवे थियेटरों (Broadway theatres) से बाहर आने वाली उमड़ती हुई भीड़ को देखना चाहते हैं, शायद आप, रेडियो सिटी के आसपास एक नजर डालना चाहते हैं, और बंदरगाह के ऊपर तैरना चाहते हैं, और लंगर डाले खड़े हुए, बड़े जहाजों को देखना चाहते हैं। जैसे ही आप इसके बारे में सोचते हैं, वैसे ही उसे प्राप्त कर लेते हैं।

आप भवनों के अनेक बड़े खंडों में, बाहर की ओर चमकती हुई बत्तियॉ देखेंगे, उनमें से अनेक कार्यालय भवन हैं। ठीक है, आप आसपास देख सकते हैं, आप सफाई करने वालों को, काम पर लगे देख सकते हैं और शायद ''अधिक दबाव वाले कार्यपालन लोगों (high pressure executives)" को भी काम पर लगे देख सकते हैं। परंतु बत्तियों में से अनेक, अपार्टमेंट भवनों की होंगीं। यहॉ एक चेतावनी– घुसपैठ न करें, स्वयं को, जबरदस्ती उन अपार्टमेंट की निजता में न घुसायें क्योंकि, आप लोगों को अपनी जासूसी करते हुए और शायद अपने ऊपर दुर्भावनापूर्वक मुस्कराते हुए देखना पसंद नहीं करेंगे, क्या आप पसंद करेंगे? ठीक है, इन लोगों की निजता का सम्मान करें, और आप, बिना किसी अड़चन के, अपनी सूक्ष्मशरीरी यात्रा को जारी रखने में सफल होंगे।

अपनी यात्रा की पूरी अवधि में, अपनी चेतना में ये विचार बनाये रखें कि आप याद रखेंगे, आप याद रखेंगे, आप याद रखेगें। इस विचार को कभी भी नजरअंदाज न करें, इसे कहीं दूर टांक कर रखें, ताकि आप सब समय एक झटका पाते रहें कि आपको अनिवार्यतः याद रखना चाहिए और याद रखेंगे। कुल मिलाकर, अभ्यास के साथ, आपको याद रखने में कोई कठिनाई नहीं होगी। पहले, जब आप अपने शरीर में वापस होंगे, आप सोचेंगे कि आपने एक स्वप्न देखा है, परंतु यदि आप स्वयं को एक रात बाद, उसी स्थान को घूमने दें, आप महसूस करेंगे कि ये कोई स्वप्न नहीं, वल्कि एक हकीकत है। इसप्रकार संपुष्टि के साथ आप पायेंगे कि यह सरलतर और सरलतर होता जाता है।

परंतु आप, न्यूयार्क शहर को हवा में से देखते हुए, सूक्ष्मशरीर में हैं। रात गहराती जाती है, नीचे सिपाही अपनी टोही कारों (prowl cars) में, संकरी गलियों में होकर भीतर और बाहर घूमते हैं, शहर अधिक शांत होता जाता है, यद्यपि न्यूयार्क कभी शांत नहीं होता। शीघ्र ही आप पाते हैं कि वहॉ बैचेनी की एक अजीब छाप है, एक छाप कि आपकी तलाश है। शीघ्र ही, आप पाते है कि रजत तंतु के साथ साथ खुजली आप तक आ रही है। यदि आप बुद्धिमान और अनुभवी हैं, आप तत्काल ही घर का रुख लेंगे, याद रखें, इस मामले में आपने डब्लिन को छोड़ा था (डब्लिन से यात्रा प्रारम्भ की थी)। यदि आप अनुभवी नहीं हैं, तो आपको अनौपचारिकरूप से (unceremoniously), जैसे कि एक उत्सुक मछुआरे (angler) के द्वारा, एक मछली लपेटी जाती है, लपेट लिया जायेगा।

जैसे ही आप, बुद्धिमानों में एक होने के कारण, स्वयं को वापस जाने देते हैं, आप, फिर से, सिर को आकाश की ओर सीधा करते हैं ताकि, नीचे की ओर देखते हुए, आप संयुक्त राज्य के ऊपर, अंधेरे को और गहरा, और अधिक गहरा होते हुए देख सकें और यूरोप के ऊपर प्रकाश कुछ चमकदार होता जा रहा है। आप पाते हैं कि डब्लिन के ऊपर, विश्व के एक सिरे की ओर, प्रकाश की तीखी मंदी पहली किरण आती जा रही है, इसलिये आप स्वयं को, नीचे, और नीचे, जाने देते हैं, आप अपने घर की छत को समीप आते हुए देखते हैं, और आप पहली या दूसरी बार में, अंतःप्रेरणावश, कठोर उतराई के लिये,

स्वयं का आलिंगन कर लेते हैं, परंतु कुछ नहीं होता है, आप बिना इसके बारे में जागरुक हुए हुए भी, छत में होकर, सीधे नीचे जाते हैं और तब आप, अपने आपको, अपने शयनकक्ष में फिर से, अपने सोते हुए भौतिक शरीर के कुछ फुट ऊपर तैरता हुआ पाते हैं। आप इस पर नीचे देखते हैं और आप, विचार की गति के साथ, गतिशीलता की स्वतंत्रता के खो जाने के विचार पर एक बार फिर से कंधे उचकाते हैं। तथापि, प्रकृति को मना नहीं किया जायेगा, और आप पाते हैं कि आप व्यवस्थित हो रहे हैं, व्यवस्थित हो रहे हैं, व्यवस्थित हो रहे हैं। शीघ्र ही, आप शरीर, जो कंपन करता हुआ और धीमे धीमे कांपता हुआ, प्रतीत होता है, के साथ लगभग संपर्क में हैं और तब आप सजग हो जाते हैं कि आप अधिक तेजी से कंपन कर रहे हैं। आपके पास, अपने कंपनों को, भौतिक शरीर के कम्पनों के साथ तुल्यकालिक (synchronise) करने का कार्य है, परंतु मोटे तौर पर, ये एक स्वचालित (automatic) मामला है, और तब आप पाते हैं कि आप भौतिक शरीर में वापस डूब रहे हैं, आप महसूस करेंगे मानो आपको एक ठंडे, नर्म, कड़े परिधान में कसकर रख दिया गया है। ये पूरी तरह से असुखद भावना है, पहली क्योंकि उसमें, कड़े होने और संकरे में फंसे होने की एक छाप है, और ये आपको कंधे से कंपा देगा और आश्चर्य करेगा कि पृथ्वी लोक के लोगों को शरीर क्यों रखने पड़ते हैं। तब उत्तर आपके सामने घटित होगा–ठीक है, वास्तव में, आपको पृथ्वी पर ही होना है!

आप अभी भी, अपने सामने ये विचार रख रहे होंगे कि आपको हर चीज याद रखनी है, आपको हर चीज याद रखनी है, और आप अपने सूक्ष्मशरीर को नीचे लाते हैं, ताकि ये अपने उस ठंडे, शांत शरीर में एकदम फिट हो जाये। जैसे ही ये एकदम ठीक फिट होता है, वहॉ सहसा एक ''चटाक (snap) होगी और एक झटका लगेगा, और एक छाप मिलेगी कि आप नीचे डूब रहे हैं। आप कुछ क्षणों के लिये सो सकते हैं, उस अवस्था में, अगली चीज जो आप जानेंगे कि वह ये है कि, दिन का प्रकाश आपके ऊपर है और आप अपनी ऑखों को खोल और रगड़ रहें है, और शायद जम्हाई भी ले रहे हैं।

आपके मन में, इस सब का ज्ञान, जो आपने रात में किया, बहुत स्पष्ट है। अब समय है, हर चीज, जो आपने की, लिख डालने का– कागज और पेंसिल का उपयोग करते हुए इसे तत्काल ही लिख डालें–''होशियार'' न बनें और ये महसूस न करें कि आप हर चीज को याद रख सकते हैं, आपको हर चीज– पहली कुछ बारों के लिये तो किसी भी प्रकार से नहीं, याद नहीं रहेगी। बदले में, जब तक कि आप, इससे पहले कि लौटता हुआ दिन आपको भुला दे, इसे पूरा लिखने की मौलिक सावधानी नहीं रखते, आप हर चीज को भूल जायेंगे। इसलिये इसे लिखें और पढ़ें, और इसे पहली आधे दर्जन बार की विश्व भर की सूक्ष्मशरीरी यात्राओं के लिये करें।

अबतक, ये सब, सांसारिक तल के ऊपर सूक्ष्मशरीरी यात्रा के बारे में, अर्थात् महान पुस्तकालयों, महान कलाविथिकाओं को देखते हुए, और विश्व के बड़े शहरों में, विश्व के आसपास अनाड़ीपन से घूमने के सम्बंघ में बताया गया है। ठीक है, आप सूक्ष्मलोक के परे, जिसे पुराने लेखक ''सुधारगृह (Purgatory) '' या ''बैकुंठ (Paradice)'' कहते हैं, यात्रा करना चाहते हैं।

उस मामले में याद रखें कि ये एकदम आसान है, याद रखें कि पुरातन हिन्दू पवित्र ग्रंथों में, मनुष्यों के चंद्र, सूर्य और दूसरे ग्रहों में जाने के अत्यंत सजीव वर्णन हैं, क्योंकि जब आप सूक्ष्मशरीर में हैं, तापक्रम का अंतर और सांस लेने योग्य वातावरण की कमी का आप पर कोई असर नहीं पड़ता, ये आपको बिल्कुल भी कोई असुविधा पैदा नहीं करता। दुर्भाग्यवश, लोग, ये भूलते हुए कि हिन्दू, सूक्ष्मशरीरी प्रक्षेपण के द्वारा, दस हजार वर्ष पहले, अंतरिक्ष में यात्रा करने में सक्षम थे, आजकल केवल रॉकेटों के साथ और वैसी ही कुछ मूर्खतापूर्ण चीजों से खिलवाड़ कर रहे हैं। ये कोई गप्प नहीं है, ये तथ्य है, और यदि आप किसी से हिन्दू धर्म ग्रंथों का, अपने लिये अनुवाद करा सकें, शीघ्र ही आप इसे खुद देख सकेंगे।

यदि आप मित्रों के साथ सूक्ष्मशरीर से मिलना चाहते हैं, तो आपको विशेषरूप से प्रशिक्षित होना

पड़ेगा, अर्थात् यदि आपके मित्र उच्चरूप से उन्नत हैं, क्योंकि सूक्ष्मतल, जो कि चेतना का उच्चतर तल है, में पृथ्वी का एक या दो घंटे का समय, सूक्ष्मलोकों के अनेक हजार वर्षो के समय के बराबर होगा, क्योंकि ये सब विचार की गति, इत्यादि के ऊपर निर्भर करता है। एक मोटे उदाहरण के रूप में, मनुष्य के मस्तिष्क से, किसी विचार को उसके पैर के अंगूठे को हरकत में लाने, या कलाई को घुमाने के लिये यात्रा करने में, एक सेंकंड का दसवां भाग लगता है। ठीक है, सूक्ष्मतलों में, ये सेकंड का एक लाखवां हिस्सा हो सकता है। वहॉ बिल्कुल ही अलग समय प्रणाली है। परंतु आप– जब सूक्ष्मशरीरी यात्रा प्रतिदिन या प्रतिरात को करते है, पायेंगें कि उच्चतर तलों में, आप अपने मन को अधिक अच्छी तरह संचालित करने में सक्षम हैं, और इस प्रकार आप भौतिक सीमाओं के द्वारा सीमित नहीं होंगे।

आपको समय चक्रों के अंतर का कुछ विचार देने के लिये, मुझे कहने दें कि इस पृथ्वी पर हम अभी कलियुग में रह रहे हैं; आकाशीय वर्षों (celestial years) में कलि की आयु बारह सौ के समतुल्य है, परंतु मानवीय वर्षों में ये चार लाख बत्तीस हजार वर्ष है।

परंतु हमारी पृथ्वी की प्रणाली के परे, हमारे समय और आयामों की पूरी प्रणाली के परे, ''ब्रह्मांड के सृष्टिकर्त्ता (creator of the Universe)'' की एक प्रणाली है, जो काफी लंबा समय है, वास्तव में, जिसमें तेतालीस लाख बीस हजार गुणा एक हजार मानवीय वर्ष, उस 'भव्य (super)' समय के केवल एक दिन के बराबर होते हैं, इसलिये इससे पहले कि आप, वास्तव में, किसी उन्नत अस्तित्व का पता कर सकें, आपको एक निश्चित कालक्रम में उसके स्थान को सुनिश्चित करना होगा। ये सबकुछ स्पष्ट करता है कि पिछली गली का माध्यम (back-street medium), वास्तव में, यहॉ कोई अवसर (chance) नहीं रखता!

परंतु आप इस विश्व से बाहर और सूक्ष्मलोक में निकलना चाहते हैं, ठीक है, अपने आपको बतायें कि आप क्या करने जा रहे हैं और आप बिस्तर पर कब जायेगें, निश्चित करें कि आप वास्तव में इस विश्व को छोड़ने, और ऊपर, और ऊपर, सूक्ष्मलोक में जा रहे हैं, अपने आप को पृथ्वी और आकाश (space) के परे और साथ ही साथ दूसरी विमा में भी, उठता हुआ कल्पित करें।

पहले आप अपने शरीर से बाहर, अपने रजततंतु के सिरे पर होंगे, और तब आप अपने रंगों के सभी मूल्य बदले हुए पायेंगे। आप उन रंगों के प्रति सजग होंगे, जिनका आपकी जानकारी में पहले से कोई स्थान नहीं था। आप देंखेगे कि हरियाली, अनेक भिन्न धापों (hues), जितने आप अस्तित्व में जानते थे, उनसे अधिक रंगों की है। परंतु तब आप, ये देखकर कि वहॉ, आप पर मूर्खतापूर्ण ढंग से बड़बड़ाते हुए, अभद्र संकेतों को बनाते हुए, अभद्र आमंत्रण देते हुए, काफी अकल्पनीय प्राणी हैं, डरे हुए हो सकते हैं, परंतु निरुत्साहित या भयभीत न हों, क्योंकि यहॉ आप, ठीक वैसे ही, जैसे कि रेल के द्वारा किसी बड़े शहर में प्रवेश करने के अधिकांश मामलों में, कुछ अस्पष्ट कारणों से, आप पहले झुग्गी झोंपड़ियों के पिछवाड़ों को देखते हैं, मूलभूतों इत्यादि, के कूड़ेकरकट में से होकर गुजर रहे हैं।

यहॉ डरने की कोई बात नहीं है, कोई तत्व प्राणी या अस्तित्व आपको हल्की सी भी चोट नहीं पहुंचा सकता बशर्ते आप डरे नहीं हैं। यदि आप डरे हुए हैं, तो आप कमोवेश ऐसे लोगों को आकर्षित करते हैं, इसलिये सबसे अच्छी चीज है, चलते जाना और पूरी तरह से अनुभव करना कि कुछ मिलाकर, जबतक आप डरें न हों, कोई भी आपको चोट नहीं पहुॅचा सकता।

तय करें कि आप मूल तत्वों के इस क्षेत्र में, अधिक देर तक नहीं टिकने वाले हैं, परंतु स्वर्णिम प्रकाश के लोक की ओर चलते जायें, चलते जायें। यहॉ आप ऐसी–ऐसी सुंदर चीजें देखेंगे, जिन्हें तीन विमा वाले लोक से संबंधित शब्दों में वर्णन करना, एकदम असंभव है, स्वर्णिम प्रकाश के लोक के आपके अनुभव, व्यक्तिगतरूप से अनुभव किये जाने हैं, न कि किसी मुद्रित माध्यम या बोले गये शब्द के माध्यम से।

अभ्यास के साथ, जैसे–जैसे आपकी कुशलता बढ़ती है, आप दूसरे लोकों और दूसरे तलों में,

जाने में सक्षम होंगे, परंतु याद रखें, सूक्ष्मशरीरी यात्राओं के द्वारा, आप दूसरे की निजता में दखल नहीं दे सकते, आप दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचा सकते, क्योंकि, ये अपराधों से भी बड़ा अपराध है।

यहाँ आपके लिये एक प्रसन्न विचार है– स्वर्णिम प्रकाश के लोक में, आप केवल उन्हीं से मिल सकते हैं, जिनके साथ आप अनुशीलनीय (compatible) हैं, वास्तव में, आप यहाँ अपनी ''जुड़वां आत्मा (twin soul)'' से मिल सकते हैं, क्योंकि वहाँ ऐसी चीजें हैं, जिन्हें हम अगले अध्याय में देखेंगे।

अध्याय दस :
मनुष्य के कार्य

बूढ़ा इंजीनियर, बेंच पर रखी हुई छोटी आकृति के ऊपर प्रेमपूर्वक मुस्कराया। सीधे होते हुए, उसने अपना हाथ, दर्द करती हुई अपनी पीठ पर रखा और आगंतुक का अभिवादन करते हुए, कड़ेपन से खड़ा हुआ। ''यहॉ पधारने और मुझे मिलने के लिये आपकी बहुत मेहरबानी,'' इंजीनियर ने शालीनता से कहा। ''निश्चितरूप से मुझे यहॉ एक समस्या है''। आगंतुक की बांह को पकड़ते हुए, वह उसे कार्य शाला की बेंच तक ले गया। ''यहॉ वह है,'' उसने एक गर्वीले पितृ (parent) की भांति कहा। ''नवीनतम प्रादर्श (The latest model).'' आप जानते हैं, अभी भी प्रायोगिक, और कुछ अनपेक्षित (unexpected) कठिनाईयॉ हैं। विषय के अत्यधिक समीप, मैं समझता हूॅ, मैं उन्हें हल नहीं कर सकता।'' उसने छोटी आकृति को कोमलता से पकड़ा और उसे एक हाथ की हथेली पर टिकाया।

आगंतुक ने आसपास नजर डाली। ''यहॉ आपको बहुत अच्छा स्थान मिला हुआ है,'' उसने टिप्पणी की। आप यहॉ फूलती–फलती कॉलोनियों को पाते हुए दिख रहे हैं, यद्यपि इतना सब कुछ मुश्किल है।''

उतनी फूलती–फलती नहीं, जैसी कि आप सोचते हैं! इंजीनियर ने खिलते हुए उत्तर दिया। ''आयें, और इन्हें देखें।'' छोटी आकृति को अपने हाथों में झुलाते हुए, उसने एक छोटे, नीले–हरे गोले की तरफ रास्ता दिखाया। ''एक दर्शक वहॉ है, (आप भी) देखें– मुझे बतायें, आप क्या सोचते हैं!''

आगंतुक ने, अपनी ऑखों को दर्शक के सामने रखा और कुछ घुंडियों (knobes) को घुमाया। उसने लंबे क्षणों के लिये ध्यान से देखा, और तब, एक आह के साथ, दर्शक को दूर की ओर धकेल दिया। ''काफी उग्र (truculent), क्या वे नहीं है?'' उसने पूछा। मुझे ऐसा लगता है कि वे सनकी (crazy) हैं।''

इंजीनियर, अपने हाथों की उंगुलियों को घुमाते हुए, निष्क्रिय छोटी आकृति में, लंबे क्षणों के लिये, खामोशी में खड़ा रहा। ''सनकी?'' उसने विचार किया। ''सनकी? क्यों, हॉ, मैं ऐसा ही मानता हूॅ। मुझे ऐसा लगता है कि उनके पास, दूर से नियंत्रण करने की, या वैसी ही कुछ, समस्या है। वे प्रसारित संकेतों को ठीक से प्रतिसाद (response) नहीं देते, न हीं वे सही सूचना को लौटाते हैं। मैं नहीं जानता कि इस सम्बंध में क्या किया जाये!'' मुड़ते हुए, उसने ऊपर नीचे चहलकदमी की, ऊपर नीचे, ऊपर नीचे, गहरे विचार में खोये हुए, सिर, अपने हाथों में आकृति के गहन चिंतन में मुड़ा हुआ। अंत में, वह सहसा अपने आगंतुक के सामने रुका और उसने रुखाई से पूछा, ''यदि तुम मेरी स्थिति में होते, तुम क्या करते ? उसे ठीक कराने में लगने वाली देरी के लिये, मंडल (Board) परेशानियॉ पैदा कर रहा है। तुम क्या करते?''

बिना जबाव दिये हुए, आगंतुक फिर से दर्शक की ओर मुड़ा, और गहरी एकाग्रता के साथ उसमें होकर झांका। वह सावधानीपूर्वक एकाग्र हुआ और जबतक वह पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो गया, फिर से एकाग्र हुआ, तब लंबे समय के लिये, उसने उपकरण में होकर झांका। अंत में वह अधीरतापूर्वक प्रतीक्षा करते हुए इंजीनियर की ओर मुड़ा और उसने कहा, ''आपको एक पर्यवेक्षक (overseer) नीचे भेजना चाहिए। ये असंभव नहीं होना चाहिए। आप जानते हैं, परिणामों को पाने का यही एकमात्र तरीका है। यहॉ हम बहुत दूर हैं, हम केवल अनुमान लगा सकते हैं और अबतक हमने गलत अनुमान लगाये हैं। इसके लिये कोई भी दूसरी चीज नहीं, परंतु दूसरे विचारों को करते हुए– किसी विशेषज्ञ, दक्षता विशेषज्ञ को क्यों नहीं बुलाया जाये?''

इंजीनियर ने संदेह के साथ अपना सिर हिलाया। ''नहीं!'' उसने उत्तर दिया। ''इसके लिये मंडल कभी तैयार नहीं होगा, मैं नहीं सोचता कि वे किसी बाहरी विशेषज्ञ के साथ सहयोग भी करेंगे!''

इंजीनियर और आगंतुक, साथ–साथ, काम वाली बेंच (workbench) की तरफ चले और बैठ गये। ''यहॉ,'' एक आकृति को एक डिब्बे में से उठाते हुए, इंजीनियर ने कहा, ये नवीनतम प्रादर्श है। हम इन्हें प्राज्ञ–मानव (Homosapien) कहते हैं। परंतु वे एक क्षण के लिये, ''सेपियंस'' को खोते हुए लगते हैं।'' आगंतुक ने आकृति ली, और सावधानीपूर्वक उसकी परीक्षा की।'' ''यहॉ दूसरी है,'' जैसे ही उसने बेंच के दूसरी ओर एक डिब्बे में से एक दूरी छोटी आकृति ली, इंजीनियर ने जोड़ा। आगंतुक ने दूसरी आकृति की परीक्षा की और पहली के साथ इसकी तुलना की। ''स्वयं पुनरुत्पादन करने वाली (self-generating),'' इंजीनियर ने टिप्पणी की। ''जब वे एक निश्चित आयु तक पहुॅचते हैं और वे साथ मिलते हैं, वे पुनरुत्पादन करते हैं। वास्तव में, हर एक के पास ठीक वैसा ही उपकरण है, जैसा दूसरे के पास है, परंतु कम या अधिक श्रेणी का। हम एक को ''नर'' और दूसरे को ''मादा'' कहते हैं। वे दूर से नियंत्रित किये जाते हैं, परंतु ठीक अभी, नियंत्रण दोषपूर्ण है और हम नहीं जानते, क्यों।''

आगंतुक ने दूसरे डिब्बे की ओर इशारा किया, ये क्या हैं ? उसने पूछा।

इंजीनियर ने एक उदास चेहरा बनाया। ''ओह! वे सामान्य से कम (subnormal) हैं,'' उसने कहा। ''वे सत्य और असत्य को नहीं जानते; हम उन्हें संवाददाता (PRESSMEN) कहते हैं!''

* * * * * * *

हॉ, मानव कुछ घपलेवाज हैं, ठीक है। एक जटिल यांत्रिकी, जो वर्तमान काल में वैसा कार्य करते प्रतीत नहीं होती, जैसा इसको करना चाहिए।

हमें ध्यान रखना है कि अपनी सौर प्रणाली में, हम उन यौगिकों से बने हुए हैं, जो उनसे अलग हैं, जो कि दूसरे ब्रह्मांडों, दूसरी निहारिकाओं इत्यादि में अस्तित्व में होते हैं। यहॉ हर चीज–हर चीज जो हमारी पृथ्वी पर जीवित रहती है– समान 'ईंटों' से बनी हुई है। इस सौर प्रणाली में हाइड्रोजन, पानी, और हाइड्रेट्स, अमोनिया, मीथेन, और विभिन्न दूसरी गैसें उपलब्ध हैं। हम वास्तव में, कार्बन अणुओं की ईंटों तथा अमीनो–एसिड्स (amino-acids) और निक्लोटाइड्स (nucleotides) से बने हुए हैं। पशुओं, पौधों, की सभी प्रजातियां और पृथ्वी के सभी खनिज, इन सरल यौगिकों से बने हैं।

जब ये सब, मानव की शक्ल में बनता है, परिणामित यांत्रिकी, चुंबकीय आवेगों, जिन्हें हम ज्योतिषीय (astrological) आवेग कहते हैं, और विभिन्न किरणों से प्रभावित होती है। परंतु इस मामले में, हम थोड़ा अधिक गहराई से अंदर जायें और देखें कि हम क्या पता कर सकते हैं।

यदि आप मानव शरीर का एक सचित्र उदाहरण प्राप्त कर सकते हैं और आप रीढ़ और तंत्रिका तंत्र को देख सकते हैं, तो आप अधिक सही ढंग से समझने में सक्षम होंगे। मानव यांत्रिकी– अर्थात् नियंत्रक यांत्रिकी, वास्तव में, नौ नियंत्रक केन्द्रों से बनी है। औसत गूढ़ विज्ञानी केवल सात का उल्लेख करता है, क्योंकि सात, पदार्थ के, या सांसारिक तल में हैं।

प्राचीन चीनी वैद्य, शरीर के सभी अंगों को, नन्हें आदमियों (little men) के द्वारा नियंत्रित और पर्यवेक्षित किये जाते हुए देखते थे और यहॉ, इस अध्याय में, आप एक स्थान से लिया हुआ एक उदाहरण देखेंगे, जो वास्तव में, चीन में लगभग सात हजार वर्ष पहले चित्रित किया गया था। आप, नन्हें आदमियों को खाने को, गले के नीचे से खाने के रास्ते में उतारने में मदद करते हुए, हवा को फुलाकर फेफड़ों में भरते हुए, सभी रसायनों को यकृत में हिलाते हुए, और विभिन्न संकोचक पेशियों (sphincters) को नियंत्रित करते हुए देख सकते हैं। परंतु ये मात्र शरीर के पाशुविक भाग, मांस और अंगों से व्यवहार करता है। हम इससे और आगे जाना चाहते हैं, और उन अंगों के साथ व्यवहार करना चाहते हैं, जो अधिस्वयं से संदेश लाते हैं और शरीर के क्रियाकलापों को नियंत्रित करते हैं।

हमें ये याद रखना है, कि मानव शरीर में, जो ऑखों से दिखाई देता है, उसके अतिरिक्त बहुत

कुछ है। हमें कहने दें, यदि हम तारों के एक जोड़े को, अपने खिड़की से गुजर कर टेलीग्राफ के या वैसे ही, खंबों तक जाता हुआ देखें, हम केवल उन्हें देखकर ये नहीं कह सकते कि उनमें कोई धारा प्रवाहित हो रही है, हमारे लिये वे मात्र तांबे के तार हैं। परंतु उचित उपकरणों की सहायता से, कोई पहचान सकता है वे धारा प्रवाहित होते हुए हैं या नहीं हैं, और हम ये भी निश्चय कर सकते हैं कि वह किस दिशा में बह रही है।

उसी तरीके से, हम किसी शरीर को, उस शरीर के विभिन्न केन्द्रों, जो अधिस्वयं के संगत भावों के साथ संबंधित हैं, के आवश्यकरूप से जागरुक हुए बिना, देख सकते हैं। जैसा पहले से कहा जा चुका है, यहॉ सात छोटे–छोटे केन्द्र हैं, जिन्हें 'चक्र' कहा जाता है। एक सिर के शीर्ष पर है, जिसे अक्सर 'हजार पंखुडियों वाला कमल' संदर्भित किया जाता है। संस्कृत का वास्तविक नाम सहस्त्रार चक्र है। ये रिले, या केन्द्र है, जो आध्यात्म के सर्वाधिक समीप है और इसप्रकार एक वह, जो अधिक आसानी से विक्षिप्त (deranged) होता है।

(हम किसी शरीर को पीठ की तरफ से देख रहे हैं, और हम सिर, कंधे, रीढ़, आदि को देखते हैं।) गर्दन के क्षेत्र के आसपास, थोड़ा नीचे आज्ञाचक्र है। ये अगला महत्वपूर्ण है, और जो वास्तव में, अधिस्वयं के संपर्क में है। ये मन का चक्र है, और ध्यान रखें कि मन, एक विद्युतीय फलन मात्र है, उसमें अधिकांशतः उसी तरीके से, जैसे कि आप टेलीफोन का संदेश प्राप्त कर सकते हैं, और वैसे ही, कान, जो तार के दूसरे सिरे पर कहा जा रहा है, उसका एक फलन है।

रीढ़ के और नीचे, हमारा तीसरा चक्र है; ये विशुद्ध नाम से जाना जाता है। ये मुंह की क्रियाओं को नियंत्रित करता है, इसलिये यदि किसी को स्पष्ट बोलने में कठिनाई है, तो ये हो सकता है कि ये चक्र अनुशासनहीन या खराब है।

एक क्षण के लिये विषयांतर करते हुए– मात्र कल्पना करें कि आप एक सड़क के साथ पैदल चल रहे हैं, और आप एक टेलीफोन के आदमी को, गड्डों में से एक में, घपला करते हुए देखते हैं। जैसे ही आप देखने के लिये रुकते हैं, वह एक कवर चढ़ी हुई केबल को उठा लेता है, और उसके इंसुलेशन (insulation) को फाड़ता है, जैसे ही इंसुलेशन फट जाता है, आप उसमें, पतले–पतले हजारों तार देखते हैं, उनमें से अधिकांश रंग पोते हुए हैं, परंतु कैसे भी, वहॉ हजारों तार हैं, और आप आश्चर्य करेंगे कि कोई पृथ्वी पर, इस घपले को कैसे छांट सकता है, ठीक है, आपकी रीढ़ के अंदर की नाड़ियां भी वैसी ही हैं; अंदर रीढ़ में, कुछ नाड़ियॉ नीचे की ओर जाती हैं और तब शाखाओं में बंट जाती हैं, इसलिये जब आप चक्रों की सोच रहे हैं, उन सभी तारों के साथ, टेलीफोन के एक आदमी और नन्हीं रिलेओं (relays) या दोहराने वाले स्टेशनों, जो दूरस्थ स्टेशनों से आने वाले संकेतों को प्राप्त करता है, लाइन में, अगले स्टेशन को भेजने से पहले, उन्हें प्रवर्धित करता है (उन्हें शक्तिशाली बनाता है), को सोचें।

हमारे 'रिलेओं' में से अगला, अनाहत चक्र है, जो स्पर्श और उस सबको जिसे हम छूते हैं, नियंत्रण करता है। उसके नीचे मनीपुर चक्र है। ये ''अग्नि सिद्धान्त (Fire Principle)'' चक्र कहलाता है, इस विशेष चक्र में बारे में, और अधिक गहराई में जाने की कोई तुक नहीं है, क्योंकि इस चरण में, ये हमसे अभी अधिक सम्बधित नहीं है।

उसके नीचे हमारे पास छठवां चक्र, इसबार स्वाधिस्ठान चक्र होता है। ये पानी के सिद्धांत (Water Principle) पर व्यवहार करता है।

इसके और नीचे हमारे पास सातवां या पृथ्वी सिद्धान्त (Earth Principle) का चक्र है, जिसे संस्कृत में मूलाधार के रूप में संदर्भित किया जाता है। ये कुंडलनी का गृह है, और वास्तव में, कुंडलनी मानवों या उनकी जीवनी–शक्ति (life force) की नियंत्रक है। हमें कहने दें, ये भट्टी की आग के समतुल्य है, जो सभ्यता में, भाप बनाने के लिये, पानी को गर्म करती है, जो विद्युत उत्पादन के लिये

टरबाइन को घुमाती है, जो लैंपों को जलाती है, प्रशीतक को ठंडा करती है, इत्यादि। एकबार आग बुझ जाये, तो भाप की चाह में, विद्युत समाप्त हो जाती है, और हर चीज एकदम ठहर जाती है।

अनेक लोग, जिन्हें गलत निर्देश दिये गये हैं, या सबसे खराब कि उन्हें निर्देश दिये ही नहीं गये हैं, कृत्रिम साधनों के द्वारा कुंडलनी शक्ति को जाग्रत करने का प्रयास करते हैं, क्योंकि ये एक तथ्य है कि यदि कोई कुंडलनी को, ठीक से जाग्रत करता है, तो वह अत्यधिक सजग, अत्यधिक प्रखर हो सकता है। परंतु विवेकहीन तरीके से, विचारों की शुद्धता को प्राप्त किये बिना इसे जगाना, अपने आपको बहुत बड़ी हानि पहुँचाना है, और बहुत जल्दी ही, ये पागलपन को ले जाता है; दुष्परिणामों पर विचार किये बिना कुंडलनी को जगाना, पूर्णतः मानसिक और भौतिक टूटन की ओर ले जा सकता है। इसलिये जबतक आप के पास कोई गुरु न हो, जो इस सब को कर चुका हो, और इस सब के बारे में जानता हो, अपनी कुंडलनी को जगाने का प्रयास न करें। गुरु तबतक कुंडलनी को नहीं जगायेगा, जबतक कि वह पूर्णतः विश्वस्त नहीं है कि ये आपके भले के लिये है।

यहाँ ये भी जोड़ना अधिक अच्छा हो सकता है कि लोग, जो या धन की छोटी सी राशि के लिये, पत्राचार पाठ्यक्रमों आदि को चलाते हैं, आपके लिये छोटी सेवायें प्रस्तावित करते हैं, उनके पास, सुरक्षा के साथ आपके विकास का पर्यवेक्षण करने और आपकी कुंडलनी जगाने की शक्ति नहीं होती, बदले में, वे बहुत बड़ी क्षति कर सकते हैं।

मानव–प्रकार (human type) के भौतिक अस्तित्व के पहले, अर्थात्, इस लोक में रहता हुआ एक व्यक्ति, ब्रह्मांडीय चेतना (cosmic consciousness) को प्राप्त कर सकता है, उसे कुंडलनी की निश्चित डोरियाँ (strings) रखनी होती हैं, डोरियाँ वास्तव में कुंडलनी को जाग्रत करने से कुछ हद तक अलग हैं! यदि कोई यौनिक रूप से अत्यधिक उत्तेजित है, और– मुझे कहने दें– कामी है, तो ये वास्तव में, बुरी चीज हो सकती है, क्योंकि कोई केवल यौन के लिये ही, अर्थात् बिना प्रेम के यौन को करता है, ये कुंडलनी शक्ति के उचित प्रवाह को, अस्थाई या स्थाई रूप से लकवाग्रस्त कर देता है। ''स्थाई रूप से'' से मेरा आशय है, इस जीवनकाल के लिये, जब तक कि यौन में अनाचार जारी रहते हैं।

इस पृथ्वी पर रहते हुए, शरीर का हर भाग, इन चक्रों के माध्यम से, अपने सूक्ष्मशरीरी सहअंग के साथ, प्रबलरूप से जुड़ा हुआ और संबंधित है। निस्संदेह आपने ऐसे लोगों को सुना होगा, जिनकी एक टांग काट दी गई, और जो अभी भी, कटी हुई टांग में या उस स्थान पर, जहाँ कटी हुई टांग रही होती, दर्द अनुभव करते हैं। ये इस वजह से होता है क्योंकि, भौतिक टांग, जो अब हटा दी गई है, अभी भी, सूक्ष्मशरीरी टांग के साथ, जो वास्तव में, न तो हटाई गई है, और न ही हटाई जा सकती है, कुछ निश्चित प्रभाव रखती है।

सूक्ष्मशरीरी यात्रा को फिर से संदर्भित करते हुए ये अत्यधिक आवश्यक है कि हम भौतिक शरीर में लौटें, ताकि सूक्ष्मशरीर का हर भाग, भौतिक शरीर के हर भाग में फिट बैठ जाये, और इस प्रकार सूक्ष्मशरीरी और भौतिक अंग, एक दूसरे के साथ पूरी तरह से अनुशीलनीय हों। शरीरों को ठीक तरीके से धारा के प्रवाह की दिशा के अनुसार, तुल्यकालिक (synchronised) भी बनाया जाना चाहिए।

ठीक वैसे ही, जैसे कि सम्पूर्ण धारा, सम्पूर्ण विद्युत या तो धनात्मक या ऋणात्मक होनी चाहिए– ठीक वैसे ही जैसे कि विद्युत धारा एक ही दिशा में प्रवाहित हो सकती है और विपरीत दिशा में लौटती है, वैसे ही, मानवों में भी धारा का प्रवाह होता है। मानवों के दो तार इड़ा (Ida) और पिंगला (Pingla) कहलाते है। असल में, वास्तव में, वे तार नहीं हैं, वल्कि मानव शरीर में नलिकायें है। इड़ा बायीं ओर होती है, और पिंगला दायीं ओर, और ये दोनों स्रोत, कुंडलनी को, निष्क्रियरूप से कार्य करने के लिये, आवश्यक ऊर्जा उपलब्ध कराते हैं। हम उन्हें, ये सुनिश्चित करते हुये कि यदि हम इसकी पात्रता रखते हों, तो कुंडलनी, इस जीवन में उपयोग के लिये तैयार बनी रहे, या यदि हम तैयार न हों तो वह अगले

जीवन में उपयोग के लिये ठीक अवस्था में बनी रहे, रखवालों के रूप में समझ सकते हैं, क्योंकि जब, सही व्यवहार और सही नियंत्रण के अंतर्गत कुंडलनी उठना प्रारंभ करती है, इड़ा और पिंगला को रास्ते से लघुपथित कर दिया जाता है। परंतु जबतक, आदमी (और औरत!) इड़ा और पिंगला के संचालन के द्वारा बंधे हुए हैं, वह आदमी या औरत पृथ्वी तल तक सीमित रहेगी, और जन्म–मरण और पुर्नजन्म के अभ्यास और सिद्धान्त में रहेगी। ये केवल तभी होता है, जब आदमी अपनी कुंडलनी को जाग्रत करने में समर्थ होता है और रखवाली शक्ति के स्रोतों, इड़ा और पिंगला को लघुपथित कर देता है ताकि वह प्रगति कर सकता है और जानता है कि अब उसका समय, जन्म–मरण और पुनर्जन्म के चक्रों से समाप्ति की ओर आ गया है।

इन चक्रों को रिले स्टेशनों, या यदि आप चाहें, सुदूर नियंत्रण केन्द्रों (remote control spots) के रूप में समझना अच्छा है। ये भी याद रखें कि शरीर के दूसरे महत्वपूर्ण भाग, जैसे कि गर्दन में, और वैगस तंत्रिका (vagus nerve) में कुछ नीचे, ग्रीवा सम्बंधी नाड़ी ग्रंथि (cervical ganglion) भी हैं। इसके बाद, हमारे पास हृदय चक्र (cardial plexux), सूर्यचक्र (solar plexux) और कटिचक (pelvic plexux) भी हैं, परंतु ये छोटे स्टेशन हैं, और हमें अनुचितरूप से परेशान नहीं होना चाहिए।

पृथ्वी पर हम सभी प्रकार के बाहरी प्रभावों से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। अनेक किरणें हैं, जो मानवों को प्रभावित करती हैं, और प्रारंभ से ही, मुझे कहने दें कि ज्योतिष विज्ञान, वास्तव में, अत्यधिक सत्य चीज है और लोगों को इसका उपहास नहीं उड़ाना चाहिए; किसी को केवल अभ्यासकर्त्ताओं, जो ज्योतिष की गलतबयानी करते हैं, का उपहास करना चाहिए, क्योंकि, ज्योतिष का व्यवसाय ठीक से करने के लिये अधिक समय लगता है, और अधिक कार्य करना होता है, इतना अधिक समय और इतना अधिक काम है कि ये व्यावसायिक सुझाव नहीं हो सकता। निश्चितरूप से, आप किसी मूल्यवान चीज का अध्ययन, दैनिक समाचार पत्रों में कॉलमों को देखकर और अपनी 'जन्मपत्री' को नहीं पढ़कर नहीं कर सकते।

'किरणें,' अंतरिक्ष किरणों (cosmic rays) की शाखाओं का ही एक रूप होती हैं, और दिन के समय और आपके खुद के अक्षांशों और देशांतरों के अनुसार, आप कुछ निश्चित प्रकार की किरणों से प्रभावित होते हैं। ये किरणें आपको किस प्रकार प्रभावित करती हैं, यह आपके ज्योतिषीय बनाव के ऊपर निर्भर करता है। उदाहरण के लिये, वे नारंगी, पीली, हरी, नीली, आसमानी और दूसरे रंगों की होती हैं, परंतु इन किरणों के सिद्धान्तों में जाना, इसप्रकार की पुस्तक के लिये अत्यधिक होगा। यद्यपि, हमें कहने दें, कि जैसे–जैसे कोई वर्णक्रम के लाल सिरे तक पहुँचता है, वह पाता है कि वह व्यक्तित्व के विकास की ओर व्यवहार कर रहा है, और जामुनी, किसी समूह के मन से संबंधित होता है, जबकि हरी किरणें, किसी को सीखने का भाव देने के लिये झुकती हैं। पीली किरण, अपने आप में बुद्धिमत्ता की किरण है।

किरणों में से एक, अत्यधिक अभिरुचि वाली है, नीली किरण जो हरमैस (Hermes) के वर्चस्व के अंतर्गत आती हुई मानी जाती है। प्राचीन मिस्र और केल्डिया (Chaldea) में, इसे जादूगरों की किरण जाना जाता था।

इस क्षण में, हमारे लिये राशि चिन्ह अधिक उपयोग के हैं। कल्पना करें कि आपके पास, एक सपाट तल वाली सतह पर, एक बड़ा बालवियरिंग था, तब यदि आपने उसके आसपास चुम्बकों की व्यवस्था कीं, तो आप बालवियरिंग को एक अवस्था में थामकर रख सकते हैं, और चुम्बकों की स्थिति के बदलने के द्वारा, आप बालवियरिंग को किसी भी वांछित स्थिति में ले जा सकते हैं। ग्रहों को चुम्बकों की तरह, और अपने आप को बालवियरिंग के रूप में देखें! हमारा पहला चुंबक है सूर्य, परंतु यह उस में, जिसे हम भावात्मक आध्यात्मिक चेतना का सातवां तल (seventh plane of the Abstract Spiritual Consciousness) कहते हैं, प्रत्यक्ष होता है। सूर्य के प्रभाव का परिणाम होता है, जीवन देना, और जीवन को पोषित होने देना।

हमारा अगला चुंबक होगा गुरु; गुरु प्रसन्नचित्त, शुभेच्छु, दयालु है। यहॉ ये आध्यात्मिक चेतना के छठवें तल को संदर्भित करता है। ये शुभेच्छु ग्रह है, और नैतिकता में अच्छा संतुलन प्रदान करता है।

हर आदमी जानता है कि हंसमुख (jovial) लोग, प्रसन्न और जानने में अच्छे लोग होते हैं।

हमारा अगला चुंबक है, बुध, जो अभौतिक मन का पांचवॉ तल है। ये लोगों को हाजिर जवाब और 'उछलकूद करने वाला' बनाता है। ये दक्ष व्यापारिक कार्यो की ओर ले जाता है। लोग पूरी तरह से समझते हैं कि 'बुध–प्रकार (mercurial type)' का होने से क्या आशय है। बुध, वह देवता, जिसने संदेश दिये, इस पांचवें तल को, जो अच्छी स्मृति भी देता है, नियंत्रित करता हुआ माना जाता है।

हमारी चौथी स्थिति है शनि, जो ठोस चेतना तक नीचे आना है। शनि से प्रभावित लोग, चीजों पर ध्यान देते हैं, और ये अक्सर हंसमुख स्वभाव के विपरीत होते हैं। शनि के लोग सीमित, प्रतिबन्धित और कठोर होते हैं। लोग, जिनके पास इस विशेष राशि की प्रचुरता है, उन्हें, इससे पहले कि वे और आगे प्रगति कर सकें, धैर्य और स्थायित्व पाना होता है।

अब हम, अभौतिक भावनाओं के तीसरे तल को प्रभावित करते हुए अपने 'चुम्बक' शुक्र–की ओर आते हैं। हर कोई जानता है कि शुक्र प्रेम की देवी है; ये एक हल्का शुभेच्छु ग्रह भी है। ये लोगों को अपने ऊॅचे आदर्श और भावनायें धारण करने के योग्य बनाता है, ये लोगों में अपने खुद के व्यक्तित्व और निजत्व विकसित करता है। शुक्र से प्रभावित लोग, जबतक कि वे अशुभ ग्रहों के साथ समीपता से जुड़े हुए न हों, सुंदर लोग हो सकते हैं।

हमारा दूसरा तल है मंगल, ये हमारा छठवां 'चुम्बक' भी है। मंगल– योद्धा, युद्धप्रेमी– ऊर्जा प्रदायक जाना जाता है। यदि इसकी शक्तियों का ठीक से उपयोग न किया जाये तो ये हल्के से बुरे प्रभाव वाला ग्रह हो सकता है। मंगल, भौतिक शरीर, और यौन की इच्छाओं की बारम्बारता पर अपना वर्चस्व बनाता है। यदि ठीक से उपयोग किया जाये तो मंगल, चेतना को बढ़ाता है, और साहस, शक्ति, और बर्दाश्त को बढ़ाता है।

अंतिम रूप से हमारा सातवां प्रभाव है, चंद्र। हर कोई जानता है कि चंद्र क्या करता है, इसका मानव जीवन पर प्रभाव पराकाष्ठा तक होता है, ये केवल समुद्र में ही नहीं, वल्कि मानव शरीर में भी ज्वारों को उठाता या गिराता है। हर महीने, औरत के ज्वार के सम्बंध में सोचें, ल्यूनर–चंद्र से बने ल्यूनेटिक (lunatic) शब्द पर विचार करें। चन्द्र का, स्वयं का कोई प्रकाश नहीं है, यह केवल उसे परावर्तित करता है, जो इस पर चमकता है, इसप्रकार कोई व्यक्ति, जो चंद्रमा से बहुत अधिक प्रभावित है, अपना स्वयं का बड़ा व्यक्तित्व नहीं रखता, वह केवल अपने आसपास के लोगों के विचारों और मतों को परावर्तित करता है।

शायद लगभग हर एक ने 'जुडवां आत्माओं (twin souls)' के सम्बंध में सुना होगा। आप जानते हैं, ऐसी चीजें होती हैं, परंतु पृथ्वी के तल पर 'जुड़वां आत्माओं का सम्मिलन (meeting) एक बहुत विरली घटना है। आप देखें, यदि आप मूल चीजों पर नीचे जाने वाले हैं, और आप प्रतिपदार्थ (anti-matter) के लोक पर विचार करें, आप सराहना करेंगे कि एक सम्पूर्ण बैटरी के लिये एक धनात्मक और एक ऋणात्मक ध्रुव होने चाहिए। इसलिये यदि आप जुड़वां आत्माओं, जो एक सम्पूर्ण अस्तित्व बनाता है, को पाने वाले हैं, तो आपको हमारे सूक्ष्मशरीरी तंत्र (our system of astral) से एक व्यक्ति और प्रतिपदार्थीय सूक्ष्मशरीरी तंत्र (anti-matter astral) के संगत एक व्यक्ति प्राप्त करना होगा, और ये लोग पूरी तरह से अनुशीलनीय (compatible) होने चाहिये।

सामान्यतः जो यहॉ होता है, तथापि वही वहॉ सूक्ष्मलोक में होता है, वहॉ दो अधिस्वयं होते हैं जो अत्यधिक अनुशीलित हैं, और वे हर एक से, नीचे पृथ्वी पर, कठपुतली भेजते हैं, और हर एक की कठपुतली, दूसरे की कठपुतली के साथ पूर्णतः अनुशीलनीय होती है, वे एकदूसरे के साथ पूरी तरह दुरुस्त होती हैं और यदि वे एक दूसरे के समीपी क्षेत्र में आ जायें, तो उनके बीच, तत्काल ही,

सामंजस्य (rapport) की, 'जुड़े होने (belonging)' की भावना होती है। एक कहेगा, ''मैं जानता हूँ, मैं उस व्यक्ति से पहले मिल चुका हूँ!'' ऐसे मामलों में एक एकदम सही मित्रता विकसित हो सकती है, परंतु जैसा पहले कहा जा चुका है, इस पृथ्वी पर, ऐसे उदाहरण, मानो कि, विरले ही हैं। इसके बदले में, अक्सर दो लोगों के बीच, अनुशीलनीयता की बड़ी कोटि है, और चूंकि वे एक दूसरे के साथ अनुशीलनीय हैं, चूंकि वे एकदूसरे के पूरक हैं, वे मानते हैं कि वे जुडवॉ आत्मायें हैं। वे एक दूसरे के विचारों को पा सकते हैं, वे उसको कहे जाने से कुछ सेंकड पहले ही, जान सकते हैं कि दूसरा क्या कहने वाला है।

कोई, अनुरूप जुड़वांओं (identical twins) के बीच, जो वास्तव में, एक ही अंडे से उत्पन्न दो लोग होते हैं, लगभग इसीप्रकार का मामला पाता है। ये दोनों एक दूसरे के साथ एकदम तारतम्य में होंगे और एक दूसरे से मीलों दूर रहते हुए भी दूसरे की भावनाओं को अनुभव करेंगे और वे एक ही समय पर विवाहित भी हो सकते हैं।

कोई आदमी, किसी औरत के साथ अत्यधिक प्रेम में हो सकता है; वे कल्पना कर सकते हैं कि वे जुडवां आत्मायें हैं, परंतु यदि वे जुडवां आत्मायें हैं तो उनकी रुचियॉ भी समान होंगी। उदाहरण के लिये, हमें कहने दें, वह व्यक्ति एक कट्टर अनीश्वरवादी नहीं हो सकता, जबकि औरत के पास अत्यधिक प्रबल धार्मिक आस्थाऐं हों। उनकी आस्थाओं की असमानता, कुछ असंगतता उनके बीच, कुछ असमंजस्य, कुछ झगड़े पैदा करेगी, और इसलिये, एक दूसरे के समीप आने के बजाय, वे एकदूसरे से और दूर हो जायेंगे।

सर्वाधिक, जिसके लिये इस पृथ्वी पर आशा की जा सकती है, ये है कि अत्यधिक अनुशीलनीय लोग साथसाथ रह सकते हैं और अपने विचारों की शुद्धता और क्रियाओं के द्वारा एक दूसरे के अधिक समीप आ सकते हैं, परंतु वर्तमान काल में इसका प्राप्त होना कठिन है, क्योंकि ये, काफी अधिक त्याग और निस्वार्थ की भावना की मांग करता है। आदमी के लिये, झुक जाना और ये सोचते हुए कि वह ठीक कर रहा है, औरत को सबकुछ दे देना, ठीक वैसे ही, निरर्थक होता है, जैसे कि किसी औरत का, आदमी को सबकुछ दे देना और ये सोचना कि वह ठीक कर रही है। ये पर्याप्त नहीं है कि प्रत्येक, हर चीज को दूसरे को दे दे, बजाय इसके कि प्रत्येक को दूसरे को ठीक वह चीज देनी चाहिए, जिसकी उसको आवश्यकता है, अन्यथा वे एकदूसरे से अलग होते जायेंगे।

अनेक लोग सोचते हैं कि वे अपनी जुडवां आत्माओं से मिल चुके हैं, जबकि वे किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं, जो ज्योतिषीयरूप से अनुशीलनीय (astrologically compatible) है, और उसी 'किरण' पर रहता है। वे सामंजस्य में रह सकते हैं, और वे सामंजस्य में रहेंगे, परंतु अभी भी, ये पूर्ण सामंजस्य नहीं है, अभी भी, ये एक अस्तित्व बनाने के लिये, दो आत्माओं का संगलन (fusion) नहीं है। वास्तव में, यदि लोग उतने पूर्ण होते, तो वे इस अपूर्ण पृथ्वी पर, उससे अधिक, जितना कि बर्फ का टुकड़ा टिकता है, यदि उसे जलती हुई भट्टी में ज्वालाओं पर उछाल दिया जाये, नहीं टिक सकते थे। इसप्रकार, मानवों – आदमी और औरत– को सहनशक्ति, धैर्य और निस्वार्थता का अभ्यास करते हुए, एक दूसरे के साथ रहने का प्रयास करना चाहिए।

काफी संख्या में, लोग, कर्म के बंधनों पर कार्य करने के लिये साथ लाये जाते हैं, और कर्म के बंधनों पर काम करना, इसे आवश्यक बना देता है कि लोग, भलाई या बुराई के लिये, एकदूसरे के समीपी संपर्क में हों। यदि कर्म के बंधनों के माध्यम से, एक आदमी और एक औरत, साथ लाये जाते हैं और, उदाहरण के लिये, आदमी औरत के प्रेम में पड़ जाता है और औरत आदमी के प्रेम में पड़ जाती है, तब उन दोनों के बीच, प्रेम का एक बड़ा बंधन बन जाता है जो उनके अनेक बुरे कार्मिक पहलुओं को निरस्त करने का प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, क्योंकि कोई बात नहीं, वे यहॉ जो कुछ भी सोचें, अंत में भला ही होगा।

यदि एक व्यक्ति दूसरे को प्यार करता है, और दूसरा, पहले से घृणा करता है, तब भी कार्मिक बंधन बन जायेगा, परंतु ये एक असंतुष्ट बंध होगा और उन्हें तबतक साथ आना होगा, जबतक कि घृणा का उन्मूलन नहीं हो जाता और प्रेम नहीं पनपता। ये समझा जाना चाहिए कि केवल पूर्ण, और पूर्ण स्वाभाविकता, संभवतः, किसी कार्मिक कड़ी को बनने से रोक सकती है। यदि आप किसी व्यक्ति को पसंद करें, आप एक कार्मिक बंध बनाते हैं। यदि आप एक व्यक्ति को नापसंद करें, तो भी आप एक कार्मिक बंध बनाते हैं यदि आप, व्यक्ति के सम्बंध में चिंता कम नहीं कर सकते तो कोई कड़ी नहीं बनती। इसलिये– किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति कोई भी प्रतिक्रिया, एक श्रंखला का प्रारंभ कर देती है, जो कर्म का कारण होती है। उदाहरण के लिये, एक शिक्षक और एक विद्यार्थी के बीच में सम्बंध हो सकता है, उस मामले में, किसी प्रकार का एक बंध बन जाता है। ये लंबा चलने वाला बंध या केवल अस्थाई बंध, जो लगभग एक झटके में समाप्त हो जाता है, हो सकता है, और तब इसे कर्म के किसी बंधन के जल जाने की भांति समझा जाता है।

सबसे खराब स्थिति वह है, जिसमें महान प्रेम, मृत्यु के द्वारा समाप्त किया जाता है। यदि एक औरत अपने पति को खो देती है, जबकि वह अभी भी उसके प्रेम में है। उसके पास अपने प्रेम के निकास का कोई तरीका नहीं है, और इसलिये वह प्रेम, जबतक कि वे भविष्य के किसी पुर्नजन्म में, फिर से, साथ न आ जायें और उस प्रेम को व्यक्त होने के लिये हालात ठीक हों, भंडारित किया जाता है। इसलिये यदि कोई आपको बताता है कि वह अपने जुड़वां आत्मा से मिला है, या मिली है, समझते हुए मुस्करायें और अपनी शांति को बनाये रखें।

हमारे ये खराब पुराने शरीर, सभी प्रकार की खराब बीमारियों के विषय हैं, जैसे कि किसी उपकरण का कोई टुकड़ा, सामंजस्य करने में टूट सकता है, ठीक वैसे ही, कई बार मानव शरीर भी अपनी सर्वोत्तम स्थितियों से हिला दिये जाते हैं। इसलिये, चूंकि अनेक लोग आरोग्यसाधक (healers) बनना चाहते हैं, आरोग्यसाधन (healing) के सम्बंध में कुछ देना असंगत नहीं होगा –कुल मिलाकर, हम आदमी के कार्यों के साथ व्यवहार कर रहे हैं!

ये नकारात्मक विश्व है, जिससे यह समझ में आता है कि नकारात्मक इलाज, सर्वाधिक उपयुक्त है, तब, जो वास्तविक शब्द है, जिसे कोई इस विशेष इलाज–नकारात्मक इलाज का वर्णन करने में काम में लाता है।

पहले आपको सांस, जो आप फेफड़ों से लेते हैं, से यहॉ तक छुटकारा पाना होगा, कि वास्तविकता में सांस को बाहर फेंके, बलपूर्वक हवा को बाहर करें, और जितनी देर तक आप, बिना अत्यधिक कठिनाई के बने रह सकते हैं, वैसे ही बने रहें। ये शरीर उसे, जिसे हम ऋणात्मक ध्रुवता कह सकते हैं, को पाने में सक्षम बनाता है, क्योंकि अब ये प्राण में कुछ अपूर्ण, हवा में कुछ अपूर्ण है।

तब मात्र कुछ क्षणों के लिये (कहने भर के लिये, अपनी सांस को वापस लाने के लिये!), हल्के से सांस लें, तब जितना संभव हो, सांस को बाहर निकालते हुए, और हवा को अपने फेफड़ों से बाहर फेंकते हुए, पूरे मामले को फिर से दोहरायें। उतने लंबे समय तक खाली फेफड़ों के साथ टिके रहें, जितने में कि आप बिना किसी अत्यधिक कठिनाई के या अपने आपको बिना मारे हुए, बने रहें। तब फिर से हल्की सांस लें और जब आप कुछ सांस वापस पायें, तब इस प्रणाली को फिर करें, ताकि आप इसे कुल मिलाकर तीन बार पूरा कर चुकें – आपने तीन बार, सांस को पूरी तरह बाहर निकाला है, और अपने शरीर को नकारात्मक रूप से ध्रुवित हो जाने दिया है।

अब आप जानते हैं कि आप कहॉ परेशान हो रहे हैं, इसलिये अपना हाथ, त्वचा पर उस जगह रखें, जिसका इलाज किया जाना है। तब हाथ, हथेली को हटायें, ताकि केवल तर्जनी और अंगूठा पूरी तरह से त्वचा को दबाये रहे। अपने तर्जनी और अंगूठे को दृढ़ता के साथ इलाज किये जाने वाले क्षेत्र के ऊपर बनाये रखें और तब फिर से सांस निकालें और सांस लेना बंद रखें। जब तक आप सांस को

इसप्रकार रोके हुए हैं, तबतक जीवनबल को, जीवंतरूप से, अपने बायीं उंगलियों के पोरुओं से बाहर की ओर प्रवाहित होते हुए, इलाज किये जाने वाले वांछित क्षेत्र में प्रवाहित होने की कल्पना करें।

शीघ्र ही आपको फिर सांस लेनी पड़ेगी, परंतु केवल जीवन को बनाये रखने के लिये, पर्याप्त वायु अंदर लेते हुए, जितना संभव हो उथली सांस लें, और तब इलाज किये जाते हुए उस शांत क्षेत्र के साथ, उंगलियों को पकड़ें। आप इसे तीन बार दोहरायें, और हर बार आपको अपनी उंगलियॉं, कम से कम दो मिनटों के लिये, उस क्षेत्र के संपर्क में पकड़े रहनी चाहिए।

वास्तव में, स्वयं का इलाज करने का सबसे अच्छा तरीका, जबतक कि आप बहुत अच्छी तरह से ठीक न हो जायें, इस इलाज को हर एक घंटे में देना, है। ये इलाज कारगर होते हैं, क्योंकि, आप बाहरी बलों को बुला रहे हैं।

यदि आप सर्दी से परेशान हैं और आपका सिर भारी है, आप, इस नकारात्मक इलाज को देते हुए, हालात् को महान रूप से हल्का कर सकते हैं। इस मामले में, आप अपनी उंगली और अंगूठे को ऑखों के ठीक नीचे, एक–एक करके नाक के दोनों ओर रखेंगे। तब, फिर, आप सांस को पूरी तरह निकालने के बाद, अपनी सांस को रोकेंगे। फिर आप, उस जीवनबल को, अपने आप में, अपनी नाक में, प्रवाहित होते हुए, और सभी संक्रामकों, जो परेशानी पैदा कर रहे हैं, को मारते हुए चित्रित करेंगे। मैं आपसे, पूर्णतः गंभीररूप से कहता हूॅ कि यदि आप इसका प्रयास करें, तो जैसे ही आपकी नाक की रुकावट समाप्त होती है, बड़ी जल्दी ही नाक में चटकन महसूस करेंगे। आप पायेंगे कि तब आप अपने नकुओं से सांस लेने में सक्षम हैं।

दमा एक शिकायत है, जो थोड़ी कम ही समझी जाती है। दमा के लिये, सभी प्रकार की रामबाण दवायें (nostrums) प्रस्तावित की जाती हैं, परंतु अनेक अनेक मामलों में, दमा नाड़ी तंत्र की किसी परिस्थिति के कारण पैदा होता है और नाड़ी तंत्र की वह परिस्थिति, इसप्रकार के इलाज के प्रति प्रतिसाद देगी। इस मामले में, आप उंगुली और अंगूठे को, गले के एक एक ओर, ठीक टेंटुए के ऊपर, रखें। ये सामान्य प्रकार के दमा के लिये है, परंतु वास्तव में, यदि आपको उस प्रकार का दमा है, जो वास्तव में, खराब और दुखदायी सांस उत्पन्न करता है, तब आपको अपनी उंगली और अंगूठा, एक दूसरे से कोई तीन इंच दूर रखने होंगे और उन्हें वहॉ रखें, जहॉ आप अनुभव कर सकें कि, जहॉ गला छाती से जुड़ता है।

पर्याप्त स्वाभाविक रूप से, यदि आपको वर्षों से दमा है, तो आप कुछ सेंकड़ों में ही इलाज की अपेक्षा नहीं कर सकते। आपको धैर्य रखना चाहिए और सामान्य बुद्धि का उपयोग करना चाहिए, परंतु यदि आप इस इलाज के पीछे लगे रहेंगे, आप काफी कुछ निश्चयात्मक रूप से पायेंगे कि दमा गायब हो जायेगा। यदि आप थोड़ा सा ध्यान और आत्मनिरीक्षण करेंगे और अपने आप कारण खोजेंगे, कि वह क्या है, जो आपकी तंत्रिका में विक्षोभ उत्पन्न करता है, तो ये पूरा का पूरा, तेजी से गायब हो जायेगा। फिर, दमा के अनेक अनेक मामले, स्नायुविक परेशानियों से पैदा होते हैं, और दमा, मात्र एक सुरक्षा वाल्व की भांति काम करता है, और आपको निकलने का रास्ता प्रदान करता है।

मुझे दोहराने दें कि आपको इन निर्देशों का एकदम ठीक ठीक पालन करना चाहिए, और आपको हमेशा अपना बायां हाथ उपयोग में लाना चाहिए। अपने दायें हाथ का उपयोग करते हुए, आप एक प्रबल नकारात्मक इलाज नहीं प्राप्त कर सकते। तब याद रखें– अपने फेफड़ों में से हवा को बाहर निकालें, खाली फेंफड़ों के साथ थोड़ी प्रतीक्षा करें, और हमेशा अपने बायें हाथ का उपयोग करें। आप पायेंगे कि जलने का एक गंभीर घाव भी, प्रकृति के इस इलाज को प्रतिसाद देगा; उस मामले में, वास्तव में, आप अपनी तर्जनी और अंगूठे का प्रयोग करें और उन्हें जले हुए स्थान पर रखें, और इलाज के साथ आगे बढ़ें। वास्तव में, आप सराहना करेंगे कि यदि आपको जलने का अत्यधिक गंभीर घाव हो, ठीक है, आप जितना जल्दी किसी डॉक्टर को अंदर बुलायेंगे, उतना ही अच्छा है। परंतु उसकी प्रतीक्षा

करने के दौरान, आप अपना इलाज स्वयं कर सकते हैं।

कुंडलनी, जैसा पहले कहा जा चुका है, मानव शरीर की 'भट्टी (furnace)' है, और वास्तव में, यदि आप भट्टी के बजाय, चुम्बकीय सिद्धान्त को तरजीह दें, तो ये और मस्तिष्क, एक चुंबक के विपरीत ध्रुव समझे जा सकते हैं। परंतु ये मानते हुए कि आप अत्यधिक अतीद्रिंयज्ञानी (clairvoyant) हैं और आपके पास, आपके सामने एक नग्न शरीर है, जिसका आप अध्ययन कर सकते है– देखें, हमें ये कैसा प्रतीत होगा।

हमारे पास, प्राथमिकरूप से काले मखमल से ढकी हुई एक दीवार है; दीवार लगभग चौदह फीट वर्गाकार है, और हम, फर्श से लगभग चार फीट ऊंचाई वाला एक छोटा प्लेटफार्म रखते हैं। उस प्लेटफार्म के ऊपर, एक नग्न मॉडल, मखमल की ओर अपनी पीठ किये हुए खड़ा है। चूंकि हम मॉडल के सामने खड़े हैं, और अतीद्रिंयरूप से उसे देख रहे हैं, हम एक चमकदार सफेद धारी देखते हैं, जो मस्तिष्क और कुंडलनी के बीच गुजरती हुई धारा है, जो जैसा कि पहले बताया जा चुका है, रीढ़ की हड्डी के दूरस्थ सिरे पर है– वास्तव में, रीढ़ की हड्डी के थोड़ा नीचे।

आपने ये सफेद पट्टियॉं, दुकानों में या प्रसाधन दर्पण के बगल से जगमगाती हुई देखी हैं? ठीक है, यह मानते हुए कि ये अतीन्द्रिय दृष्टि आपको जीवनबल को, प्रकाश की एक पट्टी से मिलती जुलती की भांति देखने देती है। पहले आप, प्रकाश की वह प्रखर पट्टी, आपके विषय–व्यक्ति (subject) के मस्तिष्क के ऊपरी सिरे से विस्तारित होती हुई, और रीढ़ की समाप्ति के कुछ इंच नीचे तक नीचे की ओर चलती हुई, पाते हैं। आप, ये निरीक्षण करते हुए, पहले एक पतली पट्टी की तरह होते हुये, और तब जैसे ही आपके मरीज के अन्दर कोई दूसरा विचार घटित होता है, विस्तारित होते हुए, कुछ सेकडों के लिये उसको देखें, जबतक कि ये काफी चौड़ी पट्टी न बन जाये, कि वह कैसे जगमगाती और धड़कती है।

यदि आप अनुभवी हैं, इस प्रकार की चीज पर, इसको देखने के बाद, आप देखने में सक्षम होंगे कि नीली सी रोशनी, बहुत कुछ वैसे ही, जैसे कि जलती हुई सिगरेट के नीले से धुंऐ, के साथ शरीर का खाका बन जाता है। यदि आप एक सिगरेट जलायें और इसे जलने दें, ये कुछ नीला सा धुंआ निकालता है, जो उस धुंए से, जो कि धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के द्वारा बाहर निकाला जाता है, एकदम अलग होता है। ये नीला सा प्रकाश (बहुत कुछ हद तक चमकदार धुंआ जैसा दिखता है), शरीर की सतह से विस्तारित होता है, और एक समान मोटाई, उस व्यक्ति के स्वास्थ्य और शक्ति पर निर्भर करती हुई मोटाई का होता है। एक प्रौढ़ व्यक्ति में, ये लगभग आधा इंच चौड़ी हो सकती है, और एक वास्तविक हट्टे कट्टे व्यक्ति में, ये दो या तीन इंचों तक, या चार तक भी, विस्तारित हो सकती है। ये इथरिक होता है, और ये शरीर का 'पाशुविक विकिरण (animal radiation)' मात्र है।

इस पूरे के ऊपर प्रभामंडल मढ़ा रहता है। प्रभामंडल, सिर के परे, ऊपर की ओर विस्तारित होता है, और यदि आप पर्याप्त अतीन्द्रियज्ञानी हैं, तो आप सिर के केन्द्र से, प्रकाश का खेल, जो बहुत कुछ एक छोटे फव्वारे के चलने के जैसा, और बदलते हुए रंगों में चमकता हुआ दिखाई देता है, देखेंगे। ये व्यक्ति के विचारों के अनुसार रंग बदलता है। ठीक है, सिर के आसपास आप तेजोमंडल या निम्बस देखेंगे। ठीक है, ये ऐसा दिखाई देता है, हर आदमी जानता है कि तेजोमंडल कैसा दिखता है, यद्यपि उन्होंने वास्तव में, इसे प्राप्त करने की कभी भी आशा नहीं की हो!– परंतु शायद हमको तेजोमंडल का वर्णन करना चाहिए; ये एक सुनहरी तश्तरी जैसा दिखता है, स्वर्ण की कोटि या स्वर्ण की धाप, उस व्यक्ति की आध्यात्मिकता और उसके उन्नयन की कोटि के ऊपर निर्भर करती है। यदि व्यक्ति अत्यधिक संसारी है, तब सोना अत्यधिक लाल का रंग होगा, और यदि व्यक्ति आध्यात्मिक है, और कुछ अधिक आध्यात्मिक होना सीख रहा है, सोने में हल्का सा हरा सा (पुराने कसकुट पर हरा सा रंग) पटीना (patina) होगा। व्यक्ति जितना अधिक आध्यात्मिक होगा, सोने में, पीला रंग उतना ही अधिक दिखेगा।

शरीर के आसपास रंगों के छल्ले (swirls) होते हैं, वास्तव में, वहॉ, उसकी तुलना में, जिन्हें हम पृथ्वी के शब्दों में वर्णन कर सकते हैं, अधिक रंग होते हैं, क्योंकि ये रंग (colours), धाप (shades) और ह्यूज (hues) इत्यादि होते हैं, शरीर के परे, शब्दों की श्रंखला घेरती है। वे सिर, ऑखों, नाक, मुँह और गले के आसपास घूमते हैं, वे स्तनों, नाभि, और यौनांगों के आसपास घूमते हैं, और तब घुटनों के आसपास तक, उनका घूमना कम तीव्र होता जाता है, यद्यपि घुटनों के पिछले हिस्से से वहॉ काफी विकिरण होता है। जैसे ही प्रभामंडल टखनों और पैरों तक उतरता है, रंग, कमोवेश एक समान हो जाता है।

हमने बताया, हमारा मॉडल फर्श से चार फीट पर खड़ा है, और इसप्रकार औसत व्यक्ति के साथ, अंडाकार आकृति का निचला भाग, प्रभामंडल का आवरण (sheath), मॉडल के मंच के सिरे के चार फुट नीचे तक, जमीन को ठीक छू रहा होगा। आवरण, नुकीले सिरे को नीचे रखते हुए अंडाकार है। यदि आप अपनी बाहों को, पूरी लंबाई में विस्तारित करें, तब आप सामान्यतः, प्रभामंडल के खोल की बाहरी सीमाओं को केवल छू रहे होंगे।

प्रभामंडल के रंग, प्रवाहित होते हैं, घूमते हैं, गुंथ जाते हैं, और दूसरे रंगों के साथ परस्पर गुंथ जाते हैं, ये दूसरे रंगों का लगातार कांपना होता है और यद्यपि ये उल्लेखनीयरूप से अधिक खराब उदाहरण है, मैं केवल ये कह सकता हूँ कि जैसे फैले हुए तेल या पेट्रोलियम के रंग, पानी के ऊपर झिलमिलाते हैं, उसी प्रकार प्रभामंडल के रंग, एक व्यक्ति के ऊपर, परंतु कुछ अधिक तीव्रता के साथ झिलमिलाते हैं।

हर रंग का अर्थ होता है, हर धारी का अर्थ होता है। परंतु न केवल वह, बल्कि प्रवाह की दिशा का भी अर्थ होता है। कल्पना करें कि आपके पास एक अंडा है, और आप अंडे के चारों ओर, विभिन्न रंगों के सभी प्रकार के रेशमी कपड़े, उसी रंग का दोबारा उपयोग में न लाते हुए, लपेट देते हैं, आप उन्हें आगे, पीछे, ऊपर नीचे की तरफ लपेटते देते हैं; ये आपको, उसका कि प्रभामंडल कैसा दिखाई देता है, एक मोटा (crude), बहुत मोटा अंदाज देगा।

आप प्रभामंडल को देखते हैं, आप इथरिक को देखते हैं, और आप तेज जलती हुई रोशनी, जो स्वयं जीवन–बल है, में देखते हैं। इसकी व्याख्या करना थोड़ा कठिन है, परंतु आप सभी तीनों को, बिना किसी को दूसरों के साथ व्यवधान करते हुए, देख सकते हैं। शायद इसको समझाने का एक अच्छा तरीका ये होगा; आप खुले में बाहर बैठे हैं, और आपके सामने एक बड़ा भूपरिदृश्य (landscape) है। अब आपकी नजर में, आपके चेहरे से कुछ इंचों दूर से लगाकर असीम मीलों तक, एक दृश्य है। यदि आप अपने हाथों पर केन्द्रित करना चाहते हैं, तो अपने हाथों को अपने चेहरे के सामने उठायें और आप अपनी हथेली के ऊपर की रेखायें देख सकते हैं। यद्यपि आप इसे देखते हैं, फिर भी, आप पृष्ठभूमि में सजग रह सकते हैं, परन्तु ये आगे अतिक्रमण नहीं करता और न हीं आपके हाथ के अध्ययन को विकृत करता है।

हमें कहने दें, ये आपको, प्रभामंडल और प्रभामंडल के खोल के ऊपर, देखते हुए निरुपित करता है। अब हम एक चरण आगे चलें; आपसे दस फीट दूर, एक व्यक्ति कुर्सी पर बैठा हुआ है, आप उस व्यक्ति पर एक नजर डाल सकते हैं, और उसे स्पष्टरूप से देख सकते हैं। आप, अभी भी, चेहरे के समीप अपने हाथ के प्रति, और दूरी पर स्थित पृष्ठभूमि के प्रति भी सजग रह सकते हैं, और न तो दूरस्थ परिदृश्य और न हीं आपके हाथ की समीपता, आपके सामने दस फीट दूरी पर बैठे व्यक्ति के अध्ययन में, आपके अध्ययन पर प्रभाव डालती है। ये इथेरिक को देखने जैसा है।

अब मस्तिष्क और कुंडलनी के बीच, इतनी तीव्रता के साथ चमकते हुए जीवन–बल को देखने के लिये, कोई कह सकता है कि हम अपनी आंखें, कुर्सी पर बैठे हुए व्यक्ति से दूर ऊपर उठाते हैं, और हम परिदृश्य, शायद डूबते हुए सूर्य, और यदि आप चाहें, और इस उदाहरण में अधिक उपयुक्त हो, तो

उगते हुए सूर्य, का निरीक्षण करते हैं! आप उगते हुए सूर्य के प्रति सजग हो सकते हैं, और आप, अपने से दस फीट दूर कुर्सी पर बैठे हुए व्यक्ति, या अपने हाथ से, जो आपसे कुछ इंच दूरी पर है, से प्रभावित हुए बिना, उस भूपरिदृश्य का अध्ययन कर सकते हैं। इसप्रकार स्पष्ट है कि आप, इस पर निर्भर करते हुए कि आप अपना केन्द्रण किस ओर बदलते हैं या अपनी अतीन्द्रिय दृष्टि को किस पर केन्द्रित करते हैं, प्रभामंडल, इथेरिक, और कुंडलनी बल को देख सकते हैं।

काली मखमली पृष्ठभूमि का उद्देश्य ये है कि ये लोगों को परेशान होने से बचाती है। उदाहरण के लिये, यदि आपके पास दीवार पर एक बिजली का स्विच, या कोई चित्र, या कोई दर्पण है, तब अंतःप्रेरणावश, आपकी दृष्टि, परावर्तन या प्रकाश के एक चमकते हुए बिन्दु के द्वारा आकर्षित हो जाती है, और इसप्रकार यदि आपकी भौतिक दृष्टि विकृत हो जाती है, वह आपकी अतीन्द्रिय दृष्टि को भी विकृत कर देती है। सर्वोत्तम परिणामों के लिये, किसी को चमक रहित, एक कोई बिना किसी नमूने वाली, काली पृष्ठभूमि लेनी चाहिए, और वास्तव में, आपको एक नग्न मॉडल को लेना चाहिए, क्योंकि, यदि आपका मॉडल कपड़े पहनता है, तब आपकी अतीन्द्रिय दृष्टि, कपड़ों से निकलने वाले रंगों के विकिरण से बरबाद हो जाती है। ठीक उसी तरीके से, यदि आप सूर्य को देख रहें हैं, और आप खिड़की के पर्दो को खींच दें, सूर्य का प्रकाश, पर्दों के रंगों पर निर्भर करते हुए, एक प्रकट परिवर्तन से गुजरता है।

इसको देखने का दूसरा तरीका है– आपके पास एक जलती हुई बिजली की रोशनी है, इसके ऊपर कोई छाया नहीं है, इसलिये आप, **नंगे** बल्ब के द्वारा वास्तव में विकिरित किये गए रंग देखते हैं। अब यदि आप बल्ब के ऊपर एक रंगीन शेड रखने जा रहे हैं, तो दिखने वाला रंग, बिना ढंके बल्ब के स्वाभाविक रंगों, और छाया देने वाले पदार्थ के रंग के आपस में मिल जाने के कारण, विकृत हो जायेगा इसलिये आप बरबादी की तरफ चले जायेंगे। फोटोग्राफी में भी, यदि आप दिन के प्रकाश का उपयोग करते हुए, एक रंगीन फोटोग्राफ लेना चाहते हैं, परंतु आप कृत्रिम प्रकाश के द्वारा फोटोग्राफ लेते हैं, हम अपने सभी रंगों को गलत दिखता हुआ पाते हैं, हमें ऐसी ही चीज मिलती है। इसलिये – यदि आप गंभीर हैं, आपको एक नग्न मॉडल ही रखना चाहिए, ध्यान रखें, नग्न मॉडल रखने में कुछ गलत नहीं है, परंतु केवल उन लोगों के विचारों के द्वारा, जो किसी चीज, जिस पर हम, यौन के सम्बंध में एक प्रश्न पर विचार करते हुए अध्याय ग्यारह में चर्चा करेंगे, के द्वारा बरबादी की ओर ले जाये गये हैं!

पुराने चीनी – बाद में जापानियों द्वारा नकल की गई– ये सोचना पसंद करते थे कि शरीर के सभी अंगों के पास, उनकी देखभाल करने वाले नन्हें आदमी होते हैं। ठीक है, आप जानते हैं, वे यहॉ तक गलत नहीं थे, क्योंकि शरीर के सभी अंग, विभिन्न स्नायुओं के द्वारा मस्तिष्क से जुड़े होते हैं, और मस्तिष्क, शरीर के हर अंग के हर भाग के साथ जो हो रहा है, उसके प्रति सजग है। किसी भी अंग के क्रियाकलाप, मानव की चेतना के नियंत्रण में हुआ करते थे, परंतु अब, चूंकि लोगों ने ऐसी चीजों की उपेक्षा की, अंगों का नियंत्रण, अधिकांशतः स्वचालित (automatic) हो गया है। अनेक कुशल लोग हैं, जो अपने अंगों के क्रियाकलापों को चेतनापूर्वक नियंत्रित कर सकते हैं। भारत में फकीर, जो सामान्यतः पथभ्रष्ट शिष्य होते हैं, ऐसे नियंत्रणों के प्रदर्शन करते हैं। वे अपनी हाथ की हथेली में होकर एक चाकू घोंप सकते है, और चाकू को निकालते हुए, वे घाव को मिनटों के अंदर भर सकते हैं। ये चीजें अत्यधिक सत्य थीं, परंतु आजकल अंगों का नियंत्रण, बृहद रूप में, समाप्त हो गया है।

इस अध्याय का उदाहरण भलीभांति अध्ययन करने लायक है, क्योंकि, आप देखेंगे कि मौजी कलाकार ने, लामाओं के निरीक्षण में रहते हुए नन्हे भिक्षुओं (monks) और बेदीसेवकों (acolytes) को शरीर के सभी कार्यों को नियंत्रित करने का कारण बताया। ये बहुत कुछ हद तक, एक मॉनीटर प्रणाली, जो, जब कोई नुकसान या गलत क्रियाकलाप होने वाला हो, मस्तिष्क को चेतावनी देती है, जैसा ही है। ये भी देखने लायक है कि आपका शरीर, इन नन्हे लोगों के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, क्योंकि जब आप गहराई तक ध्यान लगाना चाहते हैं, आप, इन छोटे लोगों को नियंत्रित करते हुए एक पूर्ण ध्यान, प्राप्त कर सकते हैं। वह सब कुछ, जो आपको करना है, जैसा कि मेरी दूसरी विभिन्न पुस्तकों में कहा गया है, इन नन्हे लोगों को अपने शरीर से बाहर निकालें और शरीर के बाहर भीड़ लगाने दें, ताकि आपकी चेतना हटा ली जाए। आप नन्हे लोगों को, अपने पैर के अंगूठों से, अपनी टांगों से, चले जाने को कहें, और तब आपके अंगूठे और टांगें शिथिल हो जाती हैं और शांत हो जाती हैं। नन्हे लोगों को अपने गुर्दों, पेट तथा गॉल ब्लेडर इत्यादि से हटायें, और आप पायेंगे कि आप सम्पूर्ण और एकदम शिथिलता पाते हैं, और जब आपके पास सम्पूर्ण और एकदम शिथिलता होती है, आप गहरे से भी गहरा ध्यान कर सकते हैं, और उसे प्राप्त कर सकते हैं, जो वास्तव रूप में, दूसरे विश्वों का रहस्योद्घाटन है। इसका प्रयास करें, परंतु सबसे पहले, इस प्रणाली के बारे में, मेरी दूसरी पुस्तकों में पढ़ें। मैं यहॉ इस सब के बारे में नहीं बताना चाहता, अन्यथा कोई कहेगा कि मेरे पास, इसके अलावा लिखने के लिये कुछ भी नहीं है और मैंने अपने आपको दोहराना शुरू कर दिया है!

अध्याय ग्यारह :
आप इसें लिख लें!

अफ्रीका और भारत से, आस्ट्रेलिया और अमरीका से, विश्व के सभी देशों से – लौह पर्दे के पीछे से भी – पत्र आते हैं। उनमें से हजारों – प्रश्न – प्रश्न – प्रश्न। संत कैसे बना जाये। किसी मंत्र का उपयोग कैसे किया जाए और आयरलेंड की लॉटरी (Sweepstake) को कैसे जीता जाये, बच्चे कैसे प्राप्त किए जायें, और बच्चे कैसे **नहीं** प्राप्त किए जायें। मलेशिया (Malaysia) और मेनचेस्टर (Manchester) से, यूरुग्वे (Urugauy) और यूगोस्लाविया (Jugoslavia) से पत्र आते हैं। प्रश्न, और **अधिक** प्रश्न। वे सामान्यतः एक निश्चित तरीके के होते हैं, इसलिए इस अध्याय में, मैं आपके अधिक सामान्य प्रश्नों के उत्तर देने जा रहा हूँ। शांति बनाये रखें, निश्चित रूप से, मैं किसी के भी नाम का उल्लेख नहीं करने जा रहा!

प्रश्न : आपके सम्बंध में, मैंने तमाम समाचारपत्रों की कहानियॉ पढ़ी हैं, और आपकी कोई भी पुस्तक खरीदने से पहले, मैंने सोचा कि मैं आपको लिखूंगा और पूछूंगा कि क्या आपकी पुस्तकें सत्य हैं।

उत्तर : मैं एक निश्चित आश्वासन देता हूँ कि मेरी सभी पुस्तकें सत्य हैं। वह सब कुछ, जो मैंने लिखा है, मेरा खुद का अनुभव है, और मैं उन **सभी** चीजों को कर सकता हूँ, जो मैंने लिखी हैं। उस आश्वासन को देने के साथ, मुझे कोई दूसरी चीज भी कहने दें! मेरी पुस्तकें सत्य हैं, हॉ, परंतु निश्चितरूप से, शक करने वाले लोग, जंगल में पेड़ नहीं देख सकते। इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं **कौन** हूँ, वह, जो मैं लिखता हूँ, वह महत्वपूर्ण है। बरसों तक, विशेषज्ञों के झुण्डों ने मुझे गलत सिद्ध करने का प्रयास किया है। वे असफल रहे हैं। यदि मैं धोखेबाज हूँ, तो मुझे वह ज्ञान, जिसकी नकल दूसरे लोग अब कर रहे हैं, कहॉ से मिला ? मेरी सभी पुस्तकें, मेरे निजी अनुभवों को धारित करती हैं, इनमें से कुछ भी, प्रेस का प्रिय, तथाकथित स्वचालित लेखन नहीं है। न तो मैं किसी के कब्जे में हूँ और न दबा हुआ, मैं, कट्टरता और ईर्ष्या के चेहरे में, एक अत्यंत अत्यन्त कठिन कार्य को करने का प्रयास करता हुआ, एक व्यक्ति मात्र हूँ। वे लोग, जो मदद कर सकते थे, भारत में, 'ऊंचे स्थानों' में और दूसरी जगह पर भी हैं परंतु जिन्होंने अपने धर्म को राजनीति के साथ भ्रष्ट कर दिया और इसप्रकार, राजनीतिक कारणों इत्यादि से, वे सत्य, जिसे मैं लिखता हूँ, को नकारते हैं!

मेरी पुस्तकों ने तिब्बत को लोकप्रिय बनाने के लिए, और लोगों को दिखाने के लिए कि तिब्बत अच्छा और आध्यात्मिक है, काफी कुछ किया है, परंतु इसमें से कोई भी विचार में नहीं लिया गया। एक प्रबलतर नेतृत्व, तिब्बत को, साम्यवादियों के अतिक्रमण से बचने योग्य बना सकता था, परंतु कभी भी, सीमा पर बैठकर, और ये देखने की प्रतीक्षा करते हुए कि ऊंट किस करवट बैठता है (यहॉ, कि बिल्ली किस तरफ कूदती है, (which way the catjumps)), कोई युद्ध नहीं जीता गया।

मैं लोगों से हजारों पत्र प्राप्त करता हूँ, जो कहते हैं कि मेरी पुस्तकों का सत्य स्वयंसिद्ध है, और वास्तव में, मुझे ये कहने के योग्य होने के लिए गर्व है कि पिछले दस वर्षों की अवधि में, मैंने केवल चार असुखद या गाली भरे पत्र प्राप्त किए हैं। 'उत्तर' के पहले पेराग्राफ की ओर लौटते हुए, मुझे यह कहने दें कि लोगों को किसी लेखक की पहचान के ऊपर तकरार करते हुए देखना और उसकी पुस्तकों के सभी मुद्दों को गायब कर देना, अत्यंत मनोरंजन करने वाला है। बेचारे बूढ़े शेक्सपीयर (Shakespeare) को सोचना चाहिए कि, जब वह चतुर–चतुर लोगों में से कुछ के साथ, जो ये 'जानते हैं' कि बेकन (Bacon) ने शेक्सपीयर को लिखा, और शेक्सपीयर ही बेकन था, 'समन्वय बनाता' है, उसका बेकन आग में है! बाइबिल को किसने लिखा? शिष्यों ने? उनके वंशगत (descendants) लोगों ने? मूल पाण्डुलिपियों के साथ नकल करते हुए भिक्षुओं के एक समूह ने? इससे क्या फर्क पड़ता है ?

केवल लिखे हुए शब्दों का अर्थ होता है, लेखक की पहचान या नाम का नहीं।

इसलिए प्रश्न का उत्तर है : हॉ, मेरी सभी पुस्तकें सत्य हैं!

प्रश्न : निर्वाण क्या है? क्यों भारतीय लोग केवल बैठना चाहते हैं, और कुछ नहीं करना चाहते और आशा करते हैं कि हर चीज, अंत में, ठीक तरीके से उनके पास आ जायेगी ?

उत्तर : भारतीय इस सबको बिलकुल नहीं सोचते। निर्वाण प्रत्येक चीज का उन्मूलन हो जाना नहीं है; निर्वात की स्थिति में, किसी रिक्त स्थान में रहना, एकदम असंभव है। जिन्दा रहने के लिए, किसी को प्रगति और विकास करना होता है। उदाहरण के लिए, एक कार पर विचार करें। सबसे पहले एक प्रारम्भिक नमूना (prototype) विकसित किया जाता है, और कार को कारखाने के परीक्षण पथ पर जॉच और परीक्षण करके देखा जाता है, और तब शायद, यदि ये एक अच्छी गुणवत्ता वाली कार है, स्विटजरलेंड के पहाड़ों पर भेजी जाती है, ताकि स्विटजरलेण्ड और शायद, दक्षिणी अमरीका के जंगल, दोनों में, इसका परीक्षण किया जा सके। जब कार का परीक्षण हो जाता है, तो कुछ निश्चित दोष विकसित होते हैं और उनका उन्मूलन किया जा सकता है, परीक्षण का उद्देश्य ये पता लगाना होता है कि क्या गलत है और उसे कैसे सही किया जाये।

यही मानवों पर लागू होता है; मानवों को अपने कमजोर बिन्दुओं का परीक्षण करना होता है, और जब कमजोर बिन्दु खोज लिए जाते हैं, तब उन पर विजय पाई जा सकती है। ये प्रगति के सामान्य चरणों में, सभी समयों में किया जाता रहा है। आप सहमत होंगे कि, रेडियो या कारों या किसी भी दूसरी चीज के अनेक नए मॉडलों में, यदि आप चाहें, अंतरिक्ष के रॉकेटों भी दोष होते हैं, बाद के मॉडल हमेशा अच्छे होते हैं, क्योंकि, उनके दोषों का निराकरण कर दिया जाता है।

निर्वाण, मानवों का वह चरण है, जिसमें दोष उन्मूलित किए जा चुके होते हैं। इसलिए भारतीय और पूर्वी पंडित (ज्ञानी) अपने दोषों का निराकरण करने का प्रयास करता है, वह काम (lust), और दूसरे दिलचस्प परंतु हानिकर, व्यसनों (vices) का उन्मूलन करने का प्रयास करता है। आप कह सकते हैं कि वह शून्यता की एक स्थिति में रहने का प्रयास करता है, जहॉ तक व्यसनों का सम्बंध है, वह व्यसनों के साथ कुछ नहीं करना चाहता, वह केवल पूर्णता में रुचि रखता है। इसलिए शून्य का भार प्राप्त करने की इच्छा रखने की बजाय, वह भलाई के लिये अधिक स्थान बचाने के लिए व्यसन से छुटकारा पाना चाहता है।

प्राचीन विचार कि निर्वाण, शून्यता की एक स्थिति है, जहॉ कोई व्यक्ति मानसिक और आध्यात्मिक निस्सारता (vacuity) में बैठता है, गलत है क्योंकि, ये अनुवाद गलत थे। पश्चिमी लोग समझते हैं कि वे इतना कुछ जानते हैं, वे उसे, जो केवल भावात्मक कानाफूसी है, ठोस पदों में कहने का प्रयास करते हैं।

तब, निर्वाण, एक ऐसी स्थिति है, जिसमें कोई बुराई नहीं होती, जिसमें कोई तीन चतुर बंदरों के समान है, जो कोई बुराई नहीं देखते, कोई बुराई नहीं कहते, और कोई बुराई नहीं करते, और जब कोई बुराई नहीं है, तो वहॉ अच्छाई के लिए अधिक स्थान होता है। क्या ऐसा नहीं है ?

प्रश्न : चर्च (churches), मिशनरी (missionaries), गूढ़विज्ञानवादी (occultists), ये सभी धन के लिए बाहर निकलते हैं, वे सभी झपटकर पकड़ने वाले हैं, हर कोई हम गरीब लोगों से, जिन्हें ईमानदारी से जीने के लिए काम करना पड़ता है, लेना चाहता है। अब, आप मुझे बताऐं, मैं क्यों दूं, मैं तिथे (tithes) के इस पुराने तंत्र के साथ क्यों परेशान होऊँ? ये सब मेरे लिए क्या करने वाला है?

उत्तर : ठीक है, वास्तव में, यदि ऐसा है, जैसा आप इसके सम्बंध में महसूस करते हैं, तो देने में छोटी सी ही तुक (point) है, क्योंकि इसतरह की परिस्थितियों में (दान) देना, काफी हद तक वैसा ही है, जैसा कि स्थानीय शराब की दुकान में जाना, और बीयर की एक पिंट (pint) खरीदना। आप अपना धन देते हैं और बदले में कुछ ठोस चीजें पा जाते हैं। आध्यात्मिक अर्थों में, देना पूरी तरह से,

पूरी तरह से उससे अलग है, और केवल इसके अलावा कि ऐसा कहा गया है – आप अपने पेय पदार्थों (drinks) को मिला सकते हैं, आप देने के दोनों तरीकों को मिला नहीं सकते। परंतु, हम इसके ऊपर थोड़ा अधिक समीपता से देखें।

सभी गिरजाघर, सभी धर्म, त्याग की आवश्यकता अनुभव करते हैं, और ईसाइयत के एकदम प्रारंभिक दिनों में, ईसाई गिरजाघरों ने अनुभव किया कि देने के लिए 'त्याग,' एकदम आवश्यक था। गिरजाघरों के प्रारंभिक दिनों में, और अभी भी, विश्व के अधिकांश भागों में, ईसाई गिरजाघर किसी की आय का दसवॉ हिस्सा मांगते हैं। इंग्लेंड में वे इसे 'तिथे' कहते हैं और वास्तव में, प्राचीन अंग्रेजी कानूनों –गिरजाघर के कानूनों– के अंतर्गत, गिरजाघर किसी की संपत्ति के दसवें भाग के पात्र थे, और इससे कोई नहीं बच सकता था, भले ही वह गिरजाघर में जाने वाला नहीं भी हो, क्योंकि वास्तव में, बरसों पहले इंग्लेंड में किसी पर गिरजाघर में उपस्थित न होने के लिए जुर्माना किया जा सकता था। चर्च में जाना और बुद्धि के शब्दों (the words of wisdom) को सुनना और तब गुल्लक में कुछ धन डालना सस्ता होता था। यदि आप बुद्धि के शब्दों से बचते, तो आपको अर्थदण्ड के रूप में अधिक देना पड़ता।

यह आवश्यक था कि लोग अपनी संपत्ति में से दसवां भाग दें ताकि गिरजाघरों को वित्त प्रदान किया जा सके। विभिन्न प्रकार के पादरी थे, जिनको जीवन जीने योग्य रहना पड़ता था। किसी को तो उन्हें देना ही होता था, ताकि गिरजाघर शक्ति में बने रहें, उन्होंने देखा कि धर्मसभा (congregation) में से श्रीमान् और श्रीमती लेमेन (Mr. and Mrs. Layman) ने सभी भुगतानों को किया। परंतु अब वास्तव में, खतरनाक आयकर, हमारे पास दसवां हिस्सा, मुश्किल से छोड़ता है, जिसमें हमको जीवित रहना होता है। परंतु ये दूसरा मामला है। यदि हमको कर प्रणालियों की इन सब बुराइयों पर चर्चा करनी हो, हम किसी भी दूसरे शीर्षकों पर उपलब्ध स्थान के बिना, अनेक पुस्तकें लिख सकते हैं। परंतु इन भयानक करों और गुस्ताख प्रेस, और टेलीविजन के भयानक कार्यक्रमों के साथ, आजकल जीवन एक वास्तविक समस्या होता जा रहा है, क्या ऐसा नहीं है?

ये आवश्यक है कि एक व्यक्ति, इससे पहले कि उसे कुछ प्राप्त हो, कुछ दे। देना, दरवाजा खोलने के समान है, यदि हम दरवाजा नहीं खोलते, तो हम उन अच्छी चीजों को प्रवेश नहीं करा सकते, जो पहले से ही हमारे पास आने के लिए हैं। यदि हम देने के लिए तैयार नहीं हैं, तब हम स्वयं को, मन के प्राप्त करने वाले ढांचे (receptive frame of mind) में नहीं रख सकते। वास्तव में, ये यांत्रिकी में, लगभग एक समस्या है।

ईसाई शिक्षाओं के काफी परे के युगों में, ठीक, स्वयं इतिहास के भोर के समय पर, प्राचीन लोगों का त्याग में विश्वास था, क्योंकि वे किसी स्वघोषित वैज्ञानिक के शब्दों के द्वारा नहीं चलते थे, वे वास्तविक अनुभव से जानते थे कि त्याग आवश्यक था, और उन्होंने वह त्याग किया, जो उनके लिए सर्वाधिक मूल्यवान था। उन्होंने एक मूल्यवान प्राणी – एक मेढ़े (ram) या कुछ उदाहरणों में एक पुत्र का बलिदान दिया। ये क्रूरता के विचार के साथ नहीं, वल्कि उसे करने के विचार के साथ, जिसे वे समझते थे कि वह ईश्वर की निगाह में आनंददायक होगा, किया गया था। उन्होंने सोचा कि यदि वे उसे वह देते हैं, जो उनके लिए सर्वाधिक मूल्यवान था, तो ये ईश्वर को, उच्चमूल्य, जिसे वे उसके आनंद के ऊपर रखते थे, दिखायेगा।

सुदूर पूर्व में, उन लोगों को, जो आवश्यकता में हैं, मुक्तहस्त से देने का रिवाज है। अपने कटोरे के साथ, भिक्षु, मात्र एक भिखारी नहीं है, जो स्वयं को उत्पात बना रहा है; घर का रखवाला, या ग्रहिणी, भिक्षु, जो उसके दरवाजे पर आता है, को देने के लिए आगे बढ़कर देखती है। वह पसंद की चीजों को, उसके लिए आरक्षित करके रखती है। भारत के अनेक भागों में, जहॉ अत्यधिक गरीबी है, लोग अभी भी, खाने को किसी भिक्षु, जो आता है, के लिए अलग उठाकर रख देते हैं, और ये अत्यधिक

विचारणीय त्याग को आवश्यक बना देता है, और इसका आशय है कि घर के लोग, हमेशा भूख की सीमा पर रहते हैं। फिर भी, स्वेच्छापूर्वक, त्याग किया जाता है, और यदि कोई भिक्षुक दरवाजे पर खाने के लिए आवाज लगाता है, इसे सम्मान के रूप में समझा जाता है, भिक्षुक को कभी मांगना नहीं पड़ता, वह केवल दरवाजे पर जाता है, और घर की मालकिन उसे वहॉ देखती है, उसका कटोरा लेती है और उसे खाने से भर देती है। यदि वह अधिकाधिक गरीब हो, तो वह कटोरे में, जो कुछ भी उसके घर में उपलब्ध है, उसे रखती है, और तब भिक्षु, जबतक कि उसके पास पर्याप्त न हो जाये, शायद, तीन या चार घरों में जाता है। परंतु पड़ौसियों में से वे, जिनके घर से उस दिन भिक्षा नहीं मांगी गई, इसको अपने अनादर के प्रतीक के रूप में देखेंगे, क्योंकि वे दान से व्युत्पन्न पुण्य को, विशेष रूप से, जब दान का अर्थ त्याग हो, भलीभांति जानते हैं।

फिर से विषयांतर करते हुए (विषयांतर मेरे पूर्वाग्रहों में से एक है, शायद, मैं इससे निर्वाण में ही छुटकारा पाऊॅगा!) ये अत्यंत खेदजनक है कि अनेक लोग, यद्यपि, वास्तव में, वे चीजों को अत्यधिकरूप से प्यार करते हैं, धन का उल्लेख किए जाने से डरते हैं। लोग, उसके लिए एक पैनी भी खर्च किए बिना, युगों का ज्ञान पाने की आशा करते हैं, लोग किसी व्यक्ति से अपने पूरे जीवन भर जीवित रहने और हर समय अध्ययन करते रहने की और तब उस ज्ञान को, वह सब कुछ, जो उसने प्राप्त किया है, न कुछ के लिए छोड़ देने की आशा करते हैं, मेरा ख्याल है, ताकि वह केवल एक अच्छा नाम प्राप्त कर सके। परंतु क्या होता है, यदि आप एक डॉक्टर या प्रतिभू (undertaker) बनने के लिये प्रशिक्षिण देना चाहें (ये दुर्भाग्यपूर्ण था, क्या ये नहीं था!)। ठीक है, यह मानते हुए कि वह किसी भी चीज के लिए प्रशिक्षण देना चाहता है, कोई व्यक्ति, अपने ज्ञान के लिए, भुगतान पाने की आशा करता है, परंतु जब गूढ़ विज्ञान का मामला आता है, हर व्यक्ति सोचता है कि वे 'मुफ्त में ही' उसके अंदर प्रवेश पाने जा रहे हैं।

लोग भूल जाते हैं कि उन्हें भी, जो गूढ़ज्ञान को रखते हैं, जीवित रहना होता है, खाना होता है, जबतक कि कोई अशिष्ट अनावरण के लिए आरोपी बनाए जाने का इच्छुक नहीं हो, कपड़े पहनने होते हैं, और यदि कोई सीखने और पढ़ाने में इतना व्यस्त है कि वह अपनी जीविका नहीं कमा सकता, तो कोई कैसे खा सकता है और अपने आपको कपड़े पहना सकता है? टाट के कपड़े और राख, अब फैशन के बाहर हो गए हैं और अंजीर की पत्तियों की कमी होती दिखाई देती है।

पूर्व में साधू लोग धन नहीं कमाते हैं, क्योंकि कमाने के लिए बहुत अधिक धन नहीं है। लोग ज्ञान के लिये पैसा खर्च नहीं करते, क्योंकि, अधिकांश बार, भुगतान करने के लिए धन नहीं होता, बदले में वे सेवा के द्वारा देते हैं, विद्यार्थी खाना और कपड़े प्रदान करता है, और शिक्षक, शिक्षा प्रदान करता है, इसप्रकार, वे, प्रत्येक दूसरे की परेशानियों को जानते और बांटते हुए, और प्रत्येक दूसरे की परेशानियों को ध्यान में रखते हुए, आगे बढ़ते जाते हैं। परंतु पश्चिमी विश्व में, जहॉ व्यापार सबसे ऊपर राज्य करता है, और जहॉ पाउंड स्टर्लिंग या डॉलर, लगभग भगवान की तरह ही अच्छा है, धन ही वह है, जो महत्व रखता है। यदि आपके पास धन नहीं है, तो आप जालसाज या असफल हैं। मैं आपको बताऊॅगा कि मेरे पास, इस सम्बंध में कुछ उल्लेखनीय अनुभव हैं; तथापि, शायद वह दूसरी पुस्तक में आयेंगे, जब मैं प्रेस और जर्मनी और दूसरी जगह के भी, थोड़े से ईर्ष्यालु लोगों के साथ के अनुभवों को लिखूंगा। परंतु अब हमें अपने दान पर वापस चलना चाहिये।

आपको देना चाहिए ताकि आपको प्राप्त हो सके। लोग चीजों के लिये कहते हैं, लोग चीजों के लिये प्रार्थना करते हैं, लोग धन के लिये, स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना करते हैं, इसका कोई महत्व नहीं है कि ये क्या है, परंतु लोग प्रार्थना करते हैं कि उन्हें कुछ दिया जाना चाहिये, वे कभी नहीं कहते कि इसके बदले में वे क्या दे सकते हैं, और ये तथ्य का एक निश्चित कथन है कि यदि कोई हमेशा ही चीजों के लिये कहता रहे, तो वह कुत्ते की भांति जीवन जीने वाला हो जाता है, जो केवल अपने स्वामी

के हाथ से, एक हल्की थपकी ही मांगता है।

गूढ़विज्ञान का एक निश्चित नियम है, जो कहता है कि, जबतक आप देने को तैयार न हों, आप प्राप्त नहीं कर सकते। कल्पना करें कि आप, बंद दरवाजे और खिड़कियों वाले, ध्यान दें, ताला बंद नहीं, केवल धक्का देकर बंद किये हुए, एक कमरे के अंदर हैं। यदि आप चाहें, आप दरवाजा और खिड़कियॉ भी, एक पतले कागज से बनी हुई समझ सकते हैं। बाहर, एक राजा की फिरौती के लायक नगीने, या अधिक सम्पत्ति, टाट के बोरों में इकठ्ठे किये हुए ढेरों में, और पहले से ही ऐसे कि, उनको हटाया जा सके, रखे हैं। बाहर वे सारी चीजें हैं, जिनके सम्बंध में कभी आपने सपने देखें होंगे और इच्छायें की होंगीं। फिर भी, यदि आप कागज के दरवाजे को बाहर को नहीं धकेल सकें, आप, उन सभी नगीनों को, जो लेने पर आपके हो जाते, प्राप्त नहीं कर सकते। यदि आप, सांकेतिक रूप से कागज के दरवाजे को धकेलने जैसा, पहला सरल कदम, नहीं उठायेंगे, तब आपको कुछ भी प्राप्त नहीं होगा।

वास्तव में ये सांकेतिक है; दरवाजे का खोलना, देने के कार्य का संकेत देता है, क्योंकि जब तक कोई देने को तैयार नहीं है, और वास्तव में, जबतक किसी ने भव्यता के साथ दिया नहीं है, कोई जिसे वह चाहता है, न केवल दरवाजे को बंद करते हुए बल्कि उस पर ताला भी लगाते हुए और अवरोध डालते हुए और इसके विरुद्ध फर्नीचर खिसकाते हुए, ताकि इसे खोला न जा सके, उसे प्राप्त होने की किसी संभावना के दरवाजे को बंद कर रहा है। एक व्यक्ति, जो हमेशा वस्तुओं के लिये मांग करता रहता है, और कभी देता नहीं है, एक असंतुष्ट व्यक्ति है, एक अवसादग्रस्त व्यक्ति, जो जीवन में अपने मार्ग को नहीं जानता, एक वह, जो किसी चीज को ढूंढ़ रहा है, परंतु अत्यधिक ऊर्जा के साथ नहीं, एक कोई वह, जो दूसरों से, अपने लिये सबकुछ किये जाने की आशा करता है, परंतु जो ऊर्जा का एक छोटा सा कतरा मात्र भी देने को तैयार नहीं है, ताकि मामले की गति बढ़ायी जा सके।

एक आदमी या औरत, किसी बीमारी, शायद, एक अत्यधिक उत्तेजित कल्पना के कारण उत्पन्न हुई एक बीमारी का इलाज चाहते हुए, अक्सर, एक पराभौतिकविज्ञानी के पास जाती है। ठीक है, उस मामले में, सहायता चाहने वाला व्यक्ति, देने की – सहयोग देने की इच्छा रखने वाला होना चाहिए, उदाहरण के लिये, क्योंकि किसी व्यक्ति का इलाज, जबतक कि वह सहयोग न करे, नहीं किया जा सकता, कोई व्यक्ति, जबतक कि वह सहयोग करने की इच्छा नहीं रखता, पराभौतिकी विज्ञानी या किसी दूसरे प्रकार के हकीम के पास जाने में समय नष्ट कर रहा है। बदले में, अनेक लोग, ''ठीक है, यदि आप मुझे ठीक कर सकते हैं, तो ये मेरी लाश के ऊपर होगा'' या इसी प्रकार के दूसरे शब्द कहते हैं।

आप कह सकते हैं, जैसा कि अनेक दूसरे करते हैं, ''ठीक है, मेरे पास देने को क्या है? मैं धनी नहीं हूॅ, मैं कैसे दे सकता हूॅ? जो मैं पाता हूॅ उस सब के लिये कड़ी मेहनत करता हूॅ, मैं किसी को, जो केवल बैठा रहता है और बुद्धिमतापूर्ण टिप्पणियॉ करता रहता है, कुछ देने वाला नहीं हूॅ।'' उत्तर है, जबतक आप भव्यता के साथ देने के लिये तैयार नहीं हैं, आप गलत राह पर हैं, बजाय आगे जाने के, आप पीछे जा रहे होंगे। दूसरों के लिये, जो वास्तव में, किसी आवश्यकता वाले व्यक्ति को, प्रेम और फिक्र के रूप में उत्तर देने का प्रयास कर रहे हैं। यदि आपके प्रति एक अच्छा कार्य किया जाता है तो आप दूसरे के प्रति अच्छा कार्य क्यों नहीं करके देते? बिना भुगतान किये, हमें कोई चीज नहीं मिलती, और हम केवल वह पाते हैं, जिसके लिये हम भुगतान करते हैं। यदि आप केवल सायकिल की कीमत का भुगतान करने के लिये तैयार हों, तो आप, किसी विलासितापूर्ण मोटर–कार की आशा नहीं लगा सकते।

''देने'' के सम्बंध में तमाम गलतफहमियॉ हैं। लोग सोचते हैं, ''ओह, वे हमेशा मांगते ही रहते हैं, वे हमेशा इसको चाहते हैं, वे हमेशा उसको चाहते हैं, यदि वे हमेशा धन की इच्छा रखते हैं, वे किसी काम के नहीं हो सकते।'' आराम से बैठना और यह सोचना अत्यधिक आसान है, ''अब ऐसा क्या है, जो

मैं नहीं चाहता, ऐसा क्या है जिससे मैं थक चुका हूँ, तुच्छ (rubbish) पदार्थों के भार को घटाने के लिये मैं कैसे छुटकारा पा सकता हूँ? मैं जानता हूँ, मैं तथाकथित पुराने सामान को उसे दे दूंगा, तब मैं स्वयं के लिये, एक अच्छे सामान को खरीदने के लिये, अधिक युक्तिसंगत हो जाऊँगा।'' ये बेकार है, ये समय का अपव्यय और विडंबना (mockery) है। ऐसा देना पूरी तरह से बेकार है, जिसमें कोई त्याग निहित न हो, जिसमें कभी–कभार कोई नुकसान न हो। कुछ लोग केवल धन के लिये ही पैदा हुए हैं– तब उन्हें किसी अच्छे काम के लिये कुछ अग्रिम धन देने दो, कोई बात नहीं, कोई व्यक्ति अपने जीवनकाल में कितना भी धन इकठ्ठा कर ले, वह इस विश्व से एक पैनी भी नहीं ले जा सकता। कोई भी व्यक्ति, कभी भी, उसके परे, जिसे हम मृत्यु का पर्दा कहते हैं, किसी पार्थिव पदार्थ को ले जाने में सफल नहीं हुआ, परंतु हम में से प्रत्येक, ज्ञान को (learning), जो हमने पृथ्वी पर, अनुभवों के माध्यम से प्राप्त किये हैं, को ले जा सकता है। हम उस सबका निचोड़ ले जा सकते हैं, जो हमने अवशोषित किया है। जितना अधिक हम सीखते हैं, और जो अच्छा है, उसको उतना ही अधिक सीखते हैं, हम उतने ही अधिक धनाढ्य होते हैं, जब हम वहाँ जाते हैं, जो सत्य में, एक महान यथार्थ है, जहाँ वे, जिन्होंने इस जीवन में केवल अपनी भव्यता बढ़ाने के लिये धन चाहा है, कुछ नहीं है, जब उनके पास कोई धन न हो।

आपके पास शक्ति हो सकती है, तब अपनी शक्ति से दूसरों की मदद करें, क्योंकि आपको शक्ति केवल ये देखने के लिये दी गई थी, कि आप इसका कैसे सदुपयोग या दुरुपयोग करेंगे। करोड़पति, देश का नेता, वे हमेशा भले आदमी नहीं होते, ये वे लोग हैं, जिन्हें कुछ निश्चित चीजें दी जाती हैं, ताकि वे सीख सकें। हमें ये भी याद रखने दें कि यहॉ हम एक मंच पर, उस परिधान को, जो हमारे लिये, उस क्षण, उपयोगी है, धारण किये हुए अभिनेताओं की तरह हैं, ठीक वैसे ही जैसे कि, कोई उस भूमिका को, जो हमारे भाग में है, निभाने के लिये, नाट्यशाला की चीजों को लेता है।

ये भी याद रखें कि आज का राजकुमार, कल का भिखारी है, और आज का भिखारी, कल का राजकुमार है। कोई बात नहीं, कोई अपने पूर्व जन्मों में, कितना भी धनी, कितना भी शक्तिशाली रह चुका है, जब वह अस्तित्व के इस चक्र में, अंतिम जीवन में आता है, वह कष्ट पाता है, आराम में कमी पाता है, कठिनाईयॉ और गलतफहमियॉ झेलता है। ऐसा इसलिये है, क्योंकि वह बेतुके प्रयासों और टुकड़ों की सफाई करता है, कोई उन सभी ऋणों का भुगतान करने के लिये आता है, जो उसकी ओर थे। ये बहुत कुछ हद तक वैसा ही है, जैसे कि एक नये घर में जाते हुए किसी व्यक्ति को, पहले पुराने घर की सभी अटारियों (garrets), सभी कोनों, सभी प्रकोष्ठों की सफाई करनी होती है। परंतु हमें त्याग के सम्बंध में थोड़ा और अधिक कहने दें।

अब्राहिम (Abraham), मोसेस (Moses), और दूसरे, लाखों, लाखों दूसरों ने त्याग का उपयोग किया। क्या आप जानते है कि त्याग का क्या अर्थ है? ''संस्कार (sacrament)'' पर सोचें। ठीक है, ''संस्कार'' का क्या अर्थ है? वास्तव में, त्याग; केवल त्याग के द्वारा, कोई उच्चतर शक्तियों की सहायता सुरक्षित कर सकता है, परंतु त्याग करने के लिये, आपको, उसे स्वयं के लिये किसी चीज के बिना करना चाहिए, ताकि कोई दूसरा उससे लाभ ले सके, ताकि किसी दूसरे को सहायता दी जा सके। आपको, किसी चीज को, जिससे आप जुड़ें हैं, परंतु जो दूसरे अनेक लोगों के लिये, या किसी दूसरे ऐसे व्यक्ति की मदद करने के लिये, जिसको आपका खुद का सौभाग्य नहीं मिला, महान आशीर्वाद होगा, समर्पित करने में, त्याग मिल सकता है।

क्या आप ईसाई हैं? यदि ऐसा है, तो आपको याद होगा कि बाइबिल कहती है, '' पाने की तुलना में, देना बड़ा वरदान है।'' देना, हमारी संभावनाओं के झरनों को भले के लिये खोलता है, उन दरवाजों को खोलता है, जिसके द्वारा हम वह प्राप्त कर सकते हैं, जो हम प्राप्त करना चाहते हैं। इसलिये कि आपको एक सदाशयी, पवित्र व्यक्ति के रूप में जाना जाये, देना बेकार है। परमार्थ के लिये दिये गये अपने दानों को अखबार में छपवाने के लिये देना बेकार है, क्योंकि वह देना नहीं हुआ, वह खरीदना हुआ, आप उन दानों के बदले में, अपने लिये प्रसिद्धि खरीद रहे होंगे।

तब, हम सोचें, जबतक कि हम वह नहीं देते, जिसमें कुछ प्रयास, कुछ त्याग, कुछ नुकसान, शामिल हों, तब हम कोई चीज, जो पाने लायक है, प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिये क्या ये देने लायक नहीं है?

प्रश्नः लोग विभिन्न दोषों को धारण करते हुए कहे जाते हैं, जो ऊपर की ओर के मार्ग पर उनकी प्रगति को रोकते हैं। किसी की प्रगति को रोकने वाले मुख्य दोष क्या हैं?

उत्तरः एकदम ठीक, हम इन दोषों में से कुछ के ऊपर नजर डालें। निस्संदेह, आप सभी, दोषों को, वैज्ञानिक वैराग्य की भावना में, देख सकते हैं, क्योंकि आप सभी, जो इसको पढ़ रहे हैं, यदि आपने पहले ही ऐसा नहीं किया है, तो आप उन दोषों के उन्मूलन करने की राह पर हैं। हमें दोषों के साथ ही साथ, एक निगाह उनके मूल्यों के ऊपर भी डालनी चाहिए। कुल मिलाकर, डॉक्टर लाशों को देखते हैं, और उनकी चीरफाड़ करते हैं, ताकि उन्हें, उन दोषों और भ्रष्टताओं के द्वारा, जिसे वे उन लाशों में पाते हैं, ज्ञान प्राप्त हो सके और वे शिक्षित हो सकें।

सबसे खराब दोषों में से एक है घोटाले (scandle) का। घोटाला आत्मा का विध्वंस है, पीड़ित

की आत्मा, मन, का नहीं, परंतु किसी उसका, जो उस घोटाले को प्रारंभ करता है, और उसे जारी रखता है। लोग घोटाले से प्रेम करते हैं, लोग केवल उन चीजों को कहना पसंद करते हैं, जो दूसरे व्यक्ति के अच्छे चरित्र को, खाक में मिला देती हैं, और यदि उसमें कोई सत्य न हो, तो उन्हें और अधिक अच्छा लगता है। 'मैं' उतना ही अच्छा हूँ, जितना कि वह है! वह हर चीज से दूर क्यों रहे, उसमें कहीं न कहीं दोष होने चाहिये!

ये मानवीय – हमें कहना चाहिए अमानवीय– विलक्षणता है, कि कोई व्यक्ति मुश्किल से ही दूसरे के बारे में भला कहता है, मानो कि वे बुराई को प्राथमिकता के साथ बताने में अधिक प्रसन्न होते हैं। आज के समाचार माध्यम, इस बुरी विलक्षणता का अच्छा उदाहरण हैं, चूंकि वे सत्य को नहीं जानना चाहते, क्योंकि सत्य ध्यान आकर्षित करने लायक नहीं है। प्रेस सनसनीखेज खबरों को प्रकाशित करने को प्राथमिकता देता है, जाली विस्तारों से सजाती हुई खबर, जितनी अधिक रक्तरंजित या दुखभरी हो, उतना ही अच्छा। प्रेस के वे नन्हें आदमी, वास्तव में, उल्लेखनीय हैं, जो मानते हैं कि उन्हें, हर जगह जाने की, किसी भी चीज को देखने की, यदि आवश्यकता हो तो जबरदस्ती घुसने की भी, इजाजत की मांग करते हुए, भगवान के अधिकार मिले हुए हैं। ये नन्हें लोग, दूसरों लोगों के निजी जीवन में दखलअंदाजी करने की आज्ञा या अधिकार, किससे पाते हैं? प्रेस, आज विश्व में, सर्वाधिक बुरी शक्तियों में से एक है, क्योंकि, वे युद्धों और आत्महत्याओं को पैदा करते हैं। ये सब केवल इसलिये कि, कुछ बुरे लोगों का छोटा समूह, विश्वास करता है कि ईश्वर ने उन्हें, सभी सत्यों को नकारते हुए, अपने झूठों को प्रसारित करने का, एक मिशन सौंपा है।

मैंने, काफी लंबे समय तक, प्रेस के द्वारा प्रताड़ित पात्रों को, घटनाओं में अपने पक्षों को बताने, और हाशिये की प्रमुख खबरों में समान स्थान दिये जाने के मुद्दे पर, एक कानून बनाने के लिये प्रस्ताव देते हुए, संसद के अनेक सदस्यों और राज्य प्रमुखों से जुड़ने प्रयास किया है, क्योंकि अभी तक, प्रेस के हमलों के विरुद्ध कोई बचाव नहीं है। प्रेस, किसी व्यक्ति को, उस पर मुकदमा चलाये जाने से पहले ही दोषी प्रतीत कराते हुए, न्यायिक निर्णयों के ऊपर प्रभाव रखता है। अभी हाल ही में, संयुक्त राज्य में ऐसे प्रकरण हुए हैं। परिणामस्वरूप मेरी निजी राय ये है कि, प्रेस बदनामी का मानवीकरण करता है, और इसलिये विश्व की सबसे खराब शक्तियों में से एक है।

ये एक मामला है, जिसमें कुछ देशों में, यदि कोई झूठ बोल रहा है, परंतु यदि कोई केवल कोई सत्य को दोहरा रहा है! तो उस पर निंदा या लांछन के लिये मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। इसलिये लोग घोटाला पसंद करते हैं, वे शब्दों के द्वारा, उनको घायल करना पसंद करते हैं, जिनके पास भौतिक हमला करने का साहस नहीं है। घोटाला, झूठी अफवाह, किसी की स्वयं की आत्मा के ऊपर, घातक, बुरा हमला है, क्योंकि झूठी खबर को दोहराने में, और अफवाहों और झूठों को बनाने में ऐसी चीजों को करने वाला व्यक्ति, निश्चितरूप से, अपने खुद के विद्युतीय आवेशों को घायल करता है, ये विष लेने के समान है, जो किसी की खुद की आत्मा पर हमला करता है।

झूठी गवाही (perjury) एक और दूसरा शिकंजा है, जो झूठे गवाह को, जिसके साथ झूठी गवाही की गई है, उससे भी अधिक दूर तक घायल करता है। लोग थोड़ी सी अफवाह, थोड़े से घोटाले को सुनते हैं, परंतु ये पर्याप्त नहीं है, ये पर्याप्त गंदा नहीं है, इसलिये इसको और खराब बनाने के लिये इसमें थोड़ा सा जोड़ा जाता है, और तब इसे तथ्य के रूप में, किसी दूसरे की ओर प्रेषित किया जाता है, जो इसमें थोड़ा सा और जोड़ देता है। ये फिर से, कहने वाले की आत्मा को घायल करता है। अक्सर ईर्ष्या– दूसरा बड़ा शिकंजा– अफवाह का कारण है। कोई व्यक्ति, सरलता से किसी दूसरे व्यक्ति की नजर नहीं सहन कर सकता, एक व्यक्ति, दूसरे की कल्पित सफलता को लेकर पूरी तरह से ईर्ष्यालु होता है, और इसलिये वह उस व्यक्ति का कद घटाने के लिये कार्य करता है, वह गुपचुप अभियान प्रारंभ करता है या वह धुंधली प्रशंसा के साथ बुराई करता है। ये तथ्य है, आप जानते हैं, कि

कोई किसी व्यक्ति को ये कहते हुए भयानक रूप से घायल कर सकता है, ''ठीक है, मैं मानता हूॅ उसने अपना सर्वोत्तम किया, फिर भी, हमें, इसके लिये, उसको श्रेय देना चाहिए।'' तब ऐसा व्यक्ति, उस सतही सुनने वाले से, एक तर्कसंगत, और सर्वाधिक कठिन परिस्थितियों के अंतर्गत भी प्रशंसा करने वाला व्यक्ति होने का सम्मान प्राप्त करता है।

''एक और दूसरा शिकंजा है लोभ; लोभ ईर्ष्या का सजातीय है। श्रीमान् एक्स, श्रीमान् वाय, की सफलता से भयानक रूप से ईर्ष्यालु हैं। श्रीमान् एक्स धन के लोभी हैं, कुछ देशों में इसे धन की भूख कहा जाता है, और लोभ, ईर्ष्या को पोषित करता है, और अधिक ईर्ष्यालु श्रीमान् एक्स, उतना ही अधिक लालची होता जाता है, और वह हो जाता है। ये सब, आत्मा के लिये मारक विष हैं, चूंकि आत्मा एक अत्यंत सत्य वस्तु है, जिसे आपको अबतक जान चुके होना चाहिये। जब हम घोटाले या झूठी गवाही में लिप्त होते हैं या लालच या ईर्ष्या को रास्ता दे देते हैं, तब हम अपनी आत्मा के लिये विरोधी आवेश बना रहे होते हैं, और वह वास्तव में, हमको चोट पहुॅचा सकता है।

निर्वाण, ईर्ष्या और लोभ, घोटाले इत्यादि का उन्मूलन करने वाली चीज है, और इसे याद रखना, ''दूसरों के साथ वही व्यवहार करो, जो दूसरों से अपने लिये कराना चाहते हो,'' प्रगति करने का सबसे अच्छा तरीका है।

प्रश्नः मैं समझता हूॅ कि लोग, एक पत्थर, एक सिगरेट केस, या एक रुमाल उठा सकते हैं, और वे इन चीजों के स्वामी के सम्बंध में छापें (impressions) प्राप्त कर सकते हैं। ये कैसे किया जा सकता है?

उत्तरः आप मनोमिति (psychometry) को संदर्भित करते हैं, जो स्पर्शनीय प्रभावों (tactile impressions), जो मस्तिष्क का एक गूढ़ भाग है, को चित्रों और काल्पनिक दृश्यों में बदल दिये जाता है, को प्राप्त करते हुए, करती है। अब आप आश्चर्य कर सकते हैं कि, किसी भी निर्जीव वस्तु से, कोई भी प्रभाव प्राप्त करना कैसे संभव है, परंतु हम इसे एक छोटा सा साधारण उदाहरण देने के द्वारा, और अधिक स्पष्ट करें।

मानते हुए कि एक व्यक्ति, एक सिक्का अपने हाथ में पकड़े रहा है, तब सिक्का, व्यक्ति के हाथ से कुछ गर्मी प्राप्त कर लेगा और यदि दूसरे सिक्कों के साथ, वह सिक्का एक मेज पर रखा जाये आपको, ये पहचानने में कि कौन सा सिक्का पकड़ा गया था, बिलकुल भी परेशानी नहीं होगी। यह वह सिक्का होगा, जिसमें कुछ गर्मी होगी। ये केवल एक भौतिक चीज है, परंतु ये आपको प्रदर्शित करेगी कि छापें पड़ती हैं।

यदि आप मनोमिति की जॉच करना चाहें, तो सबसे पहले आपको अपने एकांत घर में, या ध्यान के कमरे में निवृत (retire) होना चाहिए। आपको प्रारंभ करना चाहिए, मानो कि आप ध्यान लगाने वाले थे, परंतु तब आपको, कोई चीज, जिसका इतिहास आप जानना चाहते हैं, उठानी चाहिए; उसे अपने बायें हाथ में उठायें और उसे बायें हाथ की हथेली पर थोड़ा सा टिकायें। अपने मन को रिक्त (blank) या ग्राही (receptive) बनाने का प्रयास करें, आप महसूस कर सकते हैं कि आप उसे नहीं जानते जिसकी तलाश कर रहे हैं, आप नहीं जानते कि किसकी आशा की जाये, आप यह भी नहीं जानते कि आगे कैसे बढ़ा जाये। ठीक है, वहॉ बैठें और कुछ भी न करें। कल्पना करें कि आप के सामने एक बड़ा चौकोर काला वर्ग है, और आप उस बड़े काले वर्ग में उभरते चित्र देखने जा रहे हैं।

सबसे पहले, आप चित्रों के बजाय, प्रभाव प्राप्त करेंगे। आप प्रभाव पा सकते हैं कि कोई व्यक्ति दुखी है या कि वह व्यक्ति प्रसन्न है, आपको किसी विशिष्ट आसपड़ौस का, जो वास्तव में, आपका आसपड़ौस नहीं है, गलत आभास हो सकता है। सबसे पहले आप शक की ओर झुकेंगे कि आप कोई भी चीज प्राप्त कर रहे हैं, परंतु तब उस चीज को, जब उसे उपयोग में नहीं ला रहे हैं, लपेटा हुआ रखें, ताकि दूसरे लोग उसे छू न सकें, और इसके साथ अभ्यास करें। इससे पहले कि आप महसूस कर

सकें कि कितनी कल्पना है और कितनी मनोमिति शक्ति, आपको उसी चीज पर बार–बार प्रयास करने होंगे। इसे कई बार करें, इसे एक सप्ताह तक, हर रात को करें, और सप्ताह के अंत में आप पायेंगे, कि उस चीज के सम्बंध में, आपके पास कुछ निश्चित निष्कर्ष हैं।

यदि, कुछ मिनटों के बाद, आप उस चीज के सम्बंध में, किसी प्रभाव को पाने में बिल्कुल ही असफल रहते हैं, तो उसे अपनी कनपटी पर या तो बायीं ओर या दायीं ओर रखें। यदि ये काम नहीं करता, तो इसे अपने सिर के पीछे, ठीक वहॉ, जहॉ आपका सिर आपकी गरदन से जुड़ता है, रखें। ये सरलता से हो सकता है कि आप प्राकृतिक रूप से बायें हाथ से काम करने वाले हैं, और उस अवस्था में, बायें के बदले में, आप अपना दायां हाथ उपयोग में लायें। परंतु मुख्य चीज है, भिन्न भिन्न स्थितियों में प्रयोग करना– बायां हाथ, दायां हाथ, बायीं कनपटी, दायीं कनपटी या सिर का पिछला भाग। तब आप अपने मन को खाली छोड़ दें, और अपने मन में उन प्रभावों को लाने का प्रयास करें, जो कि वस्तु के द्वारा प्रेषित किये जा रहे हैं।

ध्यान रखें कि जब आप एक पत्थर को सड़क में, या एक चिड़िया को आकाश में देखते हैं, आपकी ऑखें चिड़िया तक, या नीचे पत्थर तक नहीं पहुॅच रहीं हैं; जो आप प्राप्त करते हैं, वह है, पत्थर या चिड़िया के द्वारा, इस विशिष्ट मामले में, प्रेषित किये गये प्रभाव या कंपन, यद्यपि, आप प्रभाव पाते हैं, जिन्हें आप 'दृष्टि' कहते हैं। मनोमिति में, जहॉ भी आप प्रभाव प्राप्त करते हैं, आप सतह की तुलना में और नीचे जाते हैं और इसलिये आप अपने मस्तिष्क के गूढ़ भाग के अंदर, दृष्टि के प्रभाव पाते हैं। अभ्यास के साथ, ये एक पूरा सरल मामला है। अभ्यास करने का सबसे अच्छा तरीका है, एक व्यक्ति को पाना, जिससे आप समुद्रतट से पत्थर उठवाना चाहेंगे, और इसे सावधानीपूर्वक, बहते हुए पानी में धोना। तब वह व्यक्ति पत्थर को अपने माथे पर पकड़ कर रखता(ती) है, और आपके लिये, प्रबलता के साथ, एक संदेश सोचता(ती) है, जैसे कि ''मैंने इस पत्थर को सोमवार (या जो कुछ भी दिन हो) को उठाया था'' तब वह व्यक्ति, सावधानी से, पत्थर को टिश्यू पेपर में लपेटता है, और इसको अधिक छुए बिना आपको दे देता है। यदि आप ऐसी चीजों का अभ्यास करते हैं, तब शीघ्र ही, आप देखेंगे कि मनोमिति अपना कार्य करती है।

प्रश्नः आप ईसाई नहीं है, आप वह नहीं हैं, जो बाइबिल के द्वारा पोषित किये गये हों, इसलिये आप बाइबिल के सम्बंध में क्या सोचते हैं?

उत्तरः ठीक है, प्रारंभ करने के लिये आपको याद रखना है, कि बाइबिल को, वास्तव में, वास्तविक सम्बद्ध घटनाओं के होने के अनेक अनेक वर्षों बाद लिखा गया था। इसके अतिरिक्त, बाइबिल का अनुवाद किया जा चुका है, और गलत अनुवाद किया गया है, और कई कई बार अनुवाद किया गया है। महान अमुक–अमुक (So-and So) पादरी ने एक नवीन अनुवाद की मांग की, तब कोई दूसरा भी, एक नये अनुवाद के साथ प्रकट हुआ, और तब सम्राट जेम्स प्रथम (James I) या किसी दूसरे ने ये निर्णय लिया कि वह एक अधिकृत अनुवाद प्राप्त करेगा। इस सब में होकर, यद्यपि, इसमें सत्य की महान विकृति है, क्योंकि वास्तविक सत्य कभी नहीं मरते, कुछ हद तक उन्हें छिपाया जा सकता है, परंतु समझदार के लिये, सत्य हमेशा वहॉ हैं। प्रागैतिहासिक युगों की गूढ़ भाषाओं में, बाइबिल के मामले में, लिखे हुए, अजीब अभिलेख हैं, परंतु आप, बाइबिल को, हर समय उसके यथार्थ लिखित मूल्य (real face value) में नहीं ले सकते। आप लिखे हुए वास्तविक शब्दों को, ठीक ठीक वैसे नहीं लेंगे, जैसे कि वे लिखे गए थे, आप उनकी शाब्दिक रूप से व्याख्या नहीं कर सकते, आपको प्रतीक विज्ञान (symbology) का उपयोग करना होगा।

बाइबिल एक शाश्वत पुस्तक है, और वास्तव में, ये भारतीय, गूढ़ विद्याओं के जानकार और प्रतीक विज्ञान के मिस्री तंत्र से सम्बंधित है। ईसा तिब्बत गये थे और भारत से गुजरने और भारतीय धर्मों का अध्ययन करने के बाद, वह वास्तव में, तिब्बत गये थे और उन्होंने वहॉ, मूलतः पूर्व के एक धर्म

का, परंतु जिसको पश्चिम के हिसाब से बदल दिया गया था, अध्ययन किया, और पश्चिमी विश्व को वापस आये। यदि आप इस पर संदेह करें, ध्यान रखें कि यदि आप भारतीय प्रणाली का अध्ययन करते हैं, तो आप पायेंगे कि सभी प्रकार के रत्नों पर नक्काशियॉ (glyphs) और संख्यायें, भारतीय प्रणालियों में पाई जाती हैं, और यदि केवल ये अभागे 'वैज्ञानिक' (wretched scientists) मानव शास्त्र (anthropology), मानव प्रजाति विभाजन विज्ञान (ethnology), कालक्रम विज्ञान (chronology), जीवतत्व विज्ञान (physiology), और वैसे ही सब को, ध्यान में रखते हुए बाइबिल का सही अध्ययन कर सकें, उन्हें उस सब की, जो इतिहास में था, अत्यधिक महान समझ मिलेगी, क्योंकि, बाइबिल एक सर्वाधिक अमूल्य सहायता है– यदि कोई उस को, जो युगों के परे हुआ था, ठीक से पढ़ सकता है। इससे पहले कि कोई बाइबिल को पढ़ सके, किसी को गूढ़विद्या के जानकारों के सम्बंध में सबकुछ जानना होगा, जिससे कोई क्वावालाह (Quabalah) का ज्ञान पाता है।

यदि आप पुराने टेस्टामेंट (Old Testanemt) की पहली पॉच पुस्तकों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करेंगे, तो आप पायेंगे कि वे, वास्तव में, जनश्रुतियॉ (legends) हैं, और वे विश्व के दर्शनशास्त्रीय चरणों (philosophical phases) पर, ब्रह्मांडोत्पत्ति (cosmogony) के अत्यधिक लाभप्रद निबंध हैं।

मोसेस की कहानी को, और वह फराओ (Pharaoh) की पुत्री के द्वारा नरकुलों (bulrushes) के झुंड में, कैसे खोजा गया था, हर कोई जानता है। ठीक है, आपको ये जानना रुचिकर हो सकता है कि ये सब लगभग एक हजार वर्ष पहले हुआ था क्योंकि, बेबीलोनियन टाइल्स (Babylonian Tiles) नामक, कुछ निश्चित टाइल्स हैं, जो सम्राट सारगन (Sargon) की कहानी बताती हैं। वह मोसेस के काफी समय पहले, मोसेस के बहुत लंबे समय पहले, वास्तव में, एक हजार वर्ष पहले, जीवित था, और नरकुल के झुडों के बीच पाये गये एक बालक के सम्बंध में, ये कहानी, सम्राट सारगन की कहानी थी। जैसा कि सामान्य विश्वास है, निर्गमन की पुस्तक (The book of Exodus) मोसेस द्वारा नहीं लिखी गई थी, परंतु इसके बजाय, इजरा (Ezra) के द्वारा विभिन्न पूर्ववर्ती स्रोतों से 'बनाई गयी (made up)' थी, और इस पुस्तक के साथ, जॉब की पुस्तक (Book of Job), यहूदी प्रणाली (Hebrew system) में प्राचीनतम है और निश्चितरूप से मोसेस के काल से काफी पहले की है।

इसके अतिरिक्त, बाइबिल की महान कहानियों में से कोई जैसे कि सृष्टि (Creation), मनुष्य का पतन (the Fall of Man), और स्त्रियों का दोषारोपण (Blaming of women), सैलाब (Flood), और बाबेल की मीनार (Tower of Babel), मोसेस के समय से काफी पहले लिखी जा चुकीं थीं। ये कहानियॉ, वास्तव में, उनके, जिन्हें पुरातत्ववेत्ता समर्थक टिकियों (Chaldean tablets) के रूप में जानते हैं, दोबारा लिखे हुए संस्करण हैं।

यहूदियों ने सृष्टि के सम्बंध में अपने प्रथम विचार मोसेस से प्राप्त किये थे और मोसेस ने, सृष्टि के सम्बंध में विचार, मिस्री लोगों से प्राप्त किये थे और पूरा मामला, जिसे चाल्डो– आर्केडियन अभिलेखों (Chaldo-Arkadian accounts) से लिया गया था, इजरा के द्वारा पुनः लिखा गया। आप पायेंगे कि ईश्वर लिंग (Logos) है। आप ये भी पायेंगे कि बाइबिल, वास्तव में, गलत अनुवाद के साथ प्रारंभ होती है, जहॉ ये कहती है, ''प्रारंभ में ईश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी (Heavens and Earth) बनाये।'' ये वास्तविक भौतिक पृथ्वी नहीं थी, जो यहॉ संदर्भित है, परंतु उच्चतर और निम्नतर, दृश्य और अदृश्य हैं।

बाइबिल में काफी अधिक विसंगतियॉ हैं; उदाहरण के लिये जेनेसिस (Genesis) के पहले भाग पर विचार करें : ईश्वर ने कहा, 'आकाशों (firmaments)' को होने दो, और एक दूसरे ईश्वर ने इस आज्ञा का पालन किया और आकाशों को बनाया। पहले ईश्वर ने कहा, ''प्रकाश को होने दो'' और दूसरे ईश्वर ने कुछ प्रकाश बनाया। इससे ये स्पष्ट है कि, ईश्वर, किसी दूसरे ईश्वर को आदेश देता है, जो कुछ छोटा ईश्वर होना चाहिए, क्योंकि उसने पहले के आदेशों का पालन किया।

''प्रकाश को होने दो''। इसका अर्थ दिन का प्रकाश, सूर्य का प्रकाश, या कृत्रिम प्रकाश नहीं है बदले में, इसका अर्थ आध्यात्मिक प्रकाश है, इसका अर्थ है मनुष्य की आत्मा को अंधकार में से ऊॅचा उठाओ, ताकि वह ईश्वर की महानता को देख सके।

फिर, आदम (Adam), सृजित किया गया पहला व्यक्ति नहीं था। बाइबिल हमें बताती है कि चूंकि जेनेसिस 4.16,17 में ये कहा गया है कि एक पत्नी खरीदने के इरादे से केन(Cain), मोआब (Moab) के देश में गया था। अब यदि आदम, प्रथम सृजित व्यक्ति था, तो केन की, एक पत्नी की तलाश में, मोआब में जाने की क्या तुक थी क्योंकि, तब वहॉ कोई था ही नहीं! वास्तव में, आदम दस सेफीरोथ (Sephiroth) का संयोजन है, और वास्तव में, पिता (Father), पुत्र (Son), पवित्र आत्मा (Holy Ghost), आदर्श विश्व के किसी ऊपरी त्रिकोण (triad), तीन में से एक है, जबकि दूसरा, आदम, एक शाश्वत संयोग (esotoric composition) है, जो मनुष्यों के सात समूहों का प्रतिनिधित्व करता है – मानव जाति के सात समूह, जिन्होंने वास्तव में, इसप्रकार, पहली मूल मानव प्रजाति बनाई।

एटलांटा वासी (Atlanteans) थे, जिन्होंने काफी शोधकार्य किये, और यदि आप बाइबिल को ठीक से, अर्थात्, शाश्वत ढंग से पढ़ेंगे, आप पायेंगे कि सात कुंजियों का, जो सात महान मौलिक प्रजातियों के रहस्यों को खोलती हैं, वापस, एटलांटिक के समयों से पता लगाया जा सकता है। इसलिये मिस्री लोगों ने यह सूचना एटलांटा के लोगों से प्राप्त की, यहूदियों ने सूचना मिस्रियों से प्राप्त की और इसे थोड़ा सा बदल दिया, और तब ईसाई आगे आये और उन्होंने पूरी जानकारी ली और इसे काफी हद तक विकृत कर दिया, और तब, अनुवादकों ने, जिन्होंने इन्हें लैटिन में प्रस्तुत किया, सभी प्रकार की टिप्पणियों को नरम बना दिया और नवीन ईसाई आदर्शों और विचारों के साथ, ठीक वैसे ही, जैसे कि आजकल के राजनीतिक लोग, इतिहास को बदलते हैं, उनका मेल बिठा दिया। मेरे पास, इस अध्याय में, धर्म के सम्बंध में कहने के लिये, बाद में, कुछ और अधिक होगा, परंतु अभी के लिये बाइबिल के सम्बंध में इतना ही काफी है।

प्रश्नः क्या आप गार्डन ऑफ ईडन (Garden of Eden) की कहानी में विश्वास करते हैं? मुझे लिखें और मुझे बतायें, आप जो सोचते हैं, गार्डन और ईडन का वास्तविक अर्थ क्या है?

उत्तरः उपरोक्त प्रश्न के उत्तर में, मैंने प्रसन्नतापूर्वक कहा था कि हम ने बाइबिल को कुछ समय के लिये, समाप्त कर दिया है। ठीक है, इस प्रश्न का, जो है, कि क्या मैं गार्डन ऑफ ईडन के सम्बंध वाली कहानी पर विश्वास रखता हूॅ, क्या मैं एडम और ईव के पतन के सम्बंध में विश्वास रखता हूॅ, और जो कि, एक–दूसरे के शरीरों में अंतर खोजने की उनकी नवीन प्राप्त अभिरुचि, के रूप में पैदा हुआ था, उत्तर देने के लिये, हमें इसे फिर से खोलना होगा। दूसरे शब्दों में, जैसा मैंने प्रश्न को पढ़ा, क्या मैं सोचता हूॅ कि यौन मानवजाति का विनाश रहा है। नहीं, वास्तव में, मैं नहीं सोचता। मैं सोचता हूॅ कि ये सब बकवास है। पोप ग्रेगरी (Pope Gregary), बहुधा पोप ग्रेगरी महान के रूप में संदर्भित, के समय में, अनेक मूल पांडुलिपियों को संजोये हुए, बड़ा पेलेटाइन पुस्तकालय (Palatine Library), नष्ट कर दिया गया था। कुछ पांडुलिपियॉ मौलिक भोजपत्र (papyri) थीं, और वे लगभग, ईसाइयत के प्रारंभ के समय तक पीछे जाती थीं।

पुस्तकालय नष्ट कर दिया गया। उन दिनों के पोप ने सोचा कि लोग अत्यधिक सीख रहे थे, और यदि लोगों ने, जितना पादरी उनको जनाना चाहते थे, उससे अधिक जान लिया, तो वे पादरियों के लिये खतरा होगें, तब वे उनसे ऐसे प्रश्न पूछ रहे होंगे, जिनका उत्तर देना पादरी मुश्किल पायें।

पोप ग्रेगरी ने सोचा कि मनुष्यों को, दूसरे लोगों के लेखनों के लाभ लिये बिना, पुनः प्रारंभ करना चाहिए। उसका ये भी विचार था कि वह क्षण, ईसाइयत के इतिहास को पुनः लिखने, और उसे इस ढंग से संपादित करने का कि पादरियों की शक्ति घटे नहीं, का एक अवसर था। इसलिये पुस्तकालयों को जला दिया गया, औसत आदमी और औरतों के लिये, अमूल्य पांडूलिपियॉ गुम हो गयी

थीं। उनमें से कुछ पांडुलिपियॉ, जो प्रतिलिपियों के रूप में थीं, विश्व के दूसरे भागों में, गुफाओं में छिपा दी गई थीं, परंतु उनके लिये, जो आकाशीय अभिलेख को पढ़ सकते हैं, सभी पांडुलिपियॉ, सभी ज्ञान सदैव उपलब्ध है।

आदम और ईव के मामले में हमको ज्ञात रखना चाहिए कि, तथाकथित ''मूल पाप (original sin)'' यौन नहीं था, इसे भौतिक शरीर से, बिलकुल भी, कुछ भी लेनादेना नहीं था, परन्तु यह एक अभौतिक चीज थी। मूल पाप, अहंकार, मिथ्या–अहंकार, और किसी घटिया व्यक्ति का ईश्वरों के समकक्ष स्थापित होना, थे। मनुष्य और, वास्तव में, स्त्री ने सोचा कि वे ईश्वरों के समकक्ष थे, और इसलिये उन्होंने ईश्वर के प्रति खिलाफत की। ईडन का बाग (गार्डन ऑफ ईडन), नौजवान पृथ्वी थी, पृथ्वी, जो केवल तभी, एक नई प्रजाति, मानव प्रजाति के घर के रूप में, सही रूप में व्यवस्थित होती जा रही थी। आप सराहना करेंगे कि पृथ्वी पर अनेक प्रजातियॉ, जीवन के अनेक रूप, रह चुके हैं।

मनुष्य, जिसे हम इस पृथ्वी पर अब प्रकट हुआ जानते हैं, से पहले, पृथ्वी के पूरी तरह से भिन्न महाद्वीपों के ऊपर, महाद्वीप जो लंबे समय पहले, महासागर की सतह के नीचे डूब गये, ताकि दूसरे महाद्वीप और उनके साथ दूसरे राष्ट्र उठ सकें, मनुष्य के समान ही, किन्तु जैसी कि लोकप्रियता के अनुसार कल्पना की जाती है, झबरे बाल वाले बंदर नहीं, वल्कि पूरी तरह से भिन्न प्रकार के व्यक्तियों की एक दूसरी प्रजाति थी।

ये लोग भिन्न थे। कुछ हद तक, वे भिन्न शारीरिक विलक्षणताओं, जिन पर हमें, इस अवसर पर जाने की आवश्यकता नहीं है, वाले थे। उनकी त्वचा जामुनी (purple) थी, और आज के मानवों की तुलना में, वे बड़े और लंबे थे। ये लोग प्रखर बुद्धि वाले थे, शायद, अपने भले के लिये अत्यधिक बुद्धिमान, और ये वे लोग थे, जो तथाकथित गार्डन ऑफ ईडन में रहते थे।

प्राचीन अभिलेखों के अनुसार, पृथ्वी एक उपनिवेश है, एक उपनिवेश, जो इस ब्रह्मांड के परे के लोगों के द्वारा आबाद था। गार्डन ऑफ ईडन के समय पर, कुछ लोग– पर्यवेक्षक लोग– मानव की की नई प्रजाति का पर्यवेक्षण करने के लिये, इस पृथ्वी पर आये, और मनुष्यों की दृष्टि के अनुसार, जामुनी लोग और पर्यवेक्षक दैत्याकार थे। वे वास्तव में, पृथ्वी के लोगों की तुलना में, आधे अधिक बड़े (1.5 गुने बड़े) थे, इसलिये हमारे पास, उन दिनों की, जब ईश्वर और दैत्य, पृथ्वी पर विचरते थे, प्रजाति की स्मृति (racial memory) है।

पर्यवेक्षक, जो कुल मिलाकर, भिन्न प्रकार के मानव ही थे, पृथ्वी के जामुनी लोगों के साथ, अत्यधिक मुक्त रूप से दोस्ती करते थे। वे आपस में अत्यधिक मित्रवत् हो गये, और पृथ्वी के घटिया लोगों के पास अपने खुद के महत्व के विचार थे; उन्होंने सोचा कि यदि ईश्वर उनके साथ जुड़ जायें, तो उन्हें अद्भुत हो जाना चाहिए। और इसलिये वे ईश्वरों के अजीब शस्त्रों और युक्तियों से प्रभावित थे, वे उन डिब्बों से प्रभावित थे, जो चित्र दिखाते थे और हवा में ध्वनियॉ और संगीत उत्पन्न करते थे और उन्होंने कूटरचना की और योजना बनायी, जिनके द्वारा वे ईश्वरों को उखाड़ कर फेंक सकते थे और खुद के लिये उन उपकरणों को प्राप्त कर सकते थे।

ईश्वरों के रथों के रूप में जाने जाने वाले अजीब वाहन, दिन में और रात में, आकाश में लपटें निकालते थे। ईश्वर नई पृथ्वी के सम्बंध में देखने में, नई पृथ्वी के लोगों के कल्याण के सम्बंध में देखने में व्यस्त थे, परंतु फिर भी, उनके पास लोगों का पालन करने का समय था।

एक योजना तैयार की गई, जिसके द्वारा एक नौजवान महिला को, जो पर्यवेक्षकों के लिये विशेष रूप से आकर्षक थी, स्वयं को, किसी एक विशेष पर्यवेक्षक के लिये, और अधिक आकर्षक बनाना था। और योजना ये थी कि, जब ईश्वर दूसरी तरह से काम में लगे हों, कोई कह सकता है, मनुष्य, देवों को मार देंगे।

देवताओं को इस योजना की भनक लग गई, वे सजग हो गये कि मानव जाति बहुत बहुत

दोषयुक्त थी, वे सजग हो गये कि मानव जाति के पास धोखा देने के, शक्ति की कामना युक्त, अहंकार रखते हुए, मिथ्या अहंकार वाले विचार थे। इसलिये मानव जाति को उस विशिष्ट सुखद स्थान से दूर हटा दिया गया; दूसरे शब्दों में, उन्हें ज्वलंत तलवारों वाले देवदूतों के द्वारा गार्डन ऑफ ईडन से बाहर निकाल दिया गया। अब केवल सोचें, कल्पना करते हुए कि एक साधारण व्यक्ति, जिसने कभी जेट वायुयान न देखा हो, वह इनमें से एक को, टांका लगाने वाले यंत्र (blowtorch) की भांति दहाड़ते हुए, आकाश में उड़ते हुए देखता है, क्या उसके लिये, ये देवताओं का रथ नहीं होगा? मानते हुए कि उसने एक बन्दूक, जो चलाई जा रही थी, देखी, उसने धुंआ और शायद बैरल में से निकलती हुई थोड़ी आग देखी, क्या ये ज्वलंत तलवार (flaming sword) नहीं हो सकती थी? उसे, इसे कुछ तो कहना ही था, और वह पिस्तौलों (revolvers) के सम्बंध में नहीं जानता था; जलती हुई तलवार ही काफी अच्छा है – यह इतिहास की पुस्तकों और वैसे ही माध्यम से, नीचे की ओर चलता चला गया।

कालावधि में, पृथ्वी के स्वाभाविक उन्नयन ने भूचाल और झटके उत्पन्न किये, महाद्वीपों के डूबने और महाद्वीपों के उठने का कारण बने। पृथ्वी के अधिकांश लोग, विभिन्न आपदाओं और दुर्घटनाओं में नष्ट हो गये, परंतु कुछ लोग शरणार्थी हो गये और वे ऊँचे देश में पलायन कर गये। वास्तव में, उनमें से कुछ, अपनी प्रजाति की स्मृतियों के माध्यम से जीवित बने रहे। उदाहरण के लिये, क्या आपने कभी सबसे अंधेरे अफ्रीका के आदिमजाति के किसी को देखा है, जो काला नहीं, परंतु लगभग जामुनी –काला था? उस पर विचार करें। आप सहमत होंगे कि यहॉ इस पृथ्वी पर, पहले से ही, कम से कम तीन प्रजातियॉ हैं, काले लोग, पीले लोग, और सफेद लोग। ये तीन भिन्न प्रजातियॉ हैं, और उनमें आपस में काफी कुछ वैमनस्य है, एक जातीय वैमनस्य, मानो कि हर एक सोचता है कि, दूसरा कोई घुसपैठिया है।

इसलिये हम फिर, गार्डन ऑफ ईडन की तरफ वापस आते हैं, और पाते हैं कि जब देवता लोग पृथ्वी घूमते फिरते थे, वे दयालु और विचारवान थे। वास्तव में, वे देव नहीं थे, वल्कि इस ब्रह्मांड से बाहर के पर्यवेक्षक थे। मानवों ने उनसे लाभ लेने का प्रयास किया, और मानवों का मूल पाप यौन, जो मानवों का प्राकृतिक कार्य है, नहीं वल्कि गर्व और विद्रोह था।

वास्तव में, पोप ग्रेगरी के समय के चर्च में, और वास्तव में, चर्च के इतिहास में कई बार, यौन के प्रति महान डर बना रहा। उन्हें अहंकार के प्रति कोई डर नहीं था। इसलिये, क्योंकि ये उनके उद्देश्य के लिये उपयुक्त था, उन्होंने कहा कि मनुष्य का पतन, स्त्री के माध्यम से हुआ था, मनुष्य का पतन इसलिये हुआ, क्योंकि स्त्री ने उसे यौन के लिये फुसलाया। स्त्री, पापी, फुसलाने वाली, और हर बार आक्रामक थी।

बाइबिल में कुछ नहीं है, और न ही सत्य ईसाई विश्वास में, जो इस बयान का समर्थन करता है कि आदमी का पतन यौन के माध्यम से हुआ था। ईसा स्वयं, कभी भी, स्त्रियों के विरुद्ध नहीं था उसने कभी नहीं सोचा कि स्त्री एक घटिया, कुत्ते या निष्कृष्ट के रूप में व्यवहार किये जाने योग्य प्राणी थी।

सेंट ऑगस्टाइन (St.Augustine) और दूसरे अनेक लोगों ने, यौन के विरुद्ध हिंसक रूप से, और अधिक हिंसक रूप से, उपदेश देने के लिये, बाइबिल के पुनः लिखे जाने का लाभ उठाया। ऑगस्टाइन, उनमें से एक था, जो भयानक रूप से, भयानक रूप से, विवाह में भी यौन के विरुद्ध था। ये शायद यहॉ विचार करने लायक है कि, यहॉ, उस तथाकथित व्यक्ति, जिसे उस दुराग्रह से सुधारा गया था, की अपेक्षा, सुधारे हुए पियक्कड़ों में, कोई शराब का अधिक विरोधी नहीं है, जकड़ों का अधिक विरोधी नहीं है।

अध्याय बारह :
धर्म और विज्ञान

प्रश्नः आप धर्म के बारे में क्या सोचते हैं?

उत्तरः ओह अच्छा भव्य! मैंने सोचा था कि मैंने फिलहाल के लिये बाइबिल को बंद कर दिया है, परंतु वास्तव में मुझे ये कहना चाहिए कि मैं धर्म के 'पक्ष' में हूँ। कुछ समय पहले, मुझे एक विद्यार्थी पादरी से पत्र प्राप्त हुआ था। उसने मुझको झिड़की लगाई, उसने कहा, 'आप ने अपनी पुस्तकों में से एक में, वर्ष 60 में कोन्सटेनटिनोपल (इस्तांबुल) (Constantinople) के समागम को संदर्भित किया है। इस सम्बंध में, मैं बाईबिल में कुछ भी नहीं पा सका।'

सन् 60 में इस्तांबुल (Constantinople) में एक समागम हुआ था। आज की बाईबिल में, इसके सम्बंध में कुछ भी नहीं है क्योंकि चर्च के अधिकारियों ने बाइबिल को काफी अधिक बार दोबारा लिखा है। रोम में, यह निर्णय करने के लिये कि क्या पढ़ाया जायेगा और किसको छिपाया जायेगा, और कौन से धार्मिक संप्रदाय को मान्यता दी जायेगी या किसे निष्कासित किया जायेगा, अभी भी, लगातार कुछ बैठकें होती हैं। धर्म, लगातार, बनने की प्रक्रिया में है। स्पष्ट है कि, शिक्षा जो 2000 वर्ष पहले थी, आवश्यकरूप से, अब के लिये सर्वाधिक उपयुक्त नहीं होगी, इसे आधुनिक आवश्यकताओं के साथ व्यवहार करने के लिये अद्यतन किया जाना है। मेरे विद्यार्थी पादरी मित्र ने, मुझे किसी व्याकुलता में, किसी क्रोध में भी, यह कहते हुए कि मैंने उसे गुमराह किया था, लिखा था। मुझे उत्तर देने और ये कहने का आनन्द मिला है, कि ये मैं नहीं, वल्कि उसके वरिष्ठ लोग थे, जिन्होंने उसे गुमराह किया। उसे पुस्तकों और भोजपत्रों से परामर्श लेना चाहिए और उसे स्वयं के निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

मैं किसी के धर्म का बदलने का प्रयास नहीं कर रहा हूँ। मैं ईश्वर में दृढ़ विश्वास रखता हूँ, मैं उसे, किसी ईसाई या किसी यहूदी, या किसी मुसलमान, द्वारा प्रयुक्त किसी नाम की तुलना में, किसी भिन्न नाम से पुकार सकता हूँ, परंतु मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ और मुझे विश्वास है कि धर्म होना चाहिए। धर्म मानसिक और आध्यात्मिक अनुशासन प्रदान करता है। यदि अब अधिक धर्म सिखाया जाये तो बाल अपराध और पाप चरित्र कम होंगे।

मैं पूरा का पूरा धर्म के लिये हूँ। मैं प्रबल रूप से, पुजारियों के पक्ष में हूँ बशर्ते वे सत्य सिखाते हों, बशर्ते वे मान्यता देते हों कि सभी मनुष्यों को, अपनी निजी आस्था रखने का अधिकार है। कुछ समय पहले, मैं यूरोप में बौद्ध की पोशाक में प्रगट हुआ और मैंने, एक टैक्सी के लिये, सड़क को पार किया; किसी विशेष संप्रदाय के एक पुजारी ने मुझे देखा और लगभग डहकर गिर पड़ा, मानो कि वह स्वयं शैतान को देख रहा हो! उसने स्वयं कई बार पार किया, और गरिमा की पूरी हानि के साथ, काफी तेजी से, दूर जाने की जल्दी की। मैं आनन्द के साथ देखता रहा। मैं विश्वास करता हूँ कि इस सब का एक महान नियम है– वैसा करो, जैसा तुम अपने प्रति चाहते हो। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति, किसी विशेष प्रकार के परिधान को पहनता है, यदि वह एक ईसाई पादरी या एक यहूदी रब्बी हो, तो इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ताः यदि वह एक अच्छा आदमी है, तो मैं उसकी इज्जत करता हूँ और यदि वह पादरी में भेष में कोई पाखंडी है, तब मैं उस तिरस्कार करता हूँ या दुख मनाता हूँ कि उसके पास, क्षति जो वह कर रहा है, को जानने की दृष्टि नहीं है। क्योंकि किसी भी संप्रदाय के पुजारी, कुल मिलाकर, एक महान महान उत्तरदायित्व रखते हैं, लोग उनकी ओर देखते हैं और उनसे सहायता तथा सत्य की अपेक्षा करते हैं।

जो कुछ भी, धर्म में, किसी भी धर्म में, केवल ईसाईयत में ही नहीं, वरन् किसी भी धर्म में या इतिहास में पढ़ाया जाता है, उसमें से अधिकांश, तात्कालिक राजनीतिक शक्तियों की सुविधानुसार, या

स्वयं समय के अनुसार बदल दिया जाता है। सर फ्रांसिस ड्रेक (Sir Francis Drake) पर फिर से विचार करें– इंग्लैंड में वह महान नायक है, (जबकि) स्पेन में उसे पूरी तरह से अनुल्लेखनीय अपहर्ता समझा जाता है। सही क्या है?

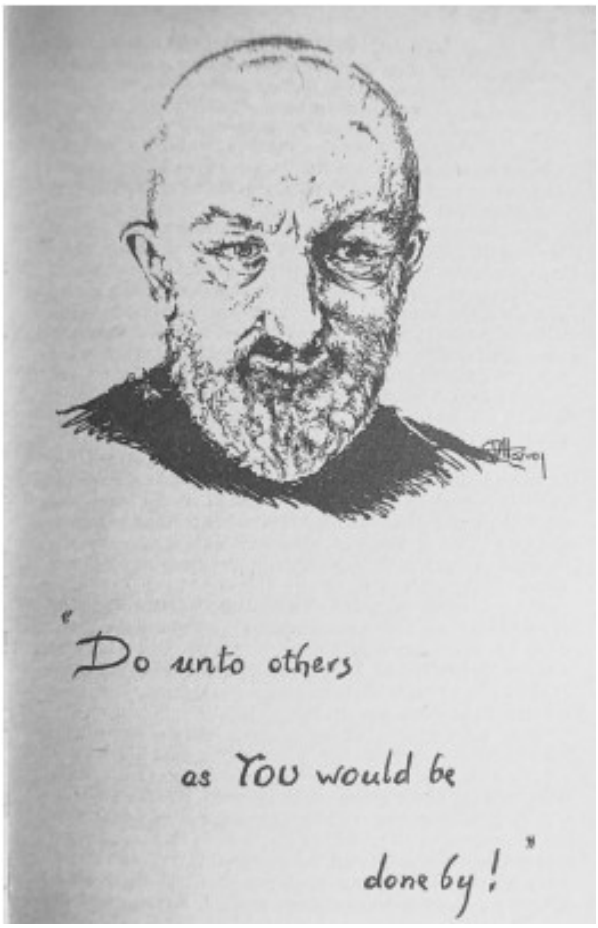

मामले को घर के अधिक समीप लाते हुए– ग्राफ स्पी (Graf spee) के सम्बंध में क्या है? जर्मन सोचते थे कि ये एक नायक बेड़े के द्वारा चलाया जाता हुआ, एक विजेता जहाज था, परंतु ब्रिटेन और अमरीका के लोग सोचते थे कि ये शांतिमय व्यापारियों को शिकार बनाता हुआ, एक घटिया जहाज था। इसलिये ब्रिटेन के लोगों ने, जर्मनी की नौसेना के गर्व को नष्ट कर दिया। आप क्या सोचते हैं, क्या सही था? जर्मन लोगों का दृष्टिकोण या ब्रिटिश लोगों का।

हिटलर के जर्मनी में, इतिहास को नष्ट किया गया और दोबारा लिखा गया। रूस में, यदि कोई इतिहास की वर्तमान पुस्तकों में विश्वास करता हो, विश्व के महान अविष्कारों में से अनेक, रूस में हुए। मुझे आश्चर्य होगा, यदि रूस में, हेनरी फोर्ड (Henry Ford) को ''फोर्डस्की (Fordski)'' कहा जाय? मैंने पढ़ा है कि रूसी लोग दावा करते हैं कि उन्होंने वायुयान, टेलीफोन, मोटरकार का आविष्कार किया, वे ''नहीं'' शब्द का भी अविष्कार–नाईट करते हुए प्रतीत होते हैं। उन्होंने शीतयुद्ध का भी आविष्कार किया। तथापि, हम राजनीति के ऊपर चर्चा नहीं कर रहे हैं, परंतु मैं कहूंगा कि खतरा रूस नहीं, बल्कि चीन है।

इसलिये उस सब पर, जो मुद्रित है, विश्वास न करें, परंतु अपने लिये सोचें, और यदि आप विचार की तुलना में, कोई प्रबलतर चीज चाहते हैं, यदि आप विश्व के बड़े पुस्तकालयों में नहीं जा सकते, तो अपनी सूक्ष्मशरीरी यात्राओं में व्यस्त हो जाये। जब आप सूक्ष्मशरीरी यात्रायें कर सकते हैं, आप आकाशीय अभिलेख से परामर्श ले सकते हैं, और आकाशीय अभिलेख के साथ छेड़छाड़ नहीं की जा सकती, आकाशीय अभिलेख को मिटाने का कोई तरीका नहीं है, सत्य ज्ञान को छिपाने का कोई तरीका नहीं है। ये उनके लिये, जिनके पास इसे देखने के लिये आंखें हैं, और जिनके पास इसे सुनने के लिये कान हैं, उपलब्ध है।

वास्तव में, धर्मों के सम्बंध में अत्यधिक अद्‌भुत– यदि कोई भूल जाता है कि धर्म केवल एक मानसिक और आध्यात्मिक अनुशासन मात्र है। कुछ धर्म कहते हैं कि किसी को सुअर का मांस (pork) नहीं खाना चाहिए, दूसरे कहते हैं कि आपको शुक्रवार को मांस नहीं खाना चाहिए। एक धर्म कहता है कि गरदन से नीचे, पूरा शरीर ढका रहना चाहिए, जबकि चेहरा खुला रहे। दूसरा धर्म कहता है कि कोई उतना ही नंगा हो सकता है जैसे कि एक उबाला हुआ अंडा, बशर्ते चेहरा ढका हुआ हो।

मैं कहता हूँ– वैसा करो, जैसा आप अपने प्रति कराना चाहते हो– यही सबसे उत्तम धर्म है।

प्रश्नः आप वैज्ञानिकों के सम्बंध में कुछ दयाहीन बातें कहते हैं, परंतु क्या आप नहीं सोचते कि केवल वैज्ञानिक ही हमें बचा सकते हैं?

उत्तरः ठीक है, ये निर्भर करता है कि वैज्ञानिकों से आपका क्या आशय है! मेरा विश्वास है कि अनेक तथाकथित वैज्ञानिक, केवल कुर्सी को सुशोभित करने वाले हैं। रॉल्स–रॉयस (Rolls-Royce) के रायस जैसे लोग, ऐडीसन (Edison) तथा फोर्ड (Ford), और उन जैसे कुछ दूसरे, वे सच्चे वैज्ञानिक थे, वे कभी स्कूल नहीं गये, जहॉ उनके विचार, चट्टानी दरवाजों में जड़ दिये गये होते; दूसरे शब्दों में, वे नहीं सोचते थे कि चीजें असंभव थीं, उन्हें कभी भी, ये विचार करने के लिये कि कोई चीज असंभव थी, हालातों में नहीं ढाला गया, इसलिये वे बाहर निकले और उन्होंने असम्भव को किया। अनेक विश्वविद्यालय, अपने विद्यार्थियों को यह पढ़ाने में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं, कि जिसे जबतक प्रोफेसर डॉग्सबॉडी (Dogsbody) या प्रोफेसर केट्‌सव्हिस्कर (Catswhisker) नहीं कर सकता, तबतक उसे दूसरा कोई नहीं कर सकता। ये सब बकवास है। मेरा विचार है कि ''शिक्षित'' वैज्ञानिक एक खतरा है, क्योंकि, वह ये विश्वास करने के लिये पढ़ा लिखा है कि जबतक वह या उसके साथी न कर लें, कुछ भी नहीं किया जा सकता।

कुछ लोग सोचते हैं कि, समांनातर विश्वों के मामले में, मुझे आइंस्टीन (Einstein) का संदर्भ देना चाहिए था। परंतु मैं आइंस्टीन का संदर्भ क्यों दूँ? मैं किसी को भी, जो रुचि रखता है, आश्वस्त कर सकता हूँ कि आइंस्टीन और उसके सिद्धांन्तों के सम्बंध में पुस्तकें हैं, और इसलिये किसी से भी, जो रुचि रखता है, उपयुक्त पुस्तकों को खरीदने की सिफारिश की जाती है, ताकि वे आइंस्टीन के सिद्धान्तों का अध्ययन कर सकें।

आइंस्टीन ने सिद्धान्तों पर चर्चा की। उसने उस समय उपलब्ध तथ्यों के अनुसार सिद्धान्त बनाये, परंतु आप देखें, जो हमको स्पष्टरूप से दिखाई देता है, हमें हमेशा व्यर्थ ही कूड़े–करकट के साथ नहीं चलना चाहिए, क्योंकि, स्पष्ट सदैव ही उतना स्पष्ट नहीं होता। उदाहरण के लिये, एक वैज्ञानिक जुंओं (Fleas) के व्यवहार का अध्ययन कर रहा था, उसने सोचा कि वह मानवीय मनोचिकित्सा के प्रादर्शों के साथ, जुंओं के व्यवहार का सम्बंध जोड़ सकता था। कुल मिलाकर, जुंये मनुष्यों के खून पर, बहुत तेजी के साथ फलते फूलते हैं, इसलिये हमारा वैज्ञानिक, जुंओं के अध्ययन में खुजली करने वाली एक प्रक्रिया, यदि मैं ऐसा कह सकूँ, में लग गया।

अधिक सावधानी, और अत्यधिक समय के व्यय के साथ, उसने एक मध्यम आकार के जुयें को, हर बार जब वह कहता, ''जाओ,'' दियासलाई के ऊपर कूदने को प्रशिक्षित किया। तब, जब कि जुंये में

ये विचार जम गया, वैज्ञानिक ने जुओं की छै टांगों में से दो उखाड़ दीं, ''जाओ''। जुंआ फिर से कूदा और यद्यपि उतनी सफलता के साथ नहीं, वह अपना करतब दोहराने में सफल हुआ, और तब उसने छै में से दो और टांगों को उखाड़ दिया। ''जाओ'', वैज्ञानिक ने कहा, जुंये ने हल्का सा वैसा किया और वैज्ञानिक ने अनुमोदन में अपना सिर हिलाया। जुंये की ओर पहुंचते हुए, उसने बेचारे प्राणी की अंतिम दो टांगें भी उखाड़ दीं। दुर्भाग्यवश, अब उस जुंये के पास कोई टांगें नहीं थीं, वैज्ञानिक अंतहीन तरीके से चिल्ला सकता था, ''जाओ'' और जुंआ नहीं हिला। वैज्ञानिक ने, अनेक प्रयासों के बाद, अपने विद्वान बूढ़े सिर को हिलाया, और अपनी रिपोर्ट में लिखा, ''जुंए की श्रवण शक्ति टांगों में होती है। जब उसने अपनी दो टांगें खो दीं, वह उतना अच्छी तरह नहीं सुन सकता था, इसलिये वह अधिक ऊॅचा नहीं कूद सका। जब वह अपनी सभी छै टांगों को खो देता है, तो वह पूरी तरह बहरा हो जाता है!''

हम, उस वैज्ञानिक, जिसने जुंओं का अध्ययन करने का प्रयास किया, जैसी स्थिति में नहीं हों। हमें प्रत्यक्ष के लिये अंधा नहीं होना चाहिए। यदि आइंस्टीन सही है, तब कोई भी वास्तविक अंतरिक्ष यात्रा संभव नहीं हो सकती, इसमें बहुत अधिक लंबा समय लगेगा, क्योंकि आइंस्टीन ने इस सिद्धान्त की परिकल्पना की कि, कोई भी चीज, प्रकाश के वेग से अधिक वेग से नहीं चल सकती और क्योंकि दूरस्थ ग्रहों से आने वाला प्रकाश, अपने स्रोत से, हम तक पहुंचने के लिये, शताब्दियों पर शताब्दियॉ ले सकता है, और यदि आइंस्टीन अपने सिद्धान्त में सही है, तो हम कभी भी, दूसरे ग्रहों की ओर जाने की आशा नहीं कर सकते।

सौभाग्यवश आइंस्टीन सही नहीं है। सौभाग्यवश, वह केवल उसी जानकारी तक सही है, जो उसका सिद्धान्त बनाने के समय उसके पास थी।

विश्व की अठारह–– में कल्पना करें – ओह हम क्या कहें?– 1963 के बजाय 1863। तब हम 1863 के वर्ष में वापस हैं। वैज्ञानिक हमें बताते हैं, कि मनुष्य कभी भी तीस मील प्रतिघंटा से अधिक नहीं चल सकेगा, क्योंकि मनुष्य के लिये इसके अधिक तेज चलने पर, हवा से उसके फेफड़े फट जायेंगे, मनुष्य के लिये इससे अधिक तेज चलना संभव नहीं होगा। तीस मील एक घंटे में, तब, उतना ही तेज है, जो कोई कभी चल सकता है।

आकाश में कोई हवाई जहाज नहीं हो सकते, वहॉ केवल थोड़े से गर्म हवा के गुब्बारे हो सकते हैं, और उसके लिये अनुमानतः, वहॉ तमाम वक्ता और व्याख्याता होने चाहिए और वे जो व्याख्याताओं की आलोचना करते हैं क्योंकि वह, गुब्बारों को ऊंची हवा में भेजने के लिये, गर्म हवा का अक्षय स्रोत होगा। परंतु हमें इस 1863 के वर्ष में बताया गया है कि कभी भी हवाई जहाज नहीं होंगे।

जैसे ही आदमी ने अधिक मारक प्रवृतियॉ और युद्ध के नये उपकरण विकसित किये, ये खोज लिया गया कि मनुष्य, तीस मील प्रतिघंटा की सीमा के परे भी जिन्दा रह सकता था, वह साठ मील प्रतिघंटा की चाल से भी अधिक जा सकता था, और जब जॉर्ज स्टीवेन्सन के द्वारा रेल पटरियॉ पहले पहल बिछाई गईं, लोगों ने सोचा कि वेग के मामले में, अंतिम पूर्ण प्राप्त हो चुका है। इंग्लैंड में, वास्तव में, मोटर कारें इतनी खतरनाक वाहन समझी जाती थीं कि लाल झंडी को दिखाता हुआ एक आदमी, उनके आगे पैदल चलता था। परंतु मेरा विश्वास है कि इंग्लैंड में, कारों के मामले में, वे अब उस अवस्था से परे जा चुके हैं और वे थोड़ा अधिक तेज चलते हैं, लगभग उतनी तेजी से, वास्तव में, जैसा कि वे विश्व के इस भाग में करते हैं।

हम काफी पहले नहीं, एक सिद्धान्त के साथ आये कि परम गति की सीमा वह थी, जो ध्वनि की गति के द्वारा लागू की जानी थी। सम्मानीय वैज्ञानिकों के द्वारा हमको बताया गया कि कोई भी व्यक्ति, कभी भी, ध्वनि के वेग से अधिक तेज नहीं चल सकेगा, ये असंभव था। अभी बनाये जा रहे यात्री विमान (ऐसे) हैं, जो ध्वनि की गति से अधिक तेज चलते हैं। युद्धक विमान, लगातार, अपने पथ पर टूटी हुई खिड़कियॉ, और उन टूटी हुई खिड़कियों के मालिकों की ओर से भयंकर तेज शोरशराबा

पीछे छोड़ते हुए, ध्वनि की गति से अधिक तेज गति से चलते हैं। सौभाग्यवश, वायुयान चालक ध्वनि की गति से परे जा रहे हैं, इसलिये जबतक कि वे अपने हवाई अड्डे पर उतर न जायें, और ये न पायें कि उनका नियंत्रणकर्ता अधिकारी, उन संदेशों पर, जो उसने प्राप्त किये हैं, गुस्से के साथ नाच रहा है, अपशब्द उन तक नहीं पहुॅचते।

तब हमने खोज लिया कि ध्वनि का वेग हमको सीमित नहीं कर सकता, हम और तेज यात्रा कर सकते हैं। और फिर भी, काफी समय पहले नहीं, आइंस्टीन जैसे लोगों ने कहा कि, आदमी कभी भी, ध्वनि के वेग से तेज यात्रा नहीं कर सकेगा। यदि ये लोग, अपनी कल्पना में गलत सिद्ध किये जा चुके हैं, तो ऐसा क्यों नहीं होना चाहिये कि आइंस्टीन भी, अपने सिद्धान्तों में, कि प्रकाश, गति की परम सीमा है, गलत है?

जब लोग प्रकाश के वेग से परे यात्रा करते हैं, वे एक दूसरे को देखने में, और ये देखने में कि उनके सामने क्या है, सक्षम होंगे। अंतर केवल ये है कि चीजें, जिन्हें वे देखेंगे, वे एक भिन्न रंग की होंगी, जो एक अत्यधिक दिलचस्प चीज होगी, और मैं मानता हूॅ कि वैसी ही होगी, जैसे कि सोडियम लैंप या फ्लोरोसेंट प्रकाश में दिखते हुए औरतों के कृत्रिम चेहरे। पूरा मामला ये है कि यदि कोई प्रकाश की गति से अधिक गति से यात्रा करता है, तब वह अतीन्द्रियज्ञान से देखने की अवस्था में पहुॅच रहा होगा और वह चीजों को, तीन के बजाय, चार विमाओं में देख रहा होगा।

मैं यहॉ संदर्भित करना चाहूंगा कि महान वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के सम्बंध में क्या कहा है। वैज्ञानिकों ने कहा कि पृथ्वी सपाट थी। प्राचीन मिथक कहते हैं कि पृथ्वी सपाट थी, और अजनबी दैत्य सपाट पृथ्वी के किनारों पर घात लगाये रहते थे। मेरा खुद का अनुभव ये है कि अधिकांश दैत्य इस पृथ्वी पर रहते हैं। कोई भी, अब, गंभीरतापूर्वक विश्वास नहीं करेगा कि पृथ्वी सपाट है। सामान्य विश्वास ये है कि पृथ्वी कमोवेश गोल जुगत है, और इसकी अच्छी झलक देखने के लिये, लोग, छोटे अंतरिक्ष यानों में, इसके आकाश में बाहर, अंतरिक्ष में भी रहे हैं। इसलिये, हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक अपने विज्ञान में अधिकांशतः गलत रहे हैं। दुर्भाग्यवश, कुछ धार्मिक नेताओं ने ये कहना कि पृथ्वी गोल थी, मृत्यु के द्वारा दंडनीय अपराध बना दिया और काफी वर्ष पहले नहीं, लोग ये कहने पर कि पृथ्वी सपाट नहीं, वल्कि गोल थी, भलीभांति भून दिये जाते थे। तथापि, मेरा ख्याल है कि हम सबको किसी समय मरना है, और ये सांत्वना हमेशा बनी रहती है कि यदि कोई पूरी तरह से आग के द्वारा घिरा हुआ है, तो इससे पहले कि आग की लपटें उस तक पहुॅच सकें, वह दम घुटने से मरता है – इसलिये नहीं कि ये शर्त से बंधे हुए पीड़ित के लिये अधिक सांत्वनापूर्ण होगा।

यदि हम किसी वैज्ञानिक के तकनीकी सिद्धान्त को, उसकी, जो हम कर सकते हैं या कह सकते हैं या सोच सकते हैं, सीमा के रूप में पाने वाले हैं, तब हम अपने आप को, रेल के इंजन की उस स्थिति में डालने जा रहे हैं, जो रेल की पटरियों तक सीमित है। उस इंजन के द्वारा खींचे जाते हुए लोग, केवल एक अत्यंत सीमित मात्रा को, जो कि पटरी के किसी एक ओर, जिस पर वे यात्रा कर रहे हैं, देख सकते हैं, वे देखने के लिये, मुख्य उच्च पथ पर, पथ से हटने में समर्थ नहीं है।

लोग, जो कार के द्वारा, या पैदल भी, यात्रा करते हैं अधिक देखते हैं और अधिक सीखते हैं। लोग, जो पैदल चलते हैं, सबसे अधिक धीमे होते हैं, परंतु वे विस्तार के साथ अधिक, और अधिक सीखते हैं, और शायद वे ही, अंत में, सबसे अच्छे रहते हैं, जबकि लोग, जो हवा में यात्रा करते हैं, इतने अधिक तेज और ऊंचे जा रहे होते हैं कि वे बिल्कुल भी कुछ नहीं देखते। इसलिये हमें साथ साथ घूमने फिरने दें, महान मनुष्यों के वैज्ञानिक सिद्धान्तों, जो गणितीय सूत्रों में आश्चर्यजनक हो सकते हैं, के साथ मस्ती करते हुए नहीं, परंतु वे आवश्यकरूप से जीवन के और जीवन के बाद के वास्तविक तथ्यों के संगत नहीं होते।

पश्चिमी सभ्यता, ब्रह्मांडीय समय के एक सेंकड के दसवें भाग से भी कम को घेरती है। यदि

आप पृथ्वी की आयु के बारे में सोचें तो आप पायेंगे कि आदमी, इस पृथ्वी पर, किसी भी रूप में, पृथ्वी के अस्तित्व के चौबीस घंटों में से एक मिनट भी नहीं घेरता।

लोग, जो सूक्ष्मशरीरी यात्रायें कर सकते हैं या जो अतीन्द्रियज्ञानी या दूरानुभूतियुक्त हैं, जो चल रहा है, उसका एक अधिक अच्छा प्रभाव पा सकते हैं, क्योंकि वे लोग जानते हैं कि आदमी, पृथ्वी पर आत्मा का प्रकटन मात्र है।

शरीर के दूसरे रूप भी रहे हैं, दैहिक अस्तित्व के दूसरे रूप भी रहे हैं। पृथ्वी पर, मानव जाति का भौतिक शरीर, ये देखने के लिये कि कौन सा रूप, सर्वोत्तम और सर्वाधिक आसान तरीके से, शीघ्रतापूर्वक सीखने के अवसरों को पाने के लिये, आत्मा को झेल सकता है, प्रयोगों की लंबी–लंबी श्रंखलाओं में से मात्र एक है।

मानव जाति अंतिम नहीं है, ये विश्वास न करें कि ये है। धर्म के कोई शब्द, वैज्ञानिकों के कोई सिद्धान्त, कभी भी, स्वैर्गिक आत्मा को सहमत नहीं करा सकते कि नन्हा सा दिव्य शरीर, जो ये धारण करती है, चमक–दमक वाली तितली से अच्छा है, जो वह हो सकता है।

ये आपको अपने आप में सोचने के लिये, सक्षम बनाने और आपको गंभीरतापूर्वक सूक्ष्मशरीरी यात्रा और परोक्षज्ञान के प्रयास में जाने योग्य बनाने के लिये है। यदि लोग हर चीज का विश्लेषण करने वाले है, और अधिक अच्छा जाने बिना हर चीज में दोष देखने का प्रयास करते हैं, तब वे अपने खुद के विकास के लिये, खुद को पागल सिद्ध करने वाले हैं। हमें दिमाग खुला रखना चाहिए, हमको स्वीकार करने के लिये तैयार रहना चाहिए, हमको ज्ञात होना चाहिए कि हम किस सम्बंध में बात कर रहे हैं और ये नहीं कहता चाहिए, ''ओह, ये ठीक नहीं है, ये वह नहीं है जो आइंस्टीन ने कहा था।'' आइंस्टीन और आइंस्टीन जैसे लोगों ने कहा था कि पृथ्वी सपाट थी; आइंस्टीन और आइंस्टीन जैसे लोगों ने कहा कि मनुष्य कभी भी ध्वनि के वेग से अधिक तेज यात्रा नहीं करेगा; ठीक है, हम करते हैं, आप जानते हैं, हममें से कुछ, और हममें से कुछ प्रकाश के वेग से अधिक तेज यात्रा करते हैं। सूक्ष्म शरीरी यात्रा, अत्यधिक, अत्यधिक तेज है। सूक्ष्मलोक में, जब हम आसपास घूमते हैं, हम वास्तव में, मस्ती करते हैं परंतु मुझे आपको ये सब बताने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप अपना दिमाग खुला रखेंगे और विनाशपूर्वक आलोचना करने के बजाय, यदि आप स्वयं के लिये संरचनात्मक तरीके से जुड़ने का प्रयास करेंगे, तब सूक्ष्मलोक की यात्रा करने में आपको बहुत अधिक परेशानी नहीं होगी।

अपने मन में ये भी बनाकर रखें कि लगभग हर 2000 या ऐसे ही कुछ वर्षों में एक नया मसीहा एक धर्मरक्षक या विश्व का एक नेता, इस पृथ्वी पर प्रकट होता है। ये एक चक्र है, जो चक्रों के माध्यम से हमेशा जारी रहता है।

इसलिये हम एक और पुस्तक के अंत तक आते हैं, कलि के चक्र के बारहवें घंटे में लिखा गया बारहवॉ अध्याय। हो सकता है कि जो मैंने लिखा है, उसमें से कुछ, आपको अपने रास्ते पर मदद करेगी, और उसमें, जिसे मैंने लिखा है, विश्वास रखें, क्योंकि, वह सब जो कुछ मैंने अपनी सब पुस्तकों में लिखा है, सत्य है।

प्रकाशकों के विभाग की दयालुता

जब से ''तीसरी ऑख'' सबसे पहले प्रकाशित हुई है, वर्षो तक मुझे भारी मात्रा में डाक मिली है, और वर्तमान समय तक मैंने उसका हमेशा उत्तर दिया है। अब मुझे कहना है कि, मैं यहॉ से आगे किसी भी डाक का जबाव देने में सक्षम नहीं हो सकूॅगा, जबतक कि उसके साथ, पूरा–पूरा वापिसी डाक खर्चा नहीं भेजा गया हो। इसलिये कृपया मुझे अग्रेषित करने के लिये, मेरे प्रकाशक को, पत्र न भेंजें क्योंकि, मैंने अपने प्रकाशक को, मुझे कोई पत्र अग्रेषित नहीं करने को कहा है।

लोग ये भूल जाते हैं कि, उन्होंने किताब के लिये पैसा दिया है, किसी जीवनपर्यंत्, मुफ्त डाक सलाहकार सेवा, के लिये नहीं। प्रकाशक, आखिर प्रकाशक ही है – कोई पत्रों को अग्रेषण करनी वाली सेवा नहीं।

मुझे पूरे संसार से, पर्दे के पीछे से भी, पत्र मिले, परन्तु हजारों लोगों में से एक ने भी, वापिसी का खर्चा नहीं भेजा, और लागत इतनी ज्यादा है कि, मैं उत्तरों का खर्चा, अब और नहीं झेल सकता। लोग ऐसी बेतुकी चीजों को भी पूछते हैं। उनमें से कुछ यहॉ हैं :

जब मैं आयरलेण्ड में था, ऑस्ट्रेलिया से एक अत्यन्त निराशाजनक पत्र था, जो मुझ तक पहुॅचा। मामला वास्तव में, अत्यावश्यक था, इसलिये मैंने अपने खर्चे पर ऑस्ट्रेलिया को समुद्री तार (cable) भेजा, और मुझे धन्यवाद ज्ञापन तक नहीं मिला।

संयुक्तराज्य अमेरिका में, ये मांग करते हुए कि, मुझे उनके लिये एक थीसिस लिखनी चाहिये और उन्हें वापिसी हवाई जहाज से भेजनी चाहिये, किसी महानुभाव ने मुझे पत्र लिखा। वह इसे पूर्वी दर्शनशास्त्र (oriental pholosophy) में डॉक्टेरेट की डिग्री प्राप्त करने के लिये उपयोग करना चाहते थे। वास्तव में उन्होंने कोई डाक खर्च नहीं भेजा। ये मात्र, एक धमकी भरी मांग थी।

एक अंग्रेज आदमी ने, बहुत ही अंहकारी भाव से, मेरे प्रमाणपत्रों की मांग करते हुए, अन्य पुरुष (third person) में पत्र लिखा और केवल यदि, वे उनके हिसाब से पूरी तरह संतोषजनक हुए तो, वह स्वयं को मेरे अन्तर्गत शिष्य के रूप में प्रस्तुत करेंगे, बशर्ते इसके लिये, मैं उससे कोई शुल्क न लूॅ। दूसरे शब्दों में, ये समझा गया था कि, मुझे सम्मानित किया जा रहा है। ''मैं नहीं समझता कि, उन्हें मेरा जबाव पंसद आयेगा।''

दूसरे किसी ने, मुझे लिखा और कहा कि, यदि, मैं ''और मेरे मित्र'' रात को सूक्ष्मशरीरी यात्रा में, तिब्बत से आयें और उसके बिस्तर के चारों तरफ जुड़ जाऐं तो, वह सूक्ष्मशरीरी यात्रा के संबंध में अधिक प्रसन्न अनुभव करेगा।

दूसरे किसी ने मुझे लिखा और मुझसे उच्च, शाश्वत, चीजों में से हर एक के बारे में, (यदि मैं चाहूॅ तो इसका उत्तर दे सकता हूॅ) ये बताने के लिये कि, मुर्गियों और किसी के पति (hens and

ones husband) को कैसे एक साथ रखा जाये। लोगों ने ये भी समझा कि, जो कुछ उनके मन में आये, वे मुझे लिख सकते हैं और यदि मैं जबावी हवाई डाक से उनको उत्तर न दूँ तो वे आक्रामक भी हो सकते हैं।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि, मेरे प्रकाशकों को परेशान न करें, वास्तव में, मैंने उन्हें, कोई भी पत्र, मुझे भेजने के लिये, मना किया है क्योंकि, वे प्रकाशक के रूप में व्यापार में हैं। उन लोगों के लिये, जो वास्तव में, उत्तर पाना चाहते हैं (यद्यपि मैं पत्रों को आमंत्रित नहीं करता) मेरे घर का पता है :

Dr. T Lobsang Rampa,
BM/LTR,
London W.C.I.,England

मैं किसी जबाव की गारंटी नहीं देता, और यदि आप इस पते का उपयोग करते हैं, तो आपको उचित डाकखर्च भेजना पड़ेगा क्योंकि, पत्र मेरे पास अग्रेषित किये जायेंगे और मुझे भुगतान करना पड़ेगा, इसलिये मैं उत्तर देने के लिये, पर्याप्त मधुर विचार में नहीं होऊँगा, जबतक कि, आप मेरे खर्चे को अपना खर्चा न बना लें। उहारण के लिये, जबतक कि, अग्रेषण प्रभारों का भुगतान किया जाये, ये कम से कम मुझे, एक डॉलर की लागत पड़ेगी।